कथा राम की

डॉ० शिव बरुआ


प्रवीण प्रकाशन
नई दिल्ली-110030

मूल्य : 100.00

प्रकाशक : प्रवीण प्रकाशन
1/1079-ई, महरौली, नई दिल्ली-110030

प्रथम संस्करण : 1990

आवरण : हरिप्रकाश त्यागी

मुद्रक : तरुण प्रिंटर्स, शाहदरा, दिल्ली-110032

KATHA RAM KI by Dr. Shiv Barua

(A Hindi Drama)
Price : Rs 100 00

स्व० कविलास बरुआ

और

'रानू' के लिए

आमुख

'कथा राम की' भारत, भारत की संस्कृति का आत्मकथ्य। संसार के संशयविहग उड़ाने वाली कथा।

'राम' सृष्टि के आदि-अन्त के सर्जक। आत्मा के विश्राम के केन्द्र राम। उनके प्रति पार्वती का संदेह है कि सीता के लिए सामान्य मनुष्य की तरह व्याकुल होनेवाले, ये, वे 'राम' नहीं है किन्तु बौद्धिक संदेहों को विराम देते हुए, पूर्ण विराम हैं 'राम'।

भगवान शिव, वाल्मीकि की परंपरा में अनेक नाम हैं—जो इसी कथा को अपने-अपने तरीके से कहते-सुनते आए हैं। क्योंकि 'हरिकथा' अनन्त है।



कथा, राम की, अपने-अपने तरह के सोच और समझ के साथ कही जाती रही है। कभी उपेक्षित चरित्रों के केन्द्रीयकरण द्वारा और कभी राम के औदात्य को प्रस्तुत कर।

इस प्रस्तुति मे 'सोच' और 'कहन' संपूर्ण नाट्य को भिन्न बनाता है। इस भिन्नता के लिए संदर्भ ग्रंथों का अनुशीलन कर प्रामाणिक कथा को संकलित किया है। इस कथा मे परम्परागत कथा के नायक 'राम' आधुनिक सन्दर्भों से जुटे हुए जन-नायक है। वे आज के ऐसे नायक हैं जो आज की त्रासदियों, जन संघर्षों, मानसिक यन्त्रणाओं से गुजर कर अपने आसपास के उपेक्षित और शोषित जन-जीवन को बुलंदियों पर सवार आतंक के विरुद्ध खड़ा कर देते है। वे एक ऐसे नायक भी है जो परिवार और समाज मे जूझते दिखाई देते है। इस कथा में राक्षस संस्कृति कुल मिलाकर आज की असामाजिक संस्कृति के खलनायकों का रूप बनकर उभरी है।

'कथा राम की' के 'राम' सम्पूर्ण चमत्कारों से मुक्त संघर्षशील, जन-चेतना के प्रतीक बनकर सामने आते है और अपने कृतित्व तथा व्यक्तित्व से जन-जीवन को प्रभावित करते चले जाते हैं। एक 'राम' ही नहीं, कथा के सभी पात्र संघर्षो, मान्यताओं, धारणाओ, अवधारणाओं, घटनाचक्रो के बीच आम आदमी की तरह संघर्षशील है। सो, 'कथा राम की' 'सोच' और कहन की दृष्टि से मेरा

विम्ब है।

यह कथा केवल 'राम' की नही है। यह कथा वर्तमान राजनैतिक चालाकियों, समद-विधानसभाओ, सत्ता के घिनौने षड्यत्रो, संधियों, मानवीय संवेदनाओं की उपेक्षाओं, लोकतंत्र के नाम पर अधिनायकवाद की स्थापनाओं के विरुद्ध उठी आवाज का नायकत्व करती हुई, उस पीढी की कथा है जो 'राम' की खोज कर सत्ता-मदान्धो का अंत कर लोक के लिए समर्पित हो।



'कथा राम की' रामलीला-परम्परा, नृत्य-नाटिकाओ और लोकमंचो पर अनेक शैलियो मे श्रद्धा-भक्ति से प्रस्तुत होती आई कथा-यात्रा का एक विश्राम है।



'अनुगामी' उपन्यास का धारावाहिक प्रकाशन हुआ जो 'सौमित्र' को केन्द्र मानकर राम-कथा है। 'राम' के युग मे सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक परिस्थितियों, एक सामान्य-जन की भूमि पर खड़े होकर चलने वाले संघर्षों, देश-धर्म-जाति को अमर करती हुई विचारधारा का पोषण 'अनुगामी' की आत्मा है।

कृति के सृजन-काल मे, प्रस्ताव था कि मचन के लिए लिखा जाना चाहिए। हमने अपने को असमर्थ पाया, अतः मौन हो गया। किन्तु 'राम' की कृपा हुई। सयोग बना। श्री रामलीला समारोह समिति के अध्यक्ष श्री देवेन्द्र तिवारी (प्रबधक-दैनिक भास्कर) ने समिति के आदेश की सूचना दी। साधन जुटाए गए और लिखना आरभ हुआ।

सम्पूर्ण नाट्य शैली (टोटल थिएटर) मे 'कथा राम की' की रचना है। 'राम' महाराज दशरथ के पुत्र मात्र है, लेकिन ऋषि-मुनि, वनवासी, वानर और राक्षस भी 'राम' के व्यक्तित्व और कृतित्व का मूल्यांकन करते जा रहे हैं। विश्वास होता है कि 'राम' सहज मानव नही हैं, अतिमानव है, नारायण हैं। इस बीच सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक परिस्थितियो का कार्य-व्यापार है जो 'कथा राम की' के रचना काल के संदर्भों को आत्मसात किए है। 'कथा राम की' इक्कीसवी सदी की चौखट पर पाँव रखती मानवीय-सभ्यता का प्रतिबिम्ब है। 'राम' आदर्श नायक है। उनकी खोजती हुई भारतीय-संस्कृति का रूपक 'कथा राम की' है। 'राम' हमारे आस-पास हैं, 'राम' हमारे अंदर हैं, 'राम' के दर्शन के लिए व्याकुल है हमारी सामाजिक आत्मा।

मैंने महर्षि वाल्मीकि से लेकर आज तक कही गई राम कथाओ के आधार पर 'कथा' तैयार की है, आधार महर्षि ही है। मैंने लोकनायक तुलसी, पंडित राधेश्याम, गीत, रामायण, राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त की रचनाओं को दृश्य सयोजन की दृष्टि सादर ग्रहण किया है। इनके चरणो मे प्रणाम अर्पित करता हूँ। आवश्यकतानुसार कुछ चौपाइयाँ एव गीत लेखक ने तैयार किए है। श्री रामलीला समारोह समिति में 29 सितम्बर 89 से 12 अक्टूबर 89 तक

ग्वालियर के इसी प्रांगण में 'कथा राम की' का टोटल थियेटर शैली में प्रदर्शन आयोजित किया। प्रसिद्ध रंगकर्मी डॉ॰ कमल वशिष्ठ के निर्देशन में इस त्रिदिवसीय मंचन हुआ। इसके संगीत निर्देशक श्री हर्ष दौंडे, कला निर्देशक श्री बालेन्दु सिंह, नृत्य-निर्देशक श्री पुरुषोत्तम जादव, प्रकाश निर्देशक श्री शिवदत्त (अब स्वर्गीय हो चुके) थे। मंचन में लगभग साठ प्रशिक्षित कलाकारों ने दल में बिना पारिश्रमिक के भाग लिया। ये सभी ग्वालियर के कलाकार हैं। संगीत दल में पन्द्रह सदस्य थे। विभिन्न नगरों के पाँच मंचों पर, पच्चीस हजार दर्शकों की उपस्थिति में इस त्रिदिवसीय मंचन हुआ। मंचन के साहित्यकारों, पत्रकारों, बुद्धिजीवियों, सार्वजनिक-सामाजिक संस्थाओं, व्यवसायियों और आम आदमी ने, निर्देशक मण्डल एवं कलाकारों ने मंचन के लिए विवश कर दिया। पहली बार ऐसा हुआ कि 'कथा राम की' का दृश्य आरम्भ होते ही दर्शक नाट्य-गृह की शांति में अधिक मौन धारण करते थे। मैं निर्देशक मण्डल एवं कलाकारों तथा दर्शकों को अपना नमन अर्पित करता हूँ।

'कथा राम की' के प्रदर्शन की चर्चा के परिणामस्वरूप तत्कालीन रेल राज्य मंत्री श्री माधवराव सिंधिया एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती माधवीराजे, 'महाभारत' के कलाकार, गिरिजा शंकर, गूफी पेंटल, पुनीत इस्सर, मुकेश खन्ना, रेणुका इसरानी और हरीश भिमानी 'कथा राम की' का मंचन देखने आए।

मैं भाई देवेन्द्र जी तिवारी का आभारी हूँ जिन्होंने अपने प्रेम की शक्ति का प्रयोग कर इस कृति की रचना करने के लिए विवश किया। सर्वश्री विश्वनाथ सिरास, नरेन्द्र माहेश्वरी, शिवकुमार सराफ, घनश्यामदास शर्मा एवं गोपाल चौरसिया ने मुझे प्रेरित किया। मैं इन सबका कृतज्ञ हूँ। मान्यवर श्रीकिशन गुप्त ने इस कृति को आप तक योजनापूर्वक पहुँचाने का दायित्व स्वीकार कर ऋणी कर लिया है।

'कथा राम की' हिन्दी के विज्ञ समालोचकों, नाट्य-निर्देशकों, कला-समीक्षकों और प्रबुद्ध पाठकों के मूल्यांकन के लिए प्रस्तुत है।

आदर सहित।

संपर्क : सराफा, ग्वालियर
जवाहर नगर, जम्मू, कश्मीर

—डॉ० शिव शर्मा

एक

[मंच पर श्री गणेश पर प्रकाश।]

श्लोक : शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम्
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये।
वागीशाद्याः सुमनसः सर्वार्थानामुपक्रमेत्याः
यं नत्वा कृतकृत्याः स्युस्तं नमामि गजाननम्।

[श्री राम पर प्रकाश।]

दोहा : जड़ चेतन जग जीव जल, सकल राम मय जानि।
बदऊ सब के पद कमल, सदा जोरि जुग पानि॥

चौपाई : सीता राम चरित अति पावन
मधुर सरिस अरु अति मन भावन।
सीय राम मय सब जग जानी
करऊ प्रनाम जोरि जुग पानी।
मंगल भवन अमंगल हारी
उमा सहित जेहि जपत पुरारी।

सूत्रधार

दोहा : ब्रह्म राम ते नामु बड़ वर दायक वर दानि।
राम चरित सत कोटि महँ, लिये महेश जियं जानि॥

चौपाई : ससि ललाट सुंदर सिर गंगा,
नयन तीनि उपवीत भुजंगा।
कर त्रिसूल और डमरू विराजा,
चले वसंह चढि वाजहि गाजा।

[मंच-5 पर प्रकाश।]

नन्दी : हे भगवन, हम सब बाराती तैयार है, आप शीघ्र चलिये।

भूत : मैं कैसा लग रहा हूँ नन्दी।

नन्दी : अहो रूपम। आप गाएँ तो क्या कहने?

भूत : गाऊँ। चले शंकर जी लेके बरात
हम सब.......(गेय)

नन्दी : हम सब रेंकेंगे।

शियार हुआ, हुआं, हुआ। मैं आ गया...

भूत : हः हः—बल-बल-बल-बल।

नन्दी : अब बारात ले चलिये। विलम्ब न कीजिये दूल्हे राजा। कहीं लड़की वाले लौटा न दें।

शिव : मेरे आराध्य देव विष्णु भगवान और श्रेष्ठ ब्रह्मा जी आ जाएँ, तब चलूंगा।

पार्श्व स्वर : हम आ गये हैं दूल्हे राजा। जैसा दूल्हा, वैसी बारात अच्छी लगती है। हम अलग ही चलेंगे।

नन्दी : अरे बारात में जाने वालो...एक-एक घूंट विजया की पी लो। वरना बारात में क्या मजा आएगा?

सूत्रधार

[मंच-5 से 4 पर होकर एक की ओर जाना।]

सो० : नाचहिं गावहिं गीत, परम तरंगी भू सब
देखत अति विपरीत, बोलहिं बचन विचित्र विधि।

चौ० : जस दूल्हा, तसि बनी बराता
कौतुक विविध होहिं मग जाता।

भूत . बारात में आये है तो नृत्य-गीत होना चाहिए। शुरू करो।

[वह नृत्य करता है। उसके साथ सभी नृत्य करते हैं।]

शियार : (भूत को खींचकर) आओ मित्र। ये कोई देवताओं की बारात नहीं है, आओ...

[नृत्य-आवाजें। मंच-1 पर प्रकाश।]

एक स्त्री : सखी, नाच-गाने की ध्वनि सुनाई दे रही है। चलो, बारात आ गई।

दो स्त्री : हां, हां...माँ तू भी आ जा। राजा के यहां बारात आ रही है।

एक स्त्री : अरे दइया! ये बहुरूपिया कौन है?

दो स्त्री : दूल्हा है।

एक स्त्री : अच्छा, ये दूल्हे राजा हैं। फूट गए भाग्य। राजा ने क्या देखा?

शियार : आप चाहो तो मैं भी दूल्हा बन जाऊँ?

स्त्री एक : मुंह देखा है दर्पण में।

नन्दी : अरे, हममें से जिसे चाहो, चुन लो।

स्त्री दो : तुम्हें तो मैं अपना हृदय दे बैठी हूँ...आओ, मण्डप में ही चलें।

भूत : मेरा ध्यान रखना, मैं दहेज नहीं माँगूंगा।

स्त्री : भूतनी कहां से लायें। हमारे यहां कोई भूतनी है नहीं।

बालक-1 : आजा···आजा···देख···वो···वो···जिसकी पूँछ मटक रही है—नन्दी है।

बालक-2 : अरे···ये कहाँ से आ गया···चलो इसे बाँध लेते हैं।

स्त्री-एक : हाँ, हरी घास जरूर खिलाना। अतिथि-सत्कार होना चाहिए ना!

बालक-1 : और···वो···।

बालक-2 : हैं!

भूत : हुः हुः हुः।

एक-दो : भागो रे। भूत है—भूत।

स्त्री दो : अरे डरो नहीं। बाराती हैं।

एक-दो : छोड़ दो···भूत है भूत···(भागते हैं।)

[शिव संकेत करते हैं तो बराती अनुशासन में आ जाते हैं।]

मैना : ये दूल्हा है या भिखारी। मेरी पुत्री के भाग्य ही खोटे हैं नाथ। आपने कैसा वर ढूंढा है?

हिमाचल : धैर्य रखो रानी। खेद न करो। मैं अगवानी के लिए जा रहा हूँ।

मैना : मैंने नारद का क्या बिगाड़ा था? जो उसने ऐसे बावले वर के लिए तपस्या करवाई।

स्त्री-1 : नारद को क्या मालूम? कुँवारे हैं, क्या जाने कि कोई बावला पति मिल जाए तो जीवन काटना कितना कठिन होता है। नारद का कहना क्यों माना? लड़का स्वयं देखना था।

स्त्री-2 : लड़कियों का भाग्य ही खोटा होता है। जहाँ बाँध दे वहीं निभाना पड़ता है। लड़का बावला हो तो कुछ नहीं, लेकिन कन्या में किंचित कमी हो तो त्याग देते हैं।

मैना : मेरी पुत्री के भाग्य में ये ही लिखा था क्या?

हिमांचल : दुख न करो देवि। यदि भाग्य में सुख लिखा है तो उमा के पाँव रखते ही जंगल ही मंगल हो जायेगा। उठो, दूल्हा हमारे द्वार पर है। उनकी आगवनी करो।

सूत्रधार

चौपाई : मैना शुभ आरती सँवारी,
सग सुमगल गावहिं नारी।
बैठे शिव विप्रन्ह सिर नाई,
हृदय सुमिरि निज प्रभु रघुराई॥

[द्वाराचार गीत।]

हिमाचल : उमा को ले आओ।

सूत्रधार

सुंदर गौर शरीर भूति भलि सोहइ,
लोचन भाल बिसाल बदनु मन मोहइ।
सैल कुमारि निहारि मनोहर मूरति,
सजल नयन हियँ हरषु पुलक तन पूरति।

सूत्रधार

ऊँ। मंगलम भगवान विष्णुः मंगलम गरुड़ध्वजः
मंगलम पुण्डरी काक्षायः मंगलाय तनो हरिः।
कुल देवताभ्यो नम। ग्राम देवताभ्यो नम (स्वर शनैः-शनैः धीमा होता है)

पार्श्व स्वर

जसि विवाह कै विधि श्रुति गई,
महामुनिन्ह सो सब करवाई।
गहि गिरीश कुस कन्या पानी
भवहि समरपी जानि भवानी।

[पुरोहित सूत्रधार है।]

सूत्रधार : अब उमा को दूल्हा के बाईं ओर बिठाकर उसका वरण वर करेंगे।

मैना : पुत्री उठो। वामांग हो जाओ। (उमा उठती नहीं है।)

[शांत वातावरण।]

सूत्रधार : हे उमा। यदि तुम्हें वामांग होने में प्रसन्नता न हो तो यह विवाह, धर्म, नीति और सामाजिक मान्यताओं के आधार पर वैध नहीं माना जाएगा।

हिमांचल : मेरी ओर देखो पुत्री। एक पिता अपनी सीमाओं में श्रेष्ठ वर ही खोजता है। नारद जी ने जो कुछ किया उसे दोहराना नहीं है।

मैना : मेरा मान रख लो उमा। वामांग हो जाओ। बेटी, मेरे मुँह को ओर देख।

[उमा सखियों से कुछ कहती हुई।]

स्त्री एक : मेरी सखि उमा, वामांग होने से पूर्व वर से कुछ कहना चाहती है। यदि उसे अनुमति हो तो कहेंगी। अन्यथा पुरोहित जी···

सूत्रधार : मैं इस विवाह को सम्पन्न कराने वाला ब्राह्मण, आश्वस्त करता हूँ कि मैं कन्या के समस्त हितों की रक्षा करते हुए वर से वार्ता के लिए अनुमति देता हूँ। राजन, आप धर्मानुसार मेरी व्यवस्था की रक्षा की प्रतिज्ञा लेने के लिए प्रतिबद्ध हैं। आप प्रतिज्ञा लीजिए।

हिमांचल : प्रतिज्ञा लेता हूँ पुरोहित जी।

सूत्रधार : निःशंक होकर कहो बेटी। क्योंकि समाज मे तुम्हें उतने ही *अधिकार है जितने वर को है।*

उमा : मैं वामांग होने के लिए मन-वचन-कर्म से तैयार हूँ। लेकिन मैं उससे पूर्व कुछ वचन चाहती हूँ।

मैना : कैसे वचन उमा? यदि वचन नही दिये गये तो···? तो क्या ये विवाह···

हिमांचल . उमा को बोलने दो, महारानी। हम कन्या पर अपने विचारो को आरोपित नही कर सकते हैं। फिर एक राजा के नाते मैं प्रतिबद्ध हो चुका हूँ। अब हमें मौन ही रहना चाहिए देवि।

सूत्रधार : क्या कहते हो महेश ? कन्या का प्रस्ताव स्वीकार है ?

शिव : क्या वचन चाहती है ? आप कहिए। यदि मेरे लिए सभव है तो मैं वचनबद्ध होता हूँ। यदि वचन न दे सकूँ तो कन्या स्वतत्र है। कहो देवि।

उमा : सात वचन चाहती हूँ आपसे।

शिव : आप कहो। मैं प्रयत्न करूँगा।

उमा : तीर्थ-यात्राओं, व्रत, यज्ञ, दान करते समय मुझे अपने साथ अवश्य रखेंगे।

शिव : वचन देता हूँ।

उमा : आप धर्म और सस्कृति मे विश्वास रखते हुए देवताओ तथा पितरों की पूजा करेंगे।

शिव : वचनबद्ध होता हूँ।

उमा : विवाह के पश्चात परिवार का निर्माण होता है। आप उसकी रक्षा करेंगे तथा पशुओ का भी पालन करेंगे।

शिव : करूँगा।

उमा : आप गृहस्थी सँभालें और उसके दायित्वों का निर्वाह करें।

शिव : वचन देता हूँ। आप शेष वचन एक साथ कहो देवि।

उमा : आप समाज के उत्तरदायित्व का निर्वाह करते हुए कुआँ, मदिर, सरोवर, उद्यान का निर्माण करायें। आप व्यापार करें और अर्जित धन से समाज की सेवा करें।

शिव : मैं दोनो वचन देता हूँ। अंतिम वचन देवि।

उमा : आप मेरे अतिरिक्त किसी को भी प्रिया नही बनायेंगे स्वामी।

शिव : प्रत्येक जन्म में, केवल तुम्हारा ही हूँ गिरिजा।

सूत्रधार

चौ० : पानिग्रहण जब कीन्ह महेसा,
हियँ हरषे तब सकल सुरेसा।

हरि गिरिजा कर भयऊ विवाहू,
सकल भुवन भरि रहा उछाहू ।।
[उमा वामांग जाते ही सिसकने लगती हैं ।]

हिमाचल : मैंने बेटी को बहुत लाड़-प्यार से पाला है महेश । उसमें कोई भूल हो जाये तो क्षमा कर दिया करना । अब सुखी रखना तुम्हारा धर्म है ।

शिव : चिन्ता न करें महाराज । मैं कभी कोई ऐसा अवसर नहीं आने दूंगा कि आपको कुछ कहना पड़े ।

मैना : (उमा से) अपने पति की सेवा करना । अब वही घर तेरा अपना है । कभी हमारी ठसक में कुछ नहीं बोलना । जो कन्याएँ माता-पिता की ठसक में होती है, उन्हें पति का विश्वास न मिलने पर कष्ट उठाना पड़ता है ।

उमा : कभी शिकायत नहीं आने दूंगी माँ ।

मैना : बेटी···

सूत्रधार

जननिहि बहुरि मिलि चली, उचित असीस सब काहू दई
फिरि-फिरि बिलोकित मातु तन सब सखी लें शिव पहीं गई
जाचक सकल संतोष संकरु उमा सहित भवन चलें
सब अमर हरषे सुमन बरषि निसात नभ बाजे भले ।

[बारात विदा होकर मंच-3 एवं 4 से होकर पाँच पर पहुँचती है । मंच-5 पर प्रकाश ।]

जबहिं संभु कैलासहिं आये ।
सुर सब निज-निज लोक सिधाये ।
जगत मातु पितु संभु भवानी ।
तेहिं सिंगारु न कहऊ बखानी ।
पारबती भल अवसर जानी ।
गई सम्भु पहिं मातु भवानी ।
जानि प्रिया आदर अति कीन्हा ।
बाम भाग आसनु हरि दीन्हा ।
पति हिय हेतु अधिक अनुमानी ।
विहसि उमा बोली प्रिय बानी ।

उमा : आपने 'कथा राम की' सुनाने के लिए कहा था । आज सुनाइये··· ना ।

शिव : कौन-सी कथा सुनना चाहती हो उमा ? श्री राम की कथायें

अनंत हैं। प्रत्येक कथा मे श्री राम हैं।

उमा : आप रघुकुल शिरोमणि श्री राम की कथा सुनाओ नाथ।

शिव : गिरिजा सुनहु राम की लीला,
सुर हित दनुज विमोहन शीला।

उमा : नाथ, धरेहु, नर तनु, केहि हेतु,
मोहि समुझाइ कहहु वृप केतु।

शिव : जनम एक दुई कहऊ बखानी।
चौ० सावधान सुन सुमति भवानी।
नारद श्राप दीन एक बारा।
कलप तेहि एक लगि अवतारा।
एक कारण अज अगुन अरूपा।
ब्रह्म भयउ कोसलपुर भूपा।
द्वारपाल हरि के प्रिय दोऊ।
जय अरु विजय जान सब कोऊ।
दोहा : भए निसाचर जाइ तेइ महावीर बलवान।
कुंभकरण रावन सुभट सुर विजई जगजान॥

उमा : रावण-कुंभकरण! ये कौन थे?

शिव : रावण पूर्व जन्म मे सत्यकेतु था उमा। सत्यकेतु का अनुज अरिमर्दन कुंभकरण था। इनका सचिव तथा धर्म रुचि विभीषण हुआ। ये तीनो ही महान थे।
कीन्ह विविध तप तीनिहुँ भाई।
परम उग्र नहि वरनि सो जाई॥
उन्होंने तपस्या के बल पर ब्रह्मा जी से वर प्राप्त कर लिए थे।

उमा : महा तपस्वी रावण ने क्या वर माँगा नाथ?

शिव : हम काहूँ के मरहिं न मारे। वानर मनुज जाति दुई वारे।

उमा : महाबली कुंभकरण ने क्या माँगा?

शिव : उसकी बुद्धि शारदा ने भ्रमित कर दी और नींद माँग बैठा उमा। केवल विभीषण ने भगवान की भक्ति का वर माँगा।

उमा : ये महातपस्वी तो जगत-वंदनीय हुए होंगे।

शिव : हाँ। रावण जैसा महाज्ञानी, प्रकाण्ड विद्वान, वेदों का ज्ञाता अन्य कोई ब्राह्मण उस समय था ही नही, उमा।

शिव : हाँ उमा। उस समय राक्षस सस्कृति अपने चरम उत्कर्ष पर थी। उसकी ख्याति सुनकर ही सुदूर पश्चिम के दानव राजा मय ने अपनी श्रेष्ठ कन्या रावण को ब्याह दी थी। दानव-राज ने त्रिकूट पर्वत पर श्रेष्ठ नगर का निर्माण भी कराया था। वहाँ के राजा कुबेर ने रावण को अपने पास ही रख लिया था। रावण भी

अनेक सिद्धियों और तपस्याओं में लगा रहता था। उसने मुझे भी प्रसन्न कर लिया था, उमा।

[मंच-5 पर प्रकाश मद्धिम और 3 पर पूर्ण।]

रावण : जटा कटाह सम्भ्रम भ्रमन्नितलिम्प निर्झरीविलोल वीचिवल्लरी विराजमान मुर्द्धनि।

धगद्धगद्धगज्जवल ललाटपट्ट पावके किशोरचंद्रशेखरे रतिः प्रतिक्षणं मम्।

कदा निलिम्प निर्झरी निकुंज कोटरे वसन विमुक्ति दुर्मतिः सदा शिरः स्थमंज्जलि वहन।

विलोल लोल लोचनो ललाम भाल लग्न लग्नकः शिवेति मन्त्र-मुच्चरन् कदा सुखी भवाम्यहम्।

राक्षस-1 : कैलाशपति भगवान शंकर, महातपस्वी रावण पर प्रसन्न हुए।

राक्षस-2 : राक्षस जाति को गर्व है कि इस समाज में रावण जैसा महातेजस्वी, मायावी, विद्याओं का ज्ञाता, नूतन अनुसंधानकर्ता, महातांत्रिक, महापंडित है।

राक्षस-3 : जय हो······जय हो। ऋषि पुलस्ति के वंशज राक्षस श्रेष्ठ आपकी जय हो।

राक्षस-4 : समस्त दिशाओं में वंदनीय राक्षस कुलभूषण रावण तुम्हारी जय हो।

[मंच-3 पर प्रकाश मद्धिम एवं मंच-5 पर पूर्ण।]

उमा : रावण जैसे श्रेष्ठ युवक को पाकर राक्षस धन्य हो गये नाथ।

शिव : हाँ उमा। रावण विधाता ब्रह्मा जी को और मुझे भी प्रिय हैं। ये मेरा अनन्य भक्त भी है पार्वती। लेकिन इसने अपनी शक्तियों का सदुपयोग नहीं किया। जब किसी के पास शक्ति हो तो उसे अहंकारी नहीं होना चाहिए। पद शक्ति, धन का अहंकार, अव-नति का कारण बनता है प्रिये। यदि कोई बलवान है तो उसे समाज की रक्षा करना चाहिए। यदि धन है तो पीड़ितों की सेवा में व्यय करो। सिद्धियाँ है तो जग का संताप हरो।

उमा : इसके विपरीत कौन है नाथ?

शिव : राजसत्ता प्रमुख, उसके अधिकारी। जब उन्हें कर्तव्य का बोध नहीं होता है तो वे भय पैदा करते हैं। भय अविश्वास का जनक है। अविश्वास आस्थाओं को खंडित कर देता है पार्वती। दूसरों को आतंकित करने वाला स्वयं भी आतंकित रहता है।

उमा : रावण से इसका क्या संबंध है?

शिव : संबंध है। वह सिद्धियाँ-शक्तियाँ पाकर मदांध हो गया और उसने जिस थाली में खाया उसी में छेद किया।

उमा : अर्थात्।

शिव : उसने कुबेर से लंका का राज्य और अलकापुरी छीन ली।

उमा : फिर !

शिव : फिर क्या।

[मंच-3 पर प्रकाश। मंच पाँच पर मद्धिम प्रकाश।]

राक्षस-1 : सावधान। लंकापति महाराज रावण के पुत्र ने इन्द्र को परास्त कर दिया है।

राक्षस-2 : राक्षस राज रावण ने यमराज, देवताओं, यक्षो को अपने अधीन कर लिया है।

राक्षस-3 : महाराज, रावण की जय हो। आप कुछ चिंतित हैं।

रावण : लंकेश चिंतित। हाँ। नहीं। चिंतित नहीं हूँ, विचार कर रहा हूँ।

राक्षस-4 : कैसा विचार महाराज ?

रावण : अब तीनों लोकों में ऐसा कोई नहीं है जिसे हमने छल, बल अथवा माया से जीत न लिया हो लेकिन···

राक्षस-1 : 'लेकिन'। आपके मुख से 'लेकिन' शोभा नहीं देता है लंकेश।

रावण : अवश्य शोभा नहीं देता। राक्षस राज और संस्कृति में 'लेकिन' का अर्थ होना भी नहीं चाहिए। फिर भी···

राक्षस-2 : फिर भी क्या महाराज।

रावण : जब तक आर्य संस्कृति है तब तक हमें खतरा बना रहेगा।

राक्षस-3 : किस आर्य राजा का भय है आपको ? कौन साहस कर सकता है ?

राक्षस-4 : आप आज्ञा दें लंकेश। हम उस राजा का वध कर देंगे।

रावण : राजा का भय नहीं है।

राक्षस-1 : फिर किसका भय है महाराज ?

रावण : हमें ऋषियों-मुनियों की नई सिद्धियों, अनुसंधानों और यज्ञों से भय है। इस समय दो महानतम शस्त्र भी उनके पास हैं।

राक्षस-2 : महानतम शस्त्र।

रावण : हाँ। भगवान शंकर का धनुष जनकपुर में है जो इस युग का आधुनिकतम शस्त्र है।

राक्षस-3 : और दूसरा शस्त्र।

रावण : ब्राह्मण परशुराम जी के पास है।

राक्षस-4 : इनसे कैसा भय ? जनकपुर से आपकी शत्रुता नहीं है। परशुराम जी ब्राह्मणों पर शस्त्र नहीं उठाते हैं।

रावण : यह सत्य है। ये शस्त्र किसी अन्य राजा को प्राप्त हो गये तो ? ऋषियों-मुनियों ने अनुसंधानों द्वारा नई सिद्धियाँ प्राप्त कर ली तो ?

राक्षस-1 : आप आदेश करें महाराज।

रावण : आर्य संस्कृति को परिवर्तित करने के लिए उन्हें शक्तिहीन करना होगा। उनमें हमारा भय बना रहना चाहिए। इसलिए घोषणाएँ की जाएँ।

राक्षस-2 : आज से यज्ञ बंद।

राक्षस-3 : यदि यज्ञ होते देखे जाएँ तो विध्वंस कर दिये जायेंगे।

राक्षस-4 : आर्यों को लूट लिया जाये। उनकी कन्याओं और स्त्रियों का हरण कर लिया जाय।

राक्षस-1 : आश्रमों को विध्वस कर दिया जाये।

राक्षस-2 : सीमात राष्ट्रों के अधिकारियों को धन, मदिरा और कामिनी के माध्यम मे अधीन कर लिया जाये।

रावण : मेरा आदेश है, ऋषियो पर विशेष दृष्टि रखी जाए। उनके वैज्ञानिक परीक्षण, अनुसंधान, यज्ञ पूर्ण न होने पायें। उत्तर दिशा में ताडिका, मारीच, सुबाहु, वहिन शूर्पणखा, खर और दूषण को समस्त अधिकार रहेंगे ताकि सास्कृतिक परिवर्तन की प्रक्रिया तेज हो। ये मेरे प्रतिनिधि होंगे।

पार्श्व : जेहिं विधि होई धर्म निर्मूला,
तो सब करहिं बेद प्रतिकूला।
जेहिं जेहिं देस धेनु द्विज पावहिं।
नगर गाऊ पुर आग लगावहिं।
बाढ़े खल बहु चोर जुआरा।
जे लंपट परधन पर दारा।

[मंच पांच पर प्रकाश। मंच तीन पर मद्धिम प्रकाश।]

शिव : इस तरह पृथ्वी पर आतक का राज्य स्थापित हो गया। राक्षस-युवक, माता-पिता की अवज्ञा करते थे। ऋषियो-मुनियों से सेवा लेते। आर्य स्त्रियो से बलात्कार, सर्वत्र मदिरा पान, लूटपाट, चोरी, हत्याएँ और अपहरण की घटनाये घटने लगी थीं।

उमा : इससे तो आर्य संस्कृति नष्ट होने लगी होगी स्वामी।

शिव : हाँ, उमा।

उमा : बुद्धिजीवियों ने कुछ नही किया ?

शिव : कुछ ने राज सुख के लिए जोड़-तोड़ कर ली। कुछ राक्षस सस्कृति का यशगान करने लगे। जो बचे थे, वे उपेक्षा और यातना के शिकार हुए।

उमा : फिर इस पृथ्वी का क्या हुआ ?

शिव : अतिसय देखि, धर्म की ग्लानी।
परम सभीत धरा अकुलानी।

धेनु रूप धरि हृदय बिचारी।
गई जहाँ तहँ सुर मुनि धारी।
तेहि समाज गिरिजा मैं रहेऊ।
अवसर पाइ वचन एक कहेऊ।
हरि व्यापक सर्वत्र समाना।
प्रेम तें प्रगट होंहि मैं जाना।

उमा : फिर।

शिव : सभी ने भगवान से प्रार्थना की।

[मंच तीन पर प्रकाश। पाँच पर मद्धिम प्रकाश।]

छंद : जय जय सुर नायक जन सुखदायक प्रनत पाल भगवंता।
गो द्विज हितकारी जय असुरारी सिंधुसुता प्रिय कंता।
पालन सुर धरनी अद्भुत करनी मरम न जानइ कोई।
जो सहज कृपाला दीन दयाला करउ अनुग्रह सोई।

जेहि सृष्टि उपाई त्रिविध बनाई संग सहाय न दूजा।
सो करउ अघारी चिंत हमारी जानइ भगति न पूजा।
जो भव भय भंजन मुनि मन रंजन गंजन बिपति बरूथा।
मन क्रम बच बानी छाड़ि सियानी सरन सकल सुरजूथा।

सारद श्रुति सेषा रिषय असेषा जा कहुँ कोउ नहिं जाना।
जेहि दीन पिआरे वेद पुकारे द्रवउ सो श्री-भगवाना।
भव बारिधि मंदर सब विधि सुंदर गुन मंदिर सुखपुंजा।
मुनि सिद्ध सकल सुर परम भयातुर नमत नाथ पद कंजा।

आकाशवाणी

[मंच तीन के केन्द्र में गोलाकार प्रकाश जो निर्गुण ब्रह्म का संकेत है।]

जनि डरपहु मुनि, सिद्ध सुरेसा
तुम्हहिं लागि धरिहउ, नर बेसा।
अंसन्ह सहित मनुज अवतारा।
लेहउ दिनकर बंस उदारा।
कस्यप आदिति महातप कीन्हा।
तिन्ह कहुँ मैं पूरब बर दीन्हा।
ते दशरथ कौशल्या रूपा।
कोसलपुरी प्रगट नर भूपा।
तिन्हकें गृह अवतरिहउँ जाई।
रघुकुल तिलक सो चारिउ भाई।
नारद वचन सत्य सब करिहउँ।
परम शक्ति समेत अवतरिहऊ।

हरिहऊँ सकल भूमि गुरु आई।
निर्भय होहु देव समदाई।

[मंच पाँच एवं तीन पर अँधेरा। एक पर प्रकाश।]

1 गीत

सरयू तट सँचरी।
अयोध्या मनु निर्मित नगरी।

दशरथ : आप उदास लग रही हो कौशल्ये। क्या बात है? मुझे नहीं कहोगी?

कौशल्या : कुछ नहीं महाराज। बस यूँ ही।

दशरथ : मन की पीड़ा को दबाना उचित नहीं होता, महारानी। कहीं ऐसा तो नहीं कि आप मुझे अपनी उदासी का कारण बताने योग्य नहीं समझती हों।

कौशल्या : कैसे हो सकता है? आपसे अधिक प्रिय और कौन है? किन्तु कभी-कभी लगता है कि जीवन में कहीं खालीपन है।

दशरथ : खालीपन। समझा नहीं महारानी।

कौशल्या : एक रिक्तता है मुझ में। स्त्री होकर भी अपूर्ण हूँ। स्त्री की पूर्णता उसके मातृत्व में है। किन्तु मैं अभागी, एक अपूर्ण स्त्री हूँ महाराज।

दशरथ : महारानी।

कौशल्या : यह अपूर्णता अब खलती है। जब लता को फूलों से लदा देखती हूँ तो लगता है कि काश मैं माँ होती तो लता के समान खिलती और इस सूर्यवंश का सौरभ चारों ओर फैल जाता।

दशरथ : कौशल्ये।

कौशल्या . मृगशावक को देखकर लगने लगता है कि काश मेरे भी पुत्र होता तो यह प्रासाद उसकी चपलता से जीवंत हो जाता। लेकिन···मैं ···पाषाण खंड। एक शिलाखंड भी नहीं। शिला से जन्म लेती है प्रतिमा। किन्तु मुझसे ··अपूर्ण स्त्री। गर्भहीन। अर्थहीन।

दशरथ : इस तरह न सोचो कौशल्या। मैं भाग्यहीन हूँ। यद्यपि एक प्रभुता सम्पन्न सम्राट हूँ। लेकिन सब व्यर्थ है। किसके लिए प्रभु-सपन्नता··· किसके लिए···क्या होगा इस सबका···?

कौशल्या : आपका क्या दोष है महाराज? मैं ही अपूर्ण स्त्री हूँ।

दशरथ : कैसे कह सकती हो तुम? यदि अपूर्ण हो तो क्या कैकई, सुमित्रा —सब अपूर्ण हैं? सिर्फ मैं पूर्ण और मेरी तीन-तीन पत्नियाँ··· अपूर्ण!

कौशल्या : आप पूर्ण पुरुष है···खोट तो···

दशरथ : नहीं। खोट किसी मे नहीं है कौशल्ये। किसी मे नहीं। खोट

हमारे भाग्य में है। सतति योग्य होने पर भी संतति हीन हूँ मैं। यह सिर्फ कर्मफल अथवा भाग्य का फल है। सारे प्रयत्न विफल हो गए···अब वृद्धावस्था भी है। मेरी चिता को मुखाग्नि कौन देगा ?

कौशल्या : राजन···ऐसा न कहिये। भगवान के लिए चुप हो जाइये।

दशरथ : कह लेने दो रानी। यह सब मेरे कारण ही है। काश तुम्हारा विवाह अन्यत्र होता तो कम से कम तुम्हें यह यातना तो न भोगनी पड़ती।

कौशल्या : चुप हो जाइये महाराज। भगवान के लिए चुप हो जाइये। मेरे कारण आपको इतनी पीड़ा···

दशरथ : पीड़ा। सहन नहीं होती है। कभी-कभी लगता है ये राज्य, यह वैभव, सब एक स्वप्न है। मैं किसलिए जीता हूँ, अब ? मेरे पश्चात यह रघुवंश समाप्त हो जाएगा ? हमारा नाम लेवा और पानी देवा···कोई नहीं है कौशल्या। हम कितने असहाय हैं।

कौशल्या : आप निराश न हों राजन। अब तक हमने औषधिजन्य उपक्रम किए हैं। हमें कुछ जप, तप, यज्ञ भी करना चाहिए। क्या पता ? आयु के उत्तरार्द्ध में ही भगवान हमारी सुन लें।

दशरथ : मैं चुप नहीं बैठा हूँ। सुमन्त गये हुए हैं।

कौशल्या : कहाँ गये हैं ?

दशरथ : ऋष्यश्रृंग मुनि को लेने ?

कौशल्या : ऋष्यश्रृंग मुनि···हमारी पुत्री शांता के पति ?

दशरथ . हाँ, कौशल्या। अंगदेश से मित्रता के कारण, वे हमारे जामाता हैं। यदि वे आ गए तो पुत्रेष्टि यज्ञ होगा। हम उनकी प्रतीक्षा में हैं। और यदि वे न आए···तो···ऐसे ही एक दिन मर जाना होगा।

पार्श्व स्वर : सावधान। महामंत्री सुमन्त, महाराज के जामाता ऋष्यश्रृंग मुनि एवं कुलगुरु वशिष्ठ पधार रहे हैं।

दशरथ : कौशल्ये···मुनि आ गए···कौशल्ये···

[ऋषि का अभिवादन करते हैं। कौशल्या मुनि के चरण स्पर्श करती हैं।]

ऋष्यश्रृंग : पुत्रवती भव:।

वशिष्ठ : मुनिवर ?

ऋष्यश्रृंग : मुनिकथन मिथ्या नहीं होता है कुलगुरु। आइये यज्ञशाला चलें और कार्य पूर्ण करें।

ऋष्यश्रृंग : मंत्र

ॐ भूर्भुव: स्व: तत्सवितुर्वरेण्यम्···

[स्वर तेज से धीमा होता है।]

सूत्रधार

पुत्रेष्टि यज्ञ से हो प्रसन्न,
प्रकटे लेकर पायस-अन्न।
अग्नि देव ने किया धन्य,
रघुवंश हुआ इस तरह धन्य।

सूत्रधार : मैं सरयू हूँ। मैंने महाराज दशरथ का पराक्रम, उनकी पीड़ा,
(सरयू) राज्य व्यवस्था, यज्ञ आदि देखा है।
जा दिन तें, हरि गर्भहिं आए, सकल लोक सुख सम्पत्ति छाए।

जोग लगन ग्रह वार तिथि सकल भए अनुकूल।
चर अरु अचर हर्ष जुत राम जनम सुख मूल॥

नौमी तिथि मधु मास पुनीता।
सुकल पच्छ अभिजित हरि प्रीता।
मध्य दिवस अति सीत न घामा।
पावन काल लोक बिश्रामा।

स्त्री-1 : आज मन प्रसन्न है सखि।
स्त्री-2 : क्यों? क्या बात है? कोई संदेशा है क्या?
स्त्री-1 : कारण ज्ञात नहीं। लेकिन बहुत अच्छा लग रहा है।
स्त्री-2 : आज मौसम अच्छा है ना। देख। न अधिक धूप है और न शीत। अवध के उद्यानों में फूल ही फूल खिले हैं ना।
स्त्री-1 : आज ऐसा नहीं लगता, जैसे दिन बहुत बड़ा हो गया है?
स्त्री-2 : दिन बड़ा! हाँ···लगता तो है। आज क्या बात है?
सूत्रधार (स०) : तुम कहो तो मैं बताऊँ?
स्त्री-1 : अरे! सरयू देवी आप। प्रणाम।
सूत्रधार (स०) : कारण बताऊँ।
स्त्री-2 : हाँ, हाँ, बताइये। क्या कारण है?
सूत्रधार (स०) : आज कौन-सी तिथि है?
स्त्री-1 : चैत्र मास की नवमी।
सूत्रधार : राजा के यहाँ आज···

पार्श्व स्वर

छंद : भए प्रगट कृपाला दीनदयाला कौसल्या हितकारी।
हरषित महतारी मुनिमन हारी अद्भुत रूप बिचारी॥
लोचन अभिरामा तनु घनु स्यामा निज आयुध भुजचारी।
भूषन बनमाला नयन बिसाला सोभा सिंधु खरारी॥
कह दुइ कर जोरी अस्तुति तोरी केहि बिधि करौं अनंता।
माया गुन ग्यानातीत अमाना बेद पुरान भनंता॥

करुना सुख सागर सब गुन आगर जेहि गावहिं श्रुति संता।
सो मम हित लागी जन अनुरागी भयउ प्रगट श्रीकंता॥

दासी-1 : बधाई हो महाराज। महारानी कौशल्या ने पुत्र को जन्म दिया है।

दशरथ : प्रभु। आपकी कृपा।

दासी-2 : बधाई हो महाराज। महारानी कैकई ने पुत्र को जन्म दिया है।

दासी-3 : बधाई हो—बधाई। महाराज आपकी रानी सुमित्रा के दो पुत्र हुए हैं।

दशरथ : महामंत्री।

सुमन्त : बधाई हो महाराज। बधाई।

दशरथ : सुमन्त जी। ब्राह्मणों को उपहार भेंट किए जाएँ। राज्य के निर्धन परिवारों मे मेरे व्यक्तिगत कोष का सम्पूर्ण धन बांट दिया जाए। राज्य के समस्त अधिकारियो और कर्मचारियों का पारिश्रमिक बढ़ा दिया जाए।

सुमन्त : जो आज्ञा महाराज।

दशरथ : और सुनो। मंदिरों में विशेष पूजा की जाए। बंदियों को कारागृह से मुक्त कर दिया जाए।

सुमन्त : जो आज्ञा।

दशरथ : मुनि ऋष्यश्रृंग, कौशलपुर, कैकई-प्रदेश, और सुमित्रा देवी के यहाँ संदेश भेज दिए जायें।

[नागरिकों का प्रवेश।]

नागरिक : बधाई भइया। बधाई हो। भइया नाचो-गाओ।

स्त्रियाँ : राजा के जनमे हैं राजकुमार,
सखी, संग-संग नाचो।

पुरुष : ऐ राजा के जनमे राजकुमार,
कि भैया हम-संग नाचो।

[मंच एक पर प्रकाश।]

गीत

जागिए कृपानिधान जानराय रामचन्द्र।
जननि कहै बार-बार, भोर भयो प्यारे।
राजिव लोचन विसाल, प्रीति-वापिका मराल।
ललित कमल-वदन ऊपर मदन कोटि वारे॥
बोलत खग निकर मुखर, मधुर करि प्रतीत सुनहु
स्वजन, प्रान जीवन धनु मेरे तुम बारे
मनहुँ वेद बंदी मुनिवृंद सुत मागधादि
बिरुद-वदन जय जय जय जयति कैंट भारे।

सुनत वचन, प्रिय रसाल, जागे अतिशय दयाल
भागे जंजाल विपुल दुख कदम टारे
तुलसिदास अति अनन्द, देखिकै मुखार बिन्द
छूटे भ्रमफन्द परम मन्द द्वन्द्व भारे।

राम : प्रणाम माँ।

कौशल्या : आयुष्मान भवः। विजयी भव।

राम : प्रणाम पिताजी।

दशरथ : यशस्वी भवः।

कौशल्या : कहाँ जा रहे हो राम?

राम : दोनो माताओं और गुरुदेव को प्रणाम करने।

दशरथ : कुलगुरु ने इसका नाम बहुत विचार कर ही रखा होगा कौशल्या। 'राम'। उसका नाम कोई लेता है तो आत्मा को एक दिव्य सुख की अनुभूति होती है।

कौशल्या : आप पिता हैं ना, इसलिए। आपके चारो बेटों की कीर्ति, सूर्यवंश का नाम, दसों दिशाओं में सुगंध की भाँति फैलेगा महाराज। आप देखना।'''

दशरथ : एक पिता और क्या चाहता है? यही ना, कि उसकी संतान शिक्षित हो, अच्छे संस्कार ग्रहण करे, अपने कर्तव्य का पालन करते हुए परिवार, समाज और अपने देश की सेवा करे। गुरुदेव की कृपा से, ये चारो विद्या ग्रहण कर ही चुके हैं। इन भाइयों में अनन्य प्रेम है। लक्ष्मण, राम को बहुत प्रेम करता है।

कौशल्या : भरत भी उतना ही प्रेम करता है। शत्रुघ्न पर ध्यान दिया आपने।

दशरथ : क्यों? क्या बात है?

कौशल्या : चिन्ता का प्रश्न नही है। शत्रुघ्न, भरत के आगे-पीछे ही रहता है।

दशरथ : भगवान की कृपा है। वृद्धावस्था में संतान का सुख दिखाया। मुझे कभी-कभी चिंता होती थी कौशल्या!

कौशल्या : चिन्ता। कैसी चिन्ता महाराज?

दशरथ : सोचता था कि प्रासाद के ऐश्वर्य और हमारा पुत्र मोह, बच्चों को उद्दण्ड और उच्छृ खल न बना दे। ये बच्चे भोग-विलास, आमोद-प्रमोद की ओर न चले जाएँ।

कौशल्या : ऐसा क्यो सोचा, आपने?

दशरथ : जहाँ प्रभुता, आर्थिक सम्पन्नता होती है, वहाँ बालकों में कुसंस्कार शीघ्र पैदा होने हैं महारानी। माता-पिता अपने में मस्त और व्यस्त हो तो बालको का निर्माण ठीक नही होता है।

कौशल्या : यह तो माता-पिता का दोष है।

दशरथ : हाँ है। लेकिन माता-पिता अपने दायित्व से बचने के लिए कभी आचार्यों को और कभी बच्चों को दोषी ठहराते है।

कौशल्या : आपने कभी सोचा है कि राम बडा हो रहा है। उसे कुछ दायित्व दिया जाना चाहिए।

दशरथ : हाँ। सोचा है। राम को राज्य के लोकहितकारी कार्य सौंपने जा रहा हूँ ताकि उसे जनता के दुख-सुख ज्ञात हो सकें।

कौशल्या : भरत भी एक दिन ही छोटा है राम से। उसे ?

दशरथ : उसे रक्षा व्यवस्थाएँ सौंप रहा हूँ।

कौशल्या : तो क्या मेरा भरत, युद्ध लड़ेगा।

दशरथ : नही कौशल्या। भरत के अधीन रक्षा व्यवस्था आते ही एक लाभ यह होगा कि कैकई नरेश के हृदय में यदि अपनी पराजय का क्षोभ होगा भी तो भानजे के कारण संघर्ष की भावना समाप्त हो जाएगी।

कौशल्या : अब ऐसा क्यो सोचते है? जब आपने परास्त किया था तब उन्होंने संधि की थी। आप उनके जमाता भी है। फिर भी···

दशरथ : संधि विवशता थी कौशल्या। इसलिए कैकई नरेश उस अपमान का बदला लेने का विचार कभी कर सकते है। तुम देखना 'भरत' हमारे मध्य के अन्तराल को पाट देगा। फिर सेना का प्रमुख शांत स्वभाव का भी होना चाहिए। भरत मे यह गुण है।

कौशल्या : जैसी आपकी इच्छा। मैं तो कहती हूँ कि अब हमे यज्ञ करना चाहिए।

सूत्रधार

कछुक दिवस, बाते एहि भाँति। जात न जानिअ दिन अरु राति।
कछुक काल बीतें सब भाई। बड़े भए परिजन सुखदाई।
विद्या विनय निपुन गुन सीला। खेलहिं खेल सकल नृपलीला।
करतल बान धनुष अति सोहा। देखत रूप चराचर मोहा।
यह सब चरित कहा मैं गाई। आगिलि कथा सुनहु मन लाई।
जंह जंह यग्य योग मुनि करही। निश्चिर सकल मनहिं मन डरही।
विश्वामित्र महामुनि ज्ञानी। वसहिं विपिन सुभ आश्रम जानी।

[मंच एक पर अँधेरा हो जाता है और मंच तीन पर प्रकाश होता है, जहाँ विश्वामित्र दिखाई देते हैं।]

ऋषि-1 : त्राहिमाम्···त्राहिमाम् ब्रह्मर्षि।

विश्वामित्र : निर्भय हो ऋषिगण। कहो, क्या विपदा है?

ऋषि-2 : विपदा एक ही है—राक्षसो का आतंक ब्रह्मर्षि।

विश्वामित्र : क्या हुआ?

ऋषि-1 : वही···जो प्रतिदिन होता है। हमने यज्ञ आरंभ किया और···

विश्वामित्र : और······?

ऋषि-1 : मारीच और सुबाहु के सैनिकों ने दो ब्रह्मचारियों को मार डाला।

विश्वामित्र : मार डाला ··क्या वहाँ आर्य सैनिक नहीं थे ?

ऋषि-2 : थे ब्रह्मर्षि ?

विश्वामित्र : थे ! फिर उन्होंने तुम्हारी रक्षा नहीं की ?

ऋषि-1 : वे दूरस्थ खड़े होकर देखते रहे। राक्षसों ने जाते समय उनसे कुछ बातचीत भी की।

विश्वामित्र : आर्य सैनिकों से बातचीत···! आपने उनसे रक्षा की माँग की ?

ऋषि-2 : हाँ। उस क्षण भी की, जब राक्षसों ने हमारे सामने ब्रह्मचारियों के पेट फाड़ डाले फिर उनका मांस-रक्त हवा में उछालते हुए यज्ञ में डाल दिया। हमने बाद में आर्य सैनिकों से भी कहा।

विश्वामित्र : तो······?

ऋषि-2 : उन्होंने कहा कि छावनी जाकर घटना सुना देना······

विश्वामित्र : तुम वहाँ गए।

ऋषि-1 : गए थे। लेकिन वहाँ हमें दीवार की ओर मुँह करके बैठाए रखा। ···सैनिकों ने अपशब्दों का प्रयोग किया······

ऋषि-2 : उन्होंने कहा कि हम राक्षसों का अपयश फैलाते हैं···एक ने कहा कि तू यहाँ यज्ञ करता ही क्यों है···पुनः आया तो चमड़ी खींच लूँगा। हमें ढोंगी और पाखण्डी कहा।

विश्वामित्र : ऐसा ?

ऋषि-2 : हाँ ब्रह्मर्षि। अब हमारा कोई रक्षक नहीं है···

विश्वामित्र : धैर्य रखो। जब सुरक्षा कर्मी असामाजिक तत्त्वों से साँठ-गाँठ कर लेते है तो समाज को ये ही दिन देखने पड़ते हैं···लेकिन याद रखो···एक दिन ये सुरक्षाकर्मी भी इन्हीं राक्षसों के हाथ अपने प्राण गँवा बैठेंगे। आप निर्भय होकर सिद्ध आश्रम में रहिए।

ऋषि-1 : राक्षसों की दृष्टि में आप खटक रहे हैं, क्योंकि आप ही राक्षसों का प्रतिकार करते है। जो लोग आपकी सहायता करते हैं, वे उन्हें लूट लेते हैं, उनकी स्त्रियों के साथ सामूहिक बलात्कार करते है, झोपड़ियों में आग लगा देते है···मार डालते हैं।

विश्वामित्र : मैं जानता हूँ। इसलिए सभी सहयोगियों को आश्रम के निकट रखता हूँ।

ऋषि-2 : राक्षस आपसे कुपित है। वे आपका कुछ बिगाड़ नहीं सकते, इसलिए बदला हम सबसे निकालते हैं।

ऋषि-1 : वे आपके अनुसंधानों, प्रयोगों, नवसिद्धियों के सफल यत्न देखकर विचलित हो रहे है। आज उनका आतंक व्याप्त है। हमारे प्राण

जब संकट में होते है तब हम आश्रम की ओर भागते है लेकिन···

विश्वामित्र : लेकिन···कहो ऋषिवर।

ऋषि-1 : अब यह आश्रम भी सुरक्षित नही है ब्रह्मर्षि। मारीच और सुबाहु इस आश्रम को ध्वस्त करने की योजना बना रहे है। यहां कभी भी आक्रमण हो सकता है।

विश्वामित्र : हमें किसी राजा की सहायता लेनी पड़ेगी।

ऋषि-2 : कौन सहायता करेगा ? राजा भी प्राण के भय से मौन है। उनके कुछ अधीनस्थो ने आतकवादी राक्षसो से सांठ-गांठ कर ली है और कुछ स्वयं भयभीत हैं।

ऋषि-1 : आप सर्वश्रेष्ठ है। कोई रास्ता खोजिए विश्वामित्र। रक्षा कीजिए···रक्षा।

विश्वामित्र : क्या करूँ ? ब्रह्मर्षि हूँ, शस्त्र भी नहीं उठा सकता। यदि शस्त्र न उठाऊँ तो सांस्कृतिक परिवर्तन हो जाएगा जो जाति और देश के लिए मृत्यु तुल्य है। क्या करूँ ? शस्त्र उठाता हूँ तो सम्पूर्ण तपस्या अर्थहीन हो जाएगी···

सूत्रधार

गाधि तनय मन चिंता ब्यापी।
हरि बिनु मरहिं न निसिचर पापी।
तब ऋषिवर मन कीन्ह बिचारा।
प्रभु अवतरेउ हरन महि भारा।
एँहू मिस देखौं पद जाई।
करि बिनती आनौ दोऊ भाई।
ज्ञान बिराग सकल गुन अयना।
सो प्रभु मैं देखब भरि नयना।

बहुबिधि करत मनोरथ, जात लागि नहिं बार।
करि मज्जन सरऊ जल, गए भूप दरबार।

मुनि आगमन सुना जब राजा।
मिलन गयउ लै बिप्र समाजा।
करित दण्डवत मुनिहि सनमानी।
निज आसन बैठारेन्हि आनी।

[मंच तीन पर प्रकाश मद्धिम। मंच एक पर प्रकाश।]

विश्वामित्र : राजन तुम्हारा परिवार और प्रजा सुखी तो है, या उन्हें किसी प्रकार का भय रहता है। तुम्हारी प्रजा तुम पर विश्वास करती है या मन मे कोई संदेह रहता है। तुम्हारे मंत्री तुम्हें उचित और योग्य परामर्श ही देते हैं ना, या वे स्वयं भ्रष्ट होकर अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए तुम्हारी झूठी प्रशंसा करते है।

दशरथ : अवध पर आपकी कृपा है महर्षि । आपके आगमन से यह प्रासाद तीर्थ हो गया । आपके आगमन का क्या उद्देश्य है ब्रह्मर्षि ? आदेश दें । आपके चरणों में यह राज्य समर्पित है और मैं वचनबद्ध हूँ ।

विश्वामित्र : तुम्हारी यह भावना प्रशंसनीय है राजन् । जो राजा, राजसत्ता को सेवा का माध्यम समझता है, वही तीनों लोको में प्रसिद्ध होता है । जो सत्ता को अवसर मानकर अपने सुख के साधन संग्रहीत करता है, वह अपना ही नही अपितु आने वाली पीढ़ियों को भी अपयश का भागीदार बना डालता है राजन् ।

दशरथ : आपकी कृपा बनी रहे महर्षि । आपने अपने दास पर कैसी कृपा की ? वहाँ यज्ञ-कर्म निश्चित होता है ना ? आश्रमवासियों को कोई भय तो नही है ?

विश्वामित्र : अभी तक तो नही है राजन् ।

दशरथ : क्या भविष्य में······?

विश्वामित्र : हाँ । भविष्य में, आश्रम ही ध्वस्त हो सकता है ।

दशरथ : ध्वस्त···। यह दुस्साहस कौन कर रहा है ?

विश्वामित्र : राक्षस । उनकी गतिविधियाँ बढ़ गई है राजन् । सीमांत वन्य-प्रांतों मे, जीवन, धन, मान-सम्मान सकट मे है । ये राक्षस पहले जब लूटपाट, अपहरण, हत्याएँ और बलात्कार करते थे । तब किसी ने उनका विरोध नही किया । इसलिए अब···

दशरथ : अब···अब···कहिए महर्षि ।

विश्वामित्र : अब ऋषि-मुनियो के यज्ञ-विध्वंस करते हैं । आश्रम में मास-मदिरा का प्रयोग, वनवासिनियों के अपहरण, भोले-भाले व्यक्तियो पर अत्याचार नित्यप्रति होते है ।

दशरथ : उसे छोडिए महर्षि । आपको या आपके आश्रमवासियों को कोई संकट ?

विश्वामित्र : जनता के प्रति कर्तव्य का अनदेखा उचित नही होता है राजन् । सत्ता केवल विशिष्ट व्यक्तियों के लिए नही होती है ।

दशरथ : आप सिद्धाश्रम के बारे मे कह रहे थे महर्षि ?

विश्वामित्र : वहाँ मैं विशिष्ट उद्देश्य से यज्ञ कर रहा हूँ । उसे ध्वस्त करने के लिए मारीच और सुबाहु जैसे महाबली राक्षस आ चुके हैं । ये दोनो रावण के प्रतिनिधि है ।

दशरथ : राक्षसराज रावण !

विश्वामित्र : हाँ, वही रावण । आप सहायता कीजिए राजन् ।

दशरथ : आप आज्ञा दें तो मैं वहाँ यज्ञ की व्यवस्था कर देता हूँ । आप निश्चित होकर यज्ञ कर सकेंगे । सम्पूर्ण व्यवस्थाएँ मैं देखूँगा ।

विश्वामित्र : नहीं राजन् । सिद्धि के लिए स्थान का महत्त्व होता है ।

दशरथ : मैं अपनी सेना और सेनापति [illegible] के अधीन [illegible] सेना मायावी राक्षसों से युद्ध लडने में समर्थ है। [illegible] रक्षा करेगी।

विश्वामित्र : मुझे सेना नही चाहिए।

दशरथ : फिर······?

विश्वामित्र : मुझे दो नवयुवक चाहिए राजन्। मात्र दो नवयुवक।

दशरथ : दो नवयुवक···। वे क्या करेंगे? दो युवक क्या कर सकते है?

विश्वामित्र : पहले दे दो। फिर समय बताएगा कि दो युवक क्या कर सकते है?

दशरथ : जैसी आपकी इच्छा। आप हमारे राज्य की जनता में से जिन युवकों को चाहे चुन लीजिए। वे आपकी सेवा मे उपस्थित रहेंगे।

विश्वामित्र : जब राजा, संकट के समय जनता को सामने करने लगता है, तब जन-विश्वास समाप्त होने लगता है। इसलिए राजा जो आशा जनता से करता है, वही आशा अपने निजी परिवार से भी करना चाहिए।

दशरथ : निजी परिवार से······। अर्थात्······?

विश्वामित्र : अर्थात्···तुम मुझे अपने पुत्र राम और लक्ष्मण को सौप दो?

दशरथ : रा···म···! राम ···लक्ष्मण !! आप क्या कह रहे है ब्रह्मर्षि?

विश्वामित्र : ठीक कह रहा हूँ राजन्। मुझे राम-लक्ष्मण ही चाहिए।

दशरथ : उन्हें कैसे दे सकता हूँ?

विश्वामित्र : जैसे जनता से देते।

दशरथ : वह और बात है?

विश्वामित्र : और ये बात······?

दशरथ : मैं अपने पुत्रों को कदापि नही सौंप सकता हूँ। अभी बालक है। आप उन्हे इतने भयानक और मायावी राक्षसों से भिड़ाकर मार डालना चाहते है क्या? नही···मैंने वृद्धावस्था मे सन्तान का मुख देखा है और आप···।

विश्वामित्र : कहिए राजन···चुप क्यों हो गए?

दशरथ : मैं क्षमा चाहता हूँ महर्षि। चलिए, मैं अपना धनुष लेकर चलता हूँ, और जब तक प्राण है, तब तक आपके यज्ञ की रक्षा करूँगा।

विश्वामित्र : आप मोहित और भयभीत है महाराज। जो राजा मोही होता है, वह बलिदान करने से मुँह चुराता है। जो भयभीत होता है, वह अपने राष्ट्र की सीमाओ तथा राज्य की प्रजा की सुरक्षा भी नहीं कर पाता है। सुना था कि रघुवंशी, वीर, पराक्रमी, सत्यप्रिय होते रहे हैं। क्या तुम उस परंपरा से पृथक हो दशरथ।

दशरथ : महर्षि।

विश्वामित्र : कर्तव्य पालन करो और पुत्रों को सौंप दो।

दशरथ : राम से आपका कार्य सिद्ध नहीं होगा। लक्ष्मण तो और छोटा है। वे आपके यज्ञ की रक्षा करने योग्य भी नहीं है महर्षि।

विश्वामित्र : मैं अयोग्य को योग्य पात्र बनाना जानता हूँ। वे छोटे भले ही हों, लेकिन मुझसे सुरक्षित रहेंगे। याद रखिए राजन्। मैं आपके पुत्रों को श्रेय देना चाहता हूँ।

दशरथ : ऐसा श्रेय नहीं चाहिए जो अकाल मृत्यु की पूर्व सूचना हो।

विश्वामित्र : तो घोषणा कर दो राजन् कि तुमने वचन भंग कर दिया। कम से कम बुद्धिजीवियों, चिन्तकों और ऋषिमुनियों को आपकी ओर नहीं देखना चाहिए। रघुवंशी न्याय की रक्षा के लिए विख्यात रहे हैं, उस वंश में एक तुम'''दशरथ'' त्रुटि मैंने ही की। मुझे यहाँ नहीं आना चाहिए था।

दशरथ : आप क्रोधित न हों ब्रह्मर्षि।

विश्वामित्र : मैं क्रोधित'''क्रोध करूँगा तो राक्षसों पर करूँगा। याद रखो दशरथ। मैं किसी भी झोपड़ी से युवक लेकर उसे राम बना सकता हूँ। प्रतिभा हर युवक में है, उसे अवसर नहीं मिल रहा है। मैं तुम्हें दिखाऊँगा कि शोषित और पीड़ित वनवासियों में भी 'राम-लक्ष्मण' हैं।

वशिष्ठ : शांत हों भरत श्रेष्ठ। शांत हों। महाराज दशरथ पुत्र स्नेह के वशीभूत है क्योंकि उन्होंने वृद्धावस्था में पुत्र देखे हैं।

विश्वामित्र : पुत्र-स्नेह के वशीभूत'''रहने दो। उन्हें राजा के कर्तव्य नहीं भूलना चाहिए। अब मैं शस्त्र उठाऊँगा।

वशिष्ठ : आप शस्त्र उठाएँगे! आप ब्रह्मर्षि हैं भरतश्रेष्ठ। ब्रह्मर्षि शस्त्र नहीं उठाता है। इससे आपका सम्पूर्ण तप नष्ट हो जाएगा।

विश्वामित्र : जब समाज और संस्कृति पर संकट छा गया हो तो ब्रह्मर्षि रहने का कोई अर्थ नहीं है मुनिवर। ये साधना, ये सिद्धियाँ, ये अनुसंधान, ये प्रयोग किसलिए''? सिर्फ इस समाज के लिए करते हैं हम? इस समाज के लिए। एक अपने कल्याण के लिए अन्याय नहीं देख सकता।

वशिष्ठ : शांत हों भरत श्रेष्ठ। महाराज दशरथ की यह मंशा नहीं है। वे आपकी शक्ति से परिचित हैं। (राजा की ओर) अपना मोह त्यागो राजन् और राम-लक्ष्मण को सौंप दो।

दशरथ : गुरुदेव!

वशिष्ठ : न्याय की रक्षा करना, आपका पहला कर्तव्य है राजन्! राजा को अपना कर्तव्य कभी नहीं भूलना चाहिए, भले ही उसके प्राण ही क्यों न चले जाएँ। अपना कर्तव्य भूलने वाला राजा अधिक दिनों

तक शासन नही कर सकता है। राजमद और राजलिप्सा अथवा व्यक्तिगत हित सदैव जन असंतोष का कारण बनते है राजन्।

दशरथ : गुरुदेव···।

वशिष्ठ : मैं राम और लक्ष्मण को आपको सौंपता हूँ भरतश्रेष्ठ। आप इन्हे ले जाइए और यज्ञ पूर्ण कीजिए।

दशरथ : इनकी सुरक्षा का उत्तरदायित्व···?

विश्वामित्र : मैं लेता हूँ राजन्।

वशिष्ठ : महामंत्री।

सुमन्त : कुलगुरु।

वशिष्ठ : आप राम और लक्ष्मण को यहाँ उपस्थित होने की सूचना स्वयं दो।

राम : मैं उपस्थित हूँ गुरुदेव। (राम गुरुदेव को प्रणाम करते हैं।)

वशिष्ठ : यशस्वी भवः। लक्ष्मण कहाँ है?

लक्ष्मण : ये रहा गुरुदेव। (प्रणाम करते हुए।)

विश्वामित्र : विजयी भवः।

दशरथ : बेटा राम···

राम : तात्! आप इतने विह्वल···

दशरथ : लक्ष्मण···(दोनों को वक्ष से लगाकर।)

लक्ष्मण : तात्···आज्ञा दीजिए।

राम : हम आपका यश बढ़ाकर लौटें, ऐसा आशीर्वाद दीजिए तात। हमने सब सुन लिया है।

दशरथ : बेटा···

विश्वामित्र : आपके पुत्रों में आत्मविश्वास देखकर आनंदित हूँ—महाराज।

दशरथ : राम···लक्ष्मण। बेटा जाओ। अब ये ही तुम्हारे माता-पिता है। इनकी आज्ञा का पालन करना।

राम : जो आज्ञा तात्।

[प्रस्थान।]

सूत्रधार

सौंपे भूप रिषिहि सुत, बहु विधि देइ अशीष।
जननी भवन गए प्रभु, चले नाइ पद सीस।

पुरुष सिंह दोउ बीर, हरषि चले मुनि भय हरन।
कृपा सिंधु मतिधीर, अखिल विस्व कारन करन।

अरुन नयन उर बाहुबिसाला। नील जलज तनु स्याम तमाला।
करि पट पीत कसें बर भाथा। रुचिर चाप सायक दुहु हाथा।

[मंच दो पर प्रकाश।]

विश्वामित्र : वत्स। अयोध्या को प्रणाम कर, सरयू और गंगा के संगम को

प्रणाम करो।···यहाँ बैठो—मैं तुम्हें मंत्र देता हूँ।···वत्स। इन मंत्रों से थकावट और ज्वर से मुक्त रहोगे। तुम्हारा रूप भी यथावत रहेगा। और ये लो···अब निद्राकाल में राक्षस आक्रमण नहीं कर सकेंगे। ज्ञान और बुद्धि में कोई तुम्हारी तुलना नहीं कर पायेगा।···अब भूख और प्यास का कष्ट नहीं होगा।

राम : आपने अत्यंत कृपा की गुरुदेव।

[मंच एक-दो पर अँधेरा। तीन पर प्रकाश।]

विश्वामित्र : राम···लक्ष्मण। इधर देखो। यहाँ से राक्षसों का क्षेत्र है—ये क्रूर और हिंसक ही नहीं, मानव रक्त-मांस के अभ्यस्त हैं।

लक्ष्मण : हमें राक्षस दिखाओ गुरुदेव।

विश्वामित्र : बहुत उत्सुक हो लक्ष्मण। ये मायावी कब, कहाँ प्रकट हो जाएँ, कहा नहीं जा सकता।···ये ताड़का का क्षेत्र है राम।

राम : ताड़का···कौन है गुरुदेव।

विश्वामित्र : यक्षिनी है। इसका पति सुन्दकी था। अगस्त ऋषि के शाप से मारा गया।

लक्ष्मण : अकेली है।

विश्वामित्र : नहीं वत्स। इसका पुत्र मारीच भी है। अब ये राक्षस है।

[ध्वनि।]

लक्ष्मण : ये ध्वनि कैसी है भैया?

राम : गुरुदेव!

विश्वामित्र : ताड़का आ रही है राम। तुम सावधान हो जाओ।

राम : सावधान। क्यों गुरुदेव? कोई संकट है।

विश्वामित्र : ताड़का आतंकी है? आक्रमण कर सकती है। नर-भक्षी है।

राम : आज्ञा दें गुरुदेव।

ताड़का : अच्छा" विश्वामित्र तू। तू भाग यहाँ से···इन दोनों को मैं खाऊँगी। बहुत दिनों से मानव रक्त भी नहीं पिया है। नवयुवक हैं।

विश्वामित्र : ताड़का। तू जानती है मैं···तुझे।

ताड़का : क्या कर लेगा मेरा? बोल···।

विश्वामित्र : राम।

राम : गुरुदेव।

विश्वामित्र : इसे बाण मारो।

राम : स्त्री पर।

लक्ष्मण : मुझे आज्ञा दीजिए भैया।

राम : नहीं लक्ष्मण।

विश्वामित्र : अन्यायी और अत्याचारी जो भी हो, उसे दण्ड देना धर्म है राम।

राम : सावधान ताडका। तुम अपने मार्ग से लौट जाओ।

ताडका : मुझे आदेश देने वाला तू कौन है? मैं तुझे खा जाऊँगी।

[ताड़का-राम युद्ध। ताड़का वध।]

विश्वामित्र : तुम वीर हो राम। अब मुझे विश्वास हो गया।

राम : कैसा विश्वास गुरुदेव?

विश्वामित्र : तुम अवतार हो राम।

राम : मैं···अवतार··· मैं तो महाराज दशरथ का पुत्र हूँ।

लक्ष्मण : और मैं इनका अनुज हूँ गुरुदेव।

विश्वामित्र : मुझे इस क्षण की प्रतीक्षा थी। तुम योग्य पात्र हो। यहाँ आओ··· मैं तुम्हे दिव्यास्त्र सौंपता हूँ। राक्षसों के वध के लिए, तुम्हे इनकी आवश्यकता पड़ेगी। · मानव समाज की रक्षा का दायित्व अब तुम्हारा है पुत्र।

राम : मैं इस दायित्व के योग्य बन सकूँ, ऐसा आशीर्वाद दो गुरुदेव।

वशिष्ठ : मेरा आशीर्वाद···। तुम कल्याणकारी हो राम। महावीर हो तुम। एक विनम्र महावीर। एक चुनौती भी हो···उस अहकारी राक्षस के लिए भी।

लक्ष्मण : किसके लिए चुनौती है भैया?

विश्वामित्र : यह चुनौती केवल राम नही है, तुम भी हो वत्स। क्योंकि तुम पूरक हो। दोनो ही एक शक्ति हो। अनन्य प्रेम का आदर्श प्रतीक भी।

लक्ष्मण : मैं भैया का सेवक मात्र हूँ।

विश्वामित्र : यही भावना श्रेष्ठ है वत्स। आओ। राम मेरा आश्रम देखो। यहाँ यज्ञ करना है मुझे।

राम : यज्ञ कीजिए गुरुदेव।······लक्ष्मण, तुम सावधान हो जाओ।

लक्ष्मण : तैयार हूँ भैया।

[विश्वामित्र यज्ञ आरंभ करते हैं। ध्वनि सुनाई देती है।]

मारीच : यज्ञ। सुबाहु······सावधान। विश्वामित्र यज्ञ कर रहा है।

सुबाहु : ये युवक कौन है?

मारीच : इनमे जो बड़ा है, उसे मैं खा जाऊँगा···। ये राम हैं, इसने मेरी माँ को मार डाला था। ठहर जा राम······

राम : सावधान······यदि आगे बढे।

सुबाहु : चुनौती देता है······ले। (शस्त्र प्रहार।)

लक्ष्मण : हाँ······चुनौती······

[बाण प्रहार।]

राम : मारीच। ले मैं तुझे कोसों दूर फेंकता हूँ—ले···

मारीच : सुबाहु···(चीख)

राक्षस-1 : यज्ञ विध्वंस करो।

लक्ष्मण . सावधान···

[युद्ध।]

राम : सुबाहु···सावधान···। ये अग्नेयास्त्र सँभाल।

सुबाहु : राम···राम ··

राक्षस : भागो-भागो···।

विश्वामित्र : महायशस्वी वीरो। तुम्हें पाकर कृतार्थ हो गया मैं। तुमने इस सिद्धाश्रम का नाम सार्थक कर दिया।

सूत्रधार : हे भक्तजनो! श्रीराम ने ताड़का और सुबाहु का वध कर सिद्धाश्रम को ध्वस्त करने के राक्षसी षड्यंत्र को ही ध्वस्त कर दिया। अनुज लक्ष्मण ने राक्षस सेना का संहार कर राक्षसो के आतंक से सरयू-गंगा-तट के क्षेत्र मुक्त करा दिए। मारीच सौ योजन दूर समुद्र-तट पर चला गया। ब्रह्मर्षि विश्वामित्र को आत्मिक-शांति मिली। क्योंकि वे राक्षसो के लिए एक चुनौती थे। राम और लक्ष्मण को पहली बार वनवासियों के जीवन का ज्ञान हुआ और राक्षसों से एक के बाद एक-दो मुठभेड़। कुछ दिनों पश्चात् राम ने पूछा—

राम : अब हमें क्या आज्ञा है गुरुदेव?

विश्वामित्र : यदि चाहो तो तुम दोनों आश्रम पर रुको। और चाहो तो अवध लौट जाओ पुत्र।

राम : हमारे लिए जो उचित हो, वही आज्ञा दीजिए गुरुदेव।

विश्वामित्र : क्या कहते हो सौमित्र? तुम्हारी इच्छा क्या है?

लक्ष्मण : मैं घूमना चाहता हूँ गुरुदेव।

विश्वामित्र : मैं भी यही चाहता हूँ। अयोध्या तो लौटना है ही राम। इससे पूर्व तुम्हें और भी काम करने है।

राम : आज्ञा दीजिए गुरुदेव।

विश्वामित्र : वत्स। औपचारिक वार्ता बंद करो। महाराज दशरथ के कहे अनुसार मैं माँ-बाप भी हूँ। तुम्हें अस्त्र और शस्त्र दिए हैं, सो तुम्हारा गुरु भी हूँ। फिर भी राम·· तुम राम हो···वही राम जिसके दर्शन के लिए आत्मा व्याकुल थी।

राम : मैं आपका सेवक हूँ। आप आज्ञा दीजिए—गुरुदेव।

विश्वामित्र : चलो, मिथिला चलें। मिथिला की प्रतीक्षा है अब।

राम : जो आज्ञा।

विश्वामित्र : वत्स। मिथिला में भगवान शंकर का शक्तिशाली धनुष देखने योग्य है? इस धरती पर वह श्रेष्ठतम वंदनीय शस्त्र है।

लक्ष्मण : मैं देखूंगा उसे।

विश्वामित्र : तुम सिर्फ देखना वत्स। (राम से) इसी तरह का दूसरा धनुप परशुराम जी के पास है। इनकी पूजा देवता भी करते है। राक्षसों को इन शस्त्रो का ही भय है।

अहिल्या : राम···श्रीराम···राम···श्रीराम।

ऋषिवर : मार्ग से हट अहिल्या।

राम : गुरुदेव···ये कौन हैं जिनका सम्मान ऋषि भी नही करते है। एक स्त्री का ऐसा अनादर, जो ईश्वर-स्मरण कर रहीं हो। ये उचित नहीं है।

लक्ष्मण : भिक्षा भी ग्रहण नही की ?

विश्वामित्र : अहिल्या है राम। गौतम ऋषि की अभिशप्त पत्नी ?

राम : अभिशप्त पत्नी ? गौतम ऋषि की ?

विश्वामित्र : हाँ राम। छल, दुराचार, ऋषि का सन्देह, आश्रमवासियों में चर्चित अपयश—इसके कारण हैं। अब समाज से बहिष्कृत, उपेक्षित, अछूत—एक स्त्री है। समाज भय से ऋषि भी अनादर करते है।

लक्ष्मण : छल से दुराचार का प्रयत्न फिर सन्देह और अपयश। एक सुनियोजित षड्यन्त्र की त्रासदी···यह तो कायरता है।

राम : एक अभिशप्त समाज और कर ही क्या सकता है। एक निर्दोष स्त्री को शिलाखण्ड बना दिया।

विश्वामित्र : हाँ राम। अपने समाज से कटा हुआ जीवन शिलाखण्ड ही होता है। अब इसे प्रतीक्षा है।

लक्ष्मण : किसकी प्रतीक्षा है गुरुदेव।

विश्वामित्र : राम की।

राम : मेरी गुरुदेव।

विश्वामित्र : हाँ राम। अहिल्या एक तपस्विनी है लेकिन शापित स्त्री है। इसके आश्रम में सामाजिक भय से कोई प्रवेश नही करता है।

राम : आपकी आज्ञा हो तो मैं प्रवेश करूँ ?

विश्वामित्र : राम·· राघव·· तुम्हें और अनुमति। तुम समर्थ हो। सर्वज्ञ हो राम। अनुमति शक्तिहीन माँगते हैं। तुम सर्व-शक्तिमान हो। फिर भी आज्ञा चाहते हो···आगे बढो राम···ये समाज तुम्हारा अनुसरण करेगा।

राम : आओ लक्ष्मण···हमारा प्रणाम स्वीकार करो माते···

अहिल्या : (आश्चर्यचकित)

राम : मैं महाराज दशरथ पुत्र राम और ये अनुज लक्ष्मण है।

अहिल्या : राम···राघव·· रघुनन्दन···तुम आ गए राम···तुम आ गए··· तुम ही राम हो···मेरे लिए भगवान। एक शिलाखण्ड नारी को

जीवनदान दिया है तुमने···अन्यथा उपेक्षित जीवन जीकर मर जाती। तुमने मुझे उबार दिया राम। सामाजिक मान्यता···मेरा उद्धार कर दिया तुमने।

विश्वामित्र : गौतम ऋषि भार्या ··देवि। प्रणाम।

अहिल्या : ब्रह्मर्षि···देखो मेरे आश्रम में राम आये हैं···भगवान राम। मेरी तपस्या सफल हो गई। मेरा उद्धार हो गया···मुझे चरण स्पर्श करने दो प्रभु···

[मंच एक पर प्रकाश।]

सूत्रधार : (मिथिला) मैं मिथिला हूँ। यहाँ के राजा जनक हैं। वही जनक जिन्होंने अकाल के समय हल चलाया था। अब वे यज्ञ कर रहे हैं। गौतम ऋषि के ज्येष्ठ पुत्र शतानन्द उनके पुरोहित है। इस अवसर पर विश्वामित्र जी के साथ श्रीराम और लक्ष्मण यहाँ आये हुए हैं।

जनक : यज्ञ कर्म पूर्ण हो गया है ब्रह्मर्षि। किन्तु एक आकांक्षा अधूरी है।

विश्वामित्र : आकांक्षा। महाराज जनक को!

जनक : हाँ। यदि भगवान शिव का धनुष भंग न हुआ तो मेरी पुत्री सीता का विवाह सम्भव नहीं है। वह विवाह योग्य है···लेकिन विलंब हो रहा है। मेरी आकांक्षा है कि कन्या को विवाह योग्य वर प्राप्त हो जाए। आपकी आज्ञा हो तो मैं एक प्रार्थना करूँ ऋषिवर।

विश्वामित्र : निःसंकोच कहो राजन्।

जनक : आपके साथ महाराज दशरथ के पुत्र आये हैं। वह सुदर्शन है। सर्वगुण-सम्पन्न और महावीर भी है। ताड़का सुबाहु का वध, अहिल्या देवी के उद्धार की सर्वत्र चर्चा है। यदि आप चाहें तो राम को धनुष भंग करने के लिए कह दें। यदि धनुष भंग न कर पाए तो मैं अपना वचन भी त्याग दूँगा—क्योंकि बेटी के विवाह में विलम्ब उचित नहीं होता।

विश्वामित्र : प्रतिज्ञा की है तो पालन करो राजन्। फिर चाहे पुत्री विवाहित रहे या अविवाहित। वचन भंग से बड़ी अवमानना होती है। सोचो राजन्···आपने अपनी प्रतिज्ञा त्याग दी और राम ने विवाह न किया तो क्या होगा? आपको अपयश मिलेगा।

जनक : आपकी आज्ञा की अवहेलना नहीं कर सकते हैं।

विश्वामित्र : जानता हूँ। लेकिन आज्ञा भी विचारपूर्वक दी जानी चाहिए। आज्ञा देकर विवाह कराना कतई उचित नहीं है। क्योंकि आदेश और व्यवस्थाओं में दाम्पत्य जीवन सुखद नहीं होता है। माता-पिता को अपनी संतान की भावनाओं का भी ध्यान रखना चाहिए। सोचो राजन! राजपुत्र को कन्या प्रिय नहीं हुई तो पुनः विवाह भी हो सकता है। मैं आज्ञा के नाम पर किसी कन्या का

जीवन दांव पर नहीं लगा सकता हूँ।

जनक : कोई रास्ता ढूँढिये ब्रह्मर्षि।

उर्मिला : प्रणाम तात। प्रणाम ऋषिवर।

नक,वशिष्ठ : (आशीर्वाद में हाथ उठाते हैं।)

उर्मिला : प्रसाद लीजिए तात।

जनक : लाओ बेटी······ऋषिवर को दीजिए।

उर्मिला : लो ऋषिवर।

विश्वामित्र : किस का प्रसाद है बेटी ?

उर्मिला : गिरिजादेवी के मंदिर का। वहाँ मैं और बड़ी जीजी सीता नित्य जाते हैं।

विश्वामित्र : नित्य जाती हो···अच्छा। (उर्मिला का प्रस्थान) प्रसाद लो राजन्। संभव है, गिरिजादेवी तुम्हारी कामना पूर्ण कर दें।

[मंच तीन पर प्रकाश।]

सूत्रधार : एक दिन श्री राम और लक्ष्मण गिरिजादेवी के मंदिर पहुँचे। वे जब उद्यान से पुष्प चुन रहे थे—

तेहि अवसर सीता तहँ आई। गिरिजा पूजन जननि पठाई।
कंकन किंकिन नूपुर धुनि सुनि। कहत लखन सन राम हृदय गुनि।
मानहुँ मदन दुंदुभी दीन्ही। मनसा बिस्व बिजय कहँ कीन्ही।
देखि सीय सोभा सुखु पावा। हृदय सराहत बचनु न आवा।

सिय सोभा हिय बरनि प्रभु आपनि दसा बिचार।
बोले सुचि मन अनुज सन बचन समय अनुहारि॥

तात जनक तनया यह सोई, धनुष जग्य जेहि कारन होई।
पूजन गौरि सखी लै आई। करत प्रकासु फिरइ फुलवाई।
जासु बिलोकि अलौकिक सोभा। सहज पुनीत मोर मनु छोभा।
चितवत चकित चहूँ दिसि सीता। कहँ गए नृप किसोर मनु चिंता।
लता ओट तब सखिन्ह लखाए। स्यामल गौर किसोर सुहाए।
देखि रूप लोचन ललचाने। हरषे जनु निज निधि पहिचाने।

जब सिय सखिन्ह प्रेम बस जानी,
कहि न सकहिं कछु मन सकुचानी।

सकुचि सीय तब नयन उघारे, सनमुख दोउ रघु-सिंघ निहारे।
नखसिख देख राम के शोभा, सुमिरि पिता पनु मनु अति छोभा।
गई भवानी भवन बहोरी, बंदि चरन बोली कर जोरी।
जय जय गिरिवर राज किशोरी, जय महेश मुख चंद चकोरी।
मोर मनोरथ जानहु नीकें, बसहु सदा उर पुर सबही के।

पहुँचे उत्सव में जभी, दशरथ राज किशोर।
भावभरी चितवनों से, देखा चारों ओर।
आए विश्वामित्र जब, राम-लखन के साथ।
स्वागत करने को बढ़े मिथला के नार नाथ॥

[मंच एक पर प्रकाश।]

बन्दी-1 : सावधान। मिथिला नरेश महाराज जनक ब्रह्मर्षि विश्वामित्र अवध के राजकुमारों के साथ पधार रहे हैं।

बन्दी-2 : यह शिव-धनुष, त्रैलोक्य वंदनीय है। महाशक्ति-संपन्न धनुष। जो धनुष भंग करेगा महाराज जनकनंदिनी उसको स्वयं वर लेगी।

बन्दी-3 : बड़े-बड़े शूरवीरों, राजा-महाराजाओं ने उसके संधान हेतु पृथक्-पृथक् और संयुक्त प्रयत्न किए लेकिन विफल रहे।

बन्दी-4 : देवताओं से रक्षित भगवान शिव के धनुष को देखने आए राक्षस राज महाराज रावण ने भी साहस नहीं किया। वे प्रणाम कर लौट गए।

विश्वामित्र : वत्स देखो। परम प्रकाशवान शिव-धनुष। इसे युद्धभूमि में ले जाने और संधान करने के लिए कई सैनिकों की आवश्यकता होती है।

जनक : धनुष-भंग का स्वप्न शायद कभी पूर्ण न हो ऋषिवर।

विश्वामित्र : आशा नहीं त्यागना चाहिए विदेह।

जनक : *अब कैसी आशा? देवता, यक्ष, राक्षस, गंधर्व भी अपनी-अपनी* शक्ति दिखा चुके। कोई महानाग भी नहीं चढ़ा सका। अब ऐसा कौन है जो इस धनुष को उठाये, महानाग चढ़ाए, प्रत्यंचा को टंकार कर बाण संधान करे···कोई नहीं है।

विश्वामित्र : कोई अवश्य होगा राजन···। सम्पूर्ण शक्ति संपन्न और युगावतार वीर होगा। नई पीढ़ी से आशा बनाए रखनी चाहिए।

जनक : कल्पना है ये। मेरा विश्वास है ······।

विश्वामित्र : कैसा विश्वास?

जनक : यह पृथ्वी वीरों से खाली है। कहीं कोई वीर शेष नहीं है।

लक्ष्मण : महाराज जनक···आपने रघुवंशियों के सार्वजनिक अपमान का दुस्साहस किया है?

जनक : अनुचित क्या कहा है राजकुमार।

लक्ष्मण : अनुचित है सब कुछ। रघुवंशियों के सामने विशेषकर श्री राम के होते हुए अपमानजनक भाषा का प्रयोग किया है आपने।

जनक : उत्तेजित न हो।

लक्ष्मण : उत्तेजित। सम्मान की रक्षा के लिए उत्तेजना अनिवार्य होती है।

आप हमारा अपमान करें और हम चुप रहें।

जनक : उत्तेजना से शक्ति का प्रदर्शन भी नहीं होता।

लक्ष्मण : राजन्`````` सावधान। मैं गुरुदेव और भैया के कारण शांत हूँ।

जनक : अन्यथा ?

लक्ष्मण : अन्यथा``````ये धनुष जिस पृथ्वी पर रखा है उसे ही नहीं अपितु ब्रह्माण्ड को गेंद की तरह उठाकर कच्चे घड़े की तरह फोड़ डालूं। अन्यथा`````` अन्यथा राजन्, इस पुराने शस्त्र को अँगुली के सहारे लटकाकर दौड़ लगा दूं।``````गुरुदेव```आपकी उपस्थिति मे हमारा अपमान ``````या तो राजन शब्द वापस लें अन्यथा मुझे आज्ञा दें ताकि मैं इन्हें रघुवंशियों का पुरुषार्थ दिखा सकूं। भैया``````आप अब तक शांत है। आप आज्ञा दीजिए, मैं इसे तोड़ डालूंगा। यदि नहीं तोड़ सकूं तो मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि फिर कभी शस्त्र नहीं उठाऊँगा।

राम : शांत हो लक्ष्मण। आओ, मेरे पास आओ।

विश्वामित्र : महाराज जनक```। आपको विश्वास हुआ कि अभी ये धरती वीर-विहीन नहीं है। यद्यपि लक्ष्मण क्रोधित हो गये है```लेकिन उसका क्रोध स्वाभाविक है राजन्। आपने बिना सोचे-समझे इतनी बड़ी बात कह डाली। तुम नहीं जानते ये 'राम' कौन है ? ये 'राम'—हमारा भविष्य है। विगत दिनों जो कुछ राम ने किया, क्या उसका ध्यान भी नहीं। ये रघुवंशी ही नहीं—विश्वामित्र के कर्म के उत्तराधिकारी भी है राजन्। तुम अपनी पुत्री को यहां उपस्थित करो।

जनक : ब्रह्मर्षि। मेरा अपराध क्षम्य हो। पुत्री सीता को यहाँ लाया जाए।

[सीता का प्रवेश।]

सूत्रधार

सीता की भाव भरी चितवन, जब जब राघव पर पड़ती है।
तब तब अकुलाकर हट-हट कर, धन्वा मे जाकर गड़ती है।
प्रण कठिन पिता का देख देख मन ही मन मे अकुलाती है।
सिर झुका-झुकाकर बार-बार देवी देवता मनाती है।
हे विधना कैसे धीर धरूँ प्रण कठिन पिता ने ठाना है।
तन धन्वा के बन्धन में है, मन मे रघुवर को माना है।
हे महादेव के महाधनुष, निस्तार करेगा अब तू ही।
सीता के प्राण तुझी पर है, उद्धार करेगा अब तू ही।

विश्वामित्र : उठहु राम, भंजहु, भवचापा। मेटहु तात, जनक परितापा।

राम : जो आज्ञा गुरुदेव।

सूत्रधार

मुनि गुरु वचन चरन सिरु नावा। हरषु विषाद न कुछ उर लावा।
मह्‌र्जहि चले सकल जग स्वामी। मत्त मंजु वर कुंजर गामी।
अति परिताप सीय मन माही। लव निमेष जुग सम सिय जाही।
प्रभु तन चितइ प्रेम तन ठाना। कृपा निधान राम सबु जाना।
सियहि बिलोकि तकेउ धनु कैसे। चितव गरुरु लघु व्यालहि जैसे।
जेहि कें जेहि पर सत्य सनेहूं। सो तेहि मिलइ न कछु संदेहू।

महादेव गुरुदेव का मन ही मन कर जाप।
हाथ डालते-डालते उठा लिया शिव चाप॥

ले लिया चढ़ाया, फिर खींचा, फिर जरा लचाया चुटकी में।
लीलाधारी के हाथों ने, सब खेल खिलाया चुटकी में।
इतने में चर चर शब्द हुआ फिर गूंजा एक तड़ाका-सा।
रघुवर ने शिव धनु तोड़ दिया, दुनिया में हुआ धमाका-सा।

प्रभु ने दोनों खण्ड जब, दिए भूमि पर डाल।
पृथ्वी से आकाश तक, जय गूंजी तत्काल॥

जनक लहेउ सुख सोचु बिहाई। पैरत थकें थाह जनु पाई।
रामहि लखनु बिलोकत कैसे। ससिहि चकोर किसोरकु जैसे।
सीय मुखहि बरनिअ केहि भाँती। जनु चातकी पाइ जलु स्वाती।
राजा ने तब आयसु दीन्हा। सीता गमनु राम पहिं कीन्हा।

गीत

धीरे चलहुँ सुकुमार, सिया प्यारी
धीरे चलहुँ सुकुमार।
जनकपुरी के भाग हैं जागे
दुल्हा अवध के राजकुमार
धीरे चलहुँ········
माथ बनी के मथियाँ सोहे
जिनके गले मोतियन के हार
धीरे चलो।

[विवाह/वरमाला। दुंदुभि स्वर।]
[मंच दो से तीन की ओर प्रस्थान।]

सैनिक : महाराज जी जय हो। महाराज परशुराम जी पधार रहे हैं।
दशरथ : परशुराम जी···!···गुरुदेव······अब···
वशिष्ठ : निश्चिन्त रहो राजन्। परशुराम जी एक अवतार हैं।
दशरथ : कहीं क्रोध कर बैठे तो?·· लो वे आ गये।
जनक : सब सावधान रहें।

[परशुराम का आना सभी प्रणाम करते हैं।]

विश्वामित्र . ब्राह्मण कुमार।

परशुराम . प्रणाम ऋषिवर।···राम कौन है ?···उत्तर दो···कौन है राम···मेरे सम्मुख उपस्थित करो उसे···किसने तोड़ा है धनुष··· किसने दुस्साहस किया···बोलो···तुम सब मौन हो···याद रखो··· ये मौन सबको संकट में डाल देगा···।

जनक : जनक का प्रणाम स्वीकार करो भृगुनंदन।

दशरथ : दशरथ का प्रणाम। ब्राह्मण श्रेष्ठ आप क्रोध त्याग दें। हम पर प्रसन्न हों। क्रोध तपस्वियों का लक्षण नहीं होता है।

परशुराम : महाराज दशरथ···। मुझे परामर्श नही ··राम चाहिए।

दशरथ : आपने सम्पूर्ण पृथ्वी जीतकर दान कर दी है और शस्त्र न उठाने की प्रतिज्ञा···

परशुराम : प्रतिज्ञा···एक प्रतिज्ञा और की है राजन्।

दशरथ : कौन-सी प्रतिज्ञा है ?

परशुराम : जिसने शिव-धनुष तोड़ा है, यदि उसने मेरे वैष्णव धनुष को खींचकर तीर चला दिया···तो जीवित छोड़ दूंगा···अन्यथा उसका वध कर दूंगा। यही 'राम' के साथ होगा।

लक्ष्मण · सावधान भृगुनदन। अपनी शक्ति और सीमा लांघने की कोशिश मत करो। आपको अपने शस्त्रों पर अधिक गर्व है लेकिन हमारे हाथ भी बँधे नही हैं। सारा समाज, आपको पूजता है, इसका मतलब यह कदापि नही कि आप चाहे जिसे वध करने की धमकी दे डालें।

परशुराम : बालक···मौन रह। ···महाराज जनक। बताओ धनुष किसने तोड़ा। अब तक इस पृथ्वी पर दो ही श्रेष्ठ धनुष थे। एक टूट गया और एक···एक मेरे कंधे पर है···। तुम मौन रहे तो मैं तुम्हारा राज्य पलट दूंगा राजन्। अन्यथा उस 'राम' को मेरे सामने प्रस्तुत करो।

लक्ष्मण : धमकियां बंद करो, परशुराम जी। 'राज्य पलट दूंगा'···यदि इनका राज्य पलटा तो मैं इस धरती को सागर में डुबो दूंगा जिस पर राज्य पलटने वाला खड़ा है···यदि सचमुच धनुर्धर हो कहीं रणभूमि में मिलना।

परशुराम : दुस्साहसी बालक······क्या तूने धनुष तोड़ा है···बोल।

लक्ष्मण : उस धनुष में था क्या। एक पुराना शस्त्र, जो किसी के भी स्पर्श से टूट जाता। श्री राम से तो धोखे में टूट गया।

परशुराम : धोखे में······क्या कहता है ? शिव धनुष और धोखे में······ असंभव। 'श्री राम'···कहाँ है राम ? उसने क्यों उठाया था ?

लक्ष्मण : भैया ने नये के धोखे में उठा लिया था। बस जाने कैसे टुकड़े हो गए?

परशुराम दुष्ट बालक तू विनोद करता है। ये नहीं जानता कि यदि मुझे क्रोध आ गया तो '''''देख'''ये मेरा परशु।

लक्ष्मण : हमें इस कुल्हाड़ी को दिखाकर मत डराओ। ऐसी कुल्हाड़ियाँ लकड़ी काटने के काम आती हैं।

परशुराम : महाराज दशरथ ' ये बालक कौन है? मैं इसे दुधमुँहा समझकर मारना नहीं चाहता। इसे कहो कि मैं परशुराम हूँ, परशुराम।

लक्ष्मण : मालूम है। तुम्हारे नाम में भी 'राम' है लेकिन तुम 'राम' कभी नहीं हो सकते हो। 'राम' बनने के लिए 'परशुता' त्यागो ब्राह्मण।

परशुराम : बालक'''उपहास और उपदेश न कर। उद्दण्ड, तू मूर्ख है। मैं कहे देता हूँ'''उसे समझ'''इसे बता दो कि मैं कौन हूँ।

लक्ष्मण : कुछ बखान और रह गया हो तो कह लो। अपने मुँह से बड़ाई करने में न चूको। क्रोध में आगबबूला होते हो तो और हो जाओ'' नहीं तो दुःखी रहोगे। सब से डींगें ही हाँक रहे हैं आप?

परशुराम : (फरशा लेकर) तू बहुत कड़वा बोलता है धूर्त। तुझे मृत्यु भय नहीं है? तू मारने लायक ही है।

लक्ष्मण : आपकी इन धमकियों से कोई डरने वाला नहीं। जो शूरवीर होता है, वह अपने प्रताप का स्वयं प्रलाप नहीं करता है।

परशुराम : मुझे सीधा ब्राह्मण न जान। मैं क्षत्रिय कुल का द्रोही हूँ। मैं भृगवंशी, बाल-ब्रह्मचारी हूँ। तू बालक है, बालक की तरह रह। क्यों लड़के मरता है? मुझ निर्मोही के सम्मुख लड़कपन न कर।

लक्ष्मण . मैं भी ब्राह्मण समझकर छोड़ रहा हूँ। सम्भवतः अब तक किसी से पाला नहीं पड़ा है।

दशरथ : लक्ष्मण। उचित-अनुचित का विचार नहीं करते हो और जो मुँह में आता है बोलते जाते हो।''''''

ये बालक है भृगकुमार। आप मुनि, ज्ञानी और शीलवान है, क्षमा कीजिये प्रभु। हम क्षमाप्रार्थी है।

परशुराम ' पुत्र, बहुत निडर है राजन्। संभवत. ये बालक मेरी विवशता जानता है कि मैं शस्त्र नहीं उठा सकता।'''इसलिए इतना उत्तेजित''''''। लेकिन मुझे राजन वह युवक चाहिए जिसने धनुष तोड़ा है? उसने साहस कैसे किया?

राम : आपके आशीर्वाद से निर्बल भी साहसी बन जाता है प्रभु।

परशुराम : ये मधुर वचन बोलने वाला कौन है? इतना धीर, वीर और विनयशील? कौन हो युवक?

राम : आपका सेवक राम हूँ''''''सारा अपराध मुझसे हुआ है, आप

चाहें तो क्षमा कर दें, न चाहे तो दण्डित करें। अब आपकी शरण में हूँ।

परशुराम . तुम राम हो'''राम'''। जैसा सुना था, वैसे ही हो राम। राम'' तुम तो राम हो ? सुना है तुम वीर भी हो, तुमने ताड़का और सुबाहु का वध किया ?

राम मैंने कुछ नही किया। यह सब महर्षि विश्वामित्र की कृपा है।

परशुराम : शिव-धनुष तुमने भग किया ? कैसे किया ? कहो वत्स ?

राम . मेरी समझ मे भी नही आया। मैंने स्पर्श किया था बस वह टूट गया ?

परशुराम · राम ''। तुम सचमुच 'राम' हो'''! यदि तुम मेरे 'राम' हो तो यह धनुष लो, और संधान करो।

राम : अन्यथा''''''प्रभु।

परशुराम · अन्यथा''''''मैं तुम्हारा वध कर दूंगा।

राम · यदि संधान कर दिया तो ?

परशुराम : ये धनुष। धरती का सर्वश्रेष्ठ धनुष, तुम्हें सौप कर मैं धनुष धारण के कर्तव्य मे मुक्त हो जाऊँगा राम।

विश्वामित्र : तीन-तीन घटनायें साक्षी है परशुराम जी''''''फिर भी संदेह'''?

परशुराम हाँ ब्रह्मर्षि। मैं सदेह समाप्त करना चाहता हूँ। यदि ये 'राम' है तो इस परशुराम की कोई आवश्यकता नही है।

विश्वामित्र . इनका सदेह दूर करो राम।

राम . जो आज्ञा गुरुदेव।

परशुराम · क्या तुम किसी की आज्ञा के अधीन हो ?

राम · हां भगवन्।

परशुराम : किसकी ?

राम : जो मुझ पर विश्वास करता हो।

सूत्रधार

राम रमापति कर धनु लेहू।
खैंचहु मिटै मोर संदेहू॥

[राम द्वारा बाण संधान।]

परशुराम : अक्षरूपं मधु हन्तारं जानामि त्वां सुरेश्वरम्।
धनुषोऽस्य परामर्शात स्वास्ति तेऽस्य तरतप्।
हे राम'''हे प्रभु। इस युग को आपकी ही प्रतीक्षा थी। ये धनुष सँभालो राम और इस भक्त को आज्ञा दो'''मैं अपने आश्रम लौट जाऊँ।

राम : आज्ञा कैसे दे सकता हूँ।

परशुराम : इस बालक को बुलाओ।

राम : लक्ष्मण······

लक्ष्मण : (ब्राह्मण के चरण स्पर्श करते हैं।)

परशुराम : मैं तुम्हारा प्रशंसक रहूँगा वत्स। समय आये, तब अपना पुरुषार्थ दिखाना। (राम की ओर) मुझे आज्ञा दीजिये प्रभु।

दो

[मंच एक पर प्रकाश।]

पार्श्व : जब तें राम ब्याहि घर आए। नित नव मंगल मोद बधाए।
राम रूप गुन सीलु सुभाऊ। प्रमुदित होइ देखि सुनि राऊ।
अति आनन्द अवधपुर वासी। प्रातन सहित देखि सुख रासी।
एक समय सब सहित समाजा। राज सभा रघुराज विराजा।

सुमन्त : मंत्रिपरिषद ने निर्धारित कार्य पूर्ण किया। अब विशेष उल्लेख का समय है, उल्लेख कीजिए।

मंत्री-1 : युवराज श्री राम के व्यवहार से अवधवासी प्रसन्न है। यह एक शुभ संकेत है महाराज। श्री राम धीरे-धीरे अवध के नायक बनते जा रहे है।

मंत्री-2 : हमारी सीमाएँ शांत है महाराज। राजकुमार श्री भरत अपने नाना के यहाँ आनन्द से है।

मंत्री-3 : श्री राम के यश ने अवध का गौरव बढा दिया है महाराज। आज अवध बहुत शक्तिशाली है।

मंत्री-4 : ताड़का और सुबाहु-वध, अहिल्या उद्धार, शिव धनुष भंग और परशुराम जी द्वारा अपना धनुष श्री राम को दिया जाना जन-चर्चा का विषय है। श्री राम के व्यवहार, कार्यकौशल और कर्म ने नागरिकों मे प्रेम पैदा किया है।

सुमन्त : जनता श्री राम को अवतार मानती है अवतार। यदि महाराज अप्रसन्न न हों तो मैं जन-भावनाएँ व्यक्त कर दूँ।

दशरथ : महामंत्री को राजा की प्रसन्नता-अप्रसन्नता की चिंता कब से होने लगी सुमन्त। जब से हमारा कौशल्या देवी से विवाह हुआ, तब से आप हमारे साथ है और महामंत्री है। हमने मन्त्रिपरिषद मे भी सभी को उचित प्रतिनिधित्व दिया है। महारानी कैकई और महा-रानी सुमित्रा के पक्ष को भी स्थान दिया गया है।

मन्त्री-2 : महाराज क्षमा करें। अवध के मन्त्रिपरिषद में पहले प्रतिनिधित्व

था, लेकिन मिथिला-नरेश से संबंध जुडने के पश्चात से कैकई देश का प्रतिनिधित्व घटा है। आज महारानी कौशल्या द्वारा मनोनीत मंत्रियों का बहुमत है। हम अल्पमत मे हैं। आज मंत्रिपरिषद…

दशरथ : मंत्रिपरिषद कैसी हो यह निर्णय न आप करेंगे और न कैकई नरेश। ये अवध है। यहाँ की शासन-व्यवस्था हमें निर्धारित करनी है। स्थान ग्रहण करें।

मंत्री-2 : क्षमा करें महाराज। हम आपके निर्णय को चुनौती नही दे रहे। लेकिन हमें दुख है कि आपने कैकई देश से आए सुरक्षाकर्मियों के शस्त्र जमा करवा लिए। हमारे सेनानायक का सरेआम हरण हो गया और आप मौन रहे। प्रासाद मे जो दूती थी, उसे गुप्तचर कहकर लौटा दिया…

मंत्री-1 : मंत्री महोदय को यह समझना चाहिए हमें अपना राष्ट्र सुरक्षित रखना है। यदि कोई राष्ट्रहितो के अनुकूल आचरण नही करता है तो उसे निष्कासित ही किया जाएगा।

मंत्री-2 : क्या कहना चाहते है आप? क्या हम राष्ट्र के लिए खतरा हैं? हम यहाँ एक संधि के अन्तर्गत हैं। संधि को भंग नही किया जा सकता। आपको संधि का सम्मान करना चाहिए।

दशरथ : यदि संधि भंग कर दूँ तो क्या आप सत्ता पलट देंगे?

मंत्री-2 : मेरी बात को अन्यथा न लें महाराज। मै क्षमा चाहता हूँ, लेकिन आपका यह अप्रत्याशित कथन हमे आश्चर्य में डालने वाला अवश्य है। हमें आश्चर्य…

दशरथ : आश्चर्य तो होगा ही। हाँ…आप उल्लेख कीजिए महामंत्री।

सुमन्त : अवध की जनता उस दिन की प्रतीक्षा मे है महाराज, जिस दिन आप उनके प्रिय युवराज श्री राम को सम्राट बनाने की घोषणा करेंगे।

दशरथ : मेरी भी आकांक्षा यही है महामंत्री। राम ज्येष्ठ है। धीर-वीर-गंभीर और विनयी है। युवावस्था में ही उसने रघुवंश का नाम ऊँचा कर दिया है। उसे जो दायित्व दिए गए हैं, उनका निर्वाह कुशलता से किया है…फिर भी…मैं चाहता हूँ कि यदि आप चाहें तो राम को महाराज बनाने पर आज या फिर कभी…

मंत्री-1 : फिर कभी क्यों महाराज। आज ही चर्चा हो जाए और निर्णय किया जाए। मैं आपके प्रस्ताव का समर्थन करता हूँ। श्री राम में वे समस्त गुण है जो एक राजा में होना चाहिए। इस परिषद को श्री राम को सम्राट बनाने के लिए निर्णय करना चाहिए।

मंत्री-2 : युवराज भरत मे भी समस्त गुण है महाराज। उन्हे सीमा सुरक्षा का कार्य महाराज ने सौंपा था। इतने वर्षों में उनकी कुशल

नीतियों के कारण न कोई संघर्ष हुआ है और न सैनिक असंतोष ही। अतः आपको एक उस मन्त्रि परिषद को कैकई पुत्र के नाम पर भी विचार करना चाहिए।

मन्त्री-3 : मेरा मत है महाराज। जब ज्येष्ठ पुत्र सर्वगुण सम्पन्न है तब छोटे पुत्र के नाम पर विचार करना कतई उचित नहीं है। मैं श्री भरत का विरोध नहीं कर रहा'''नीतिगत प्रश्न है। मन्त्रियों को अवध-हित में प्रस्ताव करना चाहिए।

मंत्री-2 : नीति की ओट में ये विरोध ही है।

मन्त्री-1 : इस तरह आप भी श्री राम का विरोध ही कर रहे हैं ? क्या दोष है उनमें ?

मंत्री-2 : प्रश्न दोष का नहीं है। प्रश्न नीति का है। जब दो राज्यों में संधि हो तो उसे भूल जाना उचित नहीं है महाराज।

सुमन्त : क्या याद दिलाना चाहते हैं ? यह तो महाराज की उदारता है जो कैकई राज्य को अपने अधीन नहीं किया। संधियां लाचार और विवश लोग अपने बचाव के लिए किया करते हैं। जब पुरुषार्थ श्रीहीन होता है और पराभव चौखट पर पांव रख देता है, तब प्राण बचाने वाले संधि करते हैं। संधि प्रस्ताव कैकई नरेश लेकर आए थे, इसलिए वे भंग नहीं कर सकते हैं।

मंत्री-1 : मेरा प्रस्ताव है कि सुमित्रा प्रतिनिधि से पूछा जाए कि क्या वे श्री राम का विरोध करते हैं ?

मन्त्री-4 : बहुमत की अवमानना कोई नहीं कर सकता है महाराज। हम मनोनीत सदस्यों को अपना विचार भी नहीं थोपना चाहिए। यदि महाराज युवराज श्री राम को चाहते हैं तो श्री राम को और यदि कैकई पुत्र को राज्य देना चाहते हैं तो उन्हें सौंप दें। उन्हें राज्य सौंपने का पूर्ण अधिकार है। हमें हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए। दोनों ही युवराज श्रेष्ठ एवं योग्य हैं।

मंत्री-1 : आप श्री राम के विरोध में क्या ?

मंत्री-4 : नहीं। मेरे विरोध का प्रश्न ही नहीं उठता है।

दशरथ : इससे स्पष्ट है कि मन्त्रि परिषद के तीन-चौथाई मत राम के पक्ष में हैं।

मन्त्री-2 : यदि मतदान हुआ तो सुमित्रा नरेश का प्रतिनिधि किधर मतदान करेगा ?

मंत्री-4 : मतदान होना ही नहीं चाहिए। यदि होता है तो मैं मतदान में भाग नहीं लूंगा।

दशरथ : ऐसी स्थिति में भी बहुमत श्री राम को राजा के रूप में देखना चाहता है। मैं अवध नरेश मन्त्रिपरिषद् के निर्णय के अनुसार राम

को महाराज घोषित करता हूँ।

सुमन्त . महाराजा दशरथ को···

मंत्री-3 : ······जय।

[चार बार]

दशरथ : गुरुदेव। आप कल प्रात.काल राज्याभिषेक की व्यवस्था पूर्ण कराएँ।

विश्वामित्र : अवश्य महाराज। मैं चलता हूँ—व्यवस्थाएँ करूँगा।

मंत्री-2 : इतनी शीघ्रता महाराज।

दशरथ : निर्णय पर विलम्ब करने का अर्थ, उसे कागजी बनना है।

मंत्री-2 : राज्याभिषेक के समय···ऋषिमुनि नहीं आ पाएँगे महाराज।

दशरथ : कुलगुरु है तो फिर किसी की क्या आवश्यकता है ?

मंत्री-2 : हमें मित्र राष्ट्रों को भी सूचना देना चाहिए ना।

दशरथ ' अनिवार्य नहीं है । राम महाराज होकर मित्र राष्ट्रों की यात्रा करने जाएगा ही।

मंत्री-2 : अवध में समस्त प्रजा को भी सूचना नहीं हो पाएगी महाराज।

दशरथ . राजधानी मे सूचना होना पर्याप्त है।

मत्री-2 : लेकिन महाराज···

दशरथ : लेकिन···क्या···अब क्या बात है ?

मंत्री-2 : राजकुमार भरत और शत्रुघ्न भी यहाँ नही है।

दशरथ : उनका होना आवश्यक नही है।

मत्री-2 : राजकुमार भरत से चर्चा करना उचित होगा महाराज।

दशरथ : क्यो, क्या भरत मेरा विरोध करेगा ? क्या वह पूछेगा कि मुझे महाराज क्यो नही बनाया ? या कि राम को क्यों बना दिया ? आप ऐसे कह रहे है जैसे भरत से न पूछा तो विद्रोह हो जाएगा। फिर यह कोई मेरा व्यक्तिगत निर्णय नही है, मंत्रिपरिषद का निर्णय है। उसका सम्मान मुझे भी करना है और आपको भी। यदि आप सम्मान नही करना चाहे तो त्यागपत्र देकर चले जाएँ।

मंत्री-2 : क्षमा चाहता हूँ महाराज। (प्रस्थान)

दशरथ . सभा समाप्त की जाती है···महामंत्री राजधानी को रात्रि-भर में सजा दिया जाए। नगरवासियो को प्रात काल यहाँ आने के लिए सूचना कराएँ।

सुमन्त : जो आज्ञा महाराज।

दशरथ : राम कहाँ है ?

राम : मैं उपस्थित हूँ तात।

दशरथ : आओ पुत्र।

राम : कैकई प्रांत प्रतिनिधि कुछ चिंतित दिखाई दिए तात। क्या बात

है ?

दशरथ कुछ नही ।

सुमन्त · बधाई हो आपको । (राम से)

राम कैसी बधाई ? क्या बात है ?

सुमन्त आप कल से हमारे महाराज होंगे ।

राम महाराज होंगे ?'''महाराज दशरथ के होते हुए'''आपने यह कहने का साहस कैसे किया ?

दशरथ : यह मंत्रिपरिषद का निर्णय है राम। कल प्रात काल तुम्हारा राज्य अभिषेक होगा ।''''''सुमन्त''''''

सुमन्त : महाराज ।

दशरथ · व्यवस्था करो ।

सुमन्त : जो आज्ञा महाराज । (प्रस्थान)

राम : प्रात.काल होगा''''''इतनी शीघ्रता ।

दशरथ : जब कोई निर्णय मन के अनुकूल हो जाए तो उसके कार्यान्वयन में विलंब समझदारी नही होता है राम ।

राम : कल तो भरत-शत्रुघ्न भी नहीं आ पाएँगे ।

दशरथ : तो क्या हुआ ?

राम : अपने भाइयों की अनुपस्थिति मे''''''राज्याभिषेक''''''भरत तो होना ही चाहिए था तात ।

दशरथ : नही पुत्र ।''''''हां, तुम्हे आज रात्रि में कुश की सैया पर विश्राम करना है, रात्रि को जागना । सीता बेटी भी नही सोये ।

राम : भरत''''''तात''''''भरत ।

दशरथ : कल दूत भेज देना । रात-भर सावधान रहना पुत्र ।

राम : सावधान । क्या कोई सकट है तात ?

दशरथ : जब भी सत्ता परिवर्तन होता है, तो संतुष्ट और असंतुष्ट सक्रिय होते है । असंतुष्ट ऐसे समय सेना में विद्रोह या सीमा पर आक्रमण कर सकते हैं। कभी-कभी उत्तराधिकारी की हत्या कर सत्ता हथियाने के षड्यंत्र तक होते है । अतः यह रात्रि संक्रमण की रात्रि है। शत्रुओ के गुप्तचर सक्रिय हो सकते हैं। तुम शस्त्र निकट रखना ।

राम · जो आज्ञा तात ।

दशरथ : हां राम । मैंने चुपचाप आदेश दिए हैं कि गृह एवं रक्षा संबंधी निर्णय लक्ष्मण करेगा । वह तुम्हारा अनन्य भक्त है । कोई संकट आया भी तो वह अधिकारों का उपयोग कर सकेगा''''''जाओ । यह शुभ समाचार अपनी मां कौशल्या को सुनाओ । मैं'''''' तुम्हारी मझली मां के कक्ष मे जाता हूँ ।

राम . आप स्वयं चलकर माँ और अपनी बहू को समाचार सुनाते तो···

दशरथ : मेरी भी यही अभिलाषा थी तात। लेकिन यह रात्रि अति महत्त्वपूर्ण है। मुझे सभी सदेहपूर्ण स्थानो पर ध्यान रखना है···जाओ पुत्र···मेरा आज मझली माँ के कक्ष मे विश्राम करना उचित होगा।

राम . प्रणाम।

दशरथ : यशस्वी भव.।

सूत्रधार

राम राज अभिषेक सुनि, हियँ हरषे नर नारि।
लगे सुमंगल सजन सब, बिधि अनुकूल बिचारि।

बाजहिं बाजने बिबिध बिधाना। पुर प्रमोद नहिं जाइ बखाना।
हाट बाट घर गली अथाई। कहहिं परस्पर लोग लुगाई।
कनक सिंघासन सीय समेता। बैठहिं रामु होइ चित चेता।
सकल कहहिं कब होइहि काली। बिघ्न मनावहिं देव कुचाली।

[दृश्य परिवर्तन।]

कैकयी, सुमित्रा, कौशल्या थी तीन रानियाँ राजा के।
थे राम पुत्र कौशल्या के, लक्ष्मण, शत्रुघ्न सुमित्रा के।
कैकई भरत की माता थी, राजा की प्यारी बढी हुई।
मंथरा उसी की दासी थी, मुँह लगी हुई सिर चढी हुई।

मथरा . महारानी! कहाँ है? महारानी जी···

कैकई : अरे मंथरा···कब आई? सब कुशल से तो है?

मथरा : सब कुशल होता तो मै इस समय यहाँ न आती।

कैकई . क्या बात है। चिंतित दिख रही हो?

मथरा चिंतित होना स्वाभाविक है। मैं मूर्ख नही हूँ जो अपना हित-अहित का ध्यान भी न रख सकूँ।

कैकई : कैसा हित-अहित? महाराज रात्रि विश्राम के लिए यहाँ आने वाले हैं। मैं उन्ही के लिए सज रही हूँ।

मथरा : आप सब भूल गई? यहाँ सजने नही आई हो। आपका लक्ष्य है कैकई-देश और अपने पिता के अपमान का प्रतिशोध लेना।

कैकई : अब कैसा प्रतिशोध? कभी इच्छा थी, अब नहीं। महाराज सबसे अधिक मुझे चाहते हैं।

मथरा : तुम महाराज की लुभावनी और चालाक-भरी बातों मे आ गई हो?

कैकई : चालाकी! कैसी चालाकी?

मंथरा : चाहते तुम्हे है और पिता का स्नेह कौशल्या-पुत्र को देते हैं!

कैकई . पहेलियाँ बुझाती रहती हो तुम । क्या बात है ?

मथरा : महाराज कौशल्या पुत्र राम को राजगद्दी सौंप रहे हैं महारानी।

कैकई : सच मंथरा । मेरा राम महाराज बनेगा'''आज तू शुभ-समाचार लाई है''''''ये ले''''''और ले'''(आभूषण भेंट)

मंथरा . इसमें प्रसन्नता की बात है या दुःख की ?

कैकई : दुःख की बात हो ही नही सकती ? राम बड़ा हो गया है। जनता उसकी प्रशंसा करती है। वह हमारा ज्येष्ठ पुत्र भी है। महाराज के योग्य है।

मंथरा . आप निरी मूर्ख है या बहुत ही भोली हैं ? अपना अच्छा-बुरा भी नहीं सोच रही। बस महाराज की मीठी-मीठी बातों में आकर सब भूल गई।

कैकई : अपने पति की बातों में सब भूल जाना सुख का चरम होता है मंथरा।

मंथरा : उपदेश मत दो मुझे। 'सुख का चरम होता है'। सुख का चरम ही दुःख का प्रारंभ भी होता है।

कैकई : मुझे कौन-सा दु ख है ?

मंथरा . है नहीं, आने वाला है।

कैकई : कब से।

मंथरा . प्रातःकाल से।

कैकई : कोई चिन्ता नही। तब मेरा बेटा राम महाराज होगा और मैं राजमाता।

मथरा : असंभव। यदि राम राजा बनेगा तो राजमाता कौशल्या होगी।

कैकई : राम मुझे बड़ी दीदी से अधिक मानता है।

मथरा : ये सब चाल है। जब आपको वास्तविकता का ज्ञान होगा तब कही की भी नही रहोगी। तुम्हें तो तब मालूम पड़ेगा, जब संपूर्ण सत्ता कौशल्या के हाथ चली आएगी और आप भिखारियों की तरह हाथ फैलाएँगी।

कैकई : मंथरा, याद रखो। तुम दासी पहले हो, गुप्तचर बाद में। अब जब प्रतिशोध का प्रश्न नहीं है, तब गुप्तचरी उचित नही। समझी।

मंथरा : क्षमा करें महारानी। मैं दासी रहूँ या गुप्तचर। मेरी निष्ठाएँ पहले अपने देश के प्रति है। उसका हित ही मेरा हित है। यदि उसका अहित होता दिखाई देता है तो प्राणो का बलिदान देकर भी हितो की रक्षा करूँगी ? मैं गुप्तचर पहले हूँ और दासी बाद में। यहाँ तुम्हारे हित साधने के लिए आई हूँ। वैसे मेरा क्या स्वार्थ है ? न मेरा पुत्र राजा बनेगा और न मैं राजमाता।

कैकई : नाराज हो गई मंथरा। क्या बात है ? राम की राजगद्दी का शुभ समाचार सुनाने का पुरस्कार कम मिला हो तो और माँग लो ? आज तुम कहो तो मैं अपने अधीन प्रांतों को भी तुम्हें सौंप सकती हूँ।

मंथरा : वे तुमसे कल छिन भी सकते हैं ? सौत का पुत्र राजा बनकर और क्या करेगा ?

कैकई : मंथरा। यहाँ आज तक 'सौत' शब्द नहीं सुना। बहुत विषैली है। राज-परिवार का सुख अच्छा नहीं लगता क्या ?

मंथरा : सब अच्छा लगता है ? लेकिन तब तक उसमें छल न हो। उसमें कैकई को ठगने का षड्यन्त्र न हो।

कैकई : षड्यंत्र ! कैसा षड्यन्त्र ! किसने किया ?

मंथरा : जिसके लिए शृंगार किए बैठी हो, उन्हीं महाराज दशरथ ने। मंत्रिपरिषद में आज कौशल्या समर्थकों का बोलबाला था। कैकई देश का प्रतिनिधित्व पहले से ही कम है। गुप्तचरी के आरोप में कई व्यक्ति अवध से निकाल ही दिये हैं।

कैकई : राजनीति की अब आवश्यकता नहीं है मंथरा।

मंथरा : क्या संधि पालन की आवश्यकता भी नहीं है ? कैकई के पुत्र को राजगद्दी देने का प्रावधान क्यों भुला दिया गया ?

कैकई : दुर्भावना से कुछ नहीं किया होगा। महाराज धर्मात्मा हैं। सत्य वचन का पालन करते हैं।

मंथरा : कभी-कभी पीतल पर सोने का मुलम्मा भी चढ़ा रहता है कैकई ? धर्मात्मा हैं तो राज्याभिषेक का निर्णय सध्याकाल में क्यों कराया ? राजकुमार भरत का पक्ष लेने पर दुत्कारा गया। क्यों ? रात-भर में सभी तैयारियाँ और प्रातः राज्याभिषेक भी ? तुम्हारे समर्थक तुम से विचार-विमर्श न कर लें, सो रात्रि विश्राम भी नहीं ? ये सब धर्मात्मा होने के ही प्रमाण हैं क्या ?

कैकई : सदेह न करो मंथरा। महाराज सरल हैं।

मंथरा : सरल...। बहुत सरल हैं। तभी तो राजकुमार भरत को अवध की सीमा पर भेज दिया ताकि जनता सिर्फ राम के प्रति निष्ठावान हो। मुझे दुःख है आप जिन महाराज को सरल समझती हैं वे उन्हीं महाराज दशरथ ने सरलता का भी अपमान किया है।

कैकई : सरलता का अपमान ! कैसे ?

मंथरा : भरत से सरल कोई और हो ही नहीं सकता है लेकिन महाराज ने भरत से सुत पर भी सदेह किया।

कैकई : भरत से सुत पर भी सदेह !

मंथरा : हाँ महारानी। सदेह। उन्हें घर नहीं बुलाया। भरत की अनु-

परिस्थिति में अभिषेक की तैयारी क्यों ?

[कैकई चिंतित।]

मंथरा मंत्रिपरिषद् में हम हार चुके हैं। महाराज संधि की अपेक्षा कर राम को राज्य दिए देते हैं। यदि राम राजा बन गया तो कौशल्या राजमाता होगी और भरत सहित तुम दास-दासी हो जाओगे। सोच लीजिए। महाराज जैसे दिखाई दे रहे हैं, वैसे हैं नहीं। इसे 'कपट' नहीं कहूँ तो क्या कहूँ ?

कैकई : महाराज ने भरत पर संदेह किया ?

मंथरा : अभी कुछ नहीं बिगड़ा है। यदि आप चाहें तो राम की शपथ लेकर महाराज से अपने दोनों वचन माँग लीजिए। अन्यथा प्रायश्चित करोगी कैकई। मेरा माथा तब ही ठनका था जब मुझे पता चला कि महाराज ने सोच-विचार कर भरत को कैकई-देश भेजा है। हे भगवान् ! कौन-सा युग आ गया ? भरत से सुत पर भी संदेह……(प्रस्थान)

पार्श्व स्वर : सावधान ! महाराज दशरथ अंतःपुर में पधार रहे हैं।

दशरथ : प्रिये…प्रिये…अरे…क्या बात है ? मुझे कहो…अच्छा……मैं विलंब से आया इसलिए…क्षमा प्रार्थी हूँ। मंत्रिपरिषद् के निर्णय कार्यान्वित कराने लगा था। प्रिये…क्या बात है ? क्या किसी ने तुम्हारा अनिष्ट किया है। तुम नाम लो, मैं उसे दण्ड दूँगा। उठो कैकई…मैं तुम्हें मुस्कराते देखना चाहता हूँ।

कैकई : बहुत भोले बनते हैं महाराज ?

दशरथ : राम की सौगन्ध कैकई। तुमसे कपट नहीं करता हूँ। तुम मुझे अधिक प्रिय हो। उठो तुम्हें शुभ समाचार सुनाना है ?…आओ यहाँ बैठो…तुम चाहती थीं कि राम को राजगद्दी सौंप दी जाए…कल यह कामना भी पूर्ण हो जाएगी। अब तो प्रसन्न हो। मैं बहुत प्रसन्न हूँ कैकई ? तुम आज जो चाहो, मैं वही तुम्हें दूँगा।

कैकई : कोरे आश्वासन देने के अभ्यस्त हो महाराज। आश्वासन देते रहना राजसत्ता की नियति है ? कभी आश्वासन पूर्ण भी करना चाहिए।

दशरथ : मात्र आश्वासन नहीं देता हूँ। रघुवंशी वचन से नहीं फिरते हैं, प्राण भले ही दे दें कैकई। जिस दिन हम वचन भंग कर देंगे, उसी दिन जनता हमें महाराज मानने से मना कर देगी। हमने रघुवंश की परंपरा के कारण ही मोह होने पर भी महर्षि विश्वामित्र को अपने पुत्र सौंप दिए थे। तुम जब चाहो मेरी परीक्षा कर लेना महारानी।

कैकई : परीक्षा ! अनेक बार देख चुकी। दो वर दिए थे, वे भी आज तक नहीं दिए है।

दशरथ : आरोपित न करो कैकई। तुमने वर माँगे ही कहाँ हैं? अच्छा आज शुभ समय है। चाहो तो वे वर भी माँग लो।

कैकई . मैं जो माँगूंगी। वही देंगे ?

दशरथ : हाँ, वही दूंगा।

कैकई : आप शपथ लीजिए।

दशरथ : शपथ लेता हूँ।

कैकई : राम की शपथ लो।

दशरथ · अच्छा। राम की शपथ।

कैकई · तो सुनो महाराज। मेरे पुत्र भरत को अवध के सम्पूर्ण राष्ट्र का महाराज घोषित कीजिए और दूसरा वर महाराज··· प्रातःकाल होते ही कौशल्या पुत्र राम चौदह वर्ष के लिए अवध राष्ट्र की सीमा से दूर चला जाए।

दशरथ · ये तो राम को वनवास हो गया कैकई।

कैकई हाँ महाराज। राम को वन जाना होगा···चौदह वर्ष के लिए।

दशरथ · राम को वन ! चौदह वर्ष के लिए !···ऐसा विनोद मत किया करो प्रिये। मेरे तो प्राण ही चले जाएँगे।

कैकई . विनोद नहीं है। मैंने वचन माँगे है। आपने शपथ भी ली है।

दशरथ · विनोद नहीं है ! तो क्या तुम अपने राम को अवध से निकाल देना चाहती हो ?······राम तो तुम्हें बहुत प्रिय है। तुम्हीं कहती थी कि उसे राजगद्दी सौंप दो······और अब तुम्हीं कहती हो कि देश से निकाल दो। वनवास दे दो। कैकई तुम कह दो कि तुम विनोद कर रही हो।

कैकई : विनोद नहीं कर रही हूँ। मैं पूछती हूँ कि आप वचन पूर्ण करते है अथवा नहीं ? आप में साहस हो तो घोषणा कर दीजिए कि आप सत्य, धर्म, वचन की रक्षा नहीं कर सकते हैं अन्यथा कहिए कि रघुवंशियों की तरह वचन दिए।

दशरथ : सकट में मत डालो···मत डालो। अच्छा···मैं भरत को बुलाकर राजगद्दी सौंप देता हूँ, तुम दूसरा वचन कोई और माँग लो कैकई।

कैकई : मैं हाथ जोड़ती हूँ महाराज। आप मेरी मनोकामना पूर्ण कीजिए··· दूसरा वर देते हुए राम को चौदह वर्ष का वनवास घोषित कीजिए।

दशरथ : कैकई···अभी हमारी वार्ता किसी ने नहीं सुनी है। तुम मेरी रक्षा करो कैकई रक्षा। राम को देश से किस अपराध में

निकाल दूँ। यदि अपराध भी होता तो भी राम को नहीं निकाल सकता।

कैकई : व्यर्थ की चर्चा न करो राजन्। वचन पूर्ण करो।

दशरथ : निर्मोही न बनो महारानी। राम के बिना मैं जीवित नहीं रह सकता हूँ। मैं मर जाऊँगा कैकई।

कैकई . राम के बिना मर जाएँगे और भरत के बिना कुछ नहीं?

दशरथ : अन्यथा मत कहो। राम और भरत मेरी आँखें हैं।

कैकई . आँखें······हूँ। आप दूसरा वर देते हैं या नहीं?

दशरथ . कैकई। मुझे नहीं मालूम था कि तुम विषैली नागिन हो।······ मैं तेरे पाँव पर मस्तक रखता हूँ। तू प्रसन्न हो जा। मैं बूढ़ा हूँ कैकई।···मृत्यु के निकट हूँ। तू मुझ पर कृपा कर। अपना दूसरा वर वापस ले ले।

कैकई : वरदान देकर पश्चाताप करते हो राजन। तुम धार्मिकता का ढिढोरा कैसे पीटते हो? वरदान से पीछे हटकर कुल पर कलंक लगाना चाहते हो? स्मरण करो राजन। इस कुल के राजा शैब्य ने कबूतर की रक्षा के लिए बाज को अपना मांस दे दिया था। महाराज अलर्क ने ब्राह्मण के लिए अपनी आँखें दे डाली थी। और तुम धर्म को तिलाजलि दे रहे हो। आप तो राम को राजा बनाकर कौशल्या के साथ मौज उड़ाना चाहते हैं ना। मैं सब समझती हूँ। आपने प्रतिज्ञा की है राजन। प्रतिज्ञा पूर्ण कीजिए।

दशरथ : आज पता चला कि तू कितनी नीच है। तू मेरे प्राण लेकर रहेगी। मैं मर जाऊँ तब विधवा होकर अपने बेटे के साथ राज्य करना। मैंने राम को वनवास घोषित कर दिया तो लोग कहेंगे कि दशरथ ने स्त्री के कहने पर बेटे को निकाल दिया···मुझे नहीं मालूम था कि मुझसे प्रेम जताने वाली मेरी पत्नी नहीं, अपितु विष कन्या थी। जो अवसर पर डस लेना चाहती थी। मैंने तुझे गले लगाया और तू मेरे लिए फाँसी का फंदा बन गई।···

कैकई : बड़ी डींग मारते थे कि मैं दृढ़ प्रतिज्ञ हूँ। फिर मेरे वरदान को पूर्ण क्यों नहीं करना चाहते हो।

दशरथ : (आँसू छलछला आते हैं।) कैकई तू मुझे बचा ले। मैं सच कहता हूँ, राम वन गया तो मैं मर जाऊँगा।

कैकई : आपने दो वर देने की प्रतिज्ञा की थी महाराज। अब आप ऐसे विलाप कर रहे हैं जैसे कोई पाप हो गया हो। मैं अंतिम बार पूछती हूँ कि आप राम को घर से निकालते हैं या नहीं?

दशरथ : नहीं कैकई नहीं······

कैकई : तो सुनो राजन। मैं सार्वजनिक घोषणा कर आत्महत्या कर लूँगी।

ये रात का अंतिम पहर है। आप शीघ्रता से वर दीजिए।

पार्श्व

[प्रकाश परिवर्तन के साथ]

परी न रातहिं नीद निसि, हेतु जानें जगदीश।
राम राम रट भोरि किय, कहइ न मरमु महीस।

सुमन्त : महाराज की जय हो। अवध की प्रजा और जन प्रतिनिधि एकत्र हो चुके हैं। गुरुदेव ने सब व्यवस्थाएँ कर ली है। बस, आपकी प्रतीक्षा है, चलिए महाराज। कार्य में विलंब हो रहा है।

दशरथ : सु···म···न्त। राम को ले आओ।

सुमन्त : श्री राम को···! (कैकई की ओर) क्या बात है महारानी?

कैकई : आदेश का पालन कीजिए महामंत्री।

[प्रस्थान।]

[पुनः प्रवेश। राम का आना।]

दशरथ : राम···राम···राम···

राम : तात! क्या हुआ आपको? माँ, तात की इस अवस्था का कारण क्या है?

कैकई : इस अवस्था का कारण तुम हो राम।

राम : मैं?

कैकई : हाँ तुम। महाराज ने मुझे दो वचन दिए हैं। भरत को राजगद्दी और चौदह वर्ष का वनवास तुम्हें।

सुमन्त : वनवास? महाराज···आपने यह वचन कैसे दे दिया?

कैकई : महामंत्री को राजा से प्रश्न नही करना चाहिए सुमन्त।

राम : तात। इसमे इतना व्यथित होने की क्या आवश्यकता है। क्या आपको अपने बेटे पर विश्वास नही रहा? यह तो वनवास है तात। मैं आपके संकेत पर प्राण भी दे देता?

कैकई : पुत्र स्नेह के मोह में फँसे महाराज तुम्हें कैसे कहें? अब यदि तुम चाहो तो अपने पिता के वचनों की लाज रख लो, अन्यथा रघुवंशियो का नाम डूब जायेगा।

राम : नही माँ, नही। रघुवंश की परपरा उज्ज्वल है। उस पर आँच कभी नही आ सकती।

कैकई : फिर विलंब कैसा? वन के लिए अविलंब प्रस्थान क्यों नहीं करते?

राम : प्रस्थान···अवश्य···। अपने पिता के वचन पूर्ण करूँगा, आप दुखी न हों तात। राम को राजगद्दी कभी नही चाहिए थी। आपका स्नेह चाहिए था स्नेह।

दशरथ : राम···बेटा···राम। देख, कितना दीन हूँ मैं। एक स्त्री के

कारण···एक स्त्री-मोह का परिणाम है ये।

राम : तात।

दशरथ : मेरा कहना मत मान बेटे। मत मान। तू मुझे बंदी बनाकर राजा बन जा बेटा।

राम : एक राज्य के लिए, अपने पिता को बंदी बना लूँ···मैं। यह तो राज्य है तात, मैं तीनों लोकों के राज्य के लिए भी ऐसा नहीं कर सकता।···आप दुखी न हों तात। मैं माँ से आज्ञा लेकर आया।

[राम एवं सुमन्त का प्रस्थान।]

दशरथ : बेटा···राम।···कैकई। तू भी अपनी माँ की तरह निकली। तेरे पिता तो ज्ञानी थे, इसलिए तेरी माँ को देश से निकाल दिया था। लेकिन तूने मुझे डस लिया पापिन···(विलाप)

पार्श्व स्वर

छाया बादल की तरह यह सम्वाद तमाम।
चौदह वर्षों के लिए जाते हैं वन राम॥
अभी पहुँचने भी नहीं पाए ये श्री राम।
पहले आ पहुँची सिया कौशल्या के धाम॥

सीता : प्रणाम माँ।

कौशल्या : सौभाग्यवती भवः।

राम : माँ···सीते तुम! (चौंककर)

कौशल्या : आ गये बेटे। कुछ फलाहार कर ले। लक्ष्मण भी आता होगा।

राम : माँ।

कौशल्या : माँ···माँ की रट क्यों लगाये है। अभिषेक का समय हो चुका है तैयार हो ना?

राम : माँ, पिताजी की आज्ञा है कि···

कौशल्या : क्या आज्ञा है? अब तक एक बार भी दर्शन नहीं हुए है उनके। अपने बेटे के राज्याभिषेक मे इतने व्यस्त हो गए? हाँ, क्या आज्ञा है उनकी?

राम : उन्होने वन का राज्य सौंप दिया है मुझे। उनकी आज्ञा है कि मैं शीघ्र ही वन चला जाऊँ।

कौशल्या : वन का राज्य! रात को अवध का राज्य देने के लिए कहा था और अब वन का राज्य! सच-सच बोलो राम। क्या बात है? सीता···बोल बेटी?

सीता : इन्हें चौदह वर्ष के लिए बनवास दे दिया है।

कौशल्या : चौदह वर्ष के लिए बनवास···किसने दिया? तुम्हारे पिता ने···!

राम : हाँ माँ। इसमें दुखी होने की क्या बात है? सिर्फ चौदह साल की बात तो है ही?

कौशल्या : ···नही···नहीं बेटा। वनवास नही। ये न न्याय है और न नीति।

राम : पिता की आज्ञा का पालन करना ही धर्म है माँ।

कौशल्या . मैं बड़ी माँ हूँ राम। यदि पिता ने वन जाने को कहा है तो मैं बड़ी माँ, अवध की महारानी, आदेश देती हूँ तुम वन नही जाओगे। माँ का आदेश पालन सबसे वड़ा धर्म होता है पुत्र।

राम . लेकिन मझली माँ की भी आज्ञा है माँ ?

कौशल्या जो पितु मातु कहेहु वन जाना,
तो कानन सत अवध समाना।
अब मैं कुछ नही कहूँगी···राम···बेटा···

राम · आज्ञा दो माँ।

सीता : मुझे भी आज्ञा दीजिए माँ। मैं भी इनके साथ जाऊँगी।

राम : नही सीते। वनवास अत्यन्त कठिन है। तुम मिथिला और अवध के सुखों में पली हो। वनवास उचित नही है। माँ, इन्हें रोकिए। यहाँ सुख नही है।

सीता : सुख ! प्रासाद का सुख, सुख नही होता है। पिता के घर का सुख हो या अवध का सुख। मेरे लिए सब व्यर्थ है। अर्थहीन है। विवाहिता का सुख उसका पति है पति। पति का साथ ही सुख होता है।

राम : भावुक न बनो सीता। भावना और व्यवहार में बहुत अन्तर होता है। वन में वनवासी जीवन जीना पडता है। वहाँ न ऐश्वर्य है, न सुविधाएँ, न दास-दासियाँ।

सीता : आप आज महाराज बनते तो मुझे महारानी बनने का अधिकार होता या नही ?

राम : अवश्य होता।

सीता : अब आप वनवासी है तो मैं वनवासिनी का अधिकार कैसे खो सकती हूँ।

राम : यह तर्क का समय नही है।

सीता : धर्म का समय तो है। वह कोई निराधम, नीच कुल स्त्री ही हो सकती है जो पति को विपदा मे देखकर साथ न दे और स्वयं सुख भोगे। जनकपुर का संस्कार अवध से अलग है क्या ?

राम : सीता। वन मे हिंसक पशु है। पर्णकुटी मे रहना पड़ता है। आहार के लिए कंद, मूल, फल ही है। वहाँ का जीवन कष्टमय है। मेरा कहा मानो। यहाँ ऐसे रहना कि कोई कुछ कह न पाये। महाराज भरत का आदर करना। माँ का ध्यान रखना।

सीता : यहाँ नही रहूँगी। यदि आप साथ न ले गए तो प्राण त्याग दूँगी।

राम : अच्छा, जाओ। अपनी अमूल्य वस्तुएँ ब्राह्मणो को दान कर दो।

सूत्रधार

समाचार जब लक्ष्मण पाये। व्याकुल बिलख वदन उठि धाए।

लक्ष्मण : कोई वन नहीं जायेगा।

राम : पिता की आज्ञा है लक्ष्मण।

लक्ष्मण : पिता एक स्त्री के वशीभूत हैं। ऐसे व्यक्ति का आदेश पालन उचित नहीं।

राम : लक्ष्मण। मर्यादा का उल्लंघन मत करो। महाराज हमारे पिता हैं।

लक्ष्मण : तभी तो पितृ स्नेह की वर्षा कर दी है।

राम : भाग्य को कहाँ ले जाओगे लक्ष्मण।

लक्ष्मण : भाग्य'''भाग्य'''क्या होता है भाग्य। वनवास भाग्य नहीं है। षड्यंत्र है षड्यंत्र। राजसत्ता पाने के लिए एक सुनियोजित षड्यंत्र। आप उस षड्यंत्र के शिकार हो रहे हैं।

राम : जो भी हो। महाराज के वचन का प्रश्न महत्त्वपूर्ण है।

लक्ष्मण : महाराज के वचन व्यक्तिगत हैं। लेकिन वे सार्वजनिक जीवन पर थोपे जा रहे हैं। मंत्रिपरिषद और अवध की जनता का निर्णय, एक स्त्री के वचनों में कैसे समा सकता है। बड़े बोल नहीं बोलता '''चलिए। आप मेरे साथ चलिए'''मैं देखता हूँ, कौन रोकता है राज्याभिषेक? यदि महाराज बाधा बने तो मैं उन्हें भी बंदी बना लूँगा। लेकिन आज अभिषेक होकर रहेगा।

कौशल्या : इसे रोक लो लक्ष्मण। यदि राम चला गया तो मैं जीवित कैसे रहूँगी वत्स।

राम : दुखी न हो माँ। ऐसे समय में शांत रहकर विचार करना चाहिए।

लक्ष्मण : बड़ी माँ। भैया का यह त्याग अच्छा नहीं लगता। महाराज बूढ़े हो गए हैं। इन्होंने क्या अपराध किया है जो देश से निकाल रहे हैं? यह अनुचित है (राम से) भैया, मैं सहायता करूँगा। आप राज्य ग्रहण कीजिए। आज तक इस धनुष को लेकर आपके पीछे ही चला हूँ। अब भी आपके पीछे हूँ। जो भी भरत का पक्ष लेगा, मैं उसका वध कर डालूँगा।

राम : शांत हो लक्ष्मण, शांत। यह क्षण नम्र रहने का है। उत्तेजना से कोई लाभ नहीं है।

लक्ष्मण : नम्रता और भावना का तिरस्कार ही होता आया है भैया। शत्रु से नम्रता उचित नहीं। उसे मार डालना ही उचित है।''' बड़ी माँ, व्याकुल न हो। मैं शपथपूर्वक कहता हूँ कि जैसे सूर्य उदित होकर अंधकार का नाश कर देता है, वैसे ही यह दुख समाप्त हो जाएगा।

कौशल्या : बेटा राम। तुमने सुना। लक्ष्मण क्या कह रहा है? अब तुम्हें वन नहीं जाना चाहिए। आज तुम अकेले नहीं हो। अवध तुम्हारे साथ है।

राम : कुछ भी हो माँ। पिता की आज्ञा ही मेरा धर्म है। कण्डुमुनि ने पिता की आज्ञा पर अधर्म समझते हुए भी गौवध किया था। हमारे कुल में भी महाराज सगर की आज्ञा पर पुत्रों ने पृथ्वी खोदते-खोदते प्राण दे दिए थे। युग के अवतार परशुराम जी ने अपने पिता जमदग्नि के कहने पर माँ रेणुका का वध कर डाला था। ये उदाहरण मेरे सामने हैं माँ। इसीलिए मैं भी पिता का हित साधन ही करूँगा। पिता की आज्ञा पालन करने पर कभी धर्म नष्ट नहीं होता है। (लक्ष्मण से) लक्ष्मण···मैं जानता हूँ कि तुम्हारे हृदय में मेरे लिए कितना प्रेम है। यह भी जानता हूँ कि तुम्हें चुनौती देने वाला कोई नहीं है। लेकिन धर्म से श्रेष्ठ कुछ नहीं होता। मैं पिता की आज्ञा का उल्लंघन नहीं कर सकता हूँ···नहीं कर सकता। (कौशल्या) माँ, आज्ञा दीजिए—मैं चौदह वर्ष बाद लौटकर वापस आऊँगा माँ।

कौशल्या : (विलाप) नहीं बेटा। मैं तो गैया हूँ। गाय अपने बछड़े को कैसे छोड़ सकती है। तू मुझे साथ ले चल राम···

लक्ष्मण : भैया! आप समझते हैं कि पिता की आज्ञा का पालन आपने नहीं किया तो धर्म नष्ट हो जाएगा। आप सोचते हैं कि राजा बन गए तो जन-विश्वास घट जाएगा। जनता दर्शक होती है भैया दर्शक। उसके सामने नाटक ही सफल होता है। सबसे अधिक पापी, पाखंडी और ठग ही सबसे बड़ा धर्मात्मा समझा जाता है।···ये वरदान की बातें तब क्यों नहीं थीं जब राज्याभिषेक की घोषणा की गई थी? बड़े के होते हुए छोटे का राज्याभिषेक अधर्म नहीं है क्या? एक बात आप भी सुन लीजिए···यदि किसी अन्य का राज्य अभिषेक हुआ तो ठीक नहीं होगा।

राम : लक्ष्मण····'दैव' भी कोई चीज होती है। दैव ही सब कुछ है।

लक्ष्मण : आज देखता हूँ, क्या करते हैं दैव और अभिषेक कौन रोकता है? यदि कैकई ने व्यवधान डाला तो मैं उस पापिन को आज्ञा को भस्म कर दूँगा। जिन्होंने तुम्हें चौदह वर्ष का वनवास देने का समर्थन किया है। वे लोग स्वयं चौदह वर्ष तक जंगलों में छिपकर अपने प्राण बचाते फिरेंगे। ये बाँहें धनुष लटकाने के लिए नहीं है भैया, धनुष लटकाने के लिए नहीं!

राम : सौमित्र। मैं एक छोटे राज्य की प्राप्ति के लिए हिंसा का सहारा कभी नहीं ले सकता हूँ। हिंसा को शस्त्र मानने वाले अधर्मी और

निहित स्वार्थों वाले ही होते हैं। वैसे भी हिंसा से प्राप्त सत्ता जनता में भय व्याप्त करती है और अन्तत. हिंसक क्रांति वाला अपनी ही आग का शिकार हो जाता है। हमारे राष्ट्र में हिंसा के लिए कोई स्थान नहीं है। यह देश धर्मपरायण राष्ट्र है। यहाँ प्रेम ही आधार है। यह जीवन सुख-भोग की वस्तु नहीं है। ये तो नष्ट होने वाला है, इसलिए वे ही कार्य करना चाहिए जो यश देते हों और धर्म के अनुकूल हों। यह निश्चित समझो लक्ष्मण कि मैं वन अवश्य ही जाऊँगा'''मुझे कोई रोक नहीं सकता है। यह मेरा निश्चय है।

लक्ष्मण : भैया ?

राम : क्या तुम चाहते हो कि जनता कहे कि तुम्हारे भाई ने राज्य के लिए धर्म का परित्याग कर दिया'''? ऐसा कभी नहीं चाहोगे तुम।

लक्ष्मण : भैया। तुम्हें मेरी शपथ है फिर मुझे भी साथ ले चलो। मैं अब यहाँ कतई नहीं रहूँगा।

राम : लक्ष्मण'''तुमने शपथ ही दे दी। अच्छा, जाओ। माँ से आज्ञा ले आओ।

[जन स्वर]

स्वर : श्री राम'''श्री राम'''

राम : ये कैसा स्वर ?

लक्ष्मण : हमारे शुभचिंतक हैं।

राम : (बाहर आकर)

स्वर : अवध छोड़कर मत जाओ श्री राम। मत जाओ।

राम : आप सबने मुझे बचपन से देखा है, खिलाया है। आपने ही सिखाया है कि मनुष्य को धर्म कभी नहीं छोड़ना चाहिए'''अब आप ही कहते हैं कि मत जाओ। मुझे कर्तव्य करने दीजिए।

शुभचिंतक-1 : आपके चले जाने पर हमारा कोई सहारा नहीं बचेगा। हम कैसे जीवित रहेंगे ?

शुभचिंतक-2 : हो सकता है कि परिवर्तित सत्ता हमें आपका समर्थक समझकर प्रताड़ित करे। हमारी सम्पत्ति छीन ले।

शुभचिंतक-4 : यदि आप वन ही जाना चाहते हैं तो हमें भी साथ ले चलिए। अब हम यहाँ सुरक्षित नहीं हैं। हम यहाँ जीवनयापन भी कैसे करेंगे ?

राम : भयभीत न हों। लक्ष्मण'''

लक्ष्मण : जी भैया।

राम : राजकोष में मेरे और तुम्हारे हिस्से का जो धन है उसे लाकर सब में बाँट दो। अपने शस्त्र ले आओ और जनकपुर से प्राप्त समस्त

उपहार भी वितरित कर दो।

लक्ष्मण : जो आज्ञा।

राम : आप सब निर्भय हों। मैं वन मे हूँ इसका अर्थ यह नही है कि आप पर कोई अत्याचार कर सकेगा। वैसे भरत ऐसा नही है। फिर भी लक्ष्मण मे धन ले लो और अवध मे ही रहो '। ये धन चौदह वर्षों के लिए पर्याप्त होगा। तुम मेरी प्रतीक्षा करना। मैं चौदह वर्ष पश्चात अयोध्या अवश्य लौटूंगा'''अवश्य लौटूंगा। मुझे आप सब आज्ञा दीजिये।

[प्रस्थान कर कौशल्या के पास आना। वहाँ लक्ष्मण का आना। राम को धनुष देना। स्वय के हाथ में फरसा। सीता के हाथ में पोटली। सुमित्रा का भी आना।]

राम : माँ। आज्ञा दो माँ।

कौशल्या : (सुमित्रा को देखकर विलाप।)

लक्ष्मण : (सुमित्रा से) आज्ञा दो माँ।

सुमित्रा : पुत्र राम और सीता ही तुम्हारे पालक है। संकट में भाई का साथ देकर तुमने मेरे दूध का मान बढ़ाया है पुत्र।

लक्ष्मण : शत्रुघ्न आए तब माँ'''

सुमित्रा : वह परिस्थिति देखकर मेरा परामर्श लेगा पुत्र। यदि कोई अन्याय हुआ तो हम प्रतिकार करेंगे।

[राम का कैकई प्रासाद में प्रवेश।]

स्वर : श्री रामचन्द्र की

समूह . जय।

[पुनरावृत्ति]

पार्श्व स्वर

पितु असीस आयसु मोहि दीजै। हरप समय विसमय कत कीजै।
सुनि सनेह वस उठि नर नाहाँ। बैठारे रघुपति गहि बाहाँ।
सुनहु तात तुम्ह कहुँ मुनि कहेंही। रामु चराचर नायक अहेंही।
जब नृपभीय लाइ उर लीन्ही। अति हित बहुत भाँति सिख दीन्ही।
तुम्ह कहुँ तो न दीन्ह बनवासू। करहु जो कहहिं ससुर गुर सासू।
सीय सकुचि वस उतर न देई। सो सुनि तमकि उठी कैकई।

कैकई : आप जितना विलंब करेंगे उतना महाराज को कष्ट होगा। ये वल्कल वस्त्र लो और प्रस्थान करो।

सुमन्त : महारानी कैकई। आप उस रास्ते को मत चुनो जो महाराज की हत्या करता हो। देखो देवि—आज इनकी क्या हालत है? ये तुम्हारे पति हैं। पति, पुत्र से अधिक मूल्यवान होता है। तुम्हारी इच्छा है तो भरत राजा हो जायें। तुम दोनो पृथ्वी पर राज्य

करो लेकिन…यदि श्री राम अयोध्या से चले गये तो…

कैकई : महामंत्री सुमन्त। राम को वन जाना होगा।

सुमन्त : यदि राम को वन जाना होगा तो हम सब लोग इस अयोध्या में नहीं रहेंगे। तुम्हारे राज्य में कोई ब्राह्मण निवास नहीं करेगा। याद रखो देवि। जहाँ श्री राम रहेंगे…मैं वहाँ एक प्रभुता सम्पन्न राष्ट्र बसा दूँगा अन्यथा तुम अपना यह कुकर्म रोक लो।

कैकई : धमकियाँ देना राजद्रोह होता है महामंत्री। मैं यह भी जानती हूँ कि तुम्हारी निष्ठा कहाँ है?

दशरथ : नीम से मधु नहीं टपक सकता है सुमन्त। तुम राम के साथ चतुरंगिणी सेना और सम्पूर्ण राजकोष साथ भेज दो।

कैकई : महाराज! धनहीन, सैन्य-शून्य होने पर भरत किस पर राज्य करेगा? यह अनुचित है। मैं भरत की माँ होने के नाते राजमाता भी हूँ। इसलिए महाराज के इस आदेश को प्रतिबंधित करती हूँ। सीता, यदि तुम वन जा रही हो तो राज्य के ये वस्त्र यहीं छोड़ कर जाओ। अवध की सम्पदा पर भरत का अधिकार है अब।

वशिष्ठ : महारानी कैकई। बहुत दुष्ट स्त्री है। याद रखो, यदि जनक-नंदिनी वन जायेगी तो हम लोग यहाँ नहीं रहेंगे। पुरवासी, रक्षक, ब्राह्मण, मुनि कोई भी तुम्हारे राज्य में नहीं रहेगा। वीरान हो जाएगा अवध। तब तुम और भरत को ऐसे वस्त्र ही धारण करने पड़ सकते हैं।…तुम्हें लज्जा भी नहीं आती। ये तुम्हारी पुत्रवधु है।

सुमन्त : जब आदमी की बुद्धि पापपूर्ण हो जाती है तो उसे कुछ दिखाई नहीं देता है गुरुदेव।

[राम-सीता-लक्ष्मण प्रदक्षिणा करते हुए।]

दशरथ : राम…राम…सीते…बेटा लक्ष्मण…कैकई…तू पापिन है…कुलटा है…नीच है। मेरे बेटे मुझे तेरे कारण छोड़ गए।…जा मैं तेरा त्याग करता हूँ।…तू मेरे मृत-शरीर को भी मत छूना। राम…राम…कोई यहाँ है।

[दासियाँ उपस्थित होती हैं।]

मुझे महारानी कौशल्या के कक्ष तक पहुँचा दो। मैं उसे अब क्या कहूँगा। (विलाप)

[मंच तीन पर प्रकाश।]

सूत्रधार (तमसा) : मैं तमसा हूँ। जब श्री राम ने अयोध्या छोड़ दी, तब कई नागरिक उनके रथ के पीछे दौड़ते चले आए थे। श्री राम ने राज्य छोड़कर एक श्रेष्ठ आदर्श प्रस्तुत कर दिया। श्री राम ने मेरे तट पर रात्रि विश्राम किया। जब श्री राम, सीता, महामंत्री सुमन्त विश्राम कर

रहे थे तब लक्ष्मण जी ने अपने शुभचिंतकों से गुप्त वार्तायें की।

लक्ष्मण : आप सब हमारे मित्र हैं। मित्र वही होता है जो सकट की घडी मे साथ दे। सुख के साथी तो बहुत होते हैं। कुछ लोग अवसरवादी होते है जो अवसर देखकर चलते हैं। आप लोग मित्र हैं। इसलिए अवध लौटकर श्री राम के हित में कार्य करना। श्री राम ने धर्म की रक्षा की है उन्होंने वचन के लिए राज्य सत्ता ठुकरा दी। आज कौन है जो राज्य सत्ता को ठुकराता है। सब सत्ता से चिपके रहना चाहते है। समाज-सेवा, राज-सेवा, धर्म-सेवा, यह सब राजसुख पाने के लिए महज एक नाटक है। लेकिन श्री राम ने जो आदर्श प्रस्तुत किया है वह अद्वितीय है। हमने कुछ निर्णय किए है, आप उन्हें प्रभावी बनाना।

शुभचिंतक-1 : अब जो कोई कैकई का समर्थन करेगा, ब्राह्मण उसी से दान नही लेंगे।

शुभचिंतक-2 : मुनि उसके यहाँ यज्ञ नही करायेंगे।

शुभचिंतक-3 : हम महारानी कौशल्या का साथ देंगे।

शुभचिंतक-4 . हम प्रतीक्षा करेंगे, कि श्री राम शीघ्र लौटे।

सूत्रधार : रात्रि के तीसरे पहर पर श्री राम ने सुमन्त को आज्ञा दी और वे रथ लेकर रातों रात दूर चले गये। प्रातःकाल नगरवासी विलाप करते हुए अवध की ओर लौट गये। इधर श्री राम ने वेदश्रुति, गोमती और स्यन्दिका नदियों को पार कर लिया। वे प्रातःकाल महामंत्री सुमन्त से कहने लगे।

राम : आप अयोध्या जाकर महाराज को सांत्वना देना।

सुमन्त : नही वत्स। मैं केवल महामंत्री नही हूँ। तुम्हारा कुछ और भी हूँ मैं।

राम : मैंने आपको सदैव पिता के समान ही समझा है तात।

सुमन्त : राम···बेटा। इस पिता का कहना मान लो। अब लौट चलो।··· देखो तुम्हें देश से निकाला गया था सो तुम अब शृंगवेरपुर राज्य में आ गये हो। यह वचन पूरा हो गया···अब लौट चलो वत्स।

राम : तात। अपने विश्वास से पीछे हटना मेरे लिए असंभव है। मैं पिता को अपयश का भागीदार कभी नही बना सकता हूँ। आप मेरी प्रतीक्षा करना। मेरी माँ का विशेष ध्यान रखना। मेरी ओर से भरत से हाथ जोड़कर कहना कि वह दोनों माताओं का अपमान न करें।

लक्ष्मण : निश्चित रहो भैया। आपकी बहू यहाँ है।

राम : उर्मिला।

सीता : हाँ, उर्मिला। देवर, उसे कहकर आये है, नही तो वह भी हमारे साथ चलती।

राम : उर्मिला···उसका त्याग वंदनीय है। इन दोनों ने मेरे कारण अपने को अलग-अलग कर लिया।

सुमन्त : जब तक आप गंगा पार नहीं करते है, मैं साथ ही चलूँगा वत्स।

[राम का प्रस्थान। सुमन्त का अवध के लिए वापसी।]

सूत्रधार

पुरते निकसी रघुबीर वधू, धरि धीर दए मग मे डग द्वै
झलकी भरि भाल कनी जलकी, पुट सूखि गए मधुराधर वै
फिर बूझति है चलनो अब कैतिक, पर्ण कुटी करिहौं कित ह्वै
तिय की लख आतुरता पिय की अखियाँ अति चारु चली जल च्वै।

राम : लक्ष्मण। मेरे पाँव मे काँटा लग गया है। मैं जब तक काँटा निकालता हूँ, तुम तब तक गंगा नदी से जल ले आओ···उठो लक्ष्मण···अब हम वन प्रांत में है···यहाँ के लोग ही अब हमारे अपने बन जाएँगे—सब सारा दुख जाता रहेगा।

[जल लेकर लक्ष्मण की वापसी। जल पीना और प्रस्थान करना।]

गुह : महाबाहो। शृंगवेरपुर में आपका स्वागत है।

राम : निषादराज···आप! (गले मिलते हैं।)

गुह : प्रणाम महारानी।

राम : ये महारानी नहीं, मेरी पत्नी जानकी है।

गुह : तब भी आप महारानी ही हैं।

राम : मैं महाराज नही हूँ।

गुह : मालूम है। इस धरती पर ऐसा दूसरा कोई उदाहरण नही है भगवन।···ये शृंगवेरपुर आपका ही राज्य है। मैं आपके अधीन हूँ प्रभु।

राम : एक राज्य छोड़ा है, तो दूसरा कैसे ले सकता हूँ?

लक्ष्मण : तुम्हारी भावना धन्य है निषादराज। आपने भैया को अपना महाराज बताकर हमारा जो आदर किया है, उसके हम ऋणी रहेंगे। हम जब अवध लौटेंगे तब अवध राष्ट्र आपकी भावना को स्मरण रखेगा।

राम : लेकिन मैं महाराज नही···

लक्ष्मण : लेकिन निषादराज। चूँकि भैया राज्य संचालन नहीं करते हैं, इस-लिए आप यथावत रहेंगे। हमारी यह मित्रता, यह प्रेम सदा बना रहेगा। मैं आशा करता हूँ कि आप सदैव हमारा साथ देंगे।

गुह : प्राण दे दूंगा प्रभु। आप निश्चिन्त होकर वन में रहिए। इस ओर से कोई संकट नही रहेगा। यदि इधर से कोई आया तो उसे पहले हमसे युद्ध करना पड़ेगा तब आगे जा सकेगा।

राम . अब यह स्थान तुरंत छोड़ देना चाहिए हे निषादराज । हमें एक नाव चाहिए । उपलब्ध हो सकती है।

गुह : प्रभु नौका और मल्लाह केवट तट पर है । आप चलिए ।

[नौका के निकट पहुँचना ।]

पार्श्व स्वर

मांगी नाव न केवट आना । कहइ तुम्हार मरमु मैं जाना ।
चरन कमल रज कहुँ सबु कहई । मानुष करनि मूरि कछु अहई ।
छुअत सिला भई नारि सुहाई । पाहन तें न काठ कठिनाई ।
तरनिउ मुनि घरनी होई जाई । बाट परइ मोरि नाव उड़ाई ।

केवट : एहि घाट तें थोरिक दूरि अहै कटि लौं जलु थाह देखाइ हौ जू ।
परसें पग धूरि तरै तरनी, घरनी घर क्यों समुझाइहौ जू ।
प्रभु जी अवलंबु न और कछु, लरिका केहि भाँति जिआइ हौ जू ।
बरु मारिए मोहि, बिना पग धोएँ हौं नाथ न नाव चढ़ाइहौ जू ।

सूत्रधार

सुनि केवट के बैन प्रेम लपेटे अटपटे,
बिहसे करुना ऐन चितइ जानकी लखन तन ।

राम : अच्छा केवट । तुम जैसा चाहो, वैसा करो । लेकिन मुझे उस पार पहुँचा दो ।

सूत्रधार

पद पखारि जलु पान करि आप सहित परिवार,
पितर पारु करि प्रभुहि पुनि मुदित गयउ लेई पार ।

पार्श्व गीत

राम, जय-जय, राम, राम, जय-जय राम ।

तीन

[मंच एक पर प्रकाश ।]

सूत्रधार

सचिव आगमनु सुनत सब, बिकल भयउ रनिवास ।
भवन भयकरु लाग तेहि, मानहु प्रेत निवास ।।

जाई सुमत दीख कस राजा । अमिय रहित जनु चंद बिराजा ।
राम राम कह राम सनेही । पुनि कह रामलखन बैदेही ।

भूप सुमंत निकट बैठारी। पूछत राउ नयन भरि बारी।
राम कुशल कहु सखा सनेही। कहँ रघुनाथु लखनु बैदेही।

दशरथ : सुमन्त। मुझे भी वहीं छोड़ आओ, जहाँ मेरे राम-लक्ष्मण को छोड आए हो।

सुमन्त : महाराज, धैर्य से काम लीजिए। आपने साधुओं की सेवा की है, आप ज्ञानी हैं। सुख-दुःख, हानि-लाभ, प्रिय का मिलन, बिछोह, सब समयाधीन है।

कौशल्या : महाराज। धैर्य से काम लो। आप अवध के कर्णधार है—यदि आप इतने दुःखी हुए तो इन सबका क्या होगा?

दशरथ : कौशल्ये, मुझे क्षमा कर देना······मैंने राम को वन भेज दिया······कौशल्या मेरा अंत समय है।

सुमित्रा : महाराज, ऐसे वचन न बोलिए। इस समय सब लोग आपकी ओर देख रहे हैं।

दशरथ : मैं भी देख रहा हूँ। आज शाप का फल सामने आने वाला है महारानी।

कौशल्या : कैसा शाप?

दशरथ : मुझे अंधे माता-पिता ने शाप दिया था, कि मै पुत्र के बिछोह में मरूँगा।

कौशल्या : क्यों महाराज?

दशरथ : मेरे तीर से उनका पुत्र मारा गया था। राम··········राम!

सुमन्त . महाराज······क्या हो रहा है आपको। आप विश्राम कीजिए। आप सोने की कोशिश कीजिए, महाराज।

[दशरथ का लेट जाना। धीरे-धीरे कौशल्या की झपकी।]

पार्श्व स्वर

दोहा : राम, राम कहि राम कहि, राम राम कहि राम।
तनुपरिहरि रघुबर बिरह, राउ गए सुरधाम॥

तब बसिष्ठ मुनि समय सम, कहि अनेक इतिहास।
सोक निवारउ सबहि कर, निज बिग्यान प्रकास॥

वशिष्ठ : सुमन्त जी। आप दूत भेजकर भरत को तुरंत आने की सूचना भेजिए। हाँ······यह ध्यान रहे कि महाराज के निधन का समाचार किसी को पता न चले। यह राष्ट्रीय संकट का क्षण है।

सुमन्त : जो आज्ञा।

सूत्रधार : इस तरह अवध में राष्ट्रीय शोक छा गया। हाट, बाजार बंद हो गए। नागरिक, प्रासाद के आसपास एकत्रित हो गए थे। सभी को भरत के आगमन की प्रतीक्षा थी।

उधर गंगा पार कर श्री राम ने यात्रा आरंभ की। वे जिस गाँव से गुजरते थे, स्त्री-पुरुष उनके पीछे दौड़ पड़ते थे।

[मंच तीन पर प्रकाश।]

वनवासी-1 : अरे''' देखो ''अवध के राजकुमार आ गए।

वनवासी-2 हमारे यहाँ आज तक कोऊ राजकुमार नहिं आओ महाराज।

वनवासी-3 : हम छोटी जाति के हैं। हमारे यहाँ को आवें?

वनवासी-4 : हम जंगली हैं महाराज।

राम : किसने कहा है कि वन में रहने वाले छोटी जाति के होते हैं या जंगली होते हैं। आप जितने सरल, निश्छल हैं, उतना और कोई नहीं। मैं भी तुम्हारी तरह हूँ आओ''''''हमारे गले लग जाओ।

वनवासी-1 : हम जा लायक नाहिं है महाराज।

राम . कौन किस लायक है? यह निर्णय कौन करेगा? आप मेरे गले लगने लायक हैं। (राम वनवासियों को गले लगाते हैं।) ये मेरा अनुज लक्ष्मण है''''''(गले मिलते हैं।)''''''और ये आपकी बहू है''''''(स्त्रियों की ओर) अरे बड़ी माँ''''''अपनी बहू को अपने पास नहीं बैठाओगी। सीता''' इनके निकट जाओ। अब ये ही स्वजन हैं।

वृद्धा : (एक अन्य स्त्री से) जा, का ठाडी है। हमारे तो भाग्य खुल गए। राजकुँअर ने मो सो बडी माँ कही'' बडी माँ'' ! (राम की ओर) जुग-जुग जिओ मेरे लाल''''''(सीता की बाँह पकड़कर) आ, वह आ। हमारे संग चल बेटा।

लक्ष्मण : भूख लग रही है भैया।

वनवासी-2 : हम बताइ देत है, वहाँ लकड़ियाँ बारि कें कुछ बनाइ खाइ लो''' हमारे हाथ को तो तुम खाओगे नहीं।

राम : क्यों? तुम्हारे हाथ का हम क्यों नहीं खाएँगे? लाओ। हमें कुछ खाने के लिए दो ना।

वनवासी-3 : कुँअर। तुम बड़े घर के लरिका हो। हम तिहारे जोग्य नाहीं।

राम : मैं तो आपके योग्य हूँ। आप खाने के लिए कुछ दीजिए। मुझे भी भूख लगी है।

वनवासी-4 : (परस्पर) जे कुँअर नाहीं। भगवान है भगवान। जाके पाँव छुओ। देवता है देवता।

राम : नहीं। आप लोगों को यदि लगता हो तो कि मैं आप में से एक हूँ तो आओ—हमारे गले मिलो।

स्त्री-1 : सखी। कुँअर की बातें सुनो। ऐसे लरिका को वनवासु दे दओ। रानी बड़ी मूरख है। बा की मति मे पथरा परि गए होंइगे।

स्त्री-2 · राम जाने, वाके मुँह मों जि बात कैसें निकरी ?

स्त्री-3 राजा की अक्ल मारी गई होइगी ? विनें तो सोचनें चहिए कि जि काम अच्छो है कि बुरो।

स्त्री-4 राजा की गलती है, वाने घरवारी की वात पर कान क्यों दओ।

स्त्री-1 देख तो वह कितनी सुदर है, साक्षात् लक्ष्मी है लक्ष्मी।

स्त्री-2 . जे लक्ष्मी है तो इनके वे तो भगवान् विष्णु भए ? (हँसी)

स्त्री-3 . क्यों बहू, 'वे' तिहारे को लगत है ?

सीता . कौनसे ?

पार्श्व स्वर

सीस जटा, उर-बाहु बिसाल, बिलोचन लाल, तिरछी सी भौंहें।
तून सरासन बान धरें तुलसी, बन मारग में सुठि सोहैं।
सादर बारहिं बार सुभायं चितै, तुम्ह त्यों हमरों मन मोहैं।
पूछत ग्राम बधू सिय सो, कहौं, साँवरे से सखि रावरे कोहैं?

सीता : ये गोरे-गोरे, मेरे देवर हैं। लक्ष्मण नाम है।

स्त्री-1 · और वे साँवरे कौन हैं ?

सीता : वे·······(शर्म से सिर नीचे करती है।)

स्त्री-2 : अच्छा। जानि गई······तो ये तुम्हारे 'वे' हैं।

स्त्री-3 · उनको नाउ का है ?

स्त्री-4 : चल हट। अपने आदमी को कहुँ नाउँ लओ जातु है। भले घर की बिटिया हैं।

पार्श्व स्वर

तीनों ही कुछ और चल, पहुँचे तीरथ राज।
भरद्वाज आश्रम गए, देखा सन्त समाज॥

सूत्रधार : मैं प्रयागराज का संगम हूँ। यहाँ गंगा-यमुना-सरस्वती का संगम है। भगवान श्री राम ने मेरे तट पर स्थित भारद्वाज मुनि के आश्रम में रात्रि विश्राम किया। प्रात.काल, लक्ष्मण ने बाँस की नौका बनाई और यहाँ से उस पार गए। मुनि ने स्वस्ति वाचन किया। देखो, प्रभु श्री राम, माँ जानकी और शेषनाग के अवतार लक्ष्मण जी महर्षि वाल्मीकि से मिलने जा रहे है।

राम · मैं दशरथ पुत्र राम, अनुज लक्ष्मण सहित प्रणाम करते हैं।

वाल्मीकि . राम······आप आ गए। हमें आपकी प्रतीक्षा थी। सुना है कि महारानी कैकई ने आपको वनवास दे दिया है ? आप स्वयं राम है, सब जानते है। वन प्रांत के नागरिकों को आपकी आवश्यकता है······यहाँ पर्णकुटी बनाकर रहो।

राम : भारद्वाज ऋषि ने चित्रकूट नामक स्थान का नाम लिया था महर्षि।

वाल्मीकि उचित स्थान है। चित्रकूट पर ही पर्णकुटी बनाना। हम आश्रमवासी आपकी सहायता कर प्रसन्न होंगे।

लक्ष्मण : ऋषिवर। यह स्थान हमारे लिए उचित है ना?

वाल्मीकि : अवश्य सौमित्र। आवश्यकता होने पर, इस आश्रम की सहायता भी उपलब्ध रहेगी। भारद्वाज जी के शिष्य चित्रकूट तक आते-जाते रहते है। आपको अवध की गतिविधियाँ भी ज्ञात रहेंगी सौमित्र। वैसे चित्रकूट सिद्धि के लिए उपयुक्त स्थान है। मदाकिनी का जल और कन्द, मूल, फल भी पर्याप्त है। यहाँ के पक्षी सदेशवाहक है।

राम : हमे आज्ञा दीजिए महर्षि।

वाल्मीकि तुम्हे कौन आज्ञा दे सकता है। हम सब भी आपकी आज्ञा के आधीन है प्रभु।

पार्श्व स्वर

श्रुति सेतु पालक राम तुम्ह जगदीश माया जानकी।
सो सृजति पालति हरति रुख पाइ कृपा निधान की।
जो सहस सीसु अहीसु महि, धरु लखनु सचराचर धनी।
सुर काज धरि नरनाज तनु चलें दलन खल निसिचर अनी।

राम : हम तो महाराज दशरथ के पुत्र है और ये जनकनंदिनी है महर्षि? ये तो आपकी कृपा है कि आप अवतार कहकर हमें सम्मान दे रहे है।

वाल्मीकि : आपके इस रूप को मेरा प्रणाम। जाओ चित्रकूट पर पर्ण कुटी का निर्माण करो।

[प्रस्थान।]

सीता : सुनो, यहाँ से मदाकिनी कितनी सुदर लग रही है!

लक्ष्मण : यहाँ से सभी मार्ग दिखाई देते है, भइया।

राम . एक को घर के सौदर्य की, और दूसरे को सुरक्षा की चिंता है। तुम देवर-भाभी जो चाहते हो, मैं समझ रहा हूँ।

सूत्रधार : भगवान श्री राम के आदेश पर पर्ण कुटी बन गई। श्री राम जब से यहाँ आए, तब से आनद ही आनद छा गया। और अवध को छोड आए तो वह श्रीहीन हो गई। महाराज दशरथ के निधन से देश शोक मे डूब गया। जनता ने श्री राम का वियोग भुगता ही था कि महाराज दशरथ के निधन का दूसरा आघात लगा। नागरिक कैकेई विरोधी हो गए, कुछ समर्थक भी थे। गुरु आज्ञा के कारण भरत-शत्रुघ्न ने अवध मे प्रवेश किया।

[मंच एक पर प्रकाश।]

भरत : शत्रुघ्न। हाट बाजार बंद क्यो है?

शत्रुघ्न : नागरिक हमें प्रेम-भरी दृष्टि से नहीं देख रहे हैं भैया ! समझ नहीं आ रहा, क्या कारण है ?

[नागरिक प्रणाम कर आगे चले जाते हैं।]

भरत : पहले हमारे आगमन से जन उत्साह पैदा होता था लेकिन··· आज। आज सन्नाटा है अनुज। कुछ न कुछ बात अवश्य है।

शत्रुघ्न : बड़े भैया की किसी व्यवस्था से नागरिक असंतुष्ट तो नहीं हैं।

भरत : यदि भैया का विरोध है, तो मैं इन्हें दण्ड दूंगा। इतना साहस कैसे हुआ ?

दो बंदीजन : महाराज भरत की जय···महाराज भरत की जय।

भरत : क्या बोल रहे हो ? मैं महाराज नहीं हूँ। महाराज हमारे पिता हैं।

दो बंदीजन : राजकुमार भरत की जय···राजकुमार भरत की जय।

दो स्त्रियां : हाय कैकई। (विलाप) हाय-हाय कैकई।

भरत : स्त्रियों का विलाप सुना शत्रुघ्न।

शत्रुघ्न : ये हमारी माँ की निन्दा कर रही हैं, उन्हें बन्दी बनाऊँगा।

भरत : ठहरो शत्रुघ्न···ठहरो···

समूह : महाराज दशरथ···अमर रहे। महाराज दशरथ···अमर रहें···

भरत : 'अमर रहे ?' ये कैसा स्वर है ? इन लोगों में हमारे आने से कोई उत्साह नहीं। प्रासाद को घेरकर क्यों खड़े हैं ? न महामंत्री हैं और न गुरुदेव ! (दौड़कर द्वारपाल से) महाराज अपने कक्ष में हैं क्या ?

बन्दी : नहीं राजकुमार।

शत्रुघ्न : मझली माँ के कक्ष में हो सकते हैं।

भरत : हाँ। चलो। पहले माँ और तात के दर्शन कर लें। फिर भैया और बड़ी माँ के पास चलेंगे।

[मंथरा आरती उतारती है। भरत का कैकई के कक्ष में प्रवेश।]

कैकई : आ गया पुत्र। नाना कैसे हैं ?

भरत : सब कुशल है। आज हमारे तात यहाँ नहीं दिखाई दे रहे माँ ?

कैकई : तुम्हारे पिता धर्मात्मा, बड़े तेजस्वी, यज्ञशील और पवित्र हृदय थे। एक दिन जो स्थिति समस्त प्राणियों की होती है, वे भी उसी गति को प्राप्त हो गए हैं पुत्र।

भरत : हाँ तात (विलाप) उन्हें ऐसा कौनसा रोग हो गया था माँ ? बड़े भैया कहाँ थे ? वे धन्य हैं जिन्होंने पिता के अंतिम दर्शन किए होंगे।··· तात ने अंतिम क्षणों में क्या कहा था माँ ?

कैकई : महाराज ने कहा—"हा राम, हा सीते, हा लक्ष्मण।" यही कहते हुए परलोक सिधार गए।

भरत : अर्थात्...उस समय ये तीनों भी नहीं थे ? भैया, भाभी और लक्ष्मण कहाँ थे ?

कैकई : वे दण्डक वन चले गए ।

भरत : दण्डक वन ! क्यों ? क्या भैया के हाथों कोई निर्धन, निरपराध मारा गया था ? या किसी ब्राह्मण का धन छीन लिया था ! गौ हत्या हो गई थी क्या ?

कैकई : नहीं । ऐसा कुछ नहीं हुआ ।

भरत : फिर क्या हुआ ? दण्डक वन क्यों जाना पड़ा ?

कैकई : तुम्हारे पिता बड़े संदेही स्वभाव के थे । उन्होंने तुम पर ही सन्देह किया । राम को चुपचाप राजगद्दी देने लगे थे । तब मैं चुप न रह सकी । मैंने तेरे लिए राज्य और राम के लिए वनवास माँग लिया । सत्यवादी महाराज ने वचन पूर्ण कर प्राण त्याग दिए ।... अब तुम शोक न करो...क्योंकि अवध का निष्कंटक राज्य तुम्हारे अधीन है । राज्य सँभालने की चिंता कीजिए ।

भरत : दुष्ट । क्रूर । राज्यभ्रष्ट और धर्मभ्रष्ट है तू । पति की मृत्यु पर विलापहीन स्त्री । पापिन । कपटी तू मेरे पिता को ही खा गई । अरे मुझे भी मार डाल तू ।

कैकई : कैसे बोलते हो भरत ? क्या किया है मैंने ?

भरत : तू ने...भाई को वनवास, पिता को मृत्यु दी, फिर भी निरापद बनती है । पतिघातिनी, कलंकिनी, तू दुराचारिणी है । महाराज अश्वपति के वंश में राक्षसी कैसे पैदा हुई । मैं तेरे कारण...मात्र तेरे कारण, पितृहीन हो गया—पितृहीन । मुझे अपयश और दोनों माताओं को वैधव्य दिया । बड़ी माँ को पुत्र वियोग देकर स्वयं को निरापद मानती है ।

कैकई : हाँ मैं निरापद हूँ । तू बुद्धिहीन है, इसलिए व्यर्थ विलाप करता है । मैंने तेरे लिए राज्य माँगा और बाधाएँ समाप्त करने के लिए राम का वनवास । ये भी सोच कि महाराज को तुझ पर विश्वास नहीं था, इसलिए चोरी-चोरी राजगद्दी का हस्तांतरण कर रहे थे । जिस राम के लिए तुम दुखी हो, उसी राम ने तुम्हारे लिए कोई दूत तक नहीं भेजा । राज चला जाता तो जीवन-भर मैं दासी और तू दास रह जाता...दास । यदि मंथरा न होती तो मुझे भी पता नहीं चलता । सब काम झटपट...किसलिए...? मात्र इसलिए कि तू सेना लेकर न आ जाए । तेरे नाना-मामा हस्तक्षेप न कर दें क्योंकि कैलाशवासी महाराज संधि का उल्लंघन कर रहे थे ।

भरत : नाना-मामा को हस्तक्षेप का क्या अधिकार है ? यह हमारे देश का आंतरिक प्रश्न था । तुम मंथरा की बात करती हो जो तुम्हारे

कारण हमारे घर की गुप्तचर है। दूसरों के हाथों खेल गई तुम। राष्ट्र द्रोहिनी हो तुम राष्ट्र द्रोहिनी। तुम्हें न पति प्रिय था और न ये राष्ट्र। केवल प्रतिशोध और स्वार्थ ही प्रिय था। पता नहीं, मेरे पिता ने किस पाप बुद्धि से तुझे पत्नी बनाया?

कैकई भरत। तुम मूर्खों जैसी बातें न करो। राज्य के लिए युद्ध होते हैं, षड्यन्त्र होते हैं। पिता राज्य के लिए पुत्र की और पुत्र पिता की हत्या कर देता है। मैंने ऐसा कुछ नहीं किया? हाँ, मैंने तेरे लिए राज्य माँगा। कोई पाप नहीं किया मैंने। महाराज का भी चौथापन था। उन्हें आज नहीं तो कल...

भरत : चुप। कैकई चुप। तेरे मुँह मे कीड़े नहीं पड़े?

कैकई : भरत। माँ का अपमान करना तुम्हें किसने सिखाया? तुम्हें मेरा कृतज्ञ होना चाहिए। मैं देख रही हूँ कि तुम भावुकता-भरी बातें कर रहे हो...याद रखो पुत्र...भावुक व्यक्ति का बहुधा शोषण होता है, उसका सब दोहन करते हैं और अवसर पाकर ठूँठे की तरह त्याग देते हैं। तुम बुद्धि से काम लो, बुद्धि से। और जब बात करो तो याद रखो कि मैं तुम्हारी माँ हूँ माँ।

भरत : माँ! तू और माँ!! जो पत्नी नहीं बन सकी वह माँ क्या बनेगी? माँ? किसकी माँ? जा, आज से तू मेरी माँ नहीं और मैं तेरा बेटा नहीं। हत्यारिन मैं तेरा वध नहीं कर सकता हूँ...अब तू राज्य कर, मौज उड़ा। छाती पर रख ले इस राज्य को। तुझसे न चले तो बुला ले अपने पिता को, भाई को। निर्लज्ज पति की मृत्यु पर तुझे दुख तक नहीं!

कैकई : दुख है। लेकिन यह समय, तुम्हारी तरह मूर्खता करने और विलाप करने का नहीं है। अवध राजा विहीन है। कौशल्या समर्थक बहुमत मे है। महाराज के निधन से जनता में भी प्रतिक्रिया है? हमें चौकन्ना रहना होगा चौकन्ना। तुम पिता का अंतिम संस्कार करो और शीघ्रातिशीघ्र राजगद्दी पर बैठ जाओ। एक बार राजा बन गए तो फिर सब शांत हो जाएगा। शत्रुघ्न पर ध्यान रखना...लक्ष्मण के कारण उसमें अंतर न आ जाये।

भरत : चुप कर तू। चुप कर। (विलाप करते हुए प्रस्थान।)

सूत्रधार : भरत जी ने कैकई को माँ कहना भी बंद कर दिया। कौशल्या ने माना कि इस षड्यन्त्र मे भरत का कोई हाथ नहीं है। महाराज दशरथ का अंतिम संस्कार होने के पश्चात गुरु वशिष्ठ ने मंत्रि परिषद की बैठक आहूत की, ताकि देश को वर्तमान स्थिति से उबर सकें।

उचित नही है। क्योंकि होनी प्रबल होती है। हानि-लाभ, जीवन-मरण, यश-अपयश सब विधि हाथ है। महाराज दशरथ धर्मात्मा, वीर, सत्यवादी और न्यायप्रिय थे। उन्हें वचन प्रिय थे। इसलिए प्राण देकर भी उनका पालन करते हुए श्री राम का भी त्याग कर दिया। महाराज की इच्छानुसार, अब भरत को राज्यभार ग्रहण करना है। जो लोग उचित-अनुचित का विचार छोड़कर पिता की आज्ञा का पालन करते हैं, वे तीनो लोकों मे सुयश पाते हैं। जब राम, लक्ष्मण, सीता को यह समाचार मिलेगा तो वे प्रसन्न ही होंगे। अतः राज्याभिषेक की औपचारिकताएँ संक्षिप्त रूप से पूर्ण कर लेना उचित होगा।

भरत : नही। मैं सहमत नही हूँ। मैं किसी का अनादर नही कर रहा हूँ। लेकिन मुझे राज्याभिषेक स्वीकार नही है।

सुमन्त : आपको स्वर्गीय महाराज और गुरुदेव की भावनाओ का आदर करना चाहिए। आपके लिए महारानी ने वर माँगा था। मन्त्रि-परिषद भी···

भरत : मंत्रिपरिषद ! ये मंत्रिपरिषद जनता का उचित प्रतिनिधित्व करती है क्या ? संभवत: जनाधार हीन, सत्ता से जुड़े रहने वालों का जमघट रह गई है ये मंत्रिपरिषद।

वशिष्ठ : जन भावनाओ को राजा तक पहुँचाना और उचित परामर्श देना ही मंत्रिपरिषद का कार्य है। मंत्रिपरिषद यह करती रही है।

भरत : तो इस मंत्रिपरिषद ने स्वर्गीय महाराज से ये क्यो नही कहा कि जन भावना के विपरीत जाना उचित नही। ये मंत्रिपरिषद एक स्त्री के सामने घुटने कैसे टेक गई। उसने इतना बड़ा अनर्थ होते हुए कैसे देखा ?

सुमन्त : हमने, गुरुदेव ने, महारानी कैकई को समझाया ही नही अपितु धमकी भी दी थी।

भरत : धमकी। क्या हुआ उसका ? धमकी दी थी तो उसे रोका क्यों नही···? सब शांत क्यों है ? इस मन्त्रिपरिषद का कोई जनाधार ही नही है ? यदि होता, तो जन दबाव के सामने कैकई को विवश किया गया होता। वह दूसरों के हाथो खेल गई और आप सब मूक दर्शक बने रहे ! किसलिए···? क्या इसलिए कि जब राजा वचनबद्ध होकर विवश दिखाई देने लगा तो आपने सोचा कि आने वाली सत्ता मे कैकई की कृपा से वंचित क्यो हुआ जाए ? नई मन्त्रिपरिषद मे स्थान क्यो खोएँ ?

मंत्री-1 : क्षमा करें, राजकुमार। हमारी निष्ठायें किसी राजा के लिए नही, अपितु इस देश के लिए हैं। इसीलिए हमने श्री राम को राजा

बनाने का प्रस्ताव पारित किया था।

मंत्री-3 : हमें अवसर भी नहीं मिला कि हम कुछ परामर्श देते। महामंत्री ने जो कुछ कहा था, उसे महारानी कैकई ने राष्ट्रद्रोह करार दे दिया। वे बहुत आक्रामक मुद्रा में थी।

मंत्री-2 : आपको कैकई देश से हुई संधि और पिता के वचनों का पालन करना चाहिए।

भरत : शांत रहो मंत्री। चाटुकारिता सदैव हितैषी नहीं होती है। हम जानते हैं कि तुम्हारी निष्ठायें कहाँ हैं! मैं अधिकारी नहीं हूँ अन्यथा तुम्हें कड़ा दण्ड देता।

मंत्री-4 : इस संकट में अब कोई रास्ता भी नहीं है। आप ही निर्णय करें।

भरत . निर्णय कैसे करूँ? अवध की मंत्रिपरिषद का निर्णय था—श्री राम महाराज हों। अवधवासी चाहते थे कि श्री राम महाराज हों। जब जनभावनाओं का अनादर किया जाता है तो देश में क्रांति की संभावना बढ़ जाती है। अवध की जनता का आदेश ही अंतिम है। उसकी भावनाओं का अनादर नहीं किया जा सकता।

वशिष्ठ . 'वत्स'। तुम पिता का आसन ग्रहण करो, ताकि मंत्रिपरिषद की कार्यवाही विधिवत आरंभ हो और कार्यवाही वैधानिक हो जाए।

भरत : नहीं गुरुदेव। यह स्थान बड़े भैया का है। लेकिन वे हैं नहीं''' शत्रुघ्न'''जाओ बड़ी माँ को ले आओ।

[शत्रुघ्न का प्रस्थान और पुनः प्रवेश। साथ में कौशल्या।]

पार्श्व स्वर : सावधान। महारानी कौशल्या पधार रही हैं।

भरत . बड़ी माँ। यहाँ बैठो।

कौशल्या . यह स्थान तुम्हारा है वत्स। तुम ग्रहण करो।

भरत : यह प्रस्थान पिताजी का था माँ। पिताजी भैया को दे रहे थे''' किन्तु'''

कौशल्या : अब तुम ग्रहण करो।

भरत : नहीं माँ। आपको इस अभागे पुत्र की शपथ, आप इस आसन को ग्रहण करो।

कौशल्या : बेटा। (फफकना)

भरत : मैं प्रस्ताव करता हूँ कि मंत्रिपरिषद के पूर्व निर्णय को कार्यान्वित किया जाए।

सुमन्त : तुम आदर्श हो राजकुमार। तीनों लोकों में तुम जैसा भाई नहीं मिलेगा।

मंत्री-1 : जब श्री राम ने पिता का वचन मानकर वन जाना स्वीकार किया था, तब हमने सोचा कि इनसे बड़ा धर्मात्मा, अवतारी और कोई नहीं। लेकिन आज लगता है कि आप भी श्री राम की तरह एक

अवतार हैं।

भरत : मैं भैया के पाँव की धूल भी नहीं हूँ।

मंत्री-3 : अवधवासी जब यह समाचार सुनेंगे तो उनको गर्व होगा।

मंत्री-4 : धन्य है रघुवंश, जिसमें ऐसे पुत्रों ने जन्म लिया। निश्चय ही महाराज ने कोई श्रेष्ठ तपस्या की होगी।

सुमन्त : श्री राम यहाँ हैं नहीं, इसलिए अब उस प्रस्ताव का कोई अर्थ नहीं है।

भरत : अर्थ है।

कौशल्या : क्या अर्थ है बेटा। तुम कार्यभार सँभाल लो। राष्ट्र राजाविहीन नहीं रहना चाहिए।

भरत : नहीं माँ। इस निर्णय के पालन के लिए यह मन्त्रिपरिषद, जन-प्रतिनिधि, राज परिवार, और प्रबुद्ध जन, महाराज श्री राम को अयोध्या वापस लाने के लिए आज ही प्रस्थान कर वन जाएँगे··· आज ही···

पार्श्व स्वर

भरत वचन सुन प्रजाजन पुलक उठे तत्काल,
धन्य तुम्हारी धारणा है रघुकुल के लाल।
अंधकार में हो गया—दिन की तरह प्रकाश,
मानो बादल हट गया, विमल हुआ आकाश।
उसी रात को नगर में फैल गई यह बात,
भरत बुलाने राम को जाएँगे वन प्रात।
चल चपल कलम, निज चित्रकूट चल देखें,
प्रभु चरण चिह्न पर सफल भाल-लिपि लेखें।
सम्प्रति साकेत-समाज वहीं है सारा,
सर्वत्र हमारे संग स्वदेश हमारा।
तरु-तले विराजे हुए—शिला के ऊपर,
कुछ टिके, धनुष की कोटि टेककर भू पर।
निज लक्ष-सिद्धि-सी, तनिक घूमकर तिरछे,
जो सींच रही थी पर्ण कुटी के बिरछे—।

[मंच पाँच पर प्रकाश।]

राम : यहाँ आकर अवध के सुखों की याद तो आती होगी जानकी।

सीता : घर की याद किसे नहीं आती?

राम : अवध के प्रासाद और राज्यात सुख भी याद आते हैं?

सीता : प्रासाद की तुलना में ये पर्णकुटी ही श्रेष्ठ है। राज्यात सुख से अधिक सुख यह श्रम करने में है?

राम : यहाँ दिन-भर काम करती हो, न दास है न दासी।

सीता : अब किसी पर आश्रित नहीं हूँ। वैसे यहीं की कई स्त्रियाँ मेरी सखियाँ हैं। अपने घर की महारानी तो मैं हूँ ही।

राम : अच्छा, तो मैं सम्राट हो गया, तुम्हारा सचिव कौन है?

सीता : मेरा देवर। धरती पर कोई दूसरा नहीं है उस जैसा?

राम : हाँ जानकी। कभी-कभी लगता है कि उर्मिला के साथ भी अन्याय हो गया।

सीता : हाँ। देखो, लक्ष्मण आ रहे हैं।

लक्ष्मण : भैया, देखना, ये तीर ठीक बना है?

राम : एकदम सही।

लक्ष्मण : आज कुछ बाँस काटने जाना है।

राम : क्यों?

लक्ष्मण : यहाँ के लिए वे ही उपयुक्त शस्त्र हो सकते हैं।

वनवासी : हम आ गए हैं प्रभु।

लक्ष्मण : कैसे आए हो?

राम : इन्हें खेती करना सिखाऊँगा। जो चीजें वन में पैदा हो सकती हैं, वे पैदा करना और आत्मनिर्भर बनना आवश्यक है।'''आओ''' हम आज पत्थर हटाकर भूमि साफ करेंगे।

वनवासी : चलो प्रभु।

सीता : देवर'''ओ देवर'''

लक्ष्मण : हाँ भाभी, बोलो।

सीता : तुम यहाँ रहना। मैं गोदावरी के तट पर जा रही हूँ—जल भर लाऊँ।

लक्ष्मण : मैं ले आता हूँ?

सीता : मैं ही जाऊँगी?

लक्ष्मण : क्यों?

सीता : वन कन्याएँ वहाँ आएँगी?

लक्ष्मण : तो क्या हुआ?

सीता : मैंने उन्हें बुलाया है। आज उन्हें बर्तन, वस्त्रों को साफ करना सिखाऊँगी। मेरा काम तुम कैसे कर सकते हो?

लक्ष्मण : अच्छा मैं यहीं हूँ, आप हो आइए।

वनवासी : लखन भैया। हम आ गए।

लक्ष्मण : आओ। वहाँ से दण्ड उठाओ।

[मंच तीन पर भी प्रकाश। स्त्रियों के साथ क्रियाकलाप के साथ सीता का स्वर।]

सूत्रधार

चित्रकूट मे चल रहा था, यह ही प्रेम प्रसग,
इतने ही मे हो गया अकस्मात रस भंग।
कुछ भीलो ने दी खबर, सुनिए अवध किशोर,
भरतलाल दलवल सहित आते है इस ओर।

लक्ष्मण : भैया···भैया !

राम : हाँ। आयाSSS लक्ष्मण।

लक्ष्मण : भाभीSSSS

सीता : हाँ। आईSSS

राम-सीता . क्या बात है लक्ष्मण ?

लक्ष्मण : भैया···भरत भैया सेना लेकर आ रहे हैं।

राम : सेना लेकर !

[मंच पाँच पर मद्धिम एवं तीन पर पूर्ण प्रकाश।]

निपादराज . ठहरो भरत। यह सेना आगे न बढ़े ?

भरत . कौन हो तुम ?

निपाद : मैं भगवान श्री राम का सेवक हूँ। श्री राम पर आक्रमण करने से पहले मुझसे युद्ध करो।

भरत : श्री राम का सेवक।

सुमन्त निपादराज।

निपाद : सुमन्त जी ! सावधान महामत्री। हमारी पाँच सौ नौकाएँ युद्ध सामग्री लेकर तैयार है, यहाँ से आगे नही जा पाओगे।

भरत : निपादराज। महाराज श्री राम के सेवक भरत का प्रणाम स्वीकार करो।

निपाद : प्रणाम। अपनी माँ की तरह मीठी बातें कर छल करना चाहते हो ?

भरत सत्य कहते हो। मेरा परिचय कुछ ऐसा ही है। लेकिन मुझ पर विश्वास रखो निपादराज। हम आक्रमण के लिए नही जा रहे हैं।

निपाद : अपनी सेना से कहो कि शस्त्र नीचे करें।

सुमन्त : निपादराज। सदेह न करो। राजकुमार भरत, तीनों मातायें, कुल-गुरु, मंत्रिपरिपद अवध के महाराज श्री राम को मनाने जा रहे हैं।

निपाद : श्री राम को मनाने ! आप धन्य हैं धन्य। आप जैसा अनन्य भक्त कौन होगा ? जैसे प्रभु श्री राम वैसे ही उनके अनुज। आदर्श की प्रतिमूर्ति हो। शृंगवेरपुर मे आपका स्वागत है। आप इसे अपना घर ही समझो।

भरत : धन्य तो आप है ? भैया का प्रेम आपको मिला। वे, भाभी और लक्ष्मण यहाँ रुके ? उन्होने तुम्हें तो अपनाया लेकिन मुझे त्याग

दिया। मेरी प्रतीक्षा भी नहीं की उन्होंने'''प्रतीक्षा भी नही की।

निषाद : श्री राम अवतार है। पवित्र और शुद्ध आत्मा है। उनके हृदय में कोई द्वेषभाव नही है। वे तुम्हें प्रेम करते है प्रेम।

भरत : सच निषादराज। फिर हमें वहाँ तक पहुँचा दो जहाँ भैया हों।

सुमन्त : यहाँ से सघन वन आरम्भ होता है निषादराज। इस वन में अनेकों रास्ते हैं। हम भटक सकते हैं, इसलिए हमें रास्ता दिखाओ।

भरत : आपके राज्य में केवट कौन है ?

निषाद : यहाँ तो सभी केवट है राजकुमार। आप जिस केवट को पूछ रहे हैं ना'''वह केवट'''केवट'''इधर आओ।

केवट : (हाथ जोड़कर)

भरत : केवट। आपने भैया के पाँव धोये थे। आप ही उन्हें पार ले गए थे। मेरे गले लग जाओ केवट। आओ गले लग जाओ मेरे भैया।

केवट : आप प्रभु के छोटे भाई है ? और कौन ऐसा होगा ! आप अवतार हैं अवतार।

भरत : नहीं केवट। हम आदमी भी नही है। हम स्वार्थ से भरे हुए है''' स्वार्थ से।

केवट : नही भैया। आप हम जैसे वनवासियों, छोटी जातियों के निर्धन लोगों को अपने हृदय से लगाने वाले हो। हमें आज तक किसी ने गले नही लगाया किसी ने भी।'' हमारे लिए तो तुम्ही भगवान हो तुम्ही।

निषाद : केवट ? मल्लाहों की व्यवस्था करो ताकि राज परिवार गंगा पार हो जाए। सेना के लिए वह स्थान दिखाओ, जहाँ जल कम है।

केवट : आइए। गंगा पार करें'''

गीत

जय जय गंगे माई
विष्णु चरण, भवतारण, पृथ्वी पर आई
हाथ जोड़ विनती तुमसे है अम्बे वर दाई
आएँ कुशल सहित घर-कौशल के राई।

पार्श्व स्वर

पहुँचा दल यात्रियों का तीर्थराज जब प्रात।
भारद्वाज जी से हुआ आगे का पथ ज्ञात।

इस भाँति सभी चलते-चलते पहुँचे वाल्मीकि सन्त जी के।
तब सुना उदय हो रहे भाग्य इस चित्रकूट की धरती के।
चित्रकूट के नभ मंडल में ऊपर को धूल चढ़ रही थी।
यह धूल उसी सेना की थी, जो सेना इधर बढ़ रही थी।

[मंच पाँच पर पूर्ण प्रकाश।]

वनवासी : सेना विशाल है सौमित्र। और वह बहुत सावधानी से आगे बढ रही है। वन के जीवजन्तुओ मे भय पैदा हो गया है?

[सशस्त्र वनवासियों के समूह का आना।]

वनवासी-2 : आप आ गये हैं सौमित्र। इस सेना को हम रोक सकते है?

लक्ष्मण : कैसे रोकोगे?

वनवासी-3 : चित्रकूट आने वाले मार्गों में अवरोध खड़े कर देंगे। हमें छिपकर घात करना है। ये सेना मैदान में लड़ सकती है पर्वत में नही।

लक्ष्मण : मैं सोचता था कि राजगद्दी मिल जाने के पश्चात भरत जी और उसकी माँ का हृदय द्वेष मुक्त हो गया होगा? लेकिन···

सीता : अब क्या होगा?

लक्ष्मण : कुछ नही होगा? डरो नही भाभी। उसका सपना होगा कि यदि इस वन में घेर कर हमारा वध कर दिया जाए तो चौदह वर्ष के बाद का भी संकट नही आएगा।

[ध्वनियाँ सुनाई देती हैं।]

लक्ष्मण : आर्य। आप भाभी को लेकर किसी गुफा मे चले जाइये, लेकिन सावधान रहना। मैं देखता हूँ इस कैकई पुत्र को।

राम : लक्ष्मण। उत्तेजित न हो, क्योंकि भरत हमारा भाई है।

लक्ष्मण : भाई? कैसा भाई? ये भाई है या शत्रु। हमे संकट में देखकर घात करने वाला है। मैंने तो अवध में ही कहा था कि आप राजगद्दी पर बैठो, लेकिन मेरी एक नहीं सुनी। धर्म की दुहाई दे डाली ···मैं जो सोच रहा था वही हुआ। अब हमे मारने भी आ गया? और आप कहते है कि भाई है···भाई···

वनवासी-3 : प्रभु·· प्रभु···सौमित्र। हम दोनो ओर से घिर गये है।

राम : दोनो ओर से घिर गए!

वनवासी-3 : वाल्मीकि जी के आश्रम की ओर से हजारों सैनिक इस ओर बढ रहे हैं। दूसरी ओर मंदाकिनी के तट की ओर से विराट सेना, नौकाओ द्वारा शीघ्रता से इधर आ रही है।

लक्ष्मण : यही है हमारा भाई। दोनों ओर से आक्रमण कर हमें मार डालने आया है···

राम : मेरे हृदय को विश्वास नहीं हो रहा लक्ष्मण।

लक्ष्मण : आप जैसा सरल और धर्मात्मा कोई नही होगा। आपके हृदय में सबके लिए प्रेम भरा है, इसलिए आप सोच ही नही सकते। जिसके लिए अवध छोड़ा वही हमें यहाँ जीवित नही छोडना चाहता। आपका भैया···भरत।

राम : वह तुम्हारा भी भाई है।

लक्ष्मण : वह हमारा शत्रु है। मुझे क्या मालूम था कि एक दिन अपने

शस्त्रों का प्रयोग इस भाई पर करना पड़ेगा। (वनवासी) जाओ, अपने मित्रों से कहो कि वे वृक्षों पर चढ़ जाएँ। जितने भी शस्त्र हैं, वे लेकर आदेश की प्रतीक्षा करें।

राम : युद्ध की तैयारी से पहले हमें यह जान लेना चाहिए कि क्या भरत युद्ध करने ही आ रहा है!

लक्ष्मण : सेना लेकर चलने वाला क्या प्रेम प्रदर्शित करने आएगा। हमें दोनों ओर से घेरने का प्रयत्न करेगा क्या?

वनवासी-4 : दोनों सेनायें चित्रकूट की ओर बढ़ रही है, प्रभु।

लक्ष्मण : शीघ्र आज्ञा दो मुझे। भरत को अब समझूँगा मैं। अन्यायी होकर न्याय पर चढ़ता है। ये अपनी माँ से भी आगे निकला।

राम : नहीं लक्ष्मण। भरत भाई है। वह ऐसा नहीं कर सकता।

लक्ष्मण : भाई'''भाई'''भाई? भाई तब था जब हृदय में पाप नहीं था। महादेव की सौगंध। आज इसका अहंकार चूर करके ही रहूँगा।

राम : तुम्हारा सोचना उचित है। लेकिन यदि तुम शांत हो तो मैं कुछ कहना चाहता हूँ। मैं जानता हूँ कि तुम केवल मेरा हित सोचते हो। इसलिए तुमने युद्ध में भरत को मारने का निश्चय कर लिया। मैं जानता हूँ कि यदि शत्रुघ्न ने भरत का साथ दिया तो'''।

लक्ष्मण : तो मैं उसे भी सिरविहीन कर दूँगा।

राम : लक्ष्मण। मेरी बात शांत होकर सुनो। मैं इस सेना से नहीं डरता। लेकिन यह निश्चित नहीं है कि भरत युद्ध करने ही आ रहा है। भरत मेरा और तुम्हारा भाई है। तुम क्रोध में कह दो तो क्या वह हमारा भाई नहीं रहेगा? भाई, भाई ही होता है, फिर वह चाहे जैसा हो।

वनवासी-4 : सेनायें पर्वत की तलहटी तक आ चुकी है सौमित्र।

लक्ष्मण : दोनों ओर के नायकों का पता करो। उसे राजमद हो गया है न'''

राम : सौमित्र। भरत ऐसा नहीं है। इस धरती पर उस जैसा कोई दूसरा पुरुष पैदा ही नहीं हुआ। तुम कहते हो कि उसे राजमद हो गया है।'''नहीं लक्ष्मण। ऐसा कभी नहीं हो सकता, कभी नहीं'''

पार्श्व स्वर

भरतहि होई न राजमद, विधि हरि हर पद पाइ।
कबुहिकि काँजी सीकरनि, छीर सिंधु बिलगाइ॥

राम : भरत को अवध के राजपद से तो क्या, उसे ब्रह्मा, विष्णु, महादेव का पद भी मिल जाये तो भी मद नहीं होगा। उसका हृदय पवित्र क्षीर सागर है। जिसमें अनन्य भक्ति है, उसमें थोड़ी-सी खटाई

क्या कर सकती है, मैं भरत को जानता हूँ, लक्ष्मण। तुम्हारी और पिता की शपथ लेकर कहता हूँ कि भरत के समान उत्तर संसार में कोई नहीं है। मेरा भरत तो सूर्यवंश के सरोवर में हंस-रूप है। वह गुण-शील भंडार है। लक्ष्मण, यदि भरत न होता तो इस पृथ्वी पर धर्म की धुरी को कौन धारण करता। कोई है ही नहीं।

आकाशवाणी

लखन प्रताप प्रभाउ तुम्हारा। को कहि सकइ जो जान निहारा।
अनुचित उचित काजु कछु होऊ। समुझि करिअ भल कह सब कोऊ।
सहसा करि पाछे पछिताहीं। कहहिं वेद बुधते बुध नाहीं।

वनवासी-1 : प्रभु मंदाकिनी के तट पर सेना रुक गई है, और महाराज जनक पैदल चले आ रहे हैं।

राम : महाराज जनक ! जाओ उन्हें आदरपूर्वक ले आओ।

पार्श्व स्वर : (भरत) भैया…भैया…लक्ष्मण…

राम : लक्ष्मण। यह ध्वनि कैसी है ?

वनवासी-2 : प्रभु। सेना तलहटी में रुक गई है। अवध के राजकुमार भरत वनवासी रूप में आपको ढूंढ़ते हुए पैदल चले आ रहे हैं।

पार्श्व स्वर : (केवट) भरत जी आश्रम दिखाई दे रहा है। वृक्ष के नीचे प्रभु राम, लक्ष्मण जी और माता जानकी खड़े हुए हैं।

राम : केवट जैसी आवाज थी लक्ष्मण।

लक्ष्मण : लग तो रही है। केवट यहाँ…

भरत : भैया…भैया…भैया…(पाँवों में गिरना)

[लक्ष्मण तीर को तूणीर में रखते हुए।]

राम : भरत…मेरे भाई, उठो…उठो भरत।

जनक : राम…

राम : तात आप ? प्रणाम।

शत्रुघ्न : भैया…भैया…

राम : शत्रुघ्न…। उठो शत्रुघ्न।

[लक्ष्मण भरत के पाँव छूते हैं।]

भरत : लक्ष्मण। तुम बहुत भाग्यवान हो। भैया का साथ नहीं छोड़ा। रघुवंश को गर्व है तुम पर। मौन हो…मुझसे अप्रसन्न हो। स्वाभाविक है…। कैकई के किए का दण्ड मुझे ही मिलेगा…और किसी को…

लक्ष्मण : भैया। नहीं, ऐसा न कहो। मैं इसलिए मौन नहीं था।

भरत : तो ? क्या बात है ?

लक्ष्मण : मैंने सुना कि आप सशस्त्र सेना लेकर आ रहे हैं तो जाने क्या-

क्या सोचा, जाने क्या-क्या कह डाला।

भरत : बस। यदि तुम्हारे स्थान पर मैं होता, तो वही सोचता और कहता, जो तुमने सोचा-कहा ?

जनक : सेना की बात सुनकर प्रत्येक व्यक्ति यही सोचेगा कि कहीं आक्रमण करने की योजना तो नहीं है ?

लक्ष्मण : सेना तो आप भी लाए हैं।

जनक : हाँ लक्ष्मण। मुझे जब समाचार मिला तो अनेक शंकाएँ मन में उठीं ?

लक्ष्मण : बस, एक भैया हैं जिनके मन में शंका नहीं थी।

जनक : वे 'राम' हैं। राम अपने अंक पर संदेह कैसे करते ? मैं मानव हूँ लक्ष्मण। लेकिन तुम्हारे भैया 'राम' मह तो अवतार हैं। उन जैसा कोई दूसरा है ही नहीं।

राम : नहीं तात। आप व्यर्थ ही बडाई देते हैं। जब लक्ष्मण को ज्ञात हुआ कि आप दोनों ने सेनाओं को दूर रोक दिया है। तब इसके मन में भी संदेह नहीं रहा। सेना की बात सुनकर संदेह स्वाभाविक ही था। मैं लक्ष्मण के कारण निश्चिंत होकर सोच सका। बस।

भरत : सेना इसलिए लाया कि सम्पूर्ण परिवार साथ आया है ?

लक्ष्मण : परिवार आया है···कहाँ है ?

राम : परिवार आया है भरत।

भरत : सब आये हैं भैया···

राम : हमारे तात कहाँ हैं।

भरत : (रोने लगता है।)

राम : क्या हुआ भरत, बोलो ?

लक्ष्मण : भैया, क्या बात है ? बोलो भैया।

कौशल्या : राम···

राम : माँ···माँ···।

पार्श्व स्वर

देखी राम दुखित महतारी। जनु सुवेलि अवली हिम मारी।
प्रथम राम भेंटी कैकई। सरल सुभाय भगति मति होई।

वशिष्ठ : राम। तुम धर्मात्मा और ज्ञानी हो। तुम जानते हो कि आत्मा का नाश कभी नहीं होता है। तुम्हारे यशस्वी पिता ने धर्म की रक्षा की। वे महान थे। ऐसी आत्मा के लिए दुख करना उचित नहीं। क्योंकि आत्मा भी स्वजनों की वेदना से दुखी होती है और पुनर्जन्म लेती है।

राम : गुरुदेव···(लक्ष्मण सीता भी प्रणाम करते हैं।)

निषाद : महाराज राम···हमारे भगवान···(गले मिलना)

केवट : प्रभु···पाँव कहाँ है प्रभु। मैं आपका दास केवट···

सुमन्त : वत्स···

राम : तात···

सुमित्रा : बेटा राम···

राम : माँ···

लक्ष्मण : माँ···

सुमित्रा : लक्ष्मण···

[सीता का स्त्रियों से मिलना। राम-लक्ष्मण का सभी से मिलना।]

राम : लक्ष्मण···

लक्ष्मण : भैया···

राम : सब के लिए प्रबंध करो। मंदाकिनी के तट पर डेरे डालने को कहो। और अपने मित्रों से कहना कि सभी उनके घर ही आए हैं।

[सीता का जनक के पास आना।]

सीता : तात।

जनक : बेटी···मेरी बेटी···

पार्श्व स्वर

पुत्री तूने कर दिए दोनों वंश पवित्र
आज सुनहरा हो गया—तेरा चित्र चरित्र
मग्न हुई वाणी इधर कहकर इतने बैन
उधर प्रेम के नीर में लगे तैरने नैन
तभी जनक को जानकी शीश नवा कर जोर
माता की आवाज सुन चली शीघ्र उस ओर।

कौशल्या (पार्श्व) : बेटी सीता···

जनक : मैं सध्यावंदन कर लूँ। (प्रस्थान।)

[मंच पर भरत और राम।]

राम : भरत। रघुवंश की परंपरा की रक्षा अब तुम्हें करनी है। राज-काज में कभी धर्म का त्याग न करना। कोई ऐसा काम भूल से न करना जिससे जनता को यह लगे कि उनका राजा उनके हितों की रक्षा नहीं करता, अथवा उन्हें न्याय नहीं मिलता। सत्ता का संचालन केन्द्र से होता है भरत। यदि केन्द्र शक्तिशाली, निर्भीक, सत्य-न्याय-धर्मप्रिय है तो अधीनस्थ वैसा ही अनुसरण करेंगे। इसलिए तुम्हें सावधानी से राज्य सँभालना है।

भरत : राज्य का बोझ मैं कैसे उठा सकता हूँ भैया? मैं कतई समर्थ नहीं हूँ। आप रघुवंश की बात कर रहे थे, तो रघुवंश में राजकाज का भार बड़ा भाई उठाता आया है। भैया···यह भार आप ही

उठाओ।

राम : मेरा भरत इतना कमजोर कब से हो गया है? जो इतने बड़े देश की सीमाओं की सुरक्षा करता आया हो, वह आंतरिक व्यवस्थाएँ न देख सके, कैसे हो सकता है? हमारे पिता ने यह दायित्व तुम्हें सौंपा है। अपने कर्तव्य से पीछे नहीं हट सकते हो भरत।

भरत : कैसा कर्तव्य? महाराज ने आपको महाराज बनाना चाहा, लेकिन कैकई ने विघ्न पैदा···

राम : भरत (क्रोध से) तुम इतने ढीठ कब से हो गए हो···माँ को कैकई कहते हो।

भरत : ये वही माँ है ना, जिसने आपको बनवास दे दिया और पिता को स्वर्गवास? पूरे देश को एक संकट में धकेल दिया? वही ना।

राम : भरत! चाहे कुछ भी हुआ हो···माँ आखिर माँ है। तुम्हें 'माँ' कहकर बात करना चाहिए।

भरत : अब वह माँ नहीं रही। उसके कारण पूरी अयोध्या अपने महाराज राम के बिना अनाथ और सूनी है।

राम : अनाथ और सूनी! क्या तुमने उत्तरदायित्व ग्रहण नहीं किया?

भरत : नहीं। वह आपका दायित्व है। आप वापस चलकर अपना कर्तव्य पालन कीजिए भैया।

वशिष्ठ : राम! यह विचार सबका है। मंत्रिपरिषद भी। इसीलिए साथ आई है। हम तुम्हें वापस लेने आए हैं।

कौशल्या(पार्श्व) : राम···इधर आना बेटा।

वशिष्ठ : भरत धैर्य से काम लो। आओ मंदाकिनी के तट पर चलें। (प्रस्थान)

लक्ष्मण : (प्रवेश) चलो सब व्यवस्थाएँ हो गईं?

उर्मिला : कैसे हैं आप?

लक्ष्मण : उर्मिला···तुम। तुम कैसी हो···

उर्मिला : ठीक हूँ। मुझे क्या हुआ है? आप राजभवन के सुख भोगने जो छोड़ आए हो।

लक्ष्मण : ऐसा न सोचो उर्मिला। आज परिस्थितियाँ भिन्न हैं।···अवध में तुम्हारी उपस्थिति बहुत आवश्यक है?

उर्मिला : मुझे नहीं मालूम। हाँ इतना जानती हूँ कि तुम्हारी जो भी आज्ञा होगी, उसका पालन करूँगी।

लक्ष्मण : उर्मिला। मैं बहुत भाग्यवान हूँ···जो तुम मिली···

उर्मिला : भाग्यवान तो मैं हूँ। जब लोग आपकी बातें करते हैं, कहते हैं कि धरती पर ऐसा भाई कौन होगा···तब मेरा हृदय गर्व से भर

जाता है।

[मौन]

लक्ष्मण : चुप क्यों हो…कुछ कहो ना।

उर्मिला : आपको कभी मेरी याद आई ?

लक्ष्मण : कैसे भूल सकता हूँ।

उर्मिला : झूठे हो ? मैं तो तुम्हें तभी से जानती हूँ।

लक्ष्मण : कब से ?

उर्मिला : जब जनकपुर में उद्यान में मिले थे।

लक्ष्मण : क्या जान गई थी ?

उर्मिला : पुरुष हो। भावना शून्य। निर्मोही पुरुष।

लक्ष्मण : कभी-कभी भावनाओं को, मनुष्य का संस्कार रोकता है उर्मिला। मैं निर्मोही नहीं हूँ। हाँ, कर्तव्य के सामने सारे मोह त्यागने पड़ते हैं। क्या करूँ ? कभी-कभी लगता है, सब भाग्य के अधीन है।…

उर्मिला : आप दुखी हो गए ?

लक्ष्मण : नहीं। दुखी नहीं हूँ, क्षोभ अवश्य है। बड़े भैया के निश्चय दृढ़ होते हैं। वे उचित हैं या नहीं, यह मेरे लिए भी गौण है उन्हें अकेला नहीं छोड़ सकता मैं ? कभी नहीं छोड़ सकता ?

उर्मिला : जीजा जी पर कोई संकट है क्या ?

लक्ष्मण : संकट कैसे आ सकता है ? जहां जाता हूँ, एक ही बात सुनता हूँ कि वे अवतार हैं, विष्णु भगवान का अवतार।

उर्मिला : मैंने तो और भी कुछ सुना है।

लक्ष्मण : क्या सुना है ?

उर्मिला : आप भी तो…?

लक्ष्मण : अवतार हूँ ? यही ना। तू किसकी बातों में आ गई। अवतार हूँ तभी चाहे जब तीर धनुष पर चढ़ाने लग जाता हूँ—महाराज दशरथ के लिए तीर…भैया भरत के लिए तीर।

उर्मिला : यह आवश्यक है ?

लक्ष्मण : कैसे ?

उर्मिला : जीजा जी बहुत सरल हैं। धर्मात्मा हैं। कभी किसी का बुरा नहीं सोचते ? वे सबको प्रिय हैं ? ऐसे व्यक्ति पर कभी भी संकट आ सकता है ?…आज अयोध्या आपकी प्रशंसा करती है तो कहती है कि यदि आप न होते, तो जाने क्या हो जाता। वहाँ सैकड़ों आपके मित्र हैं ?

लक्ष्मण : अरे हाँ……

उर्मिला : अब तो घर लौटने का समय आ रहा है ?

लक्ष्मण : घर···अवध···वापस···अब क्यों जाएँ ? कैकई की कामना पूर्ण होने दो।

उर्मिला : नहीं हो सकती ?

लक्ष्मण : क्यों ? कठिनाई क्या है ? पिता स्वर्गवासी हो गए। हम यहाँ वन में है ? ठाठ से राजमाता बन जाए और बेटे को महाराज बनाएँ।

उर्मिला : असंभव है।

लक्ष्मण . असभव ? असंभव को संभव बनाना जानती है कैकई ?

उर्मिला : कभी-कभी संभव भी असंभव हो जाता है।

लक्ष्मण : कैसे ?

उर्मिला : बड़े भैया को राज देना संभव था, असंभव हो गया। और अब छोटे भैया के लिए जो संभावना थी, वह असंभावना में बदल गई ?

लक्ष्मण : क्या हुआ ?

उर्मिला : छोटे भैया ने जब सब सुना—देखा तब उन्हें लगा कि मझली माँ ने परिवार को ही नहीं, सम्पूर्ण राष्ट्र को संकट मे डाल दिया ? जनता बड़े भैया को ही महाराज देखना चाहती है। मझली माँ···

लक्ष्मण : उसे माँ मत कहो उर्मिला। वह माँ के पद योग्य नहीं है।

उर्मिला : ऐसा नहीं है ? कम से कम आप ऐसा न करना। उन्हे माँ ही कहना ? छोटे भैया ने उनसे बोलना बंद कर दिया है ?

लक्ष्मण : छोटे भैया ने बोलना···इसका मतलब···उनका कोई हाथ नहीं था ?···ऐसा हो नहीं सकता उर्मिला···देखा होगा कि जनता विरोध मे है तो चलो कुछ दिन बात बन्द कर दो। कहीं इसीलिए तो यहाँ नहीं आए है कि···

कौशल्या : उर्मिला कहाँ है ? सब सो गए बेटा ?

उर्मिला : आई माँ। (प्रस्थान)

[लक्ष्मण का चौकन्ना रहकर जागना। कुटी के पार्श्व में सीता को जगाते हुए राम।]

राम : सीता (धीमा स्वर) सीता···

सीता : क्या बात है ?

[मौन रहने का संकेत। धीरे से उठकर दूर जाना।]

राम : परामर्श दो सीता।

सीता : कैसा ? क्या बात है ?

राम : भरत यहाँ इसलिए आया है कि हम अयोध्या लौट जाएँ। कल बात फिर निकलेगी ? माताएँ, गुरुदेव, मंत्रीगण, नागरिक, महाराज जनक, सब दबाव डालेंगे ? ऐसे समय मे क्या करूँ ?

सीता : जैसा आप चाहें ?

राम : जैसा आप चाहे, नहीं। कुछ बताओ, कि ये करो, ये न करो।

सीता : मैं पत्नी हूँ। आप जो निर्णय लेंगे उसमें मेरी हाँ होगी।

राम : जानता हूँ। लेकिन...तुम क्या चाहती हो ?

सीता : मैं लौटना नहीं चाहती ?

राम : क्यों ? यहाँ क्या है ? दिन-भर काम करती हो एक श्रमिक की तरह ? वहाँ सभी सुविधाएँ हैं ?

सीता : हाँ, यहाँ मैं श्रमिक हूँ। श्रम करती हूँ तो आत्मसंतोष होता है। मैं अनेक स्त्रियों में से एक स्त्री हो जाती हूँ यही आत्मा को आनन्द देता है। जब आप मेरे माथे के पसीने को पोछते हैं, उस क्षण में, तीनों लोक की महारानी होती हूँ।...महल...शैया न हो, वन की घास ही सही, पर्णकुटी ही सही...लेकिन मेरा एक घर है जिसमें मुझे मेरा पति, मेरा देवर सहित उपलब्ध हैं ? अयोध्या में क्या है ? राजसी तामझाम। राजसी अवधारणाओं का बोझ। पति से भेंट के लिए अवसर नहीं, सावधान—'होशियार' के शब्द जाल। अपने पति से भेंट के लिए भी औपचारिकताएँ ? मुझे कुछ नहीं चाहिए...मैं जो चाहती हूँ, वह इस वनवास ने मुझे दे दिया है ? मैं अयोध्या का गलीचों, गद्दों, पर्दों का वैभव नहीं देखना चाहती हूँ। फिर...जैसा आप चाहें...आप जहाँ ले चलें।

राम : सीता...इस चित्रकूट में तुम्हें आम आदमी जैसा जीवन मिला है। बहुत प्रसन्न हो। मैंने इसलिए पूछा था कि कहीं तुम उलाहना न दो...

सीता : उलाहना मैं क्यों दूँगी ? आप करते तो अपने मन की है ? किसकी सुनते है ?

राम : किसकी नहीं सुनी ?

सीता : देवर लक्ष्मण की। धरती पर ऐसा दूसरा भाई है जो अपने भाई के साथ वन चला जाए। वनवास तो उसे ही मिला है ? उर्मिला से भी अलग हो गया।...दोनों एक जैसे है ?

राम : कौन ?

सीता : उर्मिला और देवर। उर्मिला से कहा कि तू आ गई है तो अब यहाँ रुक जा ?

राम : क्या बोली।

सीता : मैं कैसे रुक सकती हूँ ? 'उनका' आदेश मानना मेरा धर्म है।... देवर भी हठी है...कभी-कभी लगता है कि यदि देवर न होता तो हम कितने असहाय होते ?...आपने उससे परामर्श किया ?

राम : नहीं।

सीता : सौमित्र से परामर्श करना चाहिए।

राम : अच्छा। (राम का प्रस्थान। लक्ष्मण के पास पहुँचना।)

पार्श्व : (राम का लक्ष्मण के पास आना।)

राम : लक्ष्मण···यहाँ आओ···(एक ओर ले जाकर)

लक्ष्मण : क्या बात है भैया ?

राम : चिंता की कोई बात नहीं है। यहाँ बैठो ? अब ये बताओ कि मैं क्या करूँ।

लक्ष्मण : मैं क्या करूँ ? आप विश्राम कीजिए।

राम : विश्राम तो कर लूँगा ? तुमने सुना होगा कि भरत और अवध के सब लोग यहाँ क्यों आए हैं ?

लक्ष्मण : सुन लिया है ?

राम : ये सब एक ही बात पर दबाव डालना चाहते हैं ?

लक्ष्मण : 'अवध लौट चलो'।

राम : हाँ।···तुम्हारा क्या विचार है ?

लक्ष्मण : मेरा विचार। आपको मेरे विचार का ध्यान कैसे आ गया ? कहीं भाभी ने तो नहीं कहा ?······

राम : तुमसे मैं कुछ नहीं पूछ सकता ?

लक्ष्मण : आपको अधिकार है लेकिन आप करेंगे वही जो आपकी आत्मा कहेगी, आपका धर्म कहेगा। क्योंकि भाग्य में जो लिखा है ? हमारे हाथ तो कट गए हैं, कुछ कर ही नहीं सकते। न धनुष में शक्ति बची है। हम तो किसी न किसी की कृपा पर जीवित हैं ?

राम : लक्ष्मण। 'कृपा' आवश्यक होती है !

लक्ष्मण : किसी की कृपा पै, यह जिन्दगी पली, ऐसी जिन्दगी से भैया मौत ही भली।

राम : लक्ष्मण। तुम मुझसे नाराज हो ?

लक्ष्मण : नाराज। मैं ? आपसे ? भैया···। मैं आपका सेवक हूँ, एक दास··· चाकर अपने प्रभु से नाराज नहीं हो सकता···

राम : फिर बताओ, तुम्हारा क्या विचार है ? ऐसी परिस्थिति में हम क्या करें ?

लक्ष्मण : यह परिस्थिति भी तो आपने ही पैदा की है। मेरा कहना मान लिया होता तो ये दिन ही क्यों आता ? मैं पिता को बन्दी ही तो बनाता, उन्हें मौत के घाट तो नहीं उतार देता।···यदि आपने कहा माना होता तो हमारी माताएँ वैधव्य न भोगतीं, अयोध्या अनाथ न होती···एक कैकई···एक कैकई माँ का विरोध रह जाता···बस।

राम : तुम ठीक कहते हो लक्ष्मण। लेकिन, मैं अपना धर्म कैसे त्याग देता। मैं पिता की जगहँसाई कैसे कराता ? रघुवंश की परम्परा

को धब्बा कैसे लगा देता। भैया, धर्म में श्रेष्ठ कुछ नहीं है। जो व्यक्ति लोभ या मोह में आकर धर्म त्याग देता है, वह पूर्वजों का सुयश ही नहीं खोता अपितु स्वयं नरक में चला जाता है। ईश्वर ने जो कुछ रच दिया है, वही घटित होता है, उसके लिए माध्यम चाहे, मैं बनूं, चाहे तुम या माँ कैकई ? माध्यम दोषी नहीं होता है लक्ष्मण।

लक्ष्मण : अब आप क्या सोचते हैं ?

राम : मैं बताऊँगा ? पहले तुम बताओ ? क्या करूँ ?

लक्ष्मण : वापस नहीं लौटना भैया। मैं क्रोध में नहीं कह रहा हूँ। आज विश्व श्री राम की पूजा करता है क्योंकि केवल श्री राम ही वह कर सकते हैं जो सामान्य जन नहीं कर सकता है।

राम : सामान्य जन भी कर सकता है लक्ष्मण।

लक्ष्मण : यदि कर सकता है तो वह ('श्रीराम') बन जाएगा भैया।··· आज आपकी आवश्यकता अवध को है या नहीं, मुझे नहीं मालूम। लेकिन वनवासियों को आवश्यकता है। आज चित्रकूट के आसपास कितने वनवासी आ गए हैं ? मैं अयोध्या को जीत कर आपके चरणों में लाना चाहता था। अब क्या जीतना ? अयोध्या स्वयं यहाँ चली आई है।

तुम्हें शीश झुकाने आज,
अयोध्या चरण तुम्हारे आई।
अब किससे लूँ मैं प्रतिशोध,
अयोध्या शरण तुम्हारे आई।

सूत्रधार : रात्रि-भर श्री राम सोचते रहे। सीता भी नहीं सो सकी। अवध के नागरिक प्रातःकाल की प्रतीक्षा में जागते रहे। भरत भी आँसू भर लेते थे और कभी ढाढस बाँधते थे कि श्री राम के लौटने पर सब ठीक हो जाएगा। कैकई सोचती थी कि ये मैंने क्या किया ? अन्ततः सूर्यवंश के नायक श्री राम के आँगन में सूर्य की प्रथम किरण ने पाँव रखा और राम-दरबार लगा।

भरत : प्रभु पितु मातु सुहृद गुरु स्वामी। पूज्य परम हित अंतरजामी।
सरल सुसाहिब शील निधाना। प्रनतपाल सर्वग्य सुजाना।
प्रभु पितु वचन, मोह बस पेली। आयऊँ इयां समाजु सकेली।
राम रजाइ मोर मन माही। देखा सुना कतहुँ कोउ नाही।
सो में सक विधि कीनह ढिढाई। प्रभु मानी सनेह सेवकाई।
राखा मोर दुलार गोसाई। अपने सील सुभाय भलाई।

राम : तात भरत तुम धरम धुरीना। लोक वेद विद प्रेम प्रवीना।
तुम्हे विदित सबही कर करमू। आपन मोर परम हित धरमू।

सात मात बिनु बात हमारी। केवल गुरुकुल कृपा सभारी।
मो तुम्हें करउ करावहु मोहू। तात तरनि कुल पालक होहू।

भरत : हे रघुनंदन ! मैं आपकी शरण हूँ। आप अग्रज हैं, मेरी सहायता कीजिए। कैकई से जो अपराध हुआ है, उसका प्रायश्चित वे कर रही है। अतः घर लौट चलिए।

राम : असंभव है भरत !

शत्रुघ्न : असंभव है तो अवध को ही पीड़ा भोगनी है जबकि उसका अपराध है ही नहीं।

भरत . असंभव कहकर निराश नहीं करो भैया। आपको हमारी भावनाओं का ध्यान नहीं है क्या ? क्या अवध प्रिय नहीं है ? क्या आपने गुरु एवं पितृ तुल्य जनों का कहना मानना बन्द कर दिया है ? क्या आपको भरत प्रिय नहीं है ?

नागरिक . अब किसे दोष दें। दोषी तो विधाता है, केवल विधाता।

राम : भरत मुझे बहुत चाहता है। इसलिए उसने कहा कि मैं क्षमा करूँ······ हम क्षमा करें, किसे ? माँ को ? माँ तो खुद निष्कलंक है, हम पुत्रों की जगदम्बा है, जग जननी है।

समूह : है यह क्या हुआ ? क्या हुआ। महारानी कैकई को क्या हुआ ? अचेत हो गई······अचेत ?

[सीता-राम का दौड़ना।]

कैकई : यह सच है कि अब लौट चलो तुम घर को।

समूह . महारानी कैकई······चुप रहो···महारानी कुछ कह रही हैं। शांत रहो भैया ! सुनो···

राम कैसी हो माँ ?

कैकई . यदि मै माँ हूँ तो तुम घर लौट चलो।

[सँभलकर बैठना—शांति।]

कैकई · मैं जनकर भी भरत को नहीं पहचान पाई। सारा अपराध मुझ से हुआ है राम। मैं कहती हूँ कि घर लौट चलो पुत्र। घर लौट चलो।

राम : माँ···

कैकई : मैं शपथपूर्वक कहती हूँ कि मैंने अपने आप ही सब कुछ किया है। भरत का कोई हाथ नहीं है। यदि हो, और मैं असत्य कथन कर रही होऊँ तो पति समान ही पुत्र भी खोऊँ।

·नागरिक : ऐसा मत कहिए महारानी जी। ऐसा मत कहिए।

·नागरिक : आपने कुछ नहीं किया, महारानी। वह तो मंथरा ने आग लगाई थी···(फफकना)

कैकई : क्या कर सकती थी मंथरा। वह तो दासी मात्र है। मेरे अपराध

के लिए दासी को दोष देना उचित नहीं है। मैंने जैसा किया है वैसे ही भुगतूंगी भी। आज तीनों लोकों में मेरी निन्दा हो रही है, होनी भी चाहिए।

सीता : ऐसा न कहो माँ।

कैकई : कह लेने दे बेटी। मेरे कर्मों से ही मेरा भरत आज मेरा पुत्र नहीं रहा है।

राम : कैसी बातें कर रही हो माँ। माँ, माँ होती है। एक बार पुत्र कुपुत्र हो सकता है, माता कुमाता न भवति।

कैकई : नहीं बेटा राम। मैंने सिद्ध कर दिया। तू पुत्र सुपुत्र है, और मैं माता नहीं कुमाता हूँ। तभी तो भरत को भी न जान सकी। मैंने स्वार्थ ही देखा···अपना स्वार्थ। हे राम, हर जन्म में मेरा जीव सुनेगा कि रघुवंश में एक रानी कैकई हुई थी जिसने स्वार्थवश सब-कुछ समाप्त कर दिया था।

राम : नहीं माँ। इतिहास कहेगा कि कैकई ने भरत जैसा भाई पैदा किया। माँ तुम धन्य हो धन्य।

समूह : सौ-सौ बार धन्य है माँ।

कैकई : ये 'राम' ही कह सकता है केवल राम। तीनों लोकों में मेरा अपयश फैला है। पाप ही ऐसा किया है मैंने। यदि मुझे अपराधी नहीं मानते हो वत्स, तो वापस लौट चलो।

राम : कैसे लौटूं माँ। वचन निर्वाह करने के लिए प्रतिज्ञ हूँ। अब आपका आशीष चाहिए ताकि वचन पूरा कर सकूँ।

कैकई : वचन मैंने माँगे थे राम। मैं उन्हें वापस लेती हूँ।

राम : रघुकुल में दिया हुआ वचन वापस लेने की परंपरा नहीं है माँ।

वशिष्ठ : राम। यदि रघुकुल में वचन पूर्ण करने की परंपरा है तो उसी रघुकुल में ज्येष्ठ पुत्र को राज्य देने की परंपरा भी है। इक्ष्वाकु कुल में सगर ज्येष्ठ पुत्र थे, इसी तरह अंशुमान, दिलीप, भागीरथ और फिर ककुत्स्थ हुए। ककुत्स्थ के ज्येष्ठ पुत्र रघु से रघुवंश आरंभ हुआ। इसी परंपरा में नाभाग के ज्येष्ठ पुत्र 'अज' उनके पुत्र महाराज दशरथ हुए जिनके ज्येष्ठ पुत्र तुम हो। इसलिए अयोध्या का राज्य तुम्हारा है। महायशस्वी राम रघुवंशियों सनातन कुल धर्म को तुम नष्ट न करो।

राम : मैं पिताजी के वचन······

वशिष्ठ : वत्स। मनुष्य के तीन गुरु होते हैं, आचार्य, माता और पिता। पिता उत्पन्न करता है लेकिन आचार्य ज्ञान देता है, इसलिए गुरु है। मैं तुम्हारा और तुम्हारे पिता का भी गुरु हूँ। इसलिए मेरी आज्ञा का पालन करो। इससे धर्म नष्ट नहीं होगा। तुम्हारी बूढ़ी

माँ भी यही चाहती है। भरत यहाँ इसीलिए आया है। तुम अवध के नागरिकों का मान रख लो।

राम : स्वर्गीय महाराज के वचन मिथ्या नही होने दूंगा, गुरुदेव।

भरत : ठीक है। आप अपने निश्चय पर दृढ़ है भैया। मैं आज अभी से यहीं धरना दूंगा। न कुछ खाऊँगा न पियूंगा। जब तक मेरी बात नहीं मानते, तब तक अनशन करूँगा।

[भरत का धरने पर बैठना।]

राम : भरत। ये क्या करते हो? मैंने तुम्हारी क्या बुराई की है जो तुम यहाँ धरना देते हो। 'धरना' एक अस्त्र है। इसका उपयोग अन्याय के विरुद्ध करना चाहिए। मैंने अन्याय नही किया है, इसलिए तुम्हारा धरना व अनशन उचित नही है। इस अस्त्र का उपयोग केवल ब्राह्मण ही कर सकते है जो शस्त्र नही उठाते।

भरत : आप लोग क्या देख रहे हैं। इन्हे कोई समझाता क्यो नही है। क्या अवध की भावनाओं को न मानना अन्याय नही? हम एक माँग लेकर आए है, उसे भी ये स्वीकार नही कर रहे हैं।

सुमन्त : भरत जी ठीक कहते हैं श्री राम।

नागरिक : राजकुमार का कथन सुनो और समझो प्रभो। आज राजकुमार भरत अकेले नही हैं।

जनक : उठो भरत। धरना देना उचित नही। तुम धर्मात्मा हो, इसलिए धर्म को जितना तुम जानते हो उतना कौन जानता है! राम पिता की आज्ञा पालन को धर्म समझते हैं। इसलिए धरना उचित नहीं है। यदि लोग धरने का सही उपयोग नही करेंगे तो यह एक राजनैतिक तमाशा बन जाएगा। इसलिए उठो भरत।

[भरत का उठना।]

भरत : भैया पिता के वचन का पालन चाहते है तो वे अवध लौट जाएँ और मैं यहाँ वन मे रहूँगा।

राम : हमारे पिता ने जो वस्तु खरीदी है, या दे दी है उसमे उलट-फेर का अधिकार न मुझे है और न भरत को। मैं वनवास मे किसी को प्रतिनिधि नही बना सकता हूँ। प्रतिनिधि से काम लेना सामर्थ्य-हीनता का प्रतीक है।

माँ ने उचित माँग की थी और पिताजी ने उसे देकर पुण्य धर्म किया है।

बनवासी : आप रामचन्द्र जी की बात क्यों नहीं मानते हैं?

नागरिक : क्यों मानें, हम सब समझते है।

बनवासी : क्या समझते हो? श्री राम हमारे प्रभु हैं, हम उनका ही साथ देंगे।

नागरिक : ये क्यों नहीं कहते हो कि हमारे प्रभु को तुम अपने यहाँ से जाने

नहीं देना चाहते हो।

केवट शांत रहो भैया। शांत रहो। देखो तो हमारे भाग्य। आज हमें भगवान और भक्त दोनो के दर्शन हो गए।

राम भरत'''यदि तुम मेरे छोटे भाई हो तो तुम मुझे धर्म पालन करने दो और तुम अवध लौट जाओ, वहाँ राजकाज देखो। यह मेरी आज्ञा भी है भरत।

भरत भैया।

राम . भरत''''''

भरत : आपकी आज्ञा का पालन होगा भैया, लेकिन ये पादुकाएँ दे दो।

राम : पादुकाएँ।

भरत : हाँ भैया। अवध का राज इन पादुकाओं के आशीर्वाद से चौदह वर्ष चलेगा। जिस दिन चौदह वर्ष पूर्ण हो जाएँगे आप लौट आना। यदि आपने एक दिन का भी विलंब किया तो भरत का मुँह नही देख पाओगे।

राम : भरत''''''

[चरण पादुकाएँ देना। भरत का प्रस्थान।]

चार

[मंच तीन पर प्रकाश।]

सूत्रधार : भक्तजनो। प्रभु श्री राम की चरण पादुकाएँ लेकर धर्मात्मा भरत अवध लौट गए और वनवासी की तरह नन्दी ग्राम मे रहने लगे। श्री राम का यश सर्वत्र फैल गया था, असुरक्षित वनवासी परिवारों ने भी चित्रकूट के आसपास कई बस्तियाँ बना ली थी। इसी चित्रकूट पर प्रभु ने माता जानकी का वन-फूलों से शृंगार किया था, तब इन्द्र के मूर्ख और नीच पुत्र जयन्त ने कौए का रूप धारण कर माता के पाँव मे चोंच मार दी। श्री राम ने सींका का बाण छोड दिया तो वह तीनो लोको में भागता फिरा। भक्तजनो। माता-बहिनों से अभद्रता करने वाले असामाजिक तत्त्वो का प्रतीक जयन्त, अन्त मे महासंत नारद जी की शरण मे गया। नारद जी ने उसे क्षमा माँगने के लिए कहा। जयन्त ने जब श्री राम से क्षमा माँगी तो उन्होने उसे छोटा दण्ड दिया। दण्ड स्वरूप वह एक आँख खो बैठा? जो कुदृष्टि रखता हो, उसके लिए यही दण्ड

योग्य है। श्री राम ने दण्डकारण्य वन में प्रवेश किया तो अत्रिमुनि से भेंट हुई।

अत्रि (पार्श्व) : नमामि भक्त वत्सलं। कृपालु शील कोमलं।
भजामि ते पदाम्बुजं। अकामिनां स्वधामदं।
निकाम श्याम सुंदरं। भवाम्बुनाथ मंदरं।
प्रफुल्ल कंज लोचनं। मदादि दोष मोचनं।
प्रलंब बाहु विक्रमं। प्रभोऽप्रमेय वैभवं।
निषंगचाप सायकं। धरं त्रिलोक नायकं।
दिनेश वंश मंडनं। महेशचाप खंडनं।
मुनीन्द्र संतरंजनं। सुरारि वृंद भंजनं।

सूत्रधार (पार्श्व)

विनती करि मुनि नाइ सिरु, कह कर जोरि बहोरि।
चरन सरोरुह नाथ जनि, कबहुँ तजै मति मोरि॥

अनुसुइया के पद गहि सीता। मिली बहोरि सुशील विनीता।
रिषिपतिनी मन सुख अधिकाई। आसिष देइ निकट बैठाई।

अनुसुइया : राजकुमारी। ये दिव्य वस्त्र और आभूषण हैं। जो नित्य नए और निर्मल सुहावने बने रहते हैं।

सीता : क्या करूँगी माता?

अनुसुइया : पहनना। बेटी, स्मरण रखना कि माता-पिता, भाई-बहिन सब एक सीमा तक सुख देने वाले होते हैं। स्त्री को असीम सुख, पति ही देता है। जो स्त्री पति की उपेक्षा करती हुई माता-पिता-भाई के बल पर व्यवहार करती है, वह स्वयं ही अपना जीवन कष्टमय कर लेती है। ऐसी स्त्री स्वयं दुखी रहती है और माता-पिता को अपयश दिलाती है।

सीता : ऐसी कौन स्त्री है माता जो अपने पति की उपेक्षा करना चाहेगी?

अनुसुइया : जिसे अपने रूप-लावण्य अथवा पिता के धन पर अभिमान होता है। जिसके हृदय में पति के प्रति प्रेम और श्रद्धा का भाव नहीं होता है। वही स्त्री अपने आप दुखों को आमन्त्रित करती है।

सीता : इसका अन्य कारण क्या है माता?

अनुसुइया : ऐसी स्त्रियाँ जो युग के प्रचार, भौतिक विलास और मोहित करने वाले शब्दजालों में उलझकर अपने कर्तव्य से दूर हो जाती है मूलतः पालक का दोष है बेटी। जब माता-पिता बेटी को संस्कार नहीं देता है तो विवाह के पश्चात संकट खड़े हो जाते हैं। इनका निदान विच्छेद, आत्महत्या अथवा हत्या ही बनता जा रहा है। स्वातन्त्र्य का बौद्धिक नारा…

सीता : स्वतंत्रता तो होनी चाहिए माता।

अनुसुइया : अवश्य। लेकिन स्वतत्रता का अर्थ उच्छृंखलता तो नही हो सकता है। अपना सुख-मात्र तो सब कुछ नही हो सकता है। बेटी—"धीरज, धर्म, मित्र और नारी"—आपद काल मे ही इनकी परीक्षा होती है। इसलिए पति के दुख मे साथ देना चाहिए। सकट में पत्नी का प्रेम आवश्यक होता है। जो स्त्री पति से प्रेम करती है, वही देवी होती है।

सीता : देवी ?

अनुसुइया : हाँ, देवी। तुमने अपना कर्तव्य पालन किया सीता। इसलिए तुम भी देवी हो। स्त्रियो के लिए अनुकरणीय सती हो बेटी। ये वस्त्र पहनो।

राम : आज्ञा मुनिवर। ताकि हम दूसरे वन की ओर चले जाएँ।

अत्रि : कृपा बनाए रखना प्रभु।

पार्श्व स्वर

मुनिपद कमल नाइ करि सीसा। चले बर्नाहि सुर नर मुनि ईसा।
आगे राम अनुज पुनि पाछें। मुनिवर वेष बने अति कांछें।
उभय बीच श्री सोहइ कैसी। ब्रह्मजीव बिच माया जैसी।

विराध : हः हः हः

[सीता भयभीत।]

लक्ष्मण : ठहरो, कौन हो तुम ?

विराध : राक्षस पुत्र विराध से पूछता है कि कौन हो तुम ह हा (सीता को पकड़ कर खीच लेता है) तुम दोनो जटा और चीर धारण करते हो, और दोनों के साथ एक स्त्री भी। नई संस्कृति उत्पन्न कर रहे हो ?

लक्ष्मण : विराध। नीच। मेरी माँ के लिए तेरे ये विचार।

विराध : अच्छा···ये तेरी माँ है···अब ये मेरी भार्या बनेगी—भार्या।

राम : लक्ष्मण···

विराध : तुम कौन हो ? तपस्वी बने फिरते हो और साथ मे सुन्दरी रखते हो, पापियो।

राम : हम क्षत्री हैं विराध। हम सदाचारी वनवासी हैं। ये मेरी पत्नी है।

विराध : अब मेरी पत्नी बनेगी। तुम भाग जाओ, अन्यथा प्राणों से हाथ धो बैठोगे।

लक्ष्मण : अपनी मौत ढूंढ रहा है नीच। (बाण का प्रहार। विराध का गिरना। उठना। सीता को पीछे धकेलकर खड़ा होना।)

विराध : चला लिया बाण। बोल क्या नाम है तेरा ?

राम : राम हूँ पापी। महाराज दशरथ पुत्र राम।

विराध : राम है···तेरा बड़ा नाम सुना है। अपने को भगवान बनाए फिरता है···तू ने ताड़का मारी और सुबाहु···राक्षसों पर हथियार उठाने वाले राम···तेरे प्राण आज नहीं बचेंगे—ये ले। (शस्त्र प्रहार)

राम : (प्रहार कर शस्त्र को काटना।)

लक्ष्मण (बाण प्रहार)

विराध : ये तीर मेरा कुछ नहीं कर पायेंगे। मुझे ब्रह्मा जी का वरदान है। ह: ह: ह:···

लक्ष्मण : (तलवार खींच कर) विराध···अब तुझे ब्रह्मा जी भी नहीं बचा सकते।

विराध अच्छा। ले तुम दोनों को भी ले चलता हूँ।

[दोनों को पकड़कर चल देता है। सीता का विलाप।]

लक्ष्मण भाभी। रोना नहीं। देवर पर विश्वास रखो भाभी।

[लक्ष्मण द्वारा उसे पटक देना। तलवार से प्रहार।]

[राम द्वारा प्रहार।]

विराध : आऽऽऽ। मेरी बाँहें काट डाली तुमने।

राम : लक्ष्मण, ये शस्त्र से नहीं मरेगा। मैं उसे उठने से रोकता हूँ, तुम गड्ढा खोदो, इसे गाड़ना होगा। (राम द्वारा पाँव से गला दबाकर खड़ा होना।)

विराध : राम। प्रभु! राम···

राम : मायावी···

विराध . नहीं प्रभु। मैं जान गया। तुम श्री राम हो।

राम : कौन हो तुम?

विराध मैं गंधर्व तुम्बुरु हूँ प्रभु। कुबेर के श्राप से राक्षस बन गया था।

राम : श्राप किस अपराध में?

विराध : रम्भा पर आसक्त था प्रभु···। मैंने कुबेर से पूछा था, तो उन्होंने कहा था कि श्री राम तुझे मुक्ति दिलायेंगे। प्रभु मुझे गाड़ दीजिए।

लक्ष्मण : ले चलें भैया इसे? (खींचकर ले जाना। विराध का चीत्कार।)

[राम-सीता-लक्ष्मण की प्रसन्नता।]

लक्ष्मण : वाह भाभी! तनिक संकट आया और आप रोने लगती हो। आप इस देश की स्त्रियों की प्रतिनिधि है। आप संघर्ष करना सीखो भाभी, संघर्ष।

राम : अपनी आत्मशक्ति जगाना चाहिए सीते।

लक्ष्मण : हाँ भाभी।

सीता : मुझे क्या मालूम था कि [illegible]

लक्ष्मण : भैया का नाम क्यों लगाती हो? बेचारे सीधे-सादे मिल गए हैं ना।

सीता : ओ हो। एक तुम और दूसरे तुम्हारे भैया—बस दुनिया में दो ही तो सीधे-सादे हैं?···तुम तो इनके लिए सबसे कोप पर बैठे रहते हो, फिर चाहे पिताजी हो, चाहे भरत और चाहे मैं——

राम : देख ले लक्ष्मण। सीता क्या कह रही हैं···अच्छा चलो, आगे चलें।

पार्श्व स्वर

प्रभु आए जहँ मुनि सरभगा। सुन्दर अनुज जानकी संगा।
पुनि रघुनाथ चले बन आगे। मुनिवर बृंद विपुल संग लागे।
अस्थि समूह देखि रघुराया। पूछी मुनिन्ह लागि अति दाया।
निसिचर निकट सकल मुनि खाए। सुनि रघुबीर नयन जल छाए।

मुनि-1 : प्रभु! हमारा रक्षक कोई नहीं है। हम एक स्थान पर भी नहीं टिक पाते हैं।

मुनि-2 : प्रभु! राक्षसों का विरोध करने वाला यहाँ कोई जीवित नहीं बच पाया।

मुनि-3 : राक्षसों ने मुनियों को मारना धर्म बना लिया है।

मुनि-4 : बनवासियों पर अत्याचार की कहानी क्या कहें?

मुनि-1 : हम कहाँ जाएँ? प्रभु! कैसे प्राण बचाएँ?

मुनि-2 : धर्म की चर्चा करना ही बन्द हो गया है।

मुनि-3 : हमारी रक्षा कोई नहीं करता प्रभु?

मुनि-4 : एक न एक दिन इसी तरह हमारे कंकाल मिलेंगे प्रभु।

[राक्षस द्वारा वन कन्या को खींचकर ले जाते हुए घायल कर देना।]

लक्ष्मण : नीच! ठहर! छोड़ दे पापी।

राक्षस : ऐ···तेरी मृत्यु निकट आ गई है। लगता है तू यहाँ नया आया है। (आक्रमण)

लक्ष्मण : हाँ, नया हूँ—लेकिन अब यहीं रहूँगा? समझा।

[युद्ध करते हुए राक्षस को बन्दी बनाकर राम के चरणों में डाल देना।]

राम : (स्त्री के पुरुष से) निर्भय हो। यह तुम्हारी अपराधी है। इसे बाँध कर डाल दो।

[भयभीत पुरुष।]

लक्ष्मण : डरो नहीं। तुम हमारे हो—ये कन्या हमारे लिए बहिन है। इस राक्षस को बाँधो।

[वह बाँध कर डाल देता है।]

सेनानायक : ये किसने साहस किया? (राम से) तू ने। कल के छोकरे···
तेरा यह साहस?

लक्ष्मण : बहुत असभ्य हो? कौन हो तुम?

नायक : चुप। बोल तेरा बाप कौन-सा मुनि है? आज ही दण्ड दूँगा और तुझे पेड से उलटा कर मरने को छोड जाऊँगा।

राम : सावधान नायक। तुम अपराधी का पक्ष ले रहे हो।

नायक : चुप। बहुत बोलता है···छावनी में दो-चार रात रहा तो सारी तपस्या याद आ जाएगी। छोड़ इसे?

राम : ये राक्षस है। इसने एक वन-बाला का हरण करना चाहा?

नायक : तूने ठेका ले लिया है? ये वन-बालाएँ क्या पूजने के लिए होती हैं? यहाँ से भाग जा, नही तो ये सुन्दरी भी राक्षसों को सौंप दूँगा?

राम : अपने कर्त्तव्य का पालन करना चाहिए नायक।

नायक : क्यों मरना चाहता है तू। राक्षस को छोड़ दे।

लक्ष्मण : मैं तुझे बंदी बनाता हूँ। (युद्ध, बंदी बनाना) इसे दण्डित करो भैया—ये दण्ड योग्य है।

राम : तुम आर्य सैनिक होकर राक्षसों का साथ देने के अपराधी हो नायक। मैं तुम्हे मृत्युदण्ड देता हूँ।

नायक : मृत्युदण्ड। मृत्युदण्ड। महाराज ही दे सकते हैं। तुम कौन-से महाराज हो?

लक्ष्मण : अयोध्या के स्वर्गीय महाराज दशरथ के ज्येष्ठ पुत्र श्री राम। (मुनियों से) ले जाओ और वृक्ष पर उलटा लटका दो।

मुनिगण : नही नाथ। हम ऐसा नही कर सकते। हमे राक्षस मार डालेंगे। मार डालेंगे।

राम : मैं हाथ उठाकर कहता हूँ, हरना भू-भार काम मेरा। पृथ्वी को निश्चर हीन करूँ तो दशरथ तनय नाम मेरा।

पार्श्व स्वर

श्री राम धर्म निभाएँगे, भूतल का भार हटाएँगे।
प्रण पूरा कर दिखलाएँगे, भूतल का भार हटाएँगे।
हो चुका बहुत जो होना था, खो चुके बहुत जो खोना था।
अब व्यर्थ न समय गवाएँगे, भूतल का भार हटाएँगे।
वनवासी क्या कर सकते हैं, संन्यासी क्या कर सकते हैं।
यह जनता को दिखलाएँगे, भूतल का भार हटाएँगे।
जब निश्चर-दल को दल डालें, अन्याय समूल मसल डालें।
सब राम, राम कहलाएँगे, भूतल का भार हटाएँगे।

सूत्रधार : मैं दक्षिण की गंगा-गोदावरी हूँ। मेरे तट पर ही पंचवटी (गोदावरी) है। जहाँ भगवान श्री राम, माता जानकी और सौमित्र के साथ

निवास करते हैं। अब श्री राम की प्रतिज्ञा से, मैं भी आतंक, हिंसा की राक्षसी गतिविधियों से मुक्त हो जाऊँगी। यहाँ पंचवटी है। जहाँ श्री राम हैं अब मेरे तट भय मुक्त हैं।···

लक्ष्मण (वनवासी उनके साथ हैं।) जब सत्ता सुरक्षा करने में असमर्थ हो जाए तब राक्षसों का प्रतिकार स्वयं करना चाहिए।

वनवासी-1 कैसे कर सकते है? राक्षसों का कोई भरोसा नहीं, कब कहाँ आ जाएँ और हमें मार डालें।

वनवासी-2 : उनकी शक्ति बहुत है सौमित्र।

वनवासी-3 : हम आपके साथ, यह सोचकर चल रहे हैं कि राक्षसों के हाथों मरना तो है ही, कल नहीं तो आज?

वनवासी-4 सावधान—सौमित्र। छिप जाओ। राक्षस···

लक्ष्मण : राक्षस एक और तुम चार? फिर भी भय?

वनवासी-1 : राक्षस है। इससे कौन मुँह लगे?

वनवासी-2 : उनका तो कोई धर्म नहीं है?

वनवासी-3 क्या लाभ है? आज कुछ कहा तो अभी पूरा ग्राम आग की लपटों में स्वाहा हो जाएगा।

वनवासी-4 . यातना दे-देकर मारते है तब बहुत पीड़ा होती होगी।

लक्ष्मण : हमारा दोष भी यही है और कमजोरी भी। एक ग्राम में अनेक स्त्री-पुरुष, एक राक्षस का मिलकर विरोध नहीं कर सकते? क्यों?

वनवासी-1 : हम इनका कुछ बिगाड़ नहीं सकते?

लक्ष्मण . इसलिए इन्हें छूट है। चाहे ये मारें या हमारी माता-बहिनों का अपहरण कर ले जाएँ।

वनवासी-2 : चाहे जो करें? हम विरोध करेंगे तो मार ही डाले जाएँगे।

लक्ष्मण : मृत्यु भय से सम्मान खोते हो। सम्मानहीन जीवन, अर्थहीन होता है। आदमी के लिए सम्मान से अधिक मूल्यवान कुछ नहीं होता। इसलिए सम्मान के लिए रक्त की अंतिम बूंद तक संघर्ष करना चाहिए।

वनवासी-3 : संघर्ष। कैसा संघर्ष? हम निहत्थे संघर्ष मोल लेकर मौत को बुला लें क्या?

वनवासी-4 : सौमित्र। इस राक्षस ने मेरी पत्नी का हरण कर लिया है—देखो मेरी स्त्री को कितनी निर्दयता से ले जा रहा है।

लक्ष्मण : तुम्हारी पत्नी है और तुम मौन? चुनौती दो उसे चुनौती।

वनवासी-4 : नहीं···मार डालेगा।

लक्ष्मण : ऐसे कैसे मार डालेगा। तुम सब इसकी मदद करना। मैं भी हूँ—जाओ, इसका रास्ता रोको।

वनवासी-4 : ऐ राक्षस ! मेरी पत्नी को छोड़ दे।

स्त्री : मुझे बचा लो स्वामी, बचा लो।

वनवासी-3 : घबड़ा मत बेटी।

वनवासी-2 : छोड़ दे। ये हमारी बहू-बेटी है।

वनवासी-1 : छोड़ता है या नहीं।

राक्षस : मरना चाहते हो'''कल तुम तीनों की स्त्रियाँ भी ले आऊँगा'''।

वनवासी-1 : यदि कल लायक रहे तो ही ना।

वनवासी-4 : छोड़ मेरी पत्नी को।

राक्षस : वनवासी, तेरा दुस्साहस।

वनवासी-3 : सावधान राक्षस।

राक्षस : मैं तुम्हें जीवित नहीं छोड़ूँगा।

वनवासी-2 : आज देखते हैं, कौन जीवित जाता है ?

[राक्षस आक्रमण करता है। वनवासी उसे मार कर भगा देते हैं।]

वनवासी-2 : (प्रसन्नता का स्वर)

लक्ष्मण : अब किसी राक्षस से डरना नहीं। उसका सामना करना, सामना। अन्याय से समझौता नहीं, प्रतिकार करना सीखो मित्रो।

वनवासी : सौमित्र की'''जय।

[राम की ओर जाना।]

राम : सौमित्र ने सौमित्र यहाँ भी बना लिए जानकी।

सीता : देवर किसका है ?

वनवासी : श्री रामचन्द्र की जय।

राम : बहुत उत्साह है आज ?

लक्ष्मण : राक्षसों को पहली चुनौती दी है इन लोगों ने।

सूत्रधार : राम धाम जब बन गया, ऐसा सुन्दर धाम।
पचो मे पावन हुआ, पंचवटी का नाम।

गेय स्वर : यहाँ पर बसते हैं श्री राम, श्री राम, श्री राम।
सुनो राक्षसो तुम्हें चुनौती देते हैं हम आज।
बहुत सह लिया, अब न सहेंगे, और तुम्हारा राज।
निर्भय बनो सभी वनवासी, घट जायेगी सभी उदासी।
फसल उगाओ खेतों में ले अवतारी का नाम।

सीता : आओ। आओ।

[वनवासियों का प्रवेश।]

एक : ताड़ पत्तों की चीजें अब घर में बना लेते हैं जीजी।

सीता : अच्छा। आज हम अच्छे से रहना सीखें। देखो मैं भी तुम्हारी

तरह वन में रहती हूँ ना। (वनवासी स्त्री की ओर) मेरे पास आओ।

दो : आ गई।

सीता : देखो···सब मेरी तरह से चोटी बनाओ। (सीता की नकल करती बालाएँ) अब देखो। अच्छी लगती हो।

तीन : नदी के तीर पर चलो जीजी।

सीता : हाँ चलते हैं। गागर ले आऊँ। (लेकर आना।)

चार : लाओ, मुझे दे दो।

सीता : नहीं। मैं ही ले जाऊँगी? अपना काम स्वयं करना चाहिए ना।

एक : ये क्यों नहीं कहती कि···

सीता : क्या नहीं कहती, चुप क्यों हो गई, बोलो ना।

दो : अपनी गागर छूने नहीं देना चाहती हो।

सीता : छूने? क्यों? छूने में क्या है?

तीन : हमारे हाथ का पानी कौन पीता है?

सीता : तुम्हारे हाथ का पानी?

चार : हम वनवासी हैं न···

सीता : अच्छा।···इधर आओ। (चार का पास पहुँचना) आज से हमारे पीने का पानी तुम लाया करोगी। हम यही पियेंगे।

[चलने लगती है। शिव लिंग के निकट से गुजरते हुए सीता प्रणाम करती हैं। वो दूर हटती जाती है।]

सीता : वहाँ क्यों खड़ी हो? इधर आओ।

एक : उसे वहीं पड़ा रहने दो जीजी।

सीता : क्यों?

तीन : वह मंदिर में नहीं आती।

सीता : मंदिर में नहीं आती! क्यों?

चार : अछूत है।

सीता : अछूत है। इधर आओ। तुम यहाँ रोज पूजा करने आओगी। ये जीजी का आदेश है।

[राम, सीता और लक्ष्मण की गतिविधियों को देखते हुए। लक्ष्मण शस्त्र संचालन सिखाते हुए। सीता स्त्रियों को सिखाते हुए।]

[मंच तीन पर सीता, पांच पर श्री राम और चार पर सौमित्र।]

आइ रहे जब तें दोउ भाई।
तब ते पंचवटी-कानन छवि, दिन-दिन अधिक-अधिक अधिकाई।
सीता-राम-लषन पद अंकित अवनि सोहावनि बरनि न जाई।

फूलत, फलत, पल्लवत, पहुहत बिटप बेलि अभिमत सुखदाई।
कूजत बिहँग मंजु गुंजत अलि, गात पथिक जनु लेत बुलाई।

[राक्षसों द्वारा अवलोकन। स्त्रियों को घेरने का प्रयत्न।]

सीता : दूर रहो। किसी को स्पर्श भी न करना।

राक्षस-1 नई आई है तू।

राक्षस-2 : हमें केवल वह स्त्री चाहिए जिसके कारण सेनानायक और राक्षस को दण्डित किया गया है? कौन-सी है? उसे लेकर जाएँगे।

राक्षस-3 : वह भी चाहिए जो तपसी की पत्नी है।

राक्षस-4 : हमारा विरोध करने का साहस कैसे हुआ?

सीता : तुम्हें कोई नही मिल सकता?

राक्षस-1 : फिर हम सबको ले जाएँगे।

राक्षस-2 : सब पुरुषों को मार डालेंगे।

राक्षस-3 : तुम्हारे ग्राम का वह हाल कर देंगे कि चित्रकूट तक के लोग काँप उठें।

राक्षस-4 : ये नही बताएँगी। इन्हे ले चलो। सबको ले चलो।

सीता : तुम्हे मेरे देवर का भी भय नही। यदि वे आ गए तो···

राक्षस-1 : अच्छा। तेरा देवर भी है।

राक्षस-2 : उसे खा जाऊँगा।

राक्षस-3 : तेरा पति कहाँ है?

राक्षस-4 : उसका रक्त मैं पिऊँगा।

[वनवासी राक्षसों को घेर लेते हैं।]

वनवासी-1 : रक्त तो तुम्हारा बहेगा राक्षसो।

राक्षस-4 : किसने दी आवाज। सामने आ। पकड़ लो स्त्रियों को।

वनवासी-2 : कोई आगे न बढ़ना।

राक्षस-4 : विरोध का साहस—तू मरना चाहता है······

[परस्पर युद्ध। राम-लक्ष्मण। धनुष पर तीर रखे खड़े देखते रहते हैं। राक्षस घायल होकर भागते हैं। वनवासी भी चले जाते हैं।]

जटायु : राम।

राम : कौन हो तुम?

लक्ष्मण : ये मायावी राक्षस लगता है।

जटायु : नही वत्स। मैं तुम्हारे पिता महाराज दशरथ का मित्र जटायु हूँ।

राम : गिद्धराज जटायु।

जटायु : हाँ। वत्स।

राम-लक्ष्मण : प्रणाम स्वीकार करें तात।

सीता : प्रणाम तात।

जटायु : सौभाग्यवती भव वेटी। मैं यही रहता हूँ। जब कभी आप दोनों कही जाएँ तो मुझे सूचना देकर रखना। मैं वेटी की रक्षा करूँगा। (लक्ष्मण से) तुम जिस दिन से इधर आए हो, लोगो को साहसी बना रहे हो। वत्स तुम महापराक्रमी हो। तुम्हे देखकर संतोष हुआ।

राम : तात। आप हमारे लिए पिता तुल्य हैं। जब अवसर मिले आते रहना।

जटायु . आता-जाता रहूँगा। अब तो वेटी यहाँ है तो आना ही पड़ेगा। लेकिन सावधान रहना। यहाँ राक्षसो का आतंक है। तुम उन्हे चुनौती दे रहे हो राम······तो वे घात कर सकते हैं।

लक्ष्मण : घात का उत्तर प्रतिघात होता है तात।

जटायु : और छल का, माया का ?

राम : हम छल नहीं कर सकते हैं।

जटायु : राक्षस छल करते है। मायावी तो वे है ही। इसलिए कहता हूँ सावधान······रहो।

[दृश्य परिवर्तन।]

[मंच एक पर प्रकाश।]

राक्षस-1 : हमे सावधान रहना होगा······और सिर उठाने वालो को कुचलना पड़ेगा।

राक्षस-2 : यदि ऐसा नही हुआ तो कल गाँव-गाँव मे हमारा विरोध खड़ा हो जाएगा ?

राक्षस-3 . ये वे संगठित हो गए तो युद्ध के लिए ललकार भी सकते है।

राक्षस-4 ' मेरा साफ कहना है कि इस विरोध को अब दबा देना चाहिए।

शूर्पणखा ' क्या करोगे ?

राक्षस-1 : हम गाँवों में आग लगा देंगे।

राक्षस-2 : स्त्री पुरुषो को यातनाएँ देकर मार डालेंगे।

राक्षस-3 : जिन्होंने विरोध का साहस दिखाया है, उन्हे ऐसी मृत्यु देंगे कि सुनने वाले काँप उठें।

राक्षस-4 : उनके बच्चो का मांस खाएँगे।

शूर्पणखा . तुम उनकी स्त्रियों और पुरुषो को पकडने गए थे लेकिन लौटे इस हालत मे। अब की बार, ऐसा न हो कि तुम मारे जाओ······

खर : नही बहिन। यहाँ तेरा भाई खर भी है।

दूषण : जहाँ खर है वहाँ दूषण भी है।

खर : किसने साहस किया ? हमारे सेनानायको के नाम से मुनियो को नीद नही आती है ?

दूषण : यह क्षेत्र राक्षस जाति के नियंत्रण में है। हमारा राज्य और हम ही मारे जायेंगे ? ये कभी न होगा। तुम मौन क्यों हो बहिन।

खर : मौन उचित नहीं है बहिन। कभी-कभी मौनता को कायरता भी मान लिया जाता है। हमें उन हाथों को शीघ्र काट डालना चाहिए जो हमारी ओर उठ रहे है।

दूषण : हाँ बहिन। यदि विलम्ब किया तो ग्राम-ग्राम से हमारा विरोध पैदा हो जाएगा। ये संकेत भविष्य के लिए अशुभ हैं।

खर : बहिन सोचो। दो सामान्य लड़कों के सहारे ताड़का और सुबाहु को मरवा डाला था विश्वामित्र ने। तब से हम उस प्रांत की ओर देखते नहीं।

दूषण : कहीं ऐसा तो नहीं कि मुनियों ने इन लोगों को हमारे विरुद्ध संघर्ष के लिए तैयार किया हो ? सारे मुनि मारे भी नहीं जा सके हैं। ये वन ही बहुत सघन है ?

शूर्पणखा : हमारे विरोध के पीछे भी दो युवक ही हैं।

खर-दूषण : दो युवक ? आश्चर्य।

शूर्पणखा : हाँ दो युवक। आश्चर्य मुझे भी है ?

खर : ये किस मुनि के पुत्र है ? बहिन।

शूर्पणखा : यह प्रश्न मुझे तुम से करना है खर।

खर : हमें आपसे ही ज्ञात हुआ कि······

शूर्पणखा : मुझसे ! गुप्तचर क्या करते है ? ये दो युवक, कल नहीं आ गए ? वे आए। आश्रम बनाया। यहाँ-वहाँ आते-जाते है। गाँवों में संपर्क हैं। जो ग्रामवासी, हमारे नाम से काँपते थे, वही आज हमारे विरुद्ध शस्त्र उठाना चाहते हैं ! ये एक दिन का काम नहीं है खर।

खर : पंचवटी से दूर है बहिन। इसलिए समाचार नहीं मिल पाते हैं।

दूषण : इतने वर्षों में कभी कोई विरोध नहीं हुआ।

शूर्पणखा : क्या अर्थ है इस बात का ? 'विरोध नहीं हुआ'। शस्त्र से जब आवाज दबा दी जाती है तो वह धीरे-धीरे फिर उठ खड़ी होती है। यदि हम अचेत रहे तो हमारी सत्ता ही उखड़ जाएगी दूषण।

दूषण : असंभव है दीदी। उत्तर दिशा का कोई भी राजा हमारी ओर आँख उठाकर नहीं देख सकता है।

शूर्पणखा : जब राजा प्रतिकार न करें, तो बुद्धिजीवी खड़े हो जाते हैं। वे विचार क्रांति से जनता को खड़ा कर देते हैं ?

खर : बुद्धिजीवियों की हड्डियों के पहाड़ लगा दिए हैं हमने। जिसमें जो देखे, वही काँप उठे।

शूर्पणखा : इसके बाद ही कई गाँवों में हमारे सैनिक मारे गए हैं ?

खर : ऐसा पहली बार हुआ है।

दूषण : इसे कुचलना पड़ेगा, बहिन।

शूर्पणखा : तुम दोनो बुद्धि का प्रयोग नही करते। कुचलने का प्रयत्न किया और एक साथ इस दण्डकारण्य के सारे स्त्री-पुरुष विरोध के लिए आ गए तो ?

खर : उनके लिए मैं बहुत हूँ ?

शूर्पणखा : (सैनिकों से) तुम जाओ। (राक्षसों का प्रस्थान)······तुम पराक्रमी हो खर। मुझे विश्वास है कि तुम और दूषण इस विरोध को जड़ से समाप्त कर सकते हो। फिर भी······

दूषण : फिर भी क्या बहिन ?

शूर्पणखा : ये पता करना आवश्यक है कि ये मुनिकुमार कौन हैं ? अभी तुम लोग जाओ लेकिन···सावधान अवश्य रहना।

[प्रस्थान।]

[गुप्तचर का प्रवेश।]

गुप्तचर : महारानी की जय हो।

शूर्पणखा : कहो गुप्तचर ? पता किया ? कौन है वे दोनों ?

गुप्तचर : वे दो नही तीन है ?

शूर्पणखा : तीन ? कौन-कौन है ?

गुप्तचर : दो युवक और एक स्त्री।

शूर्पणखा : राक्षस राज्य मे स्त्री लेकर आए है ? उन्हें भय नही ?

गुप्तचर : निडर हैं ?

शूर्पणखा : क्या नाम है ?

गुप्तचर : एक राम है, जिसे यहाँ के वनवासी अवतार मानते हैं। दूसरा लक्ष्मण है जो बहुत तेज, चालाक और साहसी लगता है। राम की स्त्री सीता है।

शूर्पणखा : कहाँ से आए है ?

गुप्तचर : चित्रकूट से आए है। इनके पास आधुनिक शस्त्र भी है। कहते हैं कि इनके माता-पिता ने वनवास दे दिया है ?

शूर्पणखा : इनकी उम्र क्या होगी ?

गुप्तचर : यही कोई चालीस के आसपास।

शूर्पणखा : किसलिए आए हैं ?

गुप्तचर : अब पंचवटी मे ही रहेंगे। ये इन्होंने प्रतिज्ञा की है कि पृथ्वी से राक्षसों का अंत कर देंगे।

शूर्पणखा : राक्षसों का अंत। (हँसती है।)

राक्षस-1 : रक्षा करो महारानी ? रक्षा करो।

शूर्पणखा : गुप्तचर की उपस्थिति में कैसे आ गए ?

राक्षस-2 अपराध क्षमा हो महारानी लेकिन हम क्या करें।

शूर्पणखा : इस अपराध की सजा मृत्युदण्ड है।

राक्षस-3 : मृत्युदण्ड राम दे, इससे श्रेष्ठ यही है कि महारानी की आज्ञा से मृत्युदण्ड मिले।

शूर्पणखा : राम की आज्ञा से मृत्युदण्ड ? वह कौन होता है मृत्युदण्ड देने वाला ?

राक्षस-4 : उसका छोटा भाई लक्ष्मण वनवासियों को भड़काता है, हथियार चलाना सिखाता है। जब राक्षस लूटने जाते हैं तो ग्राम-जन हमला कर देते हैं। पकड़े गए तो राम के सामने खड़ा कर देते हैं। क्षमा माँगने पर कुछ दिन बाँधकर रखते हैं और यातनाएँ··· सही नहीं जाती। क्षमा न माँगी तो मृत्युदण्ड ?

शूर्पणखा . राम···राम···लक्ष्मण···लक्ष्मण···? दो व्यक्तियों ने हमारे विरुद्ध जन सामान्य को खड़ा कर दिया?···भयभीत न हो। तुम जा सकते हो।

गुप्तचर : महारानी·· ये अवतारी पुरुष हैं।

शूर्पणखा : आर्यों मे यह भी खूब है। कोई न कोई अवतार अवश्य है। ये सब मुनियों का प्रचार है।

गुप्तचर : प्रचार में कुछ सत्यता लगती है।

शूर्पणखा : कैसे ?

गुप्तचर . इनमें से जो राम है, उसने ही ताडका और सुबाहु का वध किया। भगवान शिव का धनुष तोड़ा। विराध का वध इन्होंने ही किया है। सूचना है कि छोटा युवक लक्ष्मण बहुत पुरुषार्थी है, उसने राक्षसों की सेनाओं को भी परास्त कर दिया था।

शूर्पणखा : अच्छा। तो ये वो लोग है। जो अयोध्या के राजकुमार हैं।···तुम जा सकते हो।

गुप्तचर : जो आज्ञा महारानी।

शूर्पणखा : राम···लक्ष्मण।···इन्हें युद्ध में मारना सम्भव है।···

प्रतिशूर्पणखा · शूर्पणखा। युद्ध मे मारना असम्भव है। ये वीर है। ताडका और सुबाहु को मारना कोई सरल काम है ?

शूर्पणखा : मैं न ताड़का हूँ और न सुबाहु। मैं शूर्पणखा हूँ शूर्पणखा।

प्रतिशूर्पणखा : मूर्ख। ये सोच···कि दोनों बुद्धिमान हैं अन्यथा विराध को कैसे मारते ?

शूर्पणखा . विराध। कोई बडी बात नहीं है।

प्रतिशूर्पणखा : यह बुद्धिमानी पूर्ण उत्तर नहीं है तेरा। सोच···इनके हाथ पराजय नहीं है विजय है, विजय। वे अकेले भी नहीं हैं—जन सामान्य उनके पीछे है।

शूर्पणखा : बना रहे ? इसमे क्या होता है ?

प्रतिशूर्पणखा : होता है शूर्पणखा। राक्षस राज मे ही जटायु रहता है, उसका भी तुम क्या बिगाड पाई।···सोच लो शूर्पणखा वे अवतार है और नवयुवक भी···

शूर्पणखा : कोई रास्ता तो निकालना ही पडेगा।

प्रतिशूर्पणखा : रास्ता है। बुद्धि से काम लो ? तुम विधवा हो विधवा ?

शूर्पणखा : जानती हूँ। मेरे भाई रावण ने षड्यंत्र किया था।

प्रतिशूर्पणखा : पुन. विवाह कर ले न। तुझे कौन रोक सकता है ? तू ने पहले भी प्रेम विवाह किया था। अभी तो बूढ़ी नही हो गई है···प्रसाधनों का प्रयोग कर सुन्दरी बन सकती है।

शूर्पणखा . पुनः विवाह। क्या यह सम्भव है ?

प्रतिशूर्पणखा . सम्भव है ? विवाह कर रावण को चुनौती दे सकती है तू।

शूर्पणखा : यदि विवाह सम्भव नही हुआ तो ?

प्रतिशूर्पणखा : तो उन्हे उत्तेजित कर, ताकि वे धीरे-धीरे दक्षिण की ओर बढ़ें और रावण···से मुकाबला हो जाए।

शूर्पणखा · इससे लाभ।

प्रतिशूर्पणखा : यदि ये साहसी, वीर और दृढ़ प्रतिज्ञ है तो रावण को मार डालेंगे। तब तेरे हृदय की आग शान्त हो जाएगी। यदि सामान्य युवक है तो मारे जाएँगे और तेरा राज्य निश्चित हो जाएगा। तुझे तो सुख ही सुख मिलेगा शूर्पणखा।

शूर्पणखा : मैं विवाह करूँगी ? राज्य से निष्कासित है—मैं सम्पदा दूँगी। मैं विवाह करूँगी—विवाह।

[प्रस्थान। मंच तीन पर प्रकाश।]

[लक्ष्मण का चौंकना।]

शूर्पणखा : मुझे देखकर चकित हो गए ?

लक्ष्मण . सचमुच चकित हूँ सुन्दरि। अर्धरात्रि मे, अकेली! सहसा विश्वास नही होता।

शूर्पणखा · सुन्दरि कहते हो लेकिन सुन्दरी से ऐसा व्यवहार करते है क्या ?

लक्ष्मण : बात कैसे करता ? वह भी परनारी से वार्तालाप ? धर्म इसकी अनुमति नही देता।

शूर्पणखा : तुम्हारी इन बातो से कही छली न जाऊँ!

लक्ष्मण : हम छलते नही है।

शूर्पणखा : कैसी कठोर बातें करते हैं। आपके हृदय नही है क्या ? कुछ हृदय की बात करो ना।···अच्छा, एक बात पूछूं ?

लक्ष्मण : पूछिए।

शूर्पणखा : ये व्रत क्यों लिया है ? कारण बताओ। यदि चाहो तो मेरे भू-

भाग के शासक बन सकते हो। प्रतिशोध लेना हो, तो कहिए? किसी सुन्दरी के प्रेम का अभाव खलता हो तो मुझे अवसर देकर देखिए।

लक्ष्मण : धन्यवाद। मुझे कोई अभाव नहीं।

शूर्पणखा : निष्काम तपस्या करते हो?

लक्ष्मण : तपस्या कहाँ है। तपस्या का फल होता है। यहाँ फल कौन है?

शूर्पणखा : मैं।

लक्ष्मण : तो योग्य पात्र खोजूँगा।

शूर्पणखा : मैंने खोज लिया है।

लक्ष्मण : किसे?

शूर्पणखा : नाम नहीं जानती हूँ। लेकिन वह मेरे समक्ष है।

लक्ष्मण : समक्ष? कौन?

शूर्पणखा : आप?

लक्ष्मण : पाप शांत हो, पाप शांत हो। मैं विवाहित हूँ।

शूर्पणखा : तो क्या हुआ? पुरुषों के कई पत्नियाँ होती हैं।

लक्ष्मण : अधर्म की बात न करो। किसी अन्य को चुन लो तुम।

शूर्पणखा : अन्य को? किस मन से? मन तो तुमसे हार गया है। हाय…मैं क्या करूँ?

लक्ष्मण : शांत हो सुन्दरि। पताका के समान तुम न कुल जानो, न धर्म। ये प्रेम नहीं है।

शूर्पणखा : प्रेम न कुल देखता है न धर्म। वह तो प्रेम पात्र देखता है। देखो, आपके द्वार पर प्रेम अतिथि खड़ा है।

लक्ष्मण : प्रेम? प्रेम अनुभूति होती है। उनमें भाव भंगिमाओं, रूप सौंदर्य और शब्द माधुर्य की नाटकीयता नहीं। प्रेम पूजा है, साधना है। वासना नहीं। जो लोग क्षणिक आवेश और अनुरक्ति को प्रेम समझते हैं वे स्वयं और पात्र, दोनों को छलते हैं। आप जिसे प्रेम कह रही हैं वह आत्मा का विद्रोह है।

शूर्पणखा : नहीं। विद्रोह नहीं है। यह एक अनन्य प्यास है तपस्वी। मात्र मृगतृष्णा है रूपसि।

लक्ष्मण : (पर्णकुटी से सीता का आना)

(सीता, लक्ष्मण और सुन्दरी को देखकर मुस्कुराती है।)

सीता : अच्छा। मुझे क्या मालूम था कि रात-रात-भर इसलिए जागरण होता है?

लक्ष्मण : नहीं। ऐसी बात नहीं है।

सीता : कैसी बात नहीं है। अब घबड़ाते क्यों हो? पकड़े गए ना।…ये सब कब से चल रहा है?

लक्ष्मण आप गलत सोच रही है ?

सीता मेहमान घर आया हो तो उसका स्वागत करना चाहिए। लेकिन तुम तो 'पुरुष' हो ना। वैसे मैंने सब बातें नहीं सुनी है। ये सवाद कब से चल रहा था ? (शूर्पणखा से) खिन्न न हो। ये मेरे देवर है। पुरुष है ना। घर पर देवरानी छोड़कर भाग आए हैं। ये कोई वैराग्य की उम्र है ? तुम चाहती हो ?

शूर्पणखा . (लजाकर) हाँ।

सीता : फिर तो मैं भी मनाऊँगी।

लक्ष्मण · ···ये क्या बातें कर रही हो भाभी ?

सीता · अच्छा। ठहरो।

[सीता पर्णकुटी से राम को लेकर आती है।]

सीता (राम से) देखो तो (शूर्पणखा राम को देखती है।)

[राम लक्ष्मण को देखते हैं।]

राम : कौन हो ? क्या चाहती हो शुभे ?

शूर्पणखा . मेरा वेश मेरा परिचय नही देता क्या ? मैं छल, कपट नहीं जानती। जैसी अंदर से हूँ, वैसी ही बाहर से भी। हाँ, मैं स्वतंत्र विचार रखती हूँ। किसी का डर नहीं मानती। इसलिए इधर आई तो तुम्हारे अनुज को देखा—लेकिन व्यवहार से आप श्रेष्ठ हैं।

राम . धन्यवाद शुभे।

शूर्पणखा आपको देखकर ऐसा लगता है ?

राम . कैसा लगता है ?

शूर्पणखा . तुम्हारे समान पुरुष और मेरे समान नारी और कही नही है। सम्भवतः यह संयोग है।

राम : संयोग ?

शूर्पणखा : अब आप ही ये वरमाला पहन लो ? मुझसे विवाह करते ही ये पर्णशाला प्रासाद में परिवर्तित हो जाएगी।···अच्छा आप इसे (सीता की ओर) देख रहे है ? मेरे प्रेम को स्वीकार करते ही आप इसे भूल जाएँगे।

राम · मेरा एक परामर्श मानो। मेरा अनुज यहाँ अकेला है। इसे अपने वश में यदि कर लो, तो धन्य हो जाओगी।

[शूर्पणखा लक्ष्मण के पास जाती है।]

लक्ष्मण : मेरे लिए अब माँ समान हो चुकी हो।

राम : अरे···रे ! अब क्या होगा ? ये तो बेचारी दोनों ओर से ही गई।

शूर्पणखा : तो मैं आशा छोड़ूँ ? मैंने जो सम्बन्ध जोड़ा था उसे तोड़ लूँ। ठीक है···लेकिन याद रखना···तुम्हे मुझे अपनाना पड़ेगा ? अभी

तुमने देखा क्या है ?

लक्ष्मण . कुछ नही ?

शूर्पणखा . एक स्त्री का अनादर। बहुत मूल्य चुकाना होगा तुम्हें। निष्पन्न प्रेम से आहत स्त्री का प्रतिशोध नही जानते। ये वैर है वैर।

लक्ष्मण : तुम जैसी दिख रही हो, वैसी हो नहीं ?

शूर्पणखा . मेरे मार्ग की बाधा, ये स्त्री है। यदि ये न होती तो तुम इससे विवाह कर लेते। इसे जीवित नही छोड़ूंगी मैं।

लक्ष्मण : नीच स्त्री'''आगे नहीं बढ़ना। बड़ी मायावी है तू। ऐसे ही छलती होगी सबको। आज कुरूप ही बना दूंगा तुझे।

शूर्पणखा : (नाक-कान कटने पर चीत्कार। प्रस्थान।)

सीता : सुबह-सुबह अपशकुन हो गया ? न जाने कौनसा सकट आने वाला है !

लक्ष्मण : निःशंक रहो भाभी। अभी आपका देवर यहाँ है। विघ्न-बाधायें तो आती रहती है। पुरुषार्थी वही होता है जो उनसे सघर्ष करता है।

[राक्षस 1, 2, 3, 4 का प्रवेश।]

राक्षस-1 : संघर्ष की लालसा है तुम्हें। क्यो मृत्यु को आमन्त्रण देते हो। इस स्त्री को हमें सौंप दो और शूर्पणखा को अपना लो।

लक्ष्मण : बहुत अच्छे। निर्लज्ज को अपना लें।

राक्षस . अपमान करता है। इसे पकड़ो'''

[युद्ध में राक्षस मारे जाते हैं।]

राम : अच्छा सकेत नही है। मेरा धनुष लाओ सीता। लक्ष्मण, तुम अपनी भाभी को लेकर कही छिप जाओ। लेकिन सावधान रहना।

[खर-दूषण और सैनिक।]

खर : सेनापति त्रिसिरा जाओ। इससे कहो कि हमारा आदेश है, अपनी छिपाई हुई स्त्री हमे सौप दो।

सेनापति (त्रिसरा) : (राम से) महाराज खर और दूषण की आज्ञा है कि तुम अपनी स्त्री को सौंप दे और जीते-जी लौट जाओ।

राम : उनसे कहना कि हम क्षत्रिय है। हम उन जैसे पशुओ को शिकार के लिए ढूंढते ही फिरते है।

दूषण . पकड लो इसे ?

[युद्ध में आहत खर का चीत्कार।]

खर : अकम्पन। महाराज रावण को समाचार देना'''

सूत्रधार

जब खर दूषण का हुआ रण मे काम तमाम,
शूर्पणखा को फिर कहाँ पल भर भी विश्राम।

झगड़े की जड़ बढ़ी यों—आगे को तत्काल,
लंकापति रावण से बोली होकर लाल !

[मंच एक पर प्रकाश ।]

शूर्पणखा : भैया ··

रावण : बहिन शूर्पणखा···ये अपमान किसने किया ?

शूर्पणखा : दो लड़कों ने ।

रावण : दो लड़कों ने ? कौन है वो ?

शूर्पणखा : राम-लक्ष्मण ।

रावण : राम-लक्ष्मण । कहाँ रहते है ?

शूर्पणखा : पंचवटी में ।

रावण : पंचवटी मे । लेकिन ये घटना घटी कैसे ?

शूर्पणखा : मैं तुम्हारे लिए उनके आश्रम मे गई थी ।

रावण : मेरे लिए ।

शूर्पणखा : हाँ भैया । उनके साथ एक अत्यन्त सुन्दरी भी है । वह मंदोदरी भाभी से भी बहुत सुन्दर है । मैं उसे तुम्हारे लिए लाना चाहती थी ।

रावण : फिर ?

शूर्पणखा : लक्ष्मण ने रोका तो मैंने कहा कि मैं महायशस्वी महाराज रावण की बहिन हूँ ? इस स्त्री को सौंप दो अन्यथा मारे जाओगे ?

रावण : फिर क्या हुआ ?

शूर्पणखा : मैं उस सुन्दरी को लेने आगे बढ़ी तो युद्ध हो गया । उसने मेरी यह हालत बना दी भैया ।

[विलाप ।]

रावण : यह समाचार—यह दुराचार । क्या खर दूषण से नही कहा ? उनका तो वहाँ अखाडा था, उस कुल भूषण से नही कहा ।

शूर्पणखा : वे सेना लेकर गए । अत्यंत घोर संग्राम भी हुआ लेकिन तपस्वी राम ने उन सबका वध कर दिया ।

रावण : काम तमाम ? तुम जाओ बहिन । वैद्य से औषधि लो ।

[शूर्पणखा का प्रस्थान ।]

पार्श्व स्वर

सुर नर असुर नाग खग माही । मोरे अनुचर कहँ कोउ नाही ।
खर दूषण मोहि सम बलवंता । तिन्हहि को मारइ बिनु भगवंता ।
सुर रंजन भंजन महि भारा । जौ भगवंत लीन्ह अवतारा ।
तो मै जाइ बैरु हठि करऊँ । प्रभु सर प्रान तजें भव तरऊँ ।

अकम्पन : महाराज रावण की जय हो ।

रावण : अकम्पन तुम ! कहो अकम्पन ।

अकम्पन : महाराज, जिन स्थानों पर राक्षसी राज्य था । लेकिन उन्हे मार

मारा गया। खर और दूषण भी मार डाले गये। मैं प्राण बचाकर आया हूँ।

रावण : कौन है जो मृत्यु को आमंत्रण दे रहा है? कौन दुस्साहसी है? उसे कहीं और ठिकाना नहीं मिलेगा। मैं काल का भी काल हूँ। मैं चाहूँ तो वायु को रोक दूँ। सूर्य को भस्म कर डालूँ अकम्पन।

अकम्पन : महाराज, ये युवक अवध के महाराज दशरथ के पुत्र राम-लक्ष्मण हैं।

रावण : राम'''दशरथ का पुत्र राम। वही जिसने जनक की बेटी से विवाह किया था?

अकम्पन : उसने ही ताड़का, सुबाहु, विराट का भी वध किया था।

रावण : ये राम वहाँ अकेला है, या सेना भी है।

अकम्पन : वह राज्य से निर्वासित है, लेकिन उसके भाई ने जन स्थान के नागरिकों की सेना खड़ी कर दी है।

रावण : और क्या जानते हो तुम अकम्पन?

अकम्पन : महाराज उसके पास परशुराम जी का धनुष है। उन्हें अस्त्र-शस्त्र का पूर्ण ज्ञान है। दिव्य अस्त्रों का प्रयोग भी जानते हैं। जैसा राम है वैसा ही लक्ष्मण है। इन्होंने गाँव-गाँव में राक्षसों को घेरने के लिए प्रेरित किया।

रावण : मैं उनका वध करने जाऊँगा।

अकम्पन : महाराज, असंभव है।

रावण : असंभव। राक्षस राज्य के शब्द कोष में असंभव शब्द है ही नहीं।

अकम्पन : क्षमा करें लंकेश। मेरी समझ में जन स्थान में जाकर उन्हें जीतना संभव नहीं है।

रावण : फिर मौन रह जायें क्या?

अकम्पन : नहीं महाराज। उनके साथ श्रेष्ठ सुन्दरी है। यदि किसी तरह उसका हरण कर लिया जाय तो?

रावण : तो।

अकम्पन : ऐसी सुन्दर स्त्री को खोकर राम प्राण त्याग देगा। वह सुन्दरी लंका की पटरानी के योग्य है।

रावण : पटरानी के योग्य ''? क्या वह मंदोदरी से'''

अकम्पन : हाँ महाराज।

रावण : ठीक है। मैं जाता हूँ। (प्रस्थान।)

[मार्ग में मारीच।]

मारीच : इतने व्यथित और उतावले क्यों हो राक्षस राज?

रावण : तात, दशरथ का पुत्र राम जन स्थान में आ गया है। उसने हमारे सुरक्षित क्षेत्र पर अधिकार कर लिया है। खर दूषण को मार

डाला। बहिन की नाक काट ली। मैं बदला लेने के लिए उसकी स्त्री का हरण करने जा रहा हूँ।

मारीच निशाचर शिरोमणि। ऐसा कौन शत्रु है जिसने मित्र बनकर ऐसा परामर्श दिया? कौन है जिसने राम की पत्नी का हरण करने को कहा? निश्चय ही वह राक्षसो का और विशेषकर राक्षस जाति का सम्मान महाराज रावण को नीचा दिखाना चाहता है। यह खोटी सलाह है। ये वही राम है जिसने मुझे यहाँ फेंक दिया था। राक्षसराज, राम को वन मे अपनी स्त्री के साथ घूमने दो। तुम अपनी सुंदर स्त्रियो के साथ रमण करो। जाओ लकेश, वापस जाओ।

[रावण वापस लौटता है।]

शूर्पणखा वापस लौट आये महाराज। राम से भय लगता है क्या?

रावण बहिन शूर्पणखा! रावण और भय।

शूर्पणखा . जो राजा भोगी-विलासी स्वेच्छाचारी होकर प्रजा के अधिकारों की रक्षा नही कर सकता है, वह अधिक दिन टिकता नही है। जिस राजा की असावधानी से राज्य का भू-भाग दूसरे के अधिकार में चला गया हो, उसे पुनः अपने राज्य में नही लाता। वह राजा समुद्र में डूबे हुए पर्वत के समान होता है। जन स्थान से तुम्हें गुप्तचर भी नही थे। जिन राजाओ के गुप्तचर, कोप और नीति नही होती है, वे अधिक दिन तक नही टिकते है।

रावण . बहिन।

शूर्पणखा . भैया, जो राजा कर्त्तव्य के क्षण भयभीत हो जाता है, वह शीघ्र ही राज्य से हाथ धो बैठता है। तुम राजमद, भोग में डूबे हुए हो। इतनी बड़ी घटना के पश्चात भी तुम्हे भनक नही पड़ी। तुम्हारी बुद्धि निश्चय ही कम है। इसका परिणाम यह होगा कि धीरे-धीरे यह राज्य छिन जायेगा और तुम विपत्ति मे पड़ जाओगे।... सीता जैसी सुन्दर मैने नही देखी। उसे अपनी भार्या बनाकर सुख भोगो। भैया यदि तुम राक्षस राज हो, यदि तुम्हे अपना राज्य सुरक्षित रखने की लालसा है, यदि तुम विश्व सुन्दरी के भोग की कामना रखते हो, यदि तुम साहसी हो और राम को जीतना चाहते हो तो अपना दाहिना पैर आगे बढाओ।

[रावण आगे बढ़ता हुआ चलता है। पुनः मारीच के पास। मारीच पूजा करता हुआ।]

रावण . मामा मारीच, प्रणाम।

मारीच : वत्स, तुम वापस लौट आए? क्या तुम्हारा विचार बदल गया?

रावण : राम को यो ही छोड़ देना उचित नही लगता है। दण्डकारण्य और

जनस्थान में मेरे आदेश पर राक्षस रहते हैं। राम ने दण्डकारण्य से जन स्थान तक राक्षसों को मारा है। उसने तुम्हारी माँ ताड़का को मारकर, मुझे ही चुनौती दी थी। फिर त्रिशरा, खर और दूषण को मारकर उसने मुझे ललकारा। शूर्पणखा के नाक-कान काटकर उसने मुझे अपमानित किया। राक्षसों का महाराज होकर यह सब कैसे सह लूँ। राम अपराधी है। उसके पिता ने भी उसे घर से निकाल दिया। क्षत्रियों में वह कलंक है। मामा इस क्षण तुम मेरे सहायक बनो।

मारीच : राजन्, अप्रिय होने पर भी हितकारी बात कहने वाला दुर्लभ होता है। क्योंकि लोग सुविधा के लिए चाटुकारिता में लगे रहते हैं। युग भी ऐसा है कि चाटुकार फलते-फूलते हैं और सत्य कहने वाले उपेक्षित किये जाते हैं। मैं तुम्हारा हितैषी हूँ। इसलिए कहता हूँ कि राम साधारण व्यक्ति नहीं है। सीता का हरण करने का विचार मुझे ऐसा लगता है जैसे वह तुम्हारी मृत्यु का कारण तो नहीं है। तुम स्वेच्छाचारी और उच्छृंखल हो, तो कहीं लंका का अंत तो नहीं चाहते ?

रावण : मारीच। मेरे मामा कहने से तुम परामर्शदाता बन गये।

मारीच : मैं कहता हूँ कि तुम विभीषण और कुम्भकरण से भी परामर्श करो। प्रभुता करते समय शक्ति का भी पूर्ण विचार कर लो रावण।

रावण : उसके भाई ने हमारी बहिन के नाक-कान काटकर हमारा अपमान किया है।

मारीच : भले घर की लड़कियाँ अधीरता में तो क्या दोपहर में भी विजन स्थान पर नहीं जाती है। अपरिचित व्यक्ति से प्रेम प्रस्ताव करना चरित्र की दुर्बलता है। वह क्यों गई वहाँ ?

रावण : मंत्री की भूमिका में रहो मारीच। राजा के सामने मधुर उत्तर, हितकर बातें आदर से कहनी चाहिए। पद पर बैठा हर व्यक्ति अपने सम्मान का भूखा होता है।

मारीच : भले ही वह अयोग्य हो ?

रावण : हाँ। अधीनस्थ का काम है कि वह अपने अधिकारी के समक्ष वे बात करे जो उसे सुख दें।

मारीच : स्वेच्छाचारी, कुमार्गी, धूर्त और पाखण्डी को रोकना कर्त्तव्य भी है राजन।

रावण : उसे इस कर्त्तव्य का प्रसाद उपेक्षा और अहित ही मिलेगा।

मारीच : समझ गया। तुम राक्षस कुल के नाश पर तुले हुए हो रावण।

रावण : मारीच। मेरी आज्ञा पर तू स्वर्ण मृग बनकर अपहरण में सहायता

कर अन्यथा तू मेरे हाथों मारा जाएगा ।

मारीच : मरना ही है तो किसी वीर के हाथो मरना ही ठीक है। सुना है कि राम भगवान विष्णु का अवतार है, तो भगवान के हाथों मरना ही उचित है।

पार्श्व स्वर

चौ० : अस जियँ जानि दसानन सगा । चला राम पद प्रेम अभंगा ।
मन अति हरय जनाव न तेही । आतु देखिहउँ परम सनेही ।
तेहि वन निकट दसानन गयऊ । तब मारीच कपट मृग भयऊ ।
सीता परम रुचिर मृग देखा । अंग-अंग सुमनोहर वेषा ।

सीता : आर्यपुत्र, अपने अनुज के साथ आइये । देखो स्वर्ण मृग है ।

लक्ष्मण : स्वर्ण मृग । असंभव । मुझे तो कुछ माया लगती है ।

सीता . आर्यपुत्र, आप इसे ले आइये । हम अयोध्या ले चलेंगे । आप शीघ्रता कीजिये ।

राम लक्ष्मण, तुम सीता के साथ आश्रम पर ही रहना । यह अद्‌भुत मृग अपनी सुदरता के कारण आज मारा जायेगा ।

[राम का दौड़ना । बाण से मारीच का वध ।]

मारीच हा लक्ष्मण । हा सीते । (सामान्य रूप रखकर मरना ।)

राम मारीच । अवश्य ही छल हुआ ।

सीता : देवर, देवर । जाकर देखो, तुम्हारे भाई सकट में है । कहीं उनके प्राण सकट में न हों ।

लक्ष्मण ' किसका साहस है जो उन्हे सकट में डाल सके !

सीता नहीं लक्ष्मण । यह वन भयानक है । यहां राक्षस भी हमारे शत्रु है । तुम जाओ । सहायता करो देवर ।

लक्ष्मण : नही भाभी । भैया की आज्ञा है, मै यहां से जा नही सकता हूँ ।

सीता : तुम्हारे भैया चाहे किसी विपत्ति मे पड़ जायें ?

लक्ष्मण विपत्ति । भैया पर । असंभव है भाभी ।

सीता : बातें न बनाओ लक्ष्मण । तुम क्रूर हो । वे चीख रहे थे और तू यहां खडा है । तू भाई है या शत्रु ?

लक्ष्मण : मैं भाई हूँ ।

सीता : नही । अब तक तू यहीं खडा है, निश्चय ही तू अब छिपा शत्रु हुआ । कही तू भरत का पक्षधर तो नही ? तू क्या चाहता है कि वे मार दिये जाएँ और तू मुझे अपनी…

लक्ष्मण : भाभी ? इतने अपशब्द का प्रयोग ?

सीता : मुझे तो सदेह है कि तू देवर भी है या नहीं । पापी याद रख यदि तू नही गया तो मैं प्राण दे दूँगी ।

लक्ष्मण : आपने कटु शब्द कह लिये । अब प्राण देने की धमकी दे रही हो ।

मैंने नही सोचा था कि जीवन में ऐसा दिन भी आयेगा ? मुझ पर संदेह किया आपने ? देवता आपकी रक्षा करें।

[प्रस्थान। रावण का प्रवेश।]

रावण · देवि। ब्राह्मण को अन्न दो।

सीता · (चटाई फैलाकर) आसन ग्रहण करो ब्राह्मण।

[रावण बैठ जाता है।]

रावण . कौन हो तुम ?

सीता : महाराज जनक की पुत्री सीता हूँ। श्री राम मेरे पति हैं। वे मृगया लेने गये हैं। आप कौन है ब्राह्मण ?

रावण . राक्षस राज रावण हूँ। तुम मेरी पटरानी बनोगी सीता ? यहाँ वन मे क्या है ? वहाँ ऐश्वर्य का भोग करना। पाँच हजार दासियाँ होंगी। मै तुम्हारा हरण करने आया हूँ।

सीता · पापी, तेरा इतना साहस ! तू दूर हो जा !

रावण . मैं तीनो लोकों में तुम्हारा श्रेष्ठ पति हूँ।

[सीता को पकड़ना और ले जाना।]

सीता . हे राम'''हे लक्ष्मण !

पार्श्व स्वर

गीध राज सुनि आरत बानी। रघुकुल तिलक नारि पहिचानी।
सीते पुत्रि करसि जनि त्रासा। करिहउँ जातु धान कर नासा।
धावा क्रोधवंत खग कैसे। छूटइ पबि परबत कहुँ जैसे।
चोचन्हि मारि बिदारेसि देहीं। दंड एक भई मुरुछा तेहीं।
तब सक्रोध निसिचर खिसिआना। सुमिरि राम करि अद्भुत करनी।

[राम-लक्ष्मण दौड़ते हुए मिलते है।]

राम : तुम यहाँ लक्ष्मण। सीता को अकेला छोड़ आये। मेरा कहना भी नही माना। वह मृग निशाचर था।

लक्ष्मण : निशाचर। छल हुआ तात।

राम : दौड़ो लक्ष्मण ! अनर्थ न हो जाए।

[पंचवटी पर आकर।]

राम : जानकी। सीते। जनक नन्दिनीऽऽ।

लक्ष्मण : भाभी'''

पार्श्व स्वर

लछिमन समुझाए बहु भाँती। पूछत चले लता तरु पाती।
आगे परा गीध पति देखा। सुमिरत राम चरन जिन्ह रेखा।
तब कह गीध बचन धरि धीरा। सुनहु राम भंजन भव भीरा।
नाथ दसानन यह गति कीन्ही। तेहि खल जनक सुता हर लीन्हीं।

लै दच्छिन दिसि गयउ गोसाईं। बिलपति अति कुम्हरी की नाईं।
दरस लागि प्रभु राखेऊ प्राना। चलन चहत अब कृपा निधाना।

राम सीता हरन तात जनि, कहहु पिता सन जाइ।
जौ मैं राम त कुल सहित, कहहिं दसानन आइ॥

पार्श्व स्वर

पुनि सीतहिं खोजत द्वौ भाई। चले बिलोकत बन बहु साई।
सबरी देखि राम गृह आए। मुनि के बचन समुझि जियँ भाए।

राम : लक्ष्मण यह आश्रम उसी देवी का है जो भील परिवार में उत्पन्न हुई थी। इन्होने विवाह मे पशु-पक्षियो का वध कर मास भोजन की परंपरा का विरोध करते हुए विवाह ही नही किया था। ये आश्रम शबरी देवी का है।

लक्ष्मण : ऐसे घने जंगल मे, जहाँ कवध का भय व्याप्त था?

राम : यह भील कन्या है, इसे यही समझाया गया कि तू अछूत है। इसलिए ब्राह्मणों, मुनियों से दूर रहना।

लक्ष्मण . ऐसा क्यों?

राम : यही एक रास्ता है किसी समाज, धर्म और सस्कृति को खडित करने का।

लक्ष्मण : कोई मुनि समझाने नही आया भैया?

राम ' मतंग मुनि ने समझाया कि तुम परम पावन हो और इन्हे शिष्या बनाया।

शबरी : (भाव विह्वल होकर राम के पाँवों में गिर जाती है।)

[राम उठाते हैं।]

राम : शबरी देवी। मैं तुम्हारे लिए पुत्रवत हूँ।

शबरी : नही प्रभु। मुझ अछूत के घर आप आए, यह काम युग का कोई नायक ही करता है। मेरे गुरुदेव तो भविष्य द्रष्टा है। उन्होंने कहा था कि शबरी, तेरे घर एक दिन श्री राम आयेंगे? मैं कहती हूँ कि मेरे घर राम आए हैं—श्री राम। मुझ अछूत को उठाने। सुन लो, सब मेरे घर भगवान आये हैं।

[मुनियों का समूह आता है। क्रोध कर लौटने लगता है।]

लक्ष्मण : ठहरो, ब्राह्मण एवं मुनिजनो। आपने महाराज श्री राम की उपस्थिति मे शबरी देवी का अपमान कर दण्डनीय कृत्य किया है।

मुनि : हमने ठीक किया है। उच्च कुल में उत्पन्न होकर भील स्त्री के घर जाना अधर्म है।

राम : लगता है आपने धर्म को पढ़ा है, समझा नही है। धर्म का दूसरा नाम मानवता है। धर्म मे छुआछूत, ऊँच-नीच, हरिजन सवर्ण कहाँ है? आत्मा एक है तो शरीर को अछूत क्यों मानते हो? धर्म का

उपदेश करने, संतों का भेष धारण करने से कोई ज्ञाता नहीं हो जाता है। अति शिष्ट और विनम्र बहुधा दुराचारी हो जाते हैं। यदि आप पुण्यात्मा है तो विचार करो कि क्या आपने एक तपस्विनी को अपमानित नहीं किया ?

मुनि : माँ। अम्बे। हम सचमुच क्षमा चाहते हैं। इसलिए नहीं कि हमें धनुष-बाण का भय है अपितु इसलिए कि हमारी समझ में हमने भूल की है।

[मुनि प्रस्थान।]

राम : लक्ष्मण हमें भूख लगी है। (शबरी से) शबरी देवी के आश्रम पर कुछ है क्या ?

शबरी : अभी लाई। (बेर लाती है।)

राम : हमने इतने वर्षों में इतने मीठे बेर नहीं खाए देवि। लक्ष्मण आओ। (बेर खा लो।)

शबरी : प्रभु, मैं नीच जाति की स्त्री हूँ और आपने मुझे अपना लिया। धन्य हो गई मैं।

राम : देवि, धन्य हुआ मैं। पुत्र हूँ मैं। मैं धन्य हुआ। मैं दरश पाया, आपका। भक्ति सर्वश्रेष्ठ होती है देवि। संतों का संग, प्रेम-भाव गुरुओं की सेवा, कपट-त्याग, मंत्रों जाप में निष्ठा, संतोष आदि भक्ति के प्रमुख आधार है।

शबरी : प्रभु, मेरे हाथ से बेर खाइये।

पाँच

सूत्रधार : मैं मंदाकिनी की तरह 'पम्पा' हूँ। मैंने देखा है कि भीलनी ने श्री राम-लक्ष्मण को यहाँ पहुँचने का मार्ग बताया है। मेरे तट पर पम्पापुर और ऋष्यमूक पर्वत है। किष्किंधा में रावण के मित्र बालि का शासन है। बालि ने अपने भाई सुग्रीव से भवन, पत्नी सब कुछ छीन लिया है। भयभीत सुग्रीव के साथ बुरे दिनों में चार मित्र ही साथी है—रीक्षराज जामवंत, महावीर हनुमान, नल और नील। इस ऋष्यमूक पर्वत पर इनकी निर्वासित सरकार का मुख्यालय है। धन, सेना और साधनहीन सुग्रीव यहाँ छिपे रहते है। भगवान श्री राम सीता को खोजते हुए यहाँ तक आए। सीता न मिलने से बहुत दुखी है। लक्ष्मण ने सांत्वना दी और

कहा—'भैया उत्साह बनाए रखो। निराश न हो। रावण को दण्ड देकर ही लौटेंगे।' उधर पर्वत पर सुग्रीव चिंतित होकर हनुमान से बोले—

सुग्रीव : हनुमान। जामवंत। शीघ्रता से यहाँ आइए। (दौड़कर निकट पहुँचते हैं।) देखो, वे दो धनुर्धर, इधर ही आ रहे हैं। कहाँ से आए होंगे? उत्तर दिशा में कवन्ध रहता है। वहाँ से आना असंभव है। किष्किन्धा में मनुष्य रहते नहीं हैं…तो फिर…ये यहाँ कहाँ से आ गए?

जामवंत : मायावी हो सकते हैं महाराज। केवल वानर और राक्षस ही मायावी विद्या में दक्ष हैं। हो सकता है कि ये वालि के मित्र हों। राक्षसों के प्रदेश में घूम रहे हैं, अतः असाधारण शूरवीर होंगे ही।

सुग्रीव : हनुमान। तुम ब्रह्मचारी बनकर जाओ। पता करो ये कौन है? यदि ये वालि के मित्र भी हैं तो वालि धार्मिक है, इसलिए ब्रह्मचारियों और ब्राह्मणों को कोई भय नहीं है।

हनुमान : वानर श्रेष्ठ। आप वालि से अधिक ही भयभीत हैं। यहाँ वालि या उसके मित्रों का आना असम्भव है। आप महाराज भी हैं, इसलिए चचल बुद्धि से विचार करना या भाषण करना उचित नहीं है। आप बुद्धि और विज्ञान का सहारा लेकर इनके हाव-भावों का मूल्यांकन कीजिए। जो राजा बुद्धि-बल का आश्रय नहीं लेता है, वह सम्पूर्ण प्रजा पर शासन नहीं कर पाता।

सुग्रीव : ठीक कहते हो हनुमान। किन्तु संदेह को गुप्तचर द्वारा दूर करा लेना दूरदर्शिता होती है। तुम जाओ और पता करो कि इनके हृदय में हमारे प्रति दुर्भावना तो नहीं है।

हनुमान : बहुत अच्छा। मेरे संकेत की प्रतीक्षा करना।

पार्श्व स्वर

आगे चले बहुरि रघुराया। ऋष्यमूक पर्वत निअराया।
विप्र रूप धरि कपि तहँ गयऊ। माथ नाइ पूछत अस भयऊ।

हनुमान : आप दोनों का मंगल हो युवको।

पार्श्व स्वर

को तुम स्यामल गौर सरीरा। छत्री रूप फिरहु वन वीरा।
कठिन भूमि कोमल पदगामी। कवन हेतु विचरहु वन स्वामी।
की तुम्ह तीन देव महँ कोऊ। नर नारायण की तुम्ह दोऊ।

हनुमान : हे तेजस्वी जनो, वन में क्यों विचर रहे हो? ये धनुष कहते है कि आप छत्री है? तपस्वी और छत्री? कहो आप नर-नारायण तो नहीं? लेकिन खड्ग और धनुष क्यों? कृपा कर मुझ ब्रह्मचारी ब्राह्मण को अपना परिचय दीजिए।

राम : लक्ष्मण। अल्पायु में ही ब्राह्मण देवता बहुत विद्वान हैं। निर्भय और विरक्त भी हैं। हम तपस्वी हैं—सो हमें प्रणाम किया है। हे ब्राह्मण, हम स्वर्गीय महाराज दशरथ के पुत्र राम-लक्ष्मण हैं। मैं पिता के वचन मानकर वन आया हूँ। अनुज मेरे साथ आया है। मेरी भार्या का हरण रावण कर ले गया है। (दुखित मन।)

लक्ष्मण हम उस दुष्ट की खोज करते हुए यहाँ तक आ पहुँचे हैं। कबन्ध ने प्राण त्यागने से पूर्व हमें यहाँ का मार्ग बताया था फिर शबरी ने…

राम : हम महाराज सुग्रीव को खोजते आए हैं। इस संकट की घड़ी में वे मेरी सहायता कर सकते हैं। क्या तुम उन तक पहुँचा सकते हो?

हनुमान : प्रभु। (चरण में गिरना।) प्रभु, आपके दर्शन हो गए आज। मैं वानर मंद बुद्धि हूँ। मैं आपको नहीं पहचान पाया, लेकिन प्रभु आप अपने सेवक को नहीं पहचान पाए। हमें आपकी प्रतीक्षा थी प्रभु।

लक्ष्मण : वानर ! तुम हनुमान हो ?

राम : हाँ। महाराज सुग्रीव के महामंत्री है आप।…हनुमान मैं तुम्हें कैसे पहचानता ?

हनुमान : आप अवतार-रूप, भक्त को नहीं पहचान सके…मैं तो आपके भरोसे हूँ प्रभु।

राम : हनुमान…मैं दशरथ पुत्र राम हूँ। तुम ब्राह्मण रूप में आए थे, तो कैसे पहचानता ? मुझे कपट प्रिय नहीं है, सो नहीं पहचान सका।

लक्ष्मण : हनुमान जी, हम महाराज सुग्रीव से शीघ्र ही मिलना चाहते हैं। अब वे ही हमारी सहायता कर सकते हैं। हनुमान…जिन महाराज श्री राम ने अपने बल से ताडका, सुबाहु, विराध, खर-दूषण, त्रिसिरा, कबन्ध को मार दिया। अहिल्या देवी और शबरी देवी का सम्मान कर उन्हें सामाजिक प्रतिष्ठा दिलाई। अपना धन, राज्य त्याग दिया—वही श्रेष्ठ श्री राम और मैं इनका अनुज लक्ष्मण आज महाराज सुग्रीव की शरण में हैं। यदि हमारी सहायता आपने की तो अवध से अटूट मैत्री भी स्थापित हो जाएगी।

हनुमान : हाँ प्रभु। महाराज सुग्रीव भी निर्वासित है। उनकी स्त्री का हरण उनके भाई बालि ने किया है। बालि राक्षसों का मित्र है। अत. मित्रता उपयोगी रहेगी। मेरे साथ चलिए। (सुग्रीव के पास पहुँचना।)

पार्श्व स्वर

तब हनुमंत उभय दिसि की सब कथा सुनाय।
पावक साखी देइ कर जोरी प्रीति दृढ़ाय॥

सुग्रीव : आप क्षोभ न करें। मिथिला कुमारी अवश्य ही मिलेंगी। आपने मैत्री कर हमारा सत्कार किया है। क्योंकि आप मनुष्य है और हम वानर। इतिहास में यह मैत्री अमर रहेगी।

राम : मैं भी आश्वस्त करता हूँ मित्र, तुम्हारी पत्नी का अपहरण करने वाले का वध मै करूँगा। मुझे हनुमान जी ने सब कुछ बता दिया है।

सुग्रीव . एक बार आकाश मार्ग से एक स्त्री ने विलाप करते हुए वस्त्र और आभूपण गिराये थे। आप उन्हें देखिए। संभव है कि वे वस्त्र जानकी देवी के हो। क्योंकि उस स्त्री का हरण भी रावण ने ही किया था।

राम लक्ष्मण देखो! ये आभूपण तुम्हारी भाभी के हैं। महाराज सुग्रीव आप मुझे बताइये कि ये राक्षस किस ओर गया है। वही मेरा शत्रु है।

जामवंत : श्री राम। राक्षस पापात्मा है। उनके अनेक गुप्त स्थान हैं। वह कहाँ गया होगा, कहना कठिन है।

सुग्रीव : व्याकुल न हो प्रभु। हम खोज कराएँगे। मुझे भी पत्नी का वियोग है लेकिन मैं धैर्य नही खोता हूँ।

राम महाराज सुग्रीव। जो व्यक्ति अपने मित्र के दुख से दुखी न होता हो और जो संकट मे बगलें झांकता हो, वह मित्र नही होता। अपने कार्य की सिद्धि के लिए प्रिय बोलना, शिष्टता प्रदर्शित करना या आत्मीयता जताने वाला पापात्मा होता है। मैं आपका मित्र हूँ महाराज सुग्रीव। उठिए और बालि को चुनौती दीजिए। उसे द्वन्द्व युद्ध के लिए ललकारिये। क्योंकि प्रजा अथवा सेना से आपकी कोई शत्रुता नही है। चलो, आगे चलो। मै और लक्ष्मण पीछे हैं।

सुग्रीव : अच्छा। आज मुझमे साहस है। (प्रस्थान) लेकिन...

लक्ष्मण : क्या कोई सन्देह है महाराज?

सुग्रीव : वालि बहुत बलशाली है सौमित्र। उसने दुदुंभि को उठाकर पटक दिया था।

लक्ष्मण : दुदुंभि को कंकाल भैया ने पाँव की ठोकर से दूर फेंक दिया था महाराज। आपके विश्वास के लिए वृक्ष काट कर गिरा दिए थे। अब आप युद्ध भूमि मे विश्वास कर लीजिए। भैया आश्वासन कभी नही देते है और न ही राजनैतिक दुराव रखते है। आप चलिए, चुनौती दीजिए।

[प्रस्थान।]

सुग्रीव : वाली...ए वाली। कायर। बाहर निकल। साहस है तो मुझसे

द्वंद्व युद्ध कर।

वालि : सुग्रीव! मुझे ललकारने का साहस किया। आज तेरा वध करूँगा।

तारा : स्वामी उग्र होकर निर्णय नही कीजिए।

वालि : अब तक उग्रता ही नहीं दिखाई महारानी। आज इस काँटे को साफ कर देता हूँ।

[द्वंद्व युद्ध। सुग्रीव का परास्त होना।]

सुग्रीव : प्रभु, वालि बहुत बलवान है। आपके विश्वास पर मैं लड़ गया लेकिन आप देखते ही रहे।

राम : मैं सोच रहा था कि दोनों भाई हो। यदि बैर निकल जाए और तुम दोनो एक हो जाओ, तो ठीक है। फिर तुम दोनो एक रूप हो। इसलिए सोचता था कि धोखा न हो जाए। लक्ष्मण! सुग्रीव को अलंकृत करो। (माला पहनाना।)

सुग्रीव : वालि, मैं पुनः युद्ध माँगता हूँ। बाहर निकल।

तारा : अब न जाओ महाराज। सुग्रीव अवश्य ही अकेला नहीं है। उसका कोई सहायक साथ है अन्यथा पुनः युद्ध की माँग न करता।

वालि : आज मैं उसके सहायक को भी मार डालूँगा तारा।

तारा : शत्रु को निर्बल मानना उचित नहीं है नाथ! गुप्तचर ने अंगद को समाचार दिया है कि सुग्रीव ने अवध के दशरथ पुत्र श्री राम से संधि कर ली है। सुग्रीव बहुत चतुर है नाथ! गुप्तचरो ने बताया है कि श्री राम ने कई बलवान राक्षस मारे है। उन्होंने तुम्हारे वध की प्रतिज्ञा ली है। मैं कहती हूँ कि सुग्रीव को ले आओ और उसे युवराज बना दो। युवराज पद मिलने से राजनैतिक संकट समाप्त हो जाएगा।

वालि : किसी का भय न दिखाओ। मेरे शौर्य का अपमान न करो तारा। अन्तःपुर में चली जाओ। श्री राम धर्मज्ञ है। यदि वे आये होंगे तो मैं यहाँ ले आऊँगा। यदि मैं मारा गया तो यह शंका समाप्त हो जायेगी कि वाली मारा नही जा सकता। सुग्रीव का घमण्ड चूर होना चाहिए। मारूँगा नहीं उसे। भाई है इसलिए नही मारूँगा लेकिन ऐसा कर दूँगा कि फिर कभी न लौट सके।

[युद्ध। राम का बाण प्रहार। वालि का घायल होना।]

वालि : श्री राम! आप राजपुत्र है, कुलीन है। आपका यश सर्वत्र है। आपने मुझे उस क्षण मारा जब मैं युद्ध मे था। मैंने सुना था कि आप धर्मात्मा है। दृढ़ प्रतिज्ञ है। श्री राम, इन्द्रिय निग्रह, मन का संयम, क्षमा, धर्म, धैर्य, सत्य, पराक्रम और अपराधियों को दण्ड

देना राजा का कार्य होता है। आप रघुकुल मे जन्मे है और संन्यासी वेश में हैं। केवल राजा ही पृथ्वी, सोना और चांदी के लिए युद्ध करते है। नीति, विनय, दण्ड और अनुग्रह राजधर्म होता है लेकिन तुम क्रोधी और मर्यादा से दूर रहने वाले, काम के वशीभूत लगते हो। इसलिए चाहे जहाँ वाण चलाते फिरते हो। स्वेच्छाचारी हो राम। राजा का वध, ब्राह्मण और गौ-हत्या, प्राणियों को खाने वाला, चुगलखोर, लोभी, मित्र हत्यारा, धर्म का ढोंग करने वाला, गुरु पत्नी गामी, नरकगामी होता है नरक-गामी। महाराज दशरथ के यहाँ आप जैसे पुत्र का जन्म कैसे हुआ? मर्यादा ही भग कर दी। मुझे अधर्मपूर्वक मारा है। सुग्रीव की सहायता करनी थी, तो सामने आकर करते। यदि मित्रता करनी थी तो मुझसे करते। मैं लका जाकर रावण का गला घोंट देता। उसे विवश कर देता राम।

राम : तुम्हारी बुद्धि बाल-बुद्धि है। तुम धर्म भी नही जानते। इस धरा पर धर्मवत्सल केवल भरत है भरत। हम उसके अनुगत होकर अपराधियों को दण्ड देते है। क्योंकि भरत के राज्य मे अपराधी स्वतंत्र नही रहते हैं।

बालि : अच्छा? अपराधियों को दण्ड देते हो? मेरा अपराध क्या था—हे न्यायमूर्ति?

राम : तुम कर्म से निंदित, क्लेशयुक्त, अर्थ, धर्म से अनभिज्ञ हो। तुमने अनुज-वधू को ही अंतःपुर में डाल दिया? जिसमें नीति, विनय, सत्य और पराक्रम होता है, वही राजा के योग्य होता है। भटके हुए बालि, विद्वानो ने तुम्हारी निन्दा की। सनातन धर्म त्यागकर अधर्म किया है। जो लोकाचार से भ्रष्ट होकर, लोक विरुद्ध आचरण करता है, उसे दण्ड दिया जाना चाहिए। तुम्हारे जैसा पाप श्रमण ने किया था, तब मेरे पूर्वज महाराज मान्धाता ने दण्ड दिया था। मेरी निन्दा उचित नहीं है बालि क्योंकि मैं क्षत्रिय हूँ। क्षत्रिय मृगया करते ही हैं—मैंने तुम्हें मृगया का पात्र समझा। मित्रता और प्रतिज्ञा का पालन भी मुझे करना ही है बालि।

बालि : अंगद मेरा इकलौता पुत्र है ये। इसकी रक्षा करना राम। विलाप न करो तारा। मैंने कहा था कि यदि श्री राम हैं तो··· इनके चरण पकड लो तारा! ये वही श्रीराम हैं—वही··· श्री राम···राम।

[तारा का विलाप।]

हनुमान : देवि! आप विलाप न करो। यह जीवन पानी के बुलबुले के समान ही होता है। तुम्हें अंगद का विचार करना चाहिए। आप विदुषी

है, अतः जानती हो कि मृत्यु का कोई निश्चित समय नहीं होता। क्या पता कब आ जाए। वानर-राज ने अपनी आयु पूर्ण कर ली। अब आप शोक त्यागकर अन्त्येष्टि कर्म करने दीजिए। अंगद का अभिषेक भी किया जाना है। क्योंकि महाराज सुग्रीव युवराज अंगद के पिता तुल्य हैं।

तारा : मैं पति का अनुगमन करूँगी हनुमान। पति बिना स्त्री का जीवन क्या है? कुछ नहीं।

सुग्रीव : नहीं! (राम) आपकी प्रतिज्ञा पूर्ण हो गई लेकिन मैं निंदनीय हो गया प्रभु। मैंने लोक निन्दित पाप-कर्म किया है। कुल की हत्या करने वाला अपराधी हूँ मैं। पत्नी और राज्य के लिए मैंने'''

तारा : यदि राम हो तो इसी बाण से मेरे प्राण भी ले लो। मैं जीवित नहीं रहना चाहती हूँ।

राम : शोक का त्याग करो देवि। विधाता ही सब कुछ निर्धारित करता है। मैं न वध कर्ता हूँ और न वध कर सकता हूँ। मैं निमित्त मात्र हूँ। हम सब उसके आधीन हैं। उठो देवि! अंगद को युवराज पद पर आसीन करो। पति की मृत्यु पर प्राण त्यागने का विचार स्त्री जाति के लिए उचित नहीं है। पति के साथ मृत्यु का वरण करना मानसिक अस्थिरता तथा लोकनिन्दनीय है। स्त्री वही महान और श्रेष्ठ होती है जो अपने पति के श्रेष्ठ कार्यों को पूर्ण करने में जीवन अर्पित कर दे। स्त्री को यह अधिकार है कि वह पुनः विवाह कर ले यदि न करे और उसे अपना जीवन पति बिना दूभर लगे तो मन को स्थिर कर समाज की सेवा में व्यस्त हो जाना चाहिए। आप अब अंगद की ओर देखिए और विदुषी के नाते राज्य संचालन में परामर्श देकर प्रजा की सेवा कीजिए। जन-सेवा से श्रेष्ठ कोई धर्म नहीं होता है।

सूत्रधार : इस तरह अंगद युवराज हो गए। किष्किन्धा की राजनैतिक स्थिति में परिवर्तन हुआ। तारा ने राजमाता का पद भार सँभाल-कर अपना जीवन जनसेवा में अर्पित किया और रुमा अन्तःपुर की महारानी बनाई गई। तारा अन्तःपुर में अंगद की माता थी। इस तरह महाराज सुग्रीव का राज्य स्थापित हो गया।
वर्षाकाल के चार मास तक श्रीराम वन में रहे और लक्ष्मण को ज्ञान तथा भक्ति योग समझाते रहे। उधर सुग्रीव रुमा के साथ अन्तःपुर में राग-रंग में डूब गए। इस बीच हनुमान ने सुग्रीव से परामर्श कर दूर-दूर में सभी वानर पुरुषों को पन्द्रह दिवस में उपस्थित होने की सूचना भेज दी। उधर श्री राम विचार कर रहे हैं।

पार्श्व स्वर

वरषा गत निर्मल रितु आई। सुधि न तात सीता के पाई।
सुग्रीवहु सुधि मोरि बिसारी। पावा राज कोस पुर नारी।
जेंहि सायक मारा मैं बाली। तेंहि सर हतौं मूढ कह काली।
लछिमन क्रोधवंत प्रभु जाना। धनुष चढाइ गहे कर बाना।
लक्ष्मण जा पहुँचे किष्किन्धा। कैसे कपि भूला अनुबंधा।
रक्षा नगर भट वानर करहीं। जिन्हहिं देखि राक्षस तक डरहीं।
नीचे धरि आयुध भए ठाढे। मारग रोकि भये सब आडे।
आय वन्दना अंगद कीन्हीं। भेजि दूत खबर सब दीन्ही।
कपि कंपित तारा सन बोला। अब वानर सिंघासन डोला।
सुदर स्वरूप तारादेवी। करहु धीर बस रूपहिं देखी।
कर शृंगार गई पुन्हि तहवाँ। वीर पुरुष लक्ष्मण थे जहवाँ।

तारा : स्वागत है सौमित्र। श्रीराम कैसे हैं? उन्हें अंगद का स्मरण है ना? कहीं ऐसा तो नहीं कि श्री राम को हमारी संधि पर विश्वास न रहा हो? आइए। बैठिए, कौन-सा पेय ग्रहण कर, विश्राम करेंगे।

लक्ष्मण : धन्यवाद माता। श्री राम आप सबका स्मरण करते हैं। लेकिन चार माह के पश्चात भी वानर-राज द्वारा कोई संपर्क न करना, संदेह प्रकट करता है। मैं यही कहने आया हूँ कि अभी हमारे धनुष शक्तिशाली हैं। हम न लाचार है और न विवश ही।

तारा : सौमित्र। वानर राज ने संपर्क भले ही न किया हो लेकिन संधि का पालन अवश्य किया है। महामंत्री हनुमान को निर्देश भी दिए गए हैं। वैसे आपको हमारे अपराध क्षमा कर देना चाहिए। वानर जाति चंचल और मन्द बुद्धि होती है। इसी कारण मैं भी इस रूप मे उपस्थित हो गई। आप ठहरिए। (अंदर जाना और सुग्रीव को लेकर आना।) वानर राज भय त्यागो। देखो। ये पूर्ण पुरुष सौमित्र। संस्कार युक्त एक यौवन देखो महाराज। इन्होंने मेरे रूप मे विलास नही श्रद्धा देखी है श्रद्धा। सौमित्र, मैंने देश-हित मे शृंगार कर लिया था। मेरा पाप क्षम्य है या नही?

लक्ष्मण : जब कोई व्यक्ति देशहित के लिए धर्म भी त्याग देता है तो वह अधर्मी नही होता है, तब तुम्हारा कार्य पाप कैसे हो सकता है। वैसे किसी भी राजा को अपने राज्य की रक्षा के लिए सुरा-सुन्दरी का प्रयोग नही करना चाहिए।

सुग्रीव : क्षमा करें, सौमित्र! मुझसे भूल हो गई। उपस्थित होने में भी विलंब हुआ है। जहाँ तक संधि का प्रश्न है, यह अटूट है।

हनुमान : हमारे प्रमुख यूथपति आ चुके है महाराज। आपके आदेश की

प्रतीक्षा है। आप जब चाहे तब खोज कार्य आरंभ कर सकते हैं।

सुग्रीव : हम श्री राम से मंत्रणा कर आदेश प्रसारित करेंगे। आओ सौमित्र। श्री राम से भेंट करने चलें।

तारा : सौमित्र !

लक्ष्मण : देवि।

तारा : धरती पर दो संस्कृतियाँ विद्यमान हैं। एक आर्य संस्कृति और दूसरी राक्षस संस्कृति। आर्य संस्कृति मे देश, धर्म, समाज परिवार और व्यक्ति की मर्यादायें, संस्कार, भावनायें और संवेदना हैं। चार पुरुषार्थ हैं। जीवन की एक व्यवस्था है। राक्षस संस्कृति में स्वेच्छाचारिता, उच्छृंखलता, स्वार्थ, भोग, सुविधा, अर्थ-समृद्धि होने से धर्म और संस्कारों का लोप है। संस्कारों के कारण हमारा देश श्रेष्ठ है। इसलिए भौतिकवाद और भोगवाद मे आकण्ठ डूबे राक्षस संस्कृति के लोग हमारी ओर आकर्षित हो रहे है। मानवता ही मनुष्य का आदर्श स्वरूप है और भोग का उच्छृंखलवाद ही मनुष्य के असंतोष का कारण है।

सौमित्र। हमारी संस्कृति मे भी ऐसा वर्ग है जो मांस, मदिरा और भोग तथा निजी सुख के लिए लालायित है। ऐसे क्षण तुम मानव संस्कृति के प्रतीक हो। तुम्हारे जीवन में उर्मिला के अतिरिक्त शेष स्त्रियाँ माँ है, भाभी हैं। तुम्हारी यही भावना युवकों को प्रेरित करती रहे—मेरा आशीर्वाद है ये।

लक्ष्मण : हमें आशीर्वाद दो देवि कि हम अपने उद्देश्य में सफल हों।

तारा : यशस्वी भवः सौमित्र।

पार्श्व स्वर

हरषि चले सुग्रीव तब अंगादि कपि साथ,
रामानुज आगे करि आये जहँ रघुनाथ।

नाइ चरन सिरु कह कर जोरी। नाथ मोहि कछु नाहिन खोरी।
अतिसय प्रबल देव तब माया। छूटइ राम करहु जौं दाया।
तब रघुपति बोले मुसकाई। तुम्ह प्रिय मोहि भरत जिमि भाई।
अब सोइ जतनु करहु मन लाई। जेहि विधि सीता कै सुधि पाई।

हनुमान : महाराज, सभी यूथपति आ चुके है। साम्राज्ञी तारा देवी और महारानी रुमा के पिता, रीछपति जामवंत कमलवर्ण पिता श्री केसरी जी लंगूर जाति के महाराज गवाक्ष, भयंकर वेग से संहार करने वाली धूम्र जी, रीछ सेना, वानरपति पनम, नील, गवय, महाराज दरीमुख, महाबली मैन्द, द्विवद, यूथपति गन्धमान, महाराज रुमण। युवराज अंगद, कांतिमान तार, वीर इन्द्रभानु।

लाल रंग के दुर्मुख नल, श्रीमान दधिमुख पधार चुके है।
इनके अतिरिक्त इच्छानुसार रूप धारण करने वाली सेना लेकर शरभ, कुमुद, वान्हि, रह आए है। मेरे साथ श्वेतरूप धारी पराक्रमी वीर है।

सुग्रीव : राजाओ, यूथपतियो। आपको ज्ञात है कि हमने श्री राम से संधि की है। यह संधि महारानी रुमा के पश्चात सीता देवी की खोज के लिए वचनबद्ध है। यह सत्य है कि सीता जी का हरण राक्षस राज रावण ने किया है। रावण की शक्ति को चुनौती देने वाला हमारे अतिरिक्त कोई नही है। उसकी शक्ति अपार है। आर्यावर्त के सभी सम्राट, रावण से भयभीत हैं। स्वच्छन्द जीवन की संस्कृति से हमारी संस्कृति भी आहत होती जा रही है। इस संकट से सुविधाभोगी राजाओं ने पीठ फेर ली है। बुद्धिजीवियों, चिन्तकों का समाज से सम्बन्ध नही रहा है। इसलिए उनकी रचनाएँ आंदोलित नही करती है। ऋषियों मे एक मात्र ब्रह्मऋषि विश्वामित्र ही हैं जिन्होने अपने अनुसंधान, प्रयोग और सिद्धियों का उपयोग राष्ट्र, संस्कृति और समाज की रक्षा के लिए अर्पित किया।
रावण ने हमारी संस्कृति पर आक्रमण किया है। उसे चुनौती कौन देगा? स्वर्गीय महाराज वालि ने रावण पर अंकुश लगाया था। अब उस रावण पर हमें स्थाई अंकुश लगाना है। इस कार्य मे कौशलपुर के श्री राम और लक्ष्मण हमारे साथ है। हम राक्षसों से निर्णायक युद्ध करना चाहेंगे। यह युद्ध मात्र महारानी सीता के लिए नही है अपितु संस्कृति की रक्षा के लिए भी है।
आप सब श्री राम के प्रताप और प्रभाव से परिचित है। आप 'श्री राम' जो हमारे रक्षक है, प्रभु है।

जामवंत . महाराज, हमने सामाजिक मूल्यों और न्याय की स्थापना तथा संस्कृति की रक्षा के लिए निर्वासन काल मे भी आपकी सहायता की है। राक्षसों को रोकना आवश्यक है। हम श्री राम का प्रताप भी जानते है। इन्होने राक्षसों पर पहला प्रहार का रावण को चुनौती दी है, इसलिए रावण प्रतिशोध लेना चाहता है। अपहरण उसका ही एक भाग है। श्री राम ने उस वर्ग को अपने गले लगाकर ऊपर उठाया है जो शोषित, पीडित, उपेक्षित होकर वनो मे निवास करता है। ये कार्य कोई युगपुरुष ही कर सकता है। श्री राम हमारे भगवान है। इसलिए हम इस कार्य मे वीरगति पाने के लिए भी तैयार है।

राम : महाराज सुग्रीव और यूथपतियो। हम आपके आभारी हैं। आप

सब उत्साह से भरे हैं और रावण के नाश का संकल्प लिये हुए हैं। मुझे विश्वास हो रहा है कि आपकी सहायता से मैं जानकी को पा सकूँगा। मैं आप सबका आभारी हूँ।

सुग्रीव : खोज के कार्य का विभाजन इस प्रकार है। जटायु और हमारे पास उपलब्ध वस्त्रों से एक संकेत है कि रावण दक्षिण दिशा की ओर गया है। इसलिए उस दिशा में खोज का नेतृत्व युवराज अंगद करेंगे। यह हो सकता है कि रावण चौकन्ना हो और सतर्क हो जाए, इसलिए जामवंत, नल, नील और हनुमान उनके साथ दक्षिण की ओर बढ़ें। यूथपति विनत पूर्व दिशा में भागीरथी, गंगा, सरयू, कौशिकी, कालिन्दी, सरस्वती, सिंधु, शोणभद्र, कालमही नदियों के क्षेत्र ब्रह्माभाल, विदेह, मालव, काशी, कोसल, मगध, पुण्ड्र और अंग देश छान मारें। आवश्यकता हो तो यवद्वीप तक भी पहुँचना चाहिए। आप जावा, सुमात्रा होकर लाल सागर तक जाना, कुछ लोगों को उदयगिरि की पहाड़ियों में भेजना। अंगद, आप दक्षिण दिशा में नर्मदा, गोदावरी, महानदी, कृष्णवेणी, वरदा, अवन्तीपुर, विदर्भ, मत्स्य देश, कलिंग, कौशिक, आन्ध्र, केरल, मलय पर्वत, कावेरी, ताम्रपर्णी, तंजोर, महेन्द्रगिरि होकर सागर तट पहुँचना। समुद्र के बीच में लंकाद्वीप पर रावण की राजधानी है। समुद्र में अंगारका नामक राक्षसी से सावधान रहना, वह उड़ान भरने वाले की छाया पकड़ लेती है। लंकाद्वीप में विशेष सावधान रहना होगा। आगे प्राप्तिक पर्वत को प्रणाम कर वैधक, कुञ्जर, भोगवती नगर जाना। उसके आगे पितृ लोक है, वहाँ न जाना। इसी तरह पश्चिम में मरुभूमि होकर ठण्डे देशों में जाना, मार्ग में सिंधु, सोमगिरि मिलेंगे। समुद्र पार एक सपन्न नगर मिलेगा। लेकिन पाश्चात्य के मोह में न पड़ना। खोज कार्य पूर्ण कर लौटना। याद रखना कि अपने देश से महान और कुछ नहीं है। अपना देश स्वर्ग से महान है। उत्तर में भरत, कुरु, मद्र, काम्बोज, यवन, हिमालय, कैलाश पर्वत, कौंच गिरि, मैनाक, होकर शैलोदा नदी पर पहुँचना। जो दल या यूथपति सीता देवी का समाचार देगा वह किष्किन्धा राज्य में मेरी ही तरह सुख भोगेगा। यह कार्य एक मास में पूर्ण करना है। जो दल निर्धारित अवधि में नहीं लौटा, उसे मृत्यु दण्ड दिया जाएगा।

पार्श्व स्वर

आयसु मागि चरन सिर नाई। चले हरिष सुमिरत रघुराई।
पाछे पवन तनय सिर नावा। जानि काज प्रभु निकट बुलावा।

परसा सीस सरोरुह पानी। करि मुद्रिका दीन्हि जन जानी।
हनुमत जन्म सुफल करि माना। चलेउ हृदय धरि कृपा निधाना।

चले सकल वन खोजत सरिता सर गिरि खोह।
राम काज लय लीना मन बिसरा तन कर छोह॥

गीत

सीता का पता लगायेंगे।
पृथ्वी का पाप मिटायेंगे।
ले सकल्प चले अब अंगद और बली हनुमान।
रावण के प्रति जन विरोध का शुरू हुआ अभियान।
राक्षसवाद मिटायेंगे।
मानवता अपनायेंगे।
भोगवाद के दर्शन का अब बचे न कोई निशान।
मिटी प्रतीक्षा लखन-राम की।
सस्कृति रक्षक गुण ग्राम की।
ऋषियो मुनियो का और न होगा अब वन-वन अपमान।

दीख जाइ उपवन वर सर विगसित बहु कज।
मंदिर एक रुचिर तहँ बैठि नारि तप पुज॥

दूरि ते ताहि सबहिं सिर नावा। पूछे निज वृतात सुनावा।
तेहि सब आपनि कथा सुनाई। मैं अब जाव जहाँ रघुराई।
मूँदहु नयन विवर तजि जाहू। पैहहु सीताहि जनि पछिताहू।
नयन मूँदि पुनि देखहिं बीरा। ठाढे सकल सिंधु के तीरा।
कह अंगद लोचन भरि बारी। दुहुँ प्रकार भइ मृत्यु हमारी।
इहाँ न सुधि सीता की पाई। उहाँ गए मारहिं कपिराई।
अंगद वचन सुनत कपि वीरा। बोलि न सकहिं नयन बह नीरा।

सम्पाति : आजु सबहि कहँ भच्छन करऊ। दिन बहु चले अहार बिनु मरऊ।
कबहु न मिल भरि उदर अहारा। आजु दीन्ह विधि एकहिं बारा।

नल : युवराज, एक नया संकट आ गया। अब क्या होगा युवराज।

अंगद . निर्भय हो नल।""""हनुमान जी, कुछ भी हो गिद्ध जाति मे महाराज जटायु जैसा महान कोई नही है। उनका जीवन धन्य हो गया। महाराज जटायु ने रावण को चुनौती दी और श्री राम के कार्य मे बलिदान कर तीनो लोको मे यश अर्जित कर लिया। उनके बलिदान से जटायु जाति गौरवान्वित हो गई।

सम्पाति : क्या कह रहे हो। मेरा भाई"""बलिदान।

अंगद . आज महाराज जटायु होते तो हमारे उद्देश्य मे सहायता करते। रावण ने जटायु को मारा है हनुमान, एक दिन श्री राम भी उसी

रावण को मारकर जटायुराज की मृत्यु का बदला लें।

सम्पाति मेरे छोटे भाई जटायु का वध रावण ने किया ? वह पराक्रमी था। ये कैसे हुआ ? पूछूँ। सुनो वानरो······निर्भय हो। मैं जटायु का भाई सम्पाती हूँ।

अंगद : जटायु आपके अनुज थे। आप हमारे तात हुए। हमारा प्रणाम है तात। यदि आप जटायु महाराज के भाई हैं तो हमें उस अहंकारी रावण का पता बताइए, जिसने जटायुराज का वध किया है।

सम्पाति : गिरित्रिकूट ऊपर बस लंका। तहँ रावण रह सहज असंका।
तहँ अशोक उपवन जहँ रहई। सीता बैठि सोचिरत अहई।
जो नाघइ सत जोजन सागर। करइ सो रामकाज मति आगर।
अस कहि गरुड गीध जब गयऊ। तिन्हके मन अति विसमय भयऊ।
निज-निज बल सब काहू भाषा। पार जाइ कर संसय राखा।

जामवंत : मैंने पृथ्वी की सात प्रदक्षिणा दौड़कर की थी लेकिन अब वृद्ध हो गया हूँ। फिर भी नब्बे योजन तक जा सकता हूँ।

अंगद : मैं लंका पहुँच तो जाऊँगा। सीता जी का पता भी कर लूँगा लेकिन राक्षसों से संघर्ष हो गया तो वापस आ पाया या नहीं, कह नहीं सकता।

जामवंत : हम आपको भेज नहीं सकते युवराज। नायक दूत बनकर नहीं भेजा जाता।

अंगद : कौन जाएगा ? दूसरा कोई समर्थ नहीं है। एक ही रास्ता है— यहाँ अनशन कर प्राण त्याग दें।

जामवंत : नहीं युवराज। (हनुमान से) पवनपुत्र तुम मौन हो। सर्वशास्त्र विशारद। महावीर, तुम्हारा मौन उचित नहीं है। ज्ञान-विज्ञान के ज्ञाता, विद्वान, अंजनि-पुत्र, अपना मौन तोड़कर हमारा नेतृत्व करो। "कवन सो काज कठिन जग माही, जो नहिं तात तुम्ह पाही।" तुम्हारा जन्म श्री राम के कार्य के लिए ही हुआ है हनुमान।

अंगद : हनुमान, सफलता के तट पर असफलता से केवल आप ही बचा सकते हैं। स्वर्गीय महाराज बालि कहा करते थे कि पवन-पुत्र अद्वितीय है। इस संसार मे उनके लिए कोई भी कार्य कठिन नहीं है। इस घड़ी में हमारे प्राण आप ही बचा सकते हैं।

हनुमान : युवराज।

जामवंत : हनुमान, हमारी रक्षा करो। अपनी शक्ति प्रकट करो।

गीत

तैर सके जो सिंधु महान्,
ऐसे केवल श्री हनुमान।

महाबली अजनी - पुत्र तुम,
कण-कण व्यापी पवन-पुत्र तुम।
राम-भक्त तुम, राम-मंत्र तुम,
तुम बलशाली, तुम धी मान।

करो पवनसुत निश्चय मन में,
असामान्य हो तुम कपि जन मे।
वामन-सा पद उठा गगन मे,
भरो विजय की अथक उड़ान।

जामवंत के वचन सुहाए। सुनि हनुमंत हृदय अति भाए।
बार-बार रघुवीर संभारी। तरकेउ पवन तनय बल भारी।
जिमि अमोघ रघुपति कर बाना। ऐहि भाँति चलेऊ हनुमाना।
जलनिधि रघुपति दूत विचारी। तैं मैनाक होहि श्रमहारी।

हनुमान हे मैनाक पर्वत वासियो। आप मेरे विश्राम की व्यवस्था मत कीजिए। मैं पहले लका जाऊँगा। वहाँ सीता जी की खोज करूँगा। यदि वे नही मिली तो रावण को पकड लाऊँगा अन्यथा मै स्वर्ग ही चला जाऊँगा। आप श्री राम की सेवा के लिए तैयार रहें। हो सकता है कि हमे युद्ध करना पड़े।

पार्श्व : सुरसा नाम अहिन्ह की माता। पठइन्हि आइ कही तेहिं बाता।
आजु सुरन्ह मोहि दीन्ह अहारा। सुनत वचन कह पवन कुमारा।

हनुमान : आवश्यक सेवा सम्मुख है, उसको ही प्रथम करूँगा मैं।
अवकाश मिलेगा जब उससे तब मेरी भूख हरूँगा मैं।

सुरसा : मुझे इससे कोई मतलब नही।

हनुमान . अम्बे, तुम्हें मतलब है। रावण के पुत्रों ने तुझे सताया है। तेरी कन्याएँ लंका मे बन्दी हैं। तू दया कर माँ। मुझे जाने दो।

सुरसा : बातें मत बनाओ, मैं नागवंशी हूँ। हमारी जाति दया नही करती है।

हनुमान : दया नही करोगी। प्रयत्न करो माँ···प्रयत्न कर खा लो।

पार्श्व स्वर

पवन तनय के वचन सुनि, सुरसा हुई विशाल।
योजन भर का मुख किया, गरज उठी तत्काल।

सोरह जोजन मुख तेहिं ठयऊ। तुरत पवनसुत बत्तिस भयऊ।
जस जस सुरसा वदन बढ़ावा। तासु दूत कपि रूप दिखावा।
सत जोजन तेहिं आनन कीन्हा। अति लघु रूप पवनसुत लीन्हा।

हनुमान : आशीर्वाद दो माँ मेरी यात्रा सफल हो।

सुरसा : मैंने परीक्षा ले ली पुत्र। विजयी होगे पवन पुत्र। मुझे अपनी कन्याएँ मुक्त करानी हैं वत्स।

पार्श्व स्वर

निसिचर एक सिंधु महुँ रहई। करि माया नभ के खग गहई।
जीव जन्तु जे गगन उडाही। जल बिलोकि तिनकी परछाईं।
गहइ छाँह सक सो न उडाई। एहि बिधि सदा गगन चर खाही।

हनुमान : मेरी गति रोकने वाला कौन है ?

सिंहिका : यह सिंहिका के अधीन क्षेत्र है वानर। तू लंका की ओर जाना चाहता है। नीचे उतर अन्यथा तुझे खा जाऊँगी।

[हनुमान आक्रमण कर मार डालते हैं।]

प्रति हनुमान : रावण बहुत चतुर है। उसके सुरक्षा प्रबंध बहुत सख्त हैं। इसलिए अब सावधान रहना हनुमान। शत्रु के घर में असावधान नहीं रहना चाहिए।

लंकिनी : बहुत चतुर है। हमें धोखा देने चला है। कौन है? लंका में प्रवेश इतना सहज नहीं है वानर।

प्रति हनुमान : अच्छी उलझन है। इससे लड़ा तो राक्षस आ जाएँगे। इसे मार डालूँ—यही ठीक है।

[मुक्का प्रहार—दो वार।]

लंकिनी . मत मारो। जाओ। प्रवेश करो। श्री राम के दूत हो? ब्रह्मा जी ने कह दिया था कि—

पार्श्व स्वर

बिकल होसि तै कपि के मारे। तब जानेसु निसिचर संघारे।

लंकिनी . धन्य हो गई मैं। आपके दर्शन हो गए। आप प्रवेश कीजिए।

पार्श्व स्वर

हनुमान खोज फिरें मिले न राम सिया,
भोग विलासी नगर मे दासी और प्रिया।
अनजाने इस नगर मे कैसे कटेगी रात,
सीता के दर्शन नहीं कैसे होहि प्रभात।

तेहि अवसर रावनु तहँ आवा। संग नारि बहु किएँ बनावा।

रावण . सीते, बस एक बार मेरी ओर देख। मैं मंदोदरी को भी तेरे अधीन कर दूँगा। रूप-रत्ने। ऐसी अवस्था में सुन्दरी का रहना उचित नहीं है। यदि चाहो तो इस लंका की स्वामिनी बन सकती हो। यदि चाहो तो महाराज जनक के राज्य की सीमाएँ बढ़ा दूँगा। तुम जो कहोगी वही करके दिखा दूँगा प्रिये। बस एक बार मेरा आलिंगन कर लो बस एक बार।

सीता : राक्षस जाति में नीच विचारों के अतिरिक्त और है ही क्या? हमारी संस्कृति में पत्नी, पति का त्याग, भोग के लिए कर दे तो उसे कुल्टा कहते हैं रावण। मैं कुल्टा नहीं हूँ। श्री राम की पत्नी हूँ।

रावण - पगली हो। वह तो जाने कब का प्राण दे चुका होगा। यहाँ से तुम कभी छूट कर नही जा पाओगी। याद रखो, हमारी संस्कृति में बलात्कार वैध है लेकिन मैं तुम्हारा हृदय जीतना चाहता हूँ। वैभव देखो सीते और उसका सुख भोग करो।

सीता : वैभव। मेरे लिए तुच्छ है तेरा वैभव। मैं असहाय हूँ ना, इसलिए डींगें मारकर ललचाना चाहते हो। मै जिस देश में पैदा हुई हूँ, मैं जहाँ की बहू हूँ, वहाँ की स्त्रियाँ सकट के समय समर्पण नही करती है, संघर्ष करती हे। तुमने राक्षसी देखी हैं—मेरे देश की सती नहीं। वैभव की बातें करते हो रावण। वैभव मेरे पिता का दास था। मेरी ससुराल का वैभव तुम जानते ही हो। मैंने अपने पति के लिए उस वैभव का मुँह नही देखा। तुम अपने को साहसी समझते हो लेकिन तुम मेरे देवर लक्ष्मण का सामना करने का भी साहस नही रख सके। चोरो की तरह गए और छल से अपहरण किया।

रावण . छोडो ये प्रसंग। मैं तुम्हे प्रेम करता हूँ सीते। प्रेम मे सब धर्म है, पाप कुछ नहीं है। उस वनवासी में क्या धरा है ? उसकी हड्डियाँ बची होगी कि नही किसे पता ?

सीता प्रेम श्रद्धालु, प्रेम त्याग है—तपस्या है। प्रेम मे हरण तो है अपहरण कतई नही। याद रख रावण। एक दिन तेरी इस जिह्वा को शृगाल खींचेंगे जिस जिह्वा से श्री राम के लिए ऐसे शब्द निकाल रहा है।

रावण : बहुत कटुभाषी हो विश्व सुन्दरी। जानती हो, यहाँ मेरे अतिरिक्त कोई नही आ सकता ? वैसे, जब तक तुम न चाहोगी, मैं स्पर्श नही करूँगा।

सीता : पराई स्त्रियों पर डोरे डालने में राक्षस निपुण होते ही है। ऊपर से बड़े, भव्य, कुलीन, विनम्र दिखने वाले रावण, तुम अन्दर से बहुत ही नीच हो।

रावण : मैं तुम्हे प्रिया बनाना चाहता हूँ सीता। तुम भार्या बनकर शृंगार करो, और रात्रि के तीसरे पहर मे मुझे प्रेम का दान करो। मेरा हृदय तुमने हर लिया है सुन्दरी।

सीता : तेरी मृत्यु पर रावण, कई स्त्रियाँ कहेगी कि 'अच्छा हुआ' ये पापी मर गया। निकृष्ट निशाचर, मेरी ओर कुदृष्टि से देखने वाले, एक दिन तेरी आँखें धरती पर गिर जाएँगी।

रावण : एक अन्यायी और भिखमगे का अनुसरण करने वाली स्त्री। मैं तेरा नाश किए देता हूँ। (राक्षसियों की ओर देखकर) इधर आओ। इसे किसी भी प्रकार मेरे आलिंगन के लिए तैयार

सीता : आलिंगन ! मेरा आलिंगन या तो श्री राम करेंगे, या तेरी तलवार——सागर मण्डूक ।

मंदोदरी : महाराज, इस मनमानी का क्या प्रयोजन है ? आप अन्त पुर में चलिए । हमारे साथ सुखी रहिए ।

राक्षसी-1 : राक्षसराज को पति रूप में पाने योग्य ही नहीं है ।

राक्षसी-2 : अति करना ठीक नहीं । दुख भोगेगी जीवन-भर और दासी रहेगी ।

राक्षसी-3 : अग्नि की पत्नी स्वाहा, इन्द्र की पत्नी शची की तरह तुम महाराज की प्रेयसि बन जाओ । यही बुद्धिमानी है ।

राक्षसी-4 : तेरी बुद्धि ही खोटी है । आँसू बहाने से कुछ नहीं होगा । अभी यौवन है, उसका भोग कर ले । यौवन टिकता नहीं है । बुढ़िया गई तो कोई भी प्रेम नहीं करेगा ।

राक्षसी-1 : इसका गला घोंट दो ।

राक्षसी-2 : हाँ । मरने का समाचार सुनकर महाराज कहेंगे कि इसका मांस बाँट लो ।

राक्षसी-3 : फिर हम इसके चार टुकड़े कर लेंगे और खायेंगे ।

राक्षसी-4 : छुरा यहाँ रखा है ही । मांस खाकर सुरापान करेंगे ।

सीता : मैं अपने प्रियतम से बिछुड़ चुकी हूँ । मैं ही प्राण त्याग दूँगी ।

त्रिजटा : नहीं बेटी । यह नहीं करना । मैंने स्वप्न देखा है । बहुत भयानक है । किन्तु तुम्हारे लिए शुभ है ।

राक्षसियाँ : क्या देखा है त्रिजटा माता ।

त्रिजटा : मैंने देखा कि सीता श्वेत वस्त्र पहने पर्वत शिखर पर अपने पति रामचन्द्र के साथ बैठी है । महाराज रावण का शरीर तेल में रखा है और उनके कई पुत्रों की यही स्थिति है । विभीषण के घर पर नगाड़े बज रहे है । राक्षसियो——यह सपना मैं कहहुँ विचारी । हुहि है सत्य गए दिन चारी । इसलिए सीता की सेवा करो । (चलो यहाँ से)

सीता : मैं अब जीवित नहीं रहना चाहती हूँ । मुझे विष भी नहीं मिलता है और न शस्त्र । मैं अपनी चोटी से फाँसी लगा लूँगी । (उद्यत होना)

प्रति हनुमान : अब मैं क्या करूँ । इन्हे नहीं रोका तो प्राण दे देंगी । इन्हे सात्वना देनी होगी । किस भाषा में बात करूँ ? संस्कृत में करूँ तो रावण न मान ले । अवध-राष्ट्र की भाषा का प्रयोग करूँ । हाँ, यही उचित है । क्योंकि यही सपर्क भाषा है ।

पार्श्व स्वर

बन्दहुँ मिथिला अवध बहोरी । जिनहिं राम जानत करि मोरी ।
चक्रवती दशरथ पुनि बन्दो । सहित कौशिला मात अनन्दो ।

कैकई सहित सुमित्रा रानी। सकल मातु प्रणवों सुखदानी।
राम नाम अंकित दिवि देही। हृदय विराजत विभू वैदेही।

धन्य अहिल्या, जनकपुर, पंचवटी के नारि।
धन्य जटायु गीधपति किए राम के कारि॥

पुनिशवरी रघुपति पद वन्दे। ऋष्यमूक पर्वत अनुवंधे।

सीता : कौन है ! मुझ असहाय, विपत्ति ग्रस्ता की व्याकुलता कम करने वाले श्रीमान। मेरे सम्मुख पधारिये।

हनुमान : श्री राम की शपथ, मैं उनका दूत हनुमान हूँ माता।

सीता : माता कहा ? कोई मायावी राक्षस तो नही हो ?

हनुमान : नही माता। आपको यदि राक्षस लगता हूँ तो चला जाता हूँ। मेरा मूल कार्य पूर्ण हो चुका है। हां, प्रभु ने यह अँगूठी देकर कहा था कि ये आपने विवाह के समय पहनाई थी।

सीता : मुद्रिका। हां, मैंने पहनाई थी।

हनुमान : अब आप विश्वास कीजिए देवि और भय त्यागिए। हमे यहां तक पहुँचने में सवा माह से अधिक लग गया क्योंकि हमे मार्ग का अनुमान नही था और न ही मार्ग की बाधाएँ ज्ञात थी। अब श्री राम सेना लेकर यहां शीघ्र आएँगे और आपको मुक्त कराकर ले जाएँगे।

सीता : असंभव लगता है पुत्र। रावण बहुत शक्तिशाली है। उसके पास विमान, युद्ध सामग्री, सुरक्षा प्रबंध बहुत है। उनसे टकराना असंभव है।

हनुमान : संभव है मां संभव। मैं भी तो आ ही गया, लंका में आना सहज नही है। मैं प्रभु सेवक हूँ। सेवक जहां पहुँच जाता है, प्रभु का वहां पहुँचना संभव होता ही है। शक्ति मे श्री राम कम नही है। अस्त्र और शस्त्र में उनके सामने कौन टिक सकता है ? सुग्रीव महाराज की सेना से राक्षस घबड़ाते है—आप विश्वास रखिए। अब श्री राम का पराक्रम तीनों लोकों में युगो-युगों तक गाया जाने वाला है।

सीता : वे मुझे कभी याद करते हैं हनुमान ? इस दासी को भूल गए होगे।

हनुमान : श्री राम के हृदय में केवल तुम ही हो। वे शरीर लिये हैं, प्राण तो आपके साथ हैं। मैंने उन्हें व्याकुल होते, रात-रात-भर जागते देखा है। वे आपको कभी नही भूल सकते।

सीता : पता नही उनके दर्शन होगे या नही। लंका मे कैद हुए दसवां महीना चल रहा है। रावण ने एक वर्ष पूरा होने पर वध करने का आदेश दे दिया है। उसका एक भाई विभीषण है। केवल उसने वध के आदेश का विरोध किया है लेकिन रावण ने एक नहीं

सुनी। एक विद्वान और है—अविन्ध्य। रावण उसका सम्मान करता है, उसने मुझे वापस भेजने का परामर्श दिया था लेकिन नही माना गया है।

हनुमान : रावण अपनी मृत्यु ढूंढ़ रहा है, आप दुखी न हो माता। मैं तुम्हें अपनी पीठ पर बैठाकर ले चलता हूँ। आइये, मेरी पीठ पर बैठ जाइये।

सीता : कैसी बातें करते हो पुत्र? जब तुम वेग मे उड़ोगे तो मैं मूर्छित होकर सागर मे गिर जाऊंगी। जब राक्षस देखेंगे कि मैं जा रही हूँ तो वे तुम्हारा पीछा करेंगे। तब उनमें युद्ध और मेरी रक्षा कैसे करोगे। मैं गिर गई तो राक्षस मुझे रावण के सामने खड़ा कर देंगे, तब वह नीच क्रोध मे क्या व्यवहार करेगा? क्या पता? तुम श्री राम को कहना कि एक कौए की चोच पर तुमने तीर छोड़ दिया था, अब क्या सीता उतनी प्रिय नही रही? श्री राम का पराक्रम सब जानते हैं। लक्ष्मण तो अप्रसन्न होंगे, इसलिए अब तक नही आये, अन्यथा अकेले लक्ष्मण इस रावण के राज्य का अंत कर सकते हैं। लक्ष्मण से कहना कि तुम्हारी भाभी दया की पात्र है, दया करो।

हनुमान लक्ष्मण जी अप्रसन्न नही है माँ। मैंने उन्हे कई बार धनुष पर हाथ को कसते हुए देखा है। जब आपकी चर्चा होती है तो उनकी आँखें छलछला उठती हैं तब श्री राम ही उन्हे ढाढस बँधाते हैं। वे आपके पुत्र हैं माता। अब आप कोई वस्तु दे दीजिए ताकि श्री राम को विश्वास हो जाए कि मैं आपसे मिलकर ही लौटा हूँ।

सीता : ये चूडामणि लो पुत्र। ये रघुवंश की परंपरा है। तुम्हारी यात्रा शुभ हो, वत्स।

प्रति हनुमान : मैंने सीता जी को खोज लिया। अब चलते-चलते रावण के सैन्य बल की जानकारी ले लेना चाहिए। राक्षसों के साथ साम, दाम, भेद नीति सफल न होगी। दण्डनीति ही सही होगी। शत्रुबल का अनुमान भी आवश्यक है। तो क्या करूँ··· (वृक्षों को उजाड़ना)

[युद्ध।]

राक्षस-1 : महाराज रावण की जय हो।

रावण : मार डालो उस वानर को, जिसने जम्बुवाली, पाँच मन्त्रियों, उनके सात पुत्रों का वध कर डाला है।

राक्षस-1 : वानर बहुत विकट है महाराज। उसने वीर राक्षसो को मार डाला है।

पार्श्व स्वर

रावण अति क्रोधित हुआ सुन दूत की पुकार।
उसी समय सेना सहित, भेजा अक्षकुमार।
इधर बली बजरंगी ने, उड़ती देखी धूर।
समझ लिया आ रहा है, अब के कोई शूर।

इस बार किया ऐसा गर्जन काँपा पत्ता-पत्ता वन का।
मारा उखाड़कर वृक्ष एक मुख फेर दिया खलनंदन का।
झट तरु से कूद पकड़ गर्दन झटका दे शोर किया जय का।
छाती पर एक लात मारी फट गया कलेजा अक्षय का।

अक्षय जो आज्ञा।

[प्रस्थान। युद्ध। वध।]

राक्षस-2. राजकुमार अक्षय महाराज···

रावण : क्या हुआ राजकुमार अक्षय को ? बोलो सैनिक ?

राक्षस-2 : महाराज राजकुमार उस वानर के हाथों वीर गति को प्राप्त हुए।

रावण : अक्षय—वीरगति को···उस वानर ने अक्षय का वध किया। बेटा मेघनाद···तुम्हारे सिवा कोई दूसरा नही है जो युद्ध में थकता नही। तुम वानर की शक्ति का अनुमान कर लो पुत्र। उस वानर को बन्दी बनाओ।

मेघनाद : जो आज्ञा। (प्रस्थान। युद्ध।)

पार्श्व स्वर

चला इंद्रजित अतुलित जोधा। बंधु निधन सुनि उपजा क्रोधा।
कपि देखा दारुन भट आवा। कटकटाइ गर्जा अरु धावा।
मुठिका मारि चढ़ा तरु जाई। ताहि एक छन मुरुछा आई।

ब्रह्मा अस्त्र तेहि साधा, कपि मन कीन्ह बिचार।
जो न ब्रह्मसर मानउँ, महिमा मिटइ अपार॥

ब्रह्मबान कपि तेहि मारा। परतिहुँ बार कटकु संघारा।
तेहि देखा कपि मुरुछित भयऊ। नागपास बाँधेसि ले गयऊ।
कपि बंधन सुनि निसिचर धाए। कौतुक लागि सभा सब आए।

राक्षस-3 : सावधान ! राक्षसराज के तपस्वी अनुज विभीषण पधार रहे हैं। (अंतर) महाबली कुंभकर्ण पधार रहे हैं। (अंत) राक्षस शिरोमणि राक्षस कुलभूषण त्रैलोक्य विजेता महाराजाधिराज रावण पधार रहे हैं।

मेघनाद : यही उत्पाती वानर है महाराज।

रावण : प्रहसन। इसे पूछो कि इसने अशोक वाटिका का विध्वंस क्यों किया ? चैत्यप्रासाद नष्ट कर सैनिक क्यों मारे ? अक्षयकुमार का

वध क्यों किया ?

प्रहस्त : डरो मत। तुम सच-सच कहो कौन हो ? तुम्हें इन्द्र ने भेजा है या कुबेर ने ? सच कहोगे तो तुम्हें छोड़ देंगे। यदि असत्य बोले तो मार दिए जाओगे। बोल वानर—तू किसकी आज्ञा से यहाँ आया है ?

हनुमान : मैं महाराज सुग्रीव की आज्ञा पर आया हूँ। उन्होंने तुम्हारी कुशल-क्षेम पूछी है। (रावण से) मैं यहाँ दशरथ पुत्र राम के कार्य के लिए आया हूँ। उनकी पत्नी यहाँ खो गयी है। उसे ढूंढते हुए महाराज सुग्रीव से मिले और संधि के पश्चात बालि को एक बाण से मार डाला। श्री राम की शक्ति का अनुमान इससे लगाया जा सकता है। उनकी भार्या की खोज में वानर चारों दिशा में गए हैं।

भूख के कारण फल खाए और स्वभाव के कारण वृक्ष तोड़े। तुम्हारा पुत्र मुझे परेशान कर रहा था, सो उसे मार दिया।

प्रहस्त : तुम राम की भार्या खोजते हुए यहाँ आ गए हो ? कौन हो ?

हनुमान : पवन पुत्र हूँ रावण। तुम वेदज्ञ, धर्मज्ञ, ऋषि पुलस्ति के वंशज हो। तिहि मनि जनि महुँ करहु कलंका। मैंने श्री राम की भार्या के दर्शन कर लिए हैं।

रावण : दर्शन ? प्रहस्त ! ये वानर यहाँ कैसे पहुँचा ? उत्तर दिशा से आने वाला वानर सिंहिका की पकड़ से कैसे बच गया ? लंकिनी से पूछो कि यह लंकापुरी में कैसे घुस आया ? बहिन शूर्पणखा ने ठीक ही कहा था कि हमारी गुप्तचर सेवाएँ शिथिल हैं। जनस्थान से राक्षस भगाए गए, हमें कोई सूचना नहीं ? ताड़का की मृत्यु पर मैंने सोचा था कि दण्डकारण्य में जाकर उद्योग करना उचित नहीं। खर-दूषण, त्रिसरा का वध हो गया लेकिन समाचार अकम्पन ने ही दिया। ये वानर अशोक वाटिका में सीता से मिल आया। इसका अर्थ यह है कि हमारी सुरक्षा व्यवस्थाएँ शिथिल हैं।

हनुमान : आपकी सुरक्षा व्यवस्थाएँ व्यर्थ हैं राक्षसराज ! मैं तुम्हारे अंत:पुर में तुम्हें देखकर वाटिका गया था।

रावण : अन्त:पुर में प्रवेश कर गया ? अमात्य ! अन्त:पुर के रक्षाकर्मियों को बन्दी बनाया जाए। वे अपना कर्त्तव्य पालन करने में असमर्थ रहे हैं।

हनुमान : जब राजा स्वेच्छाचारी होकर भोगविलास में डूब जाता है तब यही दशा होती है। कर्त्तव्य आप भी भूल गए हैं। आप महाराज सुग्रीव के भाई ही हैं। इसलिए मैं कर्त्तव्य याद दिलाना चाहता

हूँ। श्री राम की कथा तुम्हारे कानों तक आ ही चुकी है दशग्रीव। श्री राम महज मानव नहीं है। वे धर्म के रक्षक है, इसलिए ऋषियों-मुनियो के रक्षक हैं। उनके हाथ में परशुराम जी का धनुष और महाराज जनक का खड्ग है। उनकी भार्या माता जानकी का अपहरण करके तुमने मृत्यु को आमत्रण दिया है। श्री राम भगवान विष्णु का अवतार है। वे कृपा सिंधु और दया के सागर है दशानन। मेरे साथ चलो, तुम श्री जनकनंदिनी को सौंपकर इस कुकृत्य के लिए क्षमा माँग लो और निष्कंटक राज्य भोगो। मैं श्री राम का दास हूँ, इसलिए मैं तुम्हे आश्वस्त भी करता हूँ।

रावण : मूर्ख कपि। मेरे सम्मुख बकवास का साहस करता है। तू जानता नही कि लोक-परलोक मेरे सम्मुख दीनता से खडे रहते हैं। तू किस विष्णु की बात करता है। भगवान शंकर के अतिरिक्त किसी का कोई अस्तित्व नही है और सुग्रीव'''वह कुलघाती''' जिसने धोखे से भाई का वध करवा डाला और राजा बन बैठा। (अट्टहास) पिता ने अयोग्य समझकर जिसे निर्वासित कर दिया। भिखमगों की तरह घूमने वाला राम अब धर्मात्मा और अवतार होने का स्वाँग रचाता फिरता है। वह जानता है कि व्यक्ति धर्म के सामने नतमस्तक है। तपस्वी है तो सुन्दरी को लेकर क्यो घूमता है। तू उस राम का बखान करता है। मैं पहले तेरा वध कर सीता को मार देता हूँ। वही उत्पातो की जड है। फिर तेरे राम और सुग्रीव को मार डालूंगा।

हनुमान : अधम राक्षस। तेरे मस्तक पर मृत्यु ताण्डव नृत्य कर रही है। इसलिए तू प्रलाप कर रहा है। तू जिन श्री राम के लिए अपमान-जनक शब्द कह रहा है, उनका दास मैं हनुमान'''यदि तुझमे शक्ति हो रावण'''

रावण : मार दो इसे।

विभीषण : नही स्वामी। दूत अवध्य होता है। हनुमान महाराज सुग्रीव का दूत है। दूत का वध न्यायोचित नही है। (रावण की वंदना करते हुए।)

दूत अपने स्वामी का प्रतिनिधि होता है। प्रतिनिधि अभय प्राप्त होने के कारण दुर्वचन कहते हैं। उन्हे क्षमा करना राजनीति ही नही, शूरवीरों का काम होता है। सामान्य परंपरा है कि प्रतिनिधि का वध नही किया जाए। आप धर्मज्ञ है। आप जैसा पंडित क्रोध के वश मे हो जाए, यह उचित नही है।

रावण : पापियो का वध नहीं होता विभीषण। इस वानर ने कुल देवता का प्रासाद, अशोक वाटिका का ध्वंस ही नही किया अपितु

वध क्यों किया ?

प्रहस्त : डरो मत। तुम सच-सच कहो कौन हो ? तुम्हें इन्द्र ने भेजा है या कुबेर ने ? सच कहोगे तो तुम्हे छोड देंगे। यदि असत्य बोले तो मार दिए जाओगे। बोल वानर—तू किसकी आज्ञा मे यहाँ आया है ?

हनुमान : मै महाराज सुग्रीव की आज्ञा पर आया हूँ। उन्होने तुम्हारी कुशल-क्षेम पूछी है। (रावण से) मैं यहाँ दशरथ पुत्र राम के कार्य के लिए आया हूँ। उनकी पत्नी कही खो गयी है। उसे ढूँढते हुए महाराज सुग्रीव से मिले और संधि के पश्चात बालि को एक बाण से मार डाला। श्री राम की शक्ति का अनुमान इससे लगाया जा सकता है। उनकी भार्या की खोज मे वानर चारों दिशा मे गए है।

भूख के कारण फल खाए और स्वभाव के कारण वृक्ष तोड़े। तुम्हारा पुत्र मुझे परेशान कर रहा था, सो उसे मार दिया।

प्रहस्त : तुम राम की भार्या खोजते हुए यहाँ आ गए हो ? कौन हो ?

हनुमान . पवन पुत्र हूँ रावण। तुम वेदज्ञ, धर्मज्ञ, ऋषि पुलस्ति के वंशज हो। तिहि मसि जनि महुँ करहु कलंका। मैंने श्री राम की भार्या के दर्शन कर लिए है।

रावण : दर्शन ? प्रहस्त ! ये वानर यहाँ कैसे पहुँचा ? उत्तर दिशा से आने वाला वानर सिंहिका की पकड़ से कैसे बच गया ? लंकिनी से पूछो कि यह लंकापुरी मे कैसे घुस आया ? बहिन शूर्पणखा ने ठीक ही कहा था कि हमारी गुप्तचर सेवाएँ शिथिल है। जनस्थान से राक्षस भगाए गए, हमें कोई सूचना नही ? ताडका की मृत्यु पर मैंने सोचा था कि दण्डकारण्य में जाकर उद्योग करना उचित नही। खर-दूषण, त्रिसरा का वध हो गया लेकिन समाचार अकम्पन ने ही दिया। ये वानर अशोक वाटिका मे सीता से मिल आया। इसका अर्थ यह है कि हमारी सुरक्षा व्यवस्थाएँ शिथिल हैं।

हनुमान : आपकी सुरक्षा व्यवस्थाएँ व्यर्थ हैं राक्षसराज ! मैं तुम्हारे अंत.पुर मे तुम्हे देखकर वाटिका गया था।

रावण : अन्त पुर में प्रवेश कर गया ? अमात्य ! अन्त.पुर के रक्षाकर्मियो को बन्दी बनाया जाए। वे अपना कर्त्तव्य पालन करने में असमर्थ रहे हैं।

हनुमान : जब राजा स्वेच्छाचारी होकर भोगविलास मे डूब जाता है तब यही दशा होती है। कर्त्तव्य आप भी भूल गए है। आप महाराज सुग्रीव के भाई ही हैं। इसलिए मैं कर्त्तव्य याद दिलाना चाहता

हूँ। श्री राम की कथा तुम्हारे कानों तक आ ही चुकी है दशग्रीव। श्री राम सहज मानव नही है। वे धर्म के रक्षक है, इसलिए ऋषियों-मुनियो के रक्षक हैं। उनके हाथ मे परशुराम जी का धनुष और महाराज जनक का खड्ग है। उनकी भार्या माता जानकी का अपहरण करके तुमने मृत्यु को आमन्त्रण दिया है। श्री राम भगवान विष्णु का अवतार हैं। वे कृपा सिंधु और दया के सागर हैं दशानन। मेरे साथ चलो, तुम श्री जनकनंदिनी को सौंपकर इस कुकृत्य के लिए क्षमा माँग लो और निष्कटक राज्य भोगो। मै श्री राम का दास हूँ, इसलिए मैं तुम्हे आश्वस्त भी करता हूँ।

रावण मूर्ख कपि। मेरे सम्मुख बकबास का साहस करता है। तू जानता नही कि लोक-परलोक मेरे सम्मुख दीनता से खडे रहते है। तू किस विष्णु की बात करता है। भगवान शंकर के अतिरिक्त किसी का कोई अस्तित्व नही है और सुग्रीव···वह कुलघाती··· जिसने धोखे से भाई का वध करवा डाला और राजा बन बैठा। (अट्टहास) पिता ने अयोग्य समझकर जिसे निर्वासित कर दिया। भिखमंगो की तरह घूमने वाला राम अब धर्मात्मा और अवतार होने का स्वांग रचाता फिरता है। वह जानता है कि व्यक्ति धर्म के सामने नतमस्तक है। तपस्वी है तो सुन्दरी को लेकर क्यों घूमता है। तू उस राम का बखान करता है। मैं पहले तेरा वध कर सीता को मार देता हूँ। वही उत्पातो की जड है। फिर तेरे राम और सुग्रीव को मार डालूंगा।

हनुमान : अधम राक्षस। तेरे मस्तक पर मृत्यु ताण्डव नृत्य कर रही है। इसलिए तू प्रलाप कर रहा है। तू जिन श्री राम के लिए अपमान-जनक शब्द कह रहा है, उनका दास मैं हनुमान···यदि तुझमे शक्ति हो रावण···

रावण : मार दो इसे।

विभीषण : नहीं स्वामी। दूत अवध्य होता है। हनुमान महाराज सुग्रीव का दूत है। दूत का वध न्यायोचित नहीं है। (रावण को वंदना करते हुए।)

दूत अपने स्वामी का प्रतिनिधि होता है। प्रतिनिधि अभय प्राप्त होने के कारण दुर्वचन कहते है। उन्हे क्षमा करना राजनीति ही नही, शूरवीरों का काम होता है। सामान्य परंपरा है कि प्रति-निधि का वध नही किया जाए। आप धर्मज्ञ है। आप जैसा पंडित क्रोध के वश मे हो जाए, यह उचित नही है।

रावण : पापियो का वध नही होता विभीषण। इस वानर ने कुल देवता का प्रासाद, अशोक वाटिका का ध्वंस ही नही किया अपितु

[हनुमान की पूंछ में आग लगाने के लिए प्रयत्न। लंका दहन। राक्षसों का चीत्कार।]

पार्श्व स्वर

विकट रूप धरि लंक जरावा,
शक्ति-रूप लकेश दिखावा।
भीम रूप धरि असुर सहारे,
रामचन्द्र के काज सँवारे।

छः

सूत्रधार : भक्त जनो। पवनपुत्र ने जलती हुई लका देखी तो बहुत दुखी हुए। कही जनक नन्दिनी तो नही जल गई। विभीषण का क्या हुआ होगा जिसने वध होने से बचाया। केसरी-नन्दन अशोक वाटिका पुनः पहुँचे और जानकी से मिलकर सागर पार कर श्री राम से मिले। लंका के सारे समाचार सुनाये। लंका में जो आग लगी थी, वह घटना सबको चौंकाने वाली थी। हनुमान जी ने वानरो को लंका पर आक्रमण करने का परामर्श दिया। अंगद आक्रमण करने के लिए उतावले हो गये लेकिन जामवंत ने उन्हें रोक दिया। जब अंगद का दल श्री राम मे मिला और चूडामणि दे दिया तब श्री राम जी ने हनुमान जी को वक्ष से लगाकर पूछा—

[मंच तीन पर प्रकाश।]

राम : लंका-विध्वंस कैसे की हनुमान?

हनुमान : आपकी कृपा से भगवन। जब पूंछ में आग लगाई गई तो मैं उछलकर अट्टालिका पर चढ़ गया। घृत से जले हुए वस्त्र जहाँ-जहाँ गिरे वहाँ-वहाँ आग फैलने लगी। मैंने सोचा, राक्षसो को यह कल्पना भी नही होगी कि एकाएक आग लग सकती है। इसलिए मैं भव्य भवनों पर से दौडा। एक स्थान पर कपास ने आग पकड ली। घास-फूस की झोपडियाँ स्वाहा होने लगी। अब मेरी पूंछ तक गर्मी आने लगी तो मैं आग बुझाने को सागर की ओर दौड़ पडा। मार्ग मे एक स्थान पर बारूद का भण्डार था। कई सुरंगें थी, उन पर आग गिरी तो धमाके होने लगे। इस कारण बहुत-सी सेना भी नष्ट हो गई। मैं समुद्र में डुबकी लगा गया प्रभु।

आपकी कृपा से मेरी पूंछ पर छाला तक नहीं है।

राम वहुत विनम्र हो हनुमान। अतुलनीय-पराक्रम, महावीर के अतिरिक्त कौन कर सकता है। (वानरों से) खोज का कार्य पूर्ण हुआ लेकिन आक्रमण में समुद्र बाधक है।

सुग्रीव समुद्र की बाधा दूर कर ली जायेगी प्रभु। एक बार लंका तक पहुंचने दीजिये—रावण का वध ही होगा।

लक्ष्मण लंका की सैनिक शक्ति, छावनियाँ, बारूद और शस्त्रों का कुछ अनुमान किया हनुमान।

हनुमान . लंका की सुरक्षा व्यवस्था चारों दिशाओं में है। उत्तर की ओर व्यवस्था अधिक है। गुप्तचर भी अधिक सक्रिय रहते हैं। हमें सिंहिका से बचकर जाना होगा। चारो द्वारो पर खोजी यंत्र लगे हैं। चारों ओर बहुत शीतल जल की खाइयाँ हैं। इन पर मचान है। ये यंत्रों से संचालित हैं। लंका सागर से रक्षित है। फिर परकोटे हैं लेकिन वे ध्वस्त हो गये है। रावण शक्तिशाली है, धीर-वीर भी है। वहाँ एक विभीषण नीति एवं आदर्शवादी है। उसने सीता माता के वध का विरोध किया है। कुंभकर्ण की शक्ति अपार है और देशभक्त है।

हमें शीघ्र प्रस्थान करने पर विचार करना चाहिए। यह हो भी सकता है कि रावण हम पर आक्रमण कर दे। आकाश मार्ग से सेना सागरपार ले जाने पर सिंहिका बाधक होगी। हो सकता है रावण ने आकाश मार्ग पर सतर्कता बढ़ा दी हो। नौकाओं द्वारा वहाँ पहुँचना सम्भव नहीं होगा। उत्तर दिशा का नायक राक्षस सेना का योग्य सेनापति है। लेकिन उसकी दक्षिणी सुरक्षा व्यवस्था को भारी धक्का लगा है। यदि शीघ्रता से सेना लेकर हम लंका पहुँच जायें तो प्रवेश संभव होगा। रावण भी आपात व्यवस्थायें कर रहा होगा। आज वह आंतरिक और बाह्य संकट से घिरा है। उसे अग्निकांड के पीड़ितों को राहत पहुँचाना, मृत सैनिको के परिवारों की व्यवस्था, सागर मध्य मे सुरक्षा, विस्फोटक सामग्री और शस्त्रो का पुनः निर्माण कराना है। आंतरिक संघर्ष में उलझे राजा पर आक्रमण करना उचित होता है, अतः हमे प्रस्थान करना चाहिए महाराज सुग्रीव।

राम : आज उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र है और कल चन्द्रमा हस्त नक्षत्र से योग करेगा। हमारी सेनायें आज दोपहर मे प्रस्थान करें तो शुभ होगा महाराज सुग्रीव।

सुग्रीव · यही उचित है प्रभु। सेनाएँ तैयार है, केवल आदेश की प्रतीक्षा है।

लक्ष्मण : शुभ मुहूर्त तो है ही। शत्रु आज आंतरिक असंतोष के कारण रक्षा पंक्ति पर असफल होगा। उसकी जनता और सेना का मनोबल भी गिरा होगा। एक हनुमान जी की यात्रा से, हमारी सेना में उत्साह है भैया। अब विलंब कैसा ? महाराज सुग्रीव, मेरी प्रार्थना है कि आप आज्ञा दीजिये।

सुग्रीव : मैं घोषणा करता हूँ कि किष्किंधा के पक्ष में आई सभी सेनायें श्री राम की आज्ञा के अधीन होकर युद्ध करेंगी। अब श्री राम का आदेश ही मेरा आदेश होगा।

राम : सेनापति नील, अपनी सेना के साथ मार्ग की व्यवस्थायें करें। हो सकता है कि रावण ने मार्ग में व्यवधान पैदा कर दिए हों अथवा पीने के पानी मे विष मिलवा दिया हो। शत्रु सैनिक छापामार आक्रमण कर सकते है, अतः विशेष ध्यान रहे। वे सैनिक जो अपने को युद्ध के अनुकूल महसूस न करते हों, वृद्ध या अस्वस्थ हो, वे यही रहकर नगर की रक्षा करें। सेना की रक्षा सेनापति ऋषभ दाहिने भाग से, सेनापति दुर्जेय वाम भाग से करें। मैं हनुमान के साथ और लक्ष्मण अंगद के साथ रहेंगे। जामवंत पृष्ठ भाग की रक्षा व्यवस्था देखेंगे।

हमारी सेना आकाश मार्ग से सागर-तट तक पहुँचेगी क्योंकि भूमि मार्ग में समय अधिक लगेगा। इस मार्ग में कुछ स्थानों पर विश्राम क्षण होगे जहाँ भोजन व्यवस्था होगी।

[मंच एक पर प्रकाश।]

चौ० : उहाँ निसाचर रहहिं ससंका।
जबतें जारि गयउ कपि लंका।
निज-निज गृह सब करहिं विचारा।
नहिं निसचर कुलकेर उबारा।
जासु दूत बल बरनि न जाई।
तेहि आए पुर कवन भलाई।
दूतन्हि सब सुनि पुरजन बानी।
मंदोदरी अधिक अकुलानी।

मंदोदरी : दूतों से जो कुछ सुन रही हूँ, वह आपको भी ज्ञात है नाथ। आप सीता को क्यो नही लौटा देते। वह हमारे लिए काल रात्रि के समान है। आपको राक्षस कुल एवं इस राष्ट्र का विचार करना चाहिए स्वामी।

रावण : सचमुच स्त्रियाँ बहुत भीरु होती है। व्यर्थ मत डरा करो मंदोदरी। आज तक के युद्ध हमने जीते हैं। सीता को लाया ही इसलिए हूँ कि शत्रु मेरे निशाने पर आ जाए।

मंदोदरी : यह मैं नहीं जानती हूँ लेकिन चिंतित होने के आधार हैं स्वामी।

रावण : आधार ! रूपसि, रूप का आधार ढूंढो। आयु के साथ आपका रूप ढल सकता है। राजनीति की चिन्ता त्यागो मंदोदरी। अपनी चिन्ता करो। तुम्हें भय है कि यदि सीता ने विवाह कर लिया तो तुम्हें दासी बनना पड़ेगा। यही ना। स्त्रियाँ, स्त्रियों से बहुत ईर्ष्या रखती हैं ?

मंदोदरी नहीं स्वामी। मेरे पिता ने आपके यश को सुनकर ही मुझे आपको सौंपा था। मैंने अपने रूप का नहीं, पत्नी-रूप का ही प्रयोग किया है नाथ। जो स्त्रियाँ प्रसाधनों युक्त शृंगार और अपने सौंदर्य पर ही मोहित होकर दर्प भी रखती हैं वे पत्नी कभी नहीं बन सकती हैं। वे अप्रत्यक्षतः वेश्या होती हैं क्योंकि जिनका मन देह मज्जा में ही लगा है, वे भोग में लगी रहती हैं। राक्षस संस्कृति में भी यही होता है लेकिन मैं भिन्न हूँ महाराज। मैं पत्नी हूँ सो जानती हूँ कि शरीर की भी अवस्था होती है। केवल मन के संस्कार की आयु नहीं होती है। संस्कार मरता नहीं है। मेरा पत्नी-संस्कार चीख कर कहता है कि मंदोदरी अपना सिंदूर सुरक्षित कर। तू जिस कुल की महारानी है उसकी सुरक्षा कर। इसलिए आज रूप की नहीं, आत्मा की आवश्यकता है जिसकी शक्ति से अपने देश, जाति और वंश को बचाने का प्रयत्न किया जा सकता है।

रावण : कोई संकट नहीं है मंदोदरी।

मंदोदरी . संकट है ? सागर पार शत्रु की सेना आ चुकी है। और कोई संकट नहीं है। कल तक किसी ने लंका पर आक्रमण का स्वप्न नहीं देखा था, लेकिन आज आक्रमण होने वाला है। कल तक महाराज रावण आक्रमण की सोचते थे आज उन्हें सुरक्षा की सोचनी पड़ रही है। आक्रमण और रक्षा में यही अंतर है। उनका एक दूत कितनी क्षति कर गया। आज सेना है सेना।

रावण · क्या चाहती हो तुम ?

मंदोदरी : महाराज ! यदि मैं अधेड़ हो रही हूँ तो आप किसी अन्य से विवाह कर लीजिये, लेकिन सीता को लौटा कर संधि कर लीजिये। वालि से संधि थी, अतः याद दिलाकर सुग्रीव से संधि हो सकती है। संधि रक्त की धार को रोक सकती है।

रावण : मंत्रियों से मंत्रणा कर रहा हूँ, आप चिंता न करें। वैसे याद रहे कि संधियाँ कमजोर लोग किया करते हैं। मैं कमजोर नहीं हूँ महारानी।

[प्रस्थान। सभागृह में प्रवेश।]

राक्षस-I : सावधान। शूरवीर, धर्मज्ञ, राक्षस कुल-भूषण, दसग्रीव विश्व

विजेता, राक्षस-राज रावण पधार रहे हैं।

रावण . सेनापति, नगर की रक्षा तत्परता से की जाये। गुप्तचर सक्रिय रहे।

प्रहस्त : व्यवस्थायें है महाराज। सार्वजनिक वक्तव्य प्रतिवद्धित कर दिए है।

रावण : सभासदो। धर्म, अर्थ, काम विषयक सकट मे हित-अहित का विचार करने में आप समर्थ है। मैंने ताड़का, सुबाहु, खर, दूषण का वध करने वाले, राक्षस जाति को समूल नष्ट करने की सौगंध लेने वाले राज्य से निर्वासित तपसी राम की भार्या का हरण कर जो काम किया है, उसका अनुमोदन चाहता था लेकिन उस समय कुभकर्ण उपलब्ध नही थे। आप जानते ही है कि मैंने जनस्थान से राम की प्यारी, सीता का हरण किया है। वह सुन्दर है। उसके सौंदर्य को देखकर मैं व्याकुल हूँ। किन्तु सीता ने एक वर्ष का समय मांगा है। एक वर्ष पश्चात, यदि वह मेरी भार्या न बनी तो मैं उसका वध कर दूँगा। लेकिन विभीषण ने हमेशा की तरह मेरा विरोध ही किया। मैंने उसकी बात मान ली। इस बीच एक वानर आया। हम सचेत नही थे, इसलिए उसने क्षति पहुँचाई। आज राम सुग्रीव की सेना लेकर सागर-तट पर आ गया है। आप ऐसा परामर्श दीजिये जिससे सुन्दरी सीता न लौटाना पड़े और राम मारा जाये। मैंने आज तक सभी युद्ध आपकी सहायता से ही जीते है। यह युद्ध निर्णायक है।

कुभकर्ण : सीता का हरण कर लाये! सारा काम बिगाड कर विचार करने चले हो महाराज। छल पूर्वक स्त्री का हरण अनुचित पापकर्म है। आपको पूर्व में परामर्श करना चाहिए था। स्त्री स्वतंत्रता के हम पक्षधर है। यदि सीता तुम्हें स्वीकार कर भाग आती तो हम दोष नही देते। आप राजा हैं दशानन। राजा को न्याय का मार्ग अपनाना होता है। लोक और शस्त्र के विपरीत किया गया आचरण पापकर्म है। राजकाज विवेक से होता है, चपलता से नही। तुमने भावी परिणाम का विचार क्यों नही किया ? आपके सम्पूर्ण जीवन पर जब इतिहास बोलेगा तो यही कहेगा कि रावण महापण्डित, महाज्ञानी थे लेकिन उन्होने स्त्रियों का सम्मान कतई नही किया। जो व्यक्ति स्त्रियों का सम्मान नही करता है अपितु उन्हे अपमानित करता है उसे स्त्री के कारण ही मृत्यु आती है महाराज।

रावण : स्त्री का अपमान नही किया है। मैंने राक्षसों के अपमान का बदला लिया है। उस राम से जिस राम ने ताड़का, सुबाहु, खर-

दूषण, त्रिसरा का वध किया। जिसके भाई ने हमारी बहिन के नाक-कान काट लिए। क्या मैं मौन रहता?

कुंभकर्ण : वैधव्य भोगते वाली बहिन वहां क्यों गई? तुमने उसके पति का वध इसलिए करवा दिया था कि उसने प्रेम विवाह किया था? आपने उसका पुन: विवाह सम्पादित नहीं किया, इसलिए वह स्वच्छंद हो गई और आपको भी उस ओर खींच ले गई।

रावण : राम ने जनस्थान में विद्रोह भड़काया है कुंभकर्ण। राक्षसों का वध कर डाला है। हमारी सीमाएँ सिकुड़ती जाएँ, यह कैसे देख सकता हूँ मैं।

कुंभकर्ण : तो सेना भेजकर जनस्थान से खदेड़ देते। उसे मार डालते। आपने शूरवीरता भी कलंकित की और नारी स्वतंत्रता का हरण भी किया। अब वह हमारी चौखट पर आ गया।

रावण : अब जो हो गया सो हो गया। अब आप क्या सहायता करेंगे? इस बार राक्षस-विरोध का अंत, यदि हो गया तो हम निष्कंटक हो जाएँगे।

कुंभकर्ण : जो हो गया, सो कैसे हो गया? राम ने जो कुछ किया है उसे सुनकर हमें बैर नहीं लेना था। कहते हैं कि वह अवतार है। भगवान विष्णु का अवतार।

रावण : अवतार है तो क्या मैं पाँव पकड़ लूँ। प्रचार तंत्र का उपयोग कर महात्मा बना फिरता है। तुम मेरे भाई हो, मेरे लिए उस कथित भगवान से युद्ध करोगे या मित्रता कर लोगे।

कुंभकर्ण : महाराज, आपको मेरी निष्ठाओं पर सन्देह है? अरे भाई वही होता है जो भाई के लिए प्राण दे दे। आज प्राणों का कोई संकट नहीं है। राम यदि भगवान भी होगा तो मुझे कह देना, मैं उसे ठीक कर दूँगा।

महापार्श्व : महाराज साम, दाम, भेद के पश्चात दण्डनीति है। महाबली कुंभकर्ण और इन्द्रजीत जहाँ हों, वहाँ संकट का प्रश्न ही नहीं है।

रावण : क्या कहना चाहते हो महापार्श्व?

महापार्श्व : दण्डनीति अपनाइये महाराज। आप सीता के साथ बलात्कार कीजिये। वह एक बार आपकी हो गई तो राम को मुँह दिखाने लायक नहीं रहेगी। राम भी लौट जाएगा।

रावण : बलात्कार नहीं कर सकता। क्योंकि एक बार कुशध्वज की कन्या वेदवती से बलात्कार किया था तो वह जलकर मर गई थी। कहीं सीता ने ऐसा कर लिया तो? एक और कारण है महापार्श्व। मैंने अपने भाई कुबेर के पुत्र नल कूबर की पत्नी रंभा से बलात्कार किया था। इसी तरह एक बार ब्रह्माजी के भवन में गया तो

पुंजिकस्थला नामक रूपवती कन्या का हठात् उपभोग किया था। तब नल कूबर और ब्रह्माजी ने भी शाप दिया कि यदि मैंने स्त्री से बलात्कार किया तो मेरे सिर के टुकडे-टुकड़े हो जाएंगे। यह बात मैंने छिपाकर रखी थी महापार्श्व। लेकिन चिन्ता न करो पार्श्व। यदि मैं कुबेर से लंका छीन सकता हूँ, इन्द्र और वरुण को परास्त कर सकता हूँ तो उस राम की क्या बिसात। किन्तु बलात्कार नही कर सकता हूँ। राक्षस-संस्कृति मे स्त्री स्वातंत्र्य है। स्वच्छन्द भोगवाद भी है तथापि बलात् प्रयत्नों की स्वीकृति नही है। इसलिए समाज से भी डरना पड़ता है महापार्श्व।

विभीषण : 'श्री राम' सामान्य मनुष्य नही है। अत उनके बारे मे आपका मूल्यांकन सही नही है? 'राम' के हाथों बचना असंभव है। क्योंकि वे देवताओ के देव विष्णु भगवान का अवतार हैं। यदि अवतार न भी मानें तब भी ताडका वध से सागर-तट तक सेना लेकर आना, असाधारण घटनाएं हैं जो सामान्य व्यक्ति नही कर सकता है। राम ने राज्य त्याग कर नया सोच पैदा किया है। सत्ता के लिए तो सभी संघर्ष करते है किन्तु समाज के लिए तपस्या कोई नही करना चाहता है। अपने गुणो से वे जन-नायक बन चुके है।

रावण : जब घृत खाने को दुर्लभ हो तो व्यक्ति उसके दोष गिनकर या अल्पाहारी होने का ढिंढोरा पीटता है। वही काम राम ने किया। राज्य से निर्वासित कर देश से निकाल दिया गया तो अब समाज सेवक हो गया। आदर्श पुरुष, मर्यादा पुरुषोत्तम, मुनि-सेवक, धर्मरक्षक का प्रमाण-पत्र लटकाए फिरता है। कभी-कभी सत्य पहिचान लेने मे बहुत भ्रम हो जाता है विभीषण। यह भ्रम बड़ी देर से टूटता है।

विभीषण : सत्य कहा आपने। मैं शुभचिंतक हूँ महाराज। इसलिए बड़े भाई कुंभकर्ण के विचार में आंशिक परिवर्तन हेतु प्रयत्नशील हूँ।

कुंभकर्ण : निर्भय होकर कहो। मैं विश्राम के लिए चलता हूँ महाराज। किन्तु विभीषण को विचार रखने से न रोका जाए।

विभीषण : मेरा प्रस्ताव है कि हम सीता को राम के हाथो सौंप दें और शांति हेतु संधि कर लें।

मेघनाद : भयभीत व्यक्ति निरर्थक चर्चा ही करता है छोटे चाचा। आप बडे काका की तरह वीरतापूर्ण बातें करो। लंकेश यदि सीता को सौंप देंगे तो राक्षसों मे महाराज के प्रति सम्मान घटेगा। सब कहेंगे कि अपनी शक्ति का बखान करने वाले राक्षसराज ने आत्मसमर्पण कर दिया। बालि के कारण हम पूर्व से ही सिर नीचा किए हैं। आज वह नही है। सुग्रीव शक्तिहीन है।

विभीषण : मैं कुल के हित की बात कर रहा हूँ मेघनाद।

मेघनाद : इस कुल में बल, वीर्य, पराक्रम, धैर्य, शौर्य और तेज है। पता नहीं आप इन गुणों से रहित कैसे हैं?

विभीषण : मेघनाद। तुम्हें बड़ों से बात करने का अभ्यास नहीं'''इन्द्र को जीतकर तुमने कोई बड़ा तीर नहीं मार दिया है। समर भूमि में किसी तपस्वी से पाला पड़ गया तो'''अभी तुम बालक हो, समझे! कच्ची बुद्धि होने से निरर्थक संभाषण करते हो। जिसमें विनय नहीं, बुद्धि नहीं, वही सीधा बोलता है। दुर्बुद्धि, दुरात्मा, मूर्ख। बिना सिर-पैर की बातें करते हो। (रावण से) महाराज सागर के उस पार मृत्यु खड़ी है, उसे सीता देकर ही लौटाना उचित है। एक स्त्री के लिए रक्त की नदी बहाना उचित नहीं है।

रावण : विभीषण। तुम शत्रु के मित्र हो गया? सर्प और शत्रु के साथ रहना पड़े तो रह ले लेकिन मित्र रूप में शत्रु सेवा करने वाले के साथ रहना उचित नहीं होता। तुम जिसे स्त्री कह रहे हो, वह हो सकता है कि कल इस देश की महारानी हो। फिर आज एक स्त्री का प्रश्न नहीं है। यह प्रश्न सम्पूर्ण राष्ट्र, राक्षस संस्कृति, और हमारी प्रतिष्ठा से जुड़ा हुआ है। सीता का हरण, विचार-पूर्वक किया है। इन्हीं दो लड़कों ने हमारी बहिन का सार्वजनिक अपमान किया है। हम मृत्यु स्वीकार कर सकते हैं लेकिन अपमान नहीं।

विभीषण : महाराज मैं जाति का हित सोचता हूँ।

रावण : जाति हित? जाति का हितैषी संकट में उपदेश नहीं, जाति का साथ देता है। संकट के समय नीचा दिखाने वाला न मित्र होता है और न न्यायप्रिय ही। मित्र के संकट में उचित-अनुचित का विचार करने वाले बहुधा पाखंडी और स्वार्थी होते हैं। जब वे संकट में आते हैं, तब उनसे कोई सहानुभूति नहीं रखता है। भय, शत्रु का नहीं होता, जितना जाति भाई का होता है। तुम अनार्य होकर आर्यों से प्रेम जता रहे हो और जाति हित की बात कर रहे हो। बुद्धिजीवी कहलाने का मोह तुम्हें बुद्धि-विलासी बनाता जा रहा है। मेरी आलोचना ही तुम्हारा धर्म क्यों है विभीषण?

विभीषण : महाराज, यदि आप परामर्श न माँगते हो तो मैं मौन रहता। मैं जानता हूँ कि सत्ता के चाटुकार सदैव सुखी रहते हैं। अपने अधिकारी का यशोगान करने वाले ही अपना हित साधन करते आए हैं। चाटुकारों से घिरा व्यक्ति यदि दुर्भाग्य से अपने को धर्मात्मा, सत्यवादी, सिद्धांतवादी और पराक्रमी समझ बैठे तो उसके मुख पर लेपी हुई विनम्रता, शिष्टता और शान्ति तो

होती है किन्तु ऐसा व्यक्ति मूलतः चरित्रहीन, चोर, ढोंगी और अकर्मण्य होता है। वह सिद्धान्तो के नाम पर अपना स्वार्थ पूर्ण करता है। उसे अपने देश और समाज से कोई लेना-देना नही होता है। महाराज, आप एक सीता के पीछे पूरे राष्ट्र को युद्ध मे क्यो झोंकना चाहते है। किसी राजा के व्यक्तिगत हित के लिए प्रजा युद्ध क्यों करे।

रावण : विभीषण। कुलकलंक। तुझे धिक्कार है। तेरे सिवा कोई दूसरा ऐसी बातें करता तो उसे इसी क्षण प्राणो से हाथ धोने पड़ते। तू लंका मे छिपा सर्प है।

विभीषण : महाराज आप व्यक्तिगत स्तर पर आ गए। मैं अनुज हूँ। मैं जान-बूझकर अनीति के मुख में कैसे जाने दूँ।

रावण : कौन-सी अनीति !

विभीषण : सीता का छलपूर्वक हरण। सीता यदि स्वेच्छा से तुम्हारा आलिंगन करने आती तो मैं उस राम से भगवान होने पर भी युद्ध करता। राक्षस संस्कृति में भोग की स्वतंत्रता है लेकिन उच्छृंखलता नही। हम स्त्री-स्वातंत्र्य के पक्षधर है। राक्षस-समाज आपके द्वारा बलपूर्वक स्त्रियो के साथ किए गए व्यवहार से असन्तुष्ट है।

रावण : तू कहना क्या चाहता है ? राम का इतना प्रशंसक क्यों है ? इस राष्ट्र का मित्र तू नही हो सकता। इसीलिए हनुमान को वध से बचाया था ? इसीलिए तू सीता का पक्ष लेता आया। त्रिजटा भी उसी सीता के लिए गुप्तचरी करती रही। मैं सब जानकर भी मौन रहा। राष्ट्र में रहकर दूसरे राष्ट्र के प्रति प्रेम का आशय क्या है ? जब युद्ध सामने हो तो राष्ट्राध्यक्ष की निन्दा का क्या अर्थ है ?

विभीषण : मैं राष्ट्रभक्त हूँ महाराज।

रावण : तू देशद्रोही है और इस सभा मे घुस आया है।

विभीषण : यदि मैं देशद्रोही हूँ तो मुझे आरोप लगाकर दण्डित किया जाना चाहिए अथवा महाराज को अपने शब्द वापस लेना चाहिए। मैंने इस देश की जन-भावनाओं को व्यक्त किया है। मैंने विचार-स्वातंत्र्य का प्रयोग यह जानकर भी किया है कि महाराज व्यक्तिगत रूप से असतुष्ट होंगे। आज आपके पास कोई औचित्य और तर्क नही है। काम-क्रोध, मद और मोह वश आपने मेरी निष्ठाओं पर भी अँगुली उठाई है। मुझे देशद्रोही कह दिया। साहस है तो देशद्रोही घोषित कीजिए।

रावण : मैं आरोप लगाता हूँ कि तू देशद्रोही है और आदेश देता हूँ कि यदि प्राण प्यारे हों तो यह राष्ट्र छोड़ जा। अन्यथा······

विभीषण : आपकी बुद्धि भ्रमित है। पितृ तुल्य होने के कारण आप जो चाहो सो कहो, या दण्ड दो। मीठी बातें कहने वाले सुगमता से मिल जाते हैं महाराज। हितकर परिणाम हो, ऐसा कहने वाले दुर्लभ होते है। काल के वशीभूत हैं आप। मैंने जो कुछ कहा, यदि अप्रिय लगा हो तो क्षमा करें। मैं यहाँ से चला जाऊँगा। तुम मेरे बिना सुखी रहो। लेकिन यह याद रखिए कि यदि युद्ध हुआ तो उसका कारण आप होंगे सिर्फ आप।

[रावण का क्रोधित रूप। विभीषण के साथ चार राक्षसों का उठना और भागना।]

सूत्रधार : रावण ने अपने दरबार में पहली बार सुना कि जनमानस उससे संतुष्ट नहीं हैं। पहली बार चार मंत्रियों ने उसकी सभा त्यागकर विभीषण का साथ दिया। लंका की राजनीति में बिखराव आ गया। विभीषण समर्थक रावण की कार्यवाही से खिन्न होने लगे। रावण धीरे-धीरे परास्त होता जा रहा है। उधर श्री राम के पक्ष में एकता, विश्वास और श्रद्धा है जहाँ विभीषण जा पहुँचा।

[मंच तीन पर प्रकाश।]

विभीषण : मैं राक्षसों के राजा रावण का भाई विभीषण हूँ। रक्षको, श्री राम को सूचना दो कि मुझे लंका से निष्कासित कर दिया गया है। मैं शरण में आया हूँ, मुझे शरण चाहिए।

[सैनिक का सुग्रीव के पास आना। सुग्रीव का राम के पास जाना।]

सुग्रीव : **(राम से)** प्रभु रावण का अनुज विभीषण शरण माँग रहा है। कहीं ऐसा तो नहीं कि ये हमारा भेद लेना चाहता हो। राक्षस बहुत मायावी होते है। कहीं इसे योजनापूर्वक रावण ही ने तो नहीं भेजा है।

अंगद : एकाएक विश्वासपात्र बनाना उचित नहीं होगा प्रभु। हो सकता है कि अवसर पाकर प्रहार कर दें। यह युद्ध का समय है। युद्ध में छल और झूठ का सहारा लिया जाता है।

जामवंत : प्रभु, वैसे यह समय और स्थान हमारे पास आने का नहीं है। फिर भी उससे सावधानीपूर्वक बात करनी चाहिए।

हनुमान : विभीषण के प्रश्न पर विचार गंभीरता से करना चाहिए। इसने माता सीता के वध का विरोध किया था। मेरे प्राण भी इसी विभीषण ने बचाये थे। गुप्तचरों ने बताया कि इसने सीता देवी को लौटाकर संधि का प्रस्ताव रावण के सम्मुख रखा था। इसके आने का काल और समय यही है प्रभु। इसका कथन दोषपूर्ण नहीं है, अतः सन्देह उचित नहीं। सागर-तट पर हमारी सेना है, इस

समय रावण से असहमत लोग हमारा साथ देने का प्रयत्न करेंगे। उसकी आशा होगी कि आप शरण के साथ राज्य भी दे देंगे। क्योंकि आपने महाराज सुग्रीव के साथ यही किया है। यदि हम इसे शरण देकर लंका में प्रचारित करवा दें तो रावण हतोत्साहित होगा और लंका की जनता रावण की आलोचना करेगी। मनोबल तोड़ना, विजय के लिए आवश्यक होता है प्रभु।

राम : मेरा भी मत है कि शरणागत की रक्षा करना ही हमारी सनातन संस्कृति है। मित्र भाव मे आने वाले के दोष गिनना उचित नही होता।

सुग्रीव : संकट के समय भाई को त्यागने वाला विश्वसनीय नही हो सकता प्रभु।

राम : इसे अपनी जाति से भय हो सकता है महाराज सुग्रीव। रावण को अपने इस भाई पर संदेह है। राक्षसों मे विद्वान विभीषण हमारे लिए उपयोगी प्रमाणित हो सकता है। फिर जो शरण आया है उसे वक्ष से लगाना ही मेरा कर्त्तव्य है। विभीषण के आने से राक्षसो में फूट पड़ेगी। तात सुग्रीव हर भाई भरत नही हो सकता। तुम्हारे जैसे सब मित्र भी नही हो सकते। मेरी आत्मा कहती है कि विभीषण को शरण न देकर, मित्रता के लिए आमंत्रित करो ताकि उसका सम्मान बना रहे।

पार्श्व स्वर

सुनि प्रभु बचन हरष हनुमाना। सरनागत बच्छल भगवाना।
सादर तेहिं आगे करि बानर। चले जहाँ रघुपति करुनाकर।
दूरिहि ते देखे दो भ्राता। नयनानंद दान के दाता।
बहुरि राम छबि धाम बिलोकी। रहे ठठकि एकटक पल रोकी।

श्रवन सुजस सुनि आयउँ प्रभु भंजन भव भीर।
त्राहि-त्राहि आरत हरन सरन सुखद रघुबीर॥

राम : कहिए लंकेश। घर मे सब क्षेम-कुशल है? लंका निवासी कैसे हैं? आप कैसे आए? हमारे लिए कोई आज्ञा हो तो कहिए। हम विद्वानो के सहयोगी है।

विभीषण : प्रभु, मैं आपके दर्शन पाकर धन्य हुआ। मेरे अपराध क्षमा कर मुझे अपनी शरण ले लीजिए प्रभु। शरण लें लीजिए।

सूत्रधार

रावन क्रोध अनल निज स्वास समीर प्रचंड,
जरत विभीषणु राखेउ दीन्हेउ राजु अखण्ड।
जो संपत्ति सिव रावनहिं, दीन्हि दिये दस माथ,
सोई संपदा विभीषणहिं सकुचि दीन्ह रघुनाथ।

सुग्रीव : महाराज विभीषण। आप हमारे मित्र है। हमें बताइये कि हम सेना को सागर के उस पार कैसे ले जायें।

विभीषण : श्री राम रघुवंशी है। उन्हें शरण लेनी चाहिए क्योंकि सागर ने ही इसका निर्माण करवाया था। (चौंककर) शार्दूल। ये तो गुप्तचर है। इसे पकड़ो।

[वानरों द्वारा मारपीट।]

वानर : वध कर दो इसका।

शार्दूल : महाराज रावण का दूत, शार्दूल हूँ मैं···

वानर : रावण का···! मार डालो इसे।

शार्दूल : दूतों का वध नही करते हैं। इन्हे रोकिये रघुनंदन।

राम : मत मारो इसे। रावण की गुप्तचर-संस्था उत्तम लगती है।

शार्दूल : मैं महाराज सुग्रीव से पृथक वार्ता चाहता हूँ क्योंकि मेरा संदेश महाराज सुग्रीव के लिए है। यह संदेश गुप्त है।

लक्ष्मण : (राम से) रावण चतुर है भैया। महाराज सुग्रीव से एकांत वार्ता चाहता है। उन्हें अपने पक्ष में करने का प्रयत्न तो नहीं है। एक ओर विभीषण द्वारा शरण मांगना और दूसरी ओर गुप्तवार्ता! ये कूटनीतिक चाल तो नही।

राम : हो सकता है अनुज। किन्तु सुग्रीव की मित्रता पर संदेह न करो।

लक्ष्मण : बालि से रावण की संधि थी भैया, ये क्यों भूलते है?

राम : बालि के साथ संधि भी समाप्त हो गई। बालि और सुग्रीव विरोधी थे। सत्ता परिवर्तन के साथ राजनयिक सम्बन्धो मे अंतर आता है।

सुग्रीव . यही कहो दूत।

शार्दूल : हमारे महाराज ने कहा है—"महाराज सुग्रीव आप वानरों के कुल मे उत्पन्न हुए है। आदरणीय ऋक्षराज के पुत्र है। आप महावीर है। मैं आपको अपना भाई मानता हूँ। आपके राज्य से मेरे राज्य की संधि भी है। मैंने यदि कोई लाभ नही पहुँचाया है, हानि भी नही पहुँचाई है। मैंने राम की पत्नी का हरण किया है, इससे आपको क्या लेना-देना? अतः हे प्रिय भाई, आप सेना लेकर लौट जाइये। लंका मे गंधर्वों को प्रवेश पाना कठिन है, तब मनुष्य और वानरों की तो बात ही क्या है? वैसे भी बालि से हमारी संधि है। सत्ता परिवर्तन के बाद सभी संधियाँ समाप्त नही होती हैं।"

वानर : मारो इसे। मार डालो।

शार्दूल : मैं दूत हूँ। राजा लोग दूत का वध नही करते है रघुनंदन। अतः वानरों को निर्देश दीजिए।

राम : शांत रहो। दूत अवध्य होता है।

शार्दूल : महाराज सुग्रीव, समस्त लोको को हिलाने वाले महाराज रावण से मैं उत्तर मे क्या कहूँ ?

सुग्रीव : कहना—"तुम वध योग्य हो । न मित्र हो, न भाई और न दया के पात्र हो । तुम केवल वध योग्य हो । मैं तुम्हारे कुटुंब का भी संहार करूँगा । लंका को भस्म कर डालूँगा । इंद्र और देवता भी रक्षा करें तब भी तुम मारे जाओगे । तुम बहुत बलवान हो तो जटायु राज को क्यों मारा ? श्री राम या लक्ष्मण जी के सामने महारानी सीता का हरण क्यों नहीं किया ? तूने सीता का हरण किया है अब श्री राम तेरे प्राणो का हरण करेंगे । जहाँ तक संधि का प्रश्न है तो महाराज बालि से रावण ने संधि के लिए प्रार्थना की थी । वह संधि उस दिन समाप्त हो गई, जब मैंने श्री राम से नई संधि कर ली थी । यदि वह संधि चाहता हो तो आदरपूर्वक जानकी को लेकर यहाँ आए और श्री राम से क्षमा माँग ले, अन्यथा अवशेष भी नहीं बचेंगे ।"

अंगद : महाराज ये गुप्तचर है । इसने सेना का मापतौल कर हमारी शक्ति का अनुमान किया है । इसे वापस न जाने दिया जाए । बाँध लो ।

वानर : इसकी आँखें फोड दो । जिह्वा काट लो ।

शार्दूल : रघुनन्दन रक्षा कीजिये ।

राम : छोड दो इसे । यह दूत बनकर ही आया था । इसे जाने दो । (चला जाता है ।) हमें सागर पार जाने पर विचार करना चाहिए ।

विभीषण : सागर से शरण माँगना उचित होगा प्रभु ।

लक्ष्मण : शरण ! हम शरण नही माँगते लंकेश । (राम से) आप धनुष उठाइये या मुझे आज्ञा दीजिये भैया ।

राम : एक बार सागर से प्रार्थना करनी चाहिए । यदि वह हमारे मार्ग में बाधक न बनें तो अच्छा है । अन्यथा एक युद्ध यहाँ हो जाएगा। रावण को समय चाहिए और हम कही सागर से उलझ गए तो वह यहीं घेरने का प्रयत्न करेगा लक्ष्मण । हमे महाराज विभीषण ने पहला सुझाव दिया है । यदि नही मानेंगे तो उनकी भी उपेक्षा होगी । मैं प्रार्थना करता हूँ ताकि सागर हमारी सहायता करे । शस्त्र उठाने से पूर्व एक बार प्रार्थना करनी चाहिए । मैं प्रार्थना आरंभ करता हूँ ।

[राम प्रार्थना करते हैं ।]

पार्श्व स्वर

बिनय न मानत जलधि जड़, गए तीनि दिन बीति ।
बोले राम सकोप तब भय बिनु होहि न प्रीति ॥

लछिमन बान सरासन आनू । सोषौं बारिधि बिसिख कृसानू ।
सठ सन बिनय कुटिल सन प्रीती । सहज कृपन सन सुन्दर नीती ॥
ममता रत सन ग्यान कहानी । अति लोभी सन बिरति बखानी ।
क्रोधिहि सम कामिहि हरि कथा । ऊसर बीज बए फल जथा ।
अस कहि रघुपति चाप चढ़ावा । यह मत लछिमन के मन भावा ।
कनक थार भरि मनि गन नाना । बिप्र रूप आयउ तजि माना ।
सभय सिंधु गहि पद प्रभु केरे । छमहु नाथ सब अवगुण मेरे ।

सागर : रघुनन्दन, क्षमा'' क्षमा । राघव, तुम कृपासिंधु हो, दानी हो । मुझ पर कृपा कीजिए । आपने यदि बलपूर्वक मार्ग लिया तो मेरा गौरव नहीं रह पायेगा प्रभु ।

राम : महाराज सागर । मैं इतने दिनों से प्रार्थना कर रहा हूँ कि आप मार्ग दे दीजिए लेकिन आप''''''

सागर : प्रभु, मैं रावण के निकट हूँ । मेरे क्षेत्र में उसके सैनिक अड्डे हैं । मैं उसके भय से भी नहीं आया । जब आपने अड्डे ध्वस्त करने का निश्चय किया तो मेरी प्रजा व्याकुल हो गई ।

राम : हमारी सहायता करो महाराज ।

सागर : प्रभु, आप सर्वशक्तिमान हैं और सहायता माँग रहे हैं ।'''रावण ने जल में सुरंगें बिछा दी है, इसलिए नौकाओं से जाना उचित नहीं है । वायुमार्ग असुरक्षित है ।

अंगद : तो वापस लौट जाएँ ?

राम : अंगद । महाराज को अपना विचार प्रकट करने दीजिए ।

सागर : प्रभु आपके साथ नल और नील हैं । ये कुशल मंत्री हैं । सागर जल में पत्थर फेंकने से सुरंगें नष्ट हो जायेंगी । उस क्षेत्र में एक सेतु का निर्माण कीजिए । सेतु ही स्थायी हल है, क्योंकि आपकी सम्पूर्ण सेना एक साथ लंका-तट पर नहीं जाएगी ।

लक्ष्मण : सेतु का निर्माण कैसे होगा ?

सागर : जब स्वयं प्रभु यहाँ हैं तो सौमित्र देखना, इनके प्रताप से सेतु बन जाएगा जिसका यश युगों-युगों तक गाया जाएगा ।

अंगद : इतने पत्थर ?

सागर : युवराज । नल और नील का चमत्कार देखना । उनके हाथ लगाते ही पत्थर सागर पर तैरते दिखाई देंगे । मुझे आज्ञा दीजिए प्रभु ।

राम : नल और नील, सेतु निर्माण का कार्य आरंभ कीजिए । इससे पूर्व

भूमिपूजन करेंगे तथा भगवान शिव की स्थापना होगी।

विभीषण : सागर के साथ आने से लंका में चिंता हो रही होगी।

सुग्रीव : ये समाचार अभी नहीं मिला होगा, अभी तो आपके पधारने का समाचार गुप्तचरों ने दिया होगा।

विभीषण : महाराज रावण सतर्क हैं। उन्हें आज का समाचार कोई अवश्य सुनाएगा।

[मंच एक पर प्रकाश।]

सारण : राक्षसराज की जय हो।

रावण : कहो सारण। क्या समाचार लाए हो?

सारण : राम चमत्कारी मानव है राजन्। सागर ने आपका साथ छोड़ दिया है। उधर राम ने सौ योजन का सेतु बाँधकर अभूतपूर्व चमत्कार कर दिखाया महाराज। सेतु बंध की बात विश्वसनीय नहीं लगती थी लेकिन सत्य यही है।

रावण : इसमें क्या चमत्कार है? तुम उसके सैन्य बल का अनुमान करो। और सुनो······भयभीत न हो।

सारण : महाराज, प्रश्न गंभीर है। राम का दूत हनुमान आया था उसने काफी क्षति पहुँचाई थी। आज सेना हमारे भू-क्षेत्र में प्रवेश करने वाली है। ऐसा साहस, आज तक किसी ने नहीं किया। क्षमा करें महाराज। राम सहज मानव नहीं लगता है। उसमें धैर्य, क्षमा, शील, शक्ति सब कुछ है। वह देवताओं का भी देवता है। मेरा विश्वास है···

रावण : क्या विश्वास है?

सारण : 'श्री राम' मानव नहीं स्वयं भगवान विष्णु ही है।

रावण : भयभीत होकर शत्रु को राम से 'श्री राम' कहने लगे हो। युद्धकाल में सेना और प्रजा में भय नहीं होना चाहिए। मैं यहाँ संगीत और नृत्य का आनन्द लेने बैठा हूँ, ताकि प्रजा समझे कि महाराज के लिए यह सामान्य बात है। याद रखो सारण। मैं इस राम को जन-स्थान पर मार सकता था लेकिन इसलिए नहीं मारा था कि वहाँ की जनता हमारे साथ नहीं थी। मैं चाहता था कि राम मेरी सीमा में आ जाए, फिर देखूँगा इसका अवतारी नाटक (अट्टहास) अब सेना आ जाने दो।

[नृत्य—संगीत—दृश्य।]

सूत्रधार

मैं सागर, देख रहा हूँ रावण का भय
जो व्यस्त है राग-रंग में।
व्याकुलता व्याप्त अंग-अंग में।

पर्वत की चोटी चढ़ि लंका अवलोकन
करते सुग्रीव लखन और रघुनन्दन।
क्रोधित हो उछले वानर राज,
कैसे बचता है राक्षस राज।
एकाएक हुआ आक्रमण।
रंग भवन में हुआ संक्रमण।
सुन्दरियों का चीत्कार।
सुग्रीव मुष्ठिका के प्रहार।

रावण को धरती पर झटक-पटक।
उत्तेजित कपीस ने की उठा-पटक।

सँभला रावण मायावी।
कहीं सरूप कहीं छायावी।
अब हैरान हुए सुग्रीव।
भागे, रावण ने छुड़ा ग्रीव।

[रावण का अंतःपुर से भागना।]

राम : महाराज सुग्रीव। ये आपने क्या किया? राजा को दुस्साहस नहीं करना चाहिए। यदि राजा विवेक का प्रयोग नहीं करेगा तो वह अपने अधीनस्थों को संकट में डाल देगा।

सुग्रीव : इसी ने सीताजी का हरण किया है प्रभु।

राम : जानता हूँ। इसका अर्थ यह नहीं कि शत्रु की शक्ति का अनुमान किए बिना उसके घर में कूद जाएँ। तुम्हें कुछ हो जाता तो'''

लक्ष्मण : मैं इस लंका को सागर में डुबो देता। राक्षस जाति को मुखाग्नि देने वाले नहीं मिलते।

राम : इससे सुग्रीव तो नहीं मिल जाते। मैं किसी को मुँह दिखाने लायक न रहता। आइये''''''

सुग्रीव : प्रभु, सेना ने लंका को चारों ओर से घेर लिया है। आपका आदेश हो तो आक्रमण कर दिया जाए।

लक्ष्मण : महाराज विभीषण। सुवेल पर्वत की चोटी से लंका हमारी दृष्टि में आती है। इसलिए उस चोटी पर सेना तैनात कर देना चाहिए।

विभीषण : वहाँ से वायुमार्ग पर दृष्टि रखी जाएगी। सेना उस पर्वत की तलहटी में है। हमने वृक्षों की ओट में व्यवस्थाएँ की हैं। जब आवश्यक होगा तो आकाशीय युद्ध वहीं से लड़ा जाएगा।

अंगद : सागर में जो सुरंगें बिछी हैं, उन्हें भी साफ करवा दिया गया है प्रभु। महाराज सागर की नौकाएँ हमारी सहायता कर रही हैं।

लक्ष्मण : हमारा आक्रमण जल, थल, नभ से एक साथ होना चाहिए।

राम : मेरा परामर्श है सौमित्र। हम रावण की आंतरिक शक्ति को कमजोर करें। उस वर्ग को मुखर होने का अवसर दें जो महाराज विभीषण के विचारों से सहमत हैं अथवा किसी कारण रावण से असन्तुष्ट है। हमें यहाँ के बुद्धिजीवियों और तटस्थ व्यक्तियों को अपने पक्ष में करना चाहिए।

सुग्रीव : इतना समय नहीं है प्रभु। तीनों सेनाएँ आक्रमण करेंगी तो रावण भयभीत होगा। दूसरे आक्रमण में उसके प्रासाद को घेर लेंगे। रावण को वहीं मार डालेंगे और राक्षसों को आत्मसमर्पण के लिए विवश कर देंगे।

हनुमान : महाराज सुग्रीव। प्रभु श्री राम का विचार उत्तम है। रावण को इन बीच कोई सहायता पहुँचा नहीं सकता है। यदि हम जन-विरोध पैदा कर सकें तो रावण की सरकार अलग-थलग पड़ जाएगी। प्रजा को युद्ध में झोंकने से पूर्व हमें एक प्रयत्न करना चाहिए।

विभीषण : महावीर। मैं युद्ध नहीं चाहता हूँ। युद्ध अनिवार्य हो तो ही होना चाहिए। हम अहिंसा के पक्षधर हैं।

लक्ष्मण : जो भी करना है, शीघ्रता से करना चाहिए। कहीं ऐसा न हो कि हम मंत्रणा, परामर्श और सिद्धांतों में उलझे रहें और वह दुष्ट भाभी का वध कर दे।

विभीषण : निश्चिंत रहो सौमित्र। सीताजी की सुरक्षा में लगे राक्षस मेरे विश्वासपात्र हैं।

राम : मेरा प्रस्ताव है कि एक बार हमारा दूत जाए जो रावण को कहे कि हम युद्ध नहीं चाहते। इसलिए संधि कर लो। हमारी शर्त है कि सीता को लौटाकर धर्मज्ञ विभीषण को राज सौंप दो। क्योंकि स्वेच्छाचारी शासक सत्ता में नहीं रहना चाहिए। अंगद, तुम दूत बनकर जाओ।

अंगद : जो आज्ञा। प्रभु।

[अंगद का प्रस्थान। मंच एक पर प्रकाश।]

रावण : उपस्थित राक्षसो, आप मेरे विश्वस्त हैं। अतः गुप्त मंत्रणा के लिए हम परस्पर मिलते रहेंगे। भाई कुंभकर्ण सो रहा है। विभीषण शत्रुओं से जा मिला और स्वयं को 'लंकेश' कहलाने लगा है। विभीषण कुल और राष्ट्रद्रोही है। वह जिस दिन हाथ लगेगा, उस दिन उसका वध कर दिया जाएगा। राम सुवेल पर्वत पर टिका हुआ है। वह सीता के लिए आया है। आप वह मार्ग बताइये जिससे सीता भार्या बन जाए और राम युद्ध में मारा जाए।

राक्षस : हम मायावी हैं महाराज। हम माया द्वारा सीता को मोहित करेंगे। आप राम का कटा हुआ सिर बनवा कर सीता के सामने भेजना। राम का कटा सिर देखकर वह आपको स्वीकार कर लेगी। इस समस्या का अंत हो जाएगा।

रावण : वाह! भगवान शंकर तुम्हें इस कार्य में सफल करें। यदि सफल हो गए तो उचित सम्मान और पुरस्कार पाओगे। जाओ, अशोक वाटिका जाओ, अपना प्रयत्न करो। लेकिन सरमा से सावधान रहना, वह रहस्य खोल सकती है।

माल्यवान : राजन्। हमें सम्पूर्ण स्थिति का विचार कर लेना चाहिए। वानर सेना से युद्ध जीतना निश्चित न होगा। फिर राम का पराक्रम हमने सुना है। उसने खर और दूषण को मार डाला तो तुमने ही कहा था कि भगवान के सिवा उन्हें कोई नहीं मार सकता है। राम भगवान न भी हो तो भी स्थितियाँ उसके पक्ष में हैं। इन्द्र, कुबेर, वरुण राम का साथ देंगे। लंका के निकट सागर और किष्किन्धा राम के साथ है ही। हमारी सीमाएँ चारों ओर से असुरक्षित हैं। विभीषण को 'लंकेश' घोषित कर राम ने कूटनीति का परिचय दिया है महाराज। आज आंतरिक रूप से जनता दो विचारों में विभक्त है। हनुमान के नाम से आज भी राक्षस भयभीत हो जाते हैं।

रावण : राम का बल पराक्रम बहुत सुन चुका हूँ। आप राम-राम कहकर एक-दूसरे का मुँह ताक रहे हैं। मैं आपको संग्रामभूमि का पराक्रमी वीर समझता हूँ।

माल्यवान : राजा वह ही होता है जो आवश्यकता होने पर संधि या विग्रह करता है। मैं तुम्हारा नाना भी हूँ। इसलिए कहता हूँ कि यदि स्वयं की शक्ति क्षीण हो रही हो अथवा समान शक्ति हो तो संधि ही उपयुक्त होती है। शक्ति अधिक होने पर ही युद्ध की ठानना चाहिए। इसलिए राम से संधि करना ही उचित है। तुम सीता को लौटा दो।

रावण : क्यों लौटा दूँ? क्यों करूँ संधि? क्या मैं शक्तिहीन हूँ?

माल्यवान : हाँ रावण। ऋषि, देवता, गंधर्व, तुम्हारा बड़ा भाई कुबेर और छोटा भाई विभीषण आज विरुद्ध हैं। जिन-जिनको तुमने परास्त किया है, वे आज एक साथ होकर तुम्हारा पराभव देखने को व्याकुल होंगे। मंत्रि परिषद के चार सदस्य राम से जा मिले हैं। जो हैं, उनमें भी एकजुटता नहीं है।

रावण : नाना जी। मैं सब को देख लूँगा। संकट काल में शत्रु और मित्र की परीक्षा भी होती है। असुर जाति अपमानित नहीं होने वाली है।

माल्यवान : तुम्हारे आत्मविश्वास की प्रशसा करता हूँ। लेकिन इस बार सुर-असुर सामने है। धर्म-अधर्म मे टक्कर है। यह युद्ध सास्कृतिक युद्ध है रावण। इसमे राक्षस सस्कृति नष्ट न हो जाये। आज हम अकेले पडते जा रहे है। तुम इस युग के श्रेष्ठ वीर और धर्म रक्षक भगवान राम से संधि कर लो। सधि में सबका हित है महाराज।

रावण : आपने शत्रु के हित की ही बात कही नाना जी। सब एक ही राग अलाप रहे है कि राम भगवान है। वाह रे भगवान ! जिसे बंदरों का सहारा लेना पड़ता है। वह एक मनुष्य है। मैं राक्षसों का स्वामी हूँ लेकिन तुम मेरा मूल्याकन राम से हीन ही क्यों करते हो ? तुम मित्र के रूप मे कही शत्रु तो नही हो।

माल्यवान : बहुत कटु और अनुचित बोलते हो रावण। मैं अपना देश और जाति कभी नहीं त्याग सकता, भले ही भगवान सामने आ जायें।

रावण : फिर मुझे किसका भय दिखाते हो। रावण किसी से भयभीत नही होता। याद रखो, रावण टूट कर दो खंड हो सकता है, झुक नही सकता। इसे आप चाहे तो मेरा दोष कह लें। मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि पृथ्वी को राक्षसो से विहीन करने की सौगन्ध उठाने वाले राम को जीवित नही लौटने दूंगा।

माल्यवान : मैं अनुमति चाहूँगा महाराज।

[प्रस्थान।]

रावण : इन्द्रजित। उत्तरी सीमा पर तुम और मैं।

[अंगद लंका की ओर बढ़ते हैं।]

राक्षस : महाराज की जय हो। एक वानर लंका में घुस आया है। उसके आने से राक्षस घबड़ाये हुए है। वह सभा मे प्रवेश चाहता है।

रावण : वानर !

प्रतिरावण : कही हनुमान तो नही आ गया।

रावण : ले आओ।

प्रतिरावण : भयमुक्त रहो रावण। तुम्हारा मुख शांत दिखना चाहिए।

पार्श्व स्वर

गयऊ सभा मन नेकु न मुरा। बालि तनय अतिबल बाँकुरा।
उठे सभा सद कपि कहूँ देखी। रावण सुर भा क्रोध विशेषी।

रावण : कौन है, वदर।

अंगद : रघुवीर का दूत हूँ दसकंधर।

रावण : कौन रघुवीर।

अंगद : जिसके छोटे भाई ने तुम्हारी वहिन के नाक-कान काट डाले, वही।

रावण : तेरा व्यक्तिगत परिचय क्या है। क्या नाम है, बाप कौन है ?

अंगद : अंगद नाम। बालि का बेटा। शायद कभी भेंट हुई होगी।

रावण : कौन बालि ?

अंगद : हो सकता है तुमको ध्यान न रहा हो। क्योंकि तब आपकी बुरी अवस्था थी। कांख में दबी जो थे। आपको मूर्छा भी थी।

रावण : अंगद, क्या तू ही बालि का बालक है। बालि पुत्र है तो पिता के हत्यारे का दूत कैसे है ? उनका दूत कहलाने में लज्जा तक नहीं है। यदि प्राणो के भय से उस घातक का दास बना हुआ है तो आज उस दासत्व को उतार फेंक और हमारे राज्य मे रहकर किष्किंधा पर राज्य करने का निश्चय कर। चाहो तो मैं तुम्हें राजनयिक मान्यता दे देता हूँ।

अंगद : बहुत चतुर हो रावण। प्रतिशोध जगाकर लोभ भी देते हो। किष्किंधा सुरक्षित है और मेरे अधीन है रावण। मैं वहाँ का युवराज हूँ। जहाँ तक प्रश्न श्री राम के दास होने का है तो यह गौरव का विषय है। मैं दास हूँ, बंधुआ नही हूँ दशानन।

रावण : तुम मेरे भतीजे हो अंगद। इसलिए कहता हूँ कि कुछ सेनापतियो को लेकर यहाँ आ जाओ। हमारे साथ संधि कर लो।

अंगद : सेवा करता परंतु मुझमें इतनी योग्यता नही है। आपके प्रस्ताव के लिए धन्यवाद। वैसे भी जहाँ हिंसा, भोगवाद, स्त्रियों का अपमान होता हो, वहाँ हम नही रहते है, आप चाहे तो महाराज विभीषण को भेज देते है।

रावण : अंगद, तुम विनोद करते हो। याद रखो कि वह निश्चर है। जब देखेगा कि मेरे बाणो से राम का सिर कट गया तो मेरे चरणों मे ही सिर रखता फिरेगा।

अंगद : नहीं। विभीषण निश्चर नहीं है। उसने ठीक ही किया है, क्योंकि तुम्हें तर्पण देने वाला और कोई बचने वाला कहाँ है। मैं कहता हूँ, तुम संधि कर लो। इसमें ही आपका हित शेष है।

रावण : संधि। तैयार हूँ लेकिन कुछ शर्तें है। पहले विभीषण आयें क्षमा माँगें। सेतु बाँधा है, उसे तोड़ दिया जाये। हनुमान मेरा बन्दी होगा। राम-लक्ष्मण मुझसे शरण माँगें।

अंगद : बस। यही या कुछ और अधिक ? यह तो माँगें साधारण हैं। आपने अपनी बहिन को भुला दिया क्या ?

रावण : ठीक अगद। मौन हो। मेरी बहिन का नाम तेरी जिह्वा पर नही आना चाहिए। उसके अपमान का बदला अवश्य लूँगा।

अंगद : महावीरो मे युक्त हमारी सेना से बदला कैसे लोगे ?

रावण : कौन है महावीर ? राम निर्वासित है और अपमानित भी। सुग्रीव शक्तिहीन है। जामवंत की वृद्धावस्था है। नल-नील शिल्पी हैं।

विभीषण उपदेश दे सकता है। केवल एक हनुमान है जिसने धोखे में हमें क्षति पहुँचाई है।

अंगद : क्या आपका कथन सत्य है रावण? सचमुच उसने कुछ हानि पहुँचाई है। वैसे वह हमारे यहाँ इतना महत्त्वपूर्ण नहीं है।

रावण : अंगद, तू भय मत दिखा। क्या देखा है रावण का यश, वैभव और पराक्रम। मैंने उठाया कैलाश पर्वत। मुझसे थर्राये यम, इन्द्र, कुबेर, वरुण मण्डल। मेरे साम्राज्य में अस्त नहीं होता सूर्य।

अंगद : धन्य-धन्य। करते हो प्रलाप। भेद नहीं क्या बंदी जन।

रावण : व्यंग्य बाण-प्रहार करता है। दुर्बुद्ध कपि।

अंगद : सत्य कभी-कभी व्यंग्य हुआ करता है।

रावण : बन्द कर वचन-व्यंगाघात। छोटा मुख और बड़ी बात। कायर भयातुर हुआ राम। करता है संधियाँ दर संधियाँ। मैं दसकंधर समरांगण के लिए बजा रहा घंटियाँ। योद्धा वह जो सिर ले या दे। कायर वह जो सिर नीचा कर ले।

अंगद : अधम, निराधम। मृत्यु के अधीन। घूमता है तू।

रावण : बन्दर। राजदूत है सो अपराध क्षम्य अन्यथा…

अंगद : अन्यथा के पश्चात था एक कपि
इस अन्यथा पश्चात आज मैं
फिर अन्यथा फल श्री राम शर
और धड़ से पृथक होगा
तेरा अभिमानी सिर।

रावण : दुर्वचनी कपि। बदला लूंगा। पुनः प्रवेश पर मृत्युदण्ड दूंगा।

अंगद : सुनी नहीं लोकोक्ति। अन्यायी होता है शीघ्र देश मुक्त। पापाध। चौखट पर सुनता नहीं, मृत्यु की आहट।

रावण : चुप वानर। करता है व्यर्थ उपदेश। स्वयं भू बना आचार्य। बकवादी। सिर होकर समझाता है।

अंगद : नहीं, राक्षस नहीं। मैं सिखलाना चाहूँ संधि। संधि साधन है। रक्त की नदी बहने से रुके। संधि साधन अहिंसा का, मानवता का। शोषण से मुक्त धरा हो, रक्त से मुक्त आकाश हो। मैं चाहता हूँ किलकारियाँ, सिंदूर युक्त नारियाँ, राखी युक्त कलाइयाँ।

रावण : गुणहीन। निर्वासित। स्त्री के लिए व्याकुल नर से संधि। असंभव।

अंगद : मेरे प्रभु की निन्दा। व्यर्थ है अंगद, तेरा जीवन व्यर्थ।

पार्श्व स्वर

जब तेहिं कीन्हि राम कै निन्दा। क्रोधवंत अति भयउ कपिंदा।
हरिहर निन्दा सुनइ जो काना। होइ पाप गोघात समाना।
कटकटान कपि कुंजर भारी। दुहु भुजदंड तमकि महि मारी।
डोलति धरनि सभासद खसे। चले भागि भय मारुत ग्रसे।
गिरत संभारि उठा दस कंधर। भूतल परे मुकुट अति सुंदर।

रावण : पकड़ो इस ढीठ वानर को। बाँध लो इसे।

अंगद : अज्ञान। जान, जानकी को। दे दे सठ। बन सुजान। पातकी। पातकों का फल पाएगा। अन्यथा कल। असुर शक्ति बखान। महज एक प्रलाप करता है तू। देखूँ असुर शक्ति कितनी है—और निराधम, देख श्री राम शक्ति। इस बालि पुत्र पद में है। ले मैं रहा। धरा पर पाँव।

अंगद : जौं मम चरन सकसि सठ टारी। फिरहिं रामु सीता मैं हारी।
कपि बल देखि सकल हियं हारे। उठा आपु कपि के परचारे।
गहत चरन कहि बालि कुमारा। मम पद गहें न तोर उबारा।

अंगद : मेरे पद स्पर्श करना उचित नहीं है रावण। एक तुम आज राजा हो। दूसरे, मेरे पिता के मित्र थे। तीसरे, आयु वृद्ध हो। श्रेष्ठ होगा कि आप श्री राम के चरण पकड़ लें।

[सन्नाटा। रावण आसन पर बैठता है।]

अंगद : रावण। यदि तुम पिता के मित्र थे तो भी मैं शुभचिंतक हूँ। यदि मैं श्री राम का दूत हूँ तो भी मेरी बात सुन…

पार्श्व स्वर

सुनि दशशीश। सिखावन मेरो
हरि पद विमुख लह्यो न काहू सुख
सठ। यह समुझ सवेरो।
बिछुरे सासे रवि मन नैनानिसें पावत दुख बहुतेरो।
भ्रमत श्रमित निसि दिवस गगन महँ, तहँ रिपु राहू बड़ेरो।
यद्यपि अति पुनीत सुर सरिता, तिहुपुर सुजस घनेरो।
तजे चरन अजहूँ न मिटत नित, बहिवो ताहूँ न केरो।
छूटे न विपत्ति भजे बिनु रघुपति, श्रुति संदेह विवेको।
काम क्रोध सब आस छोड़ि तू, होवहु राम कर चेरो।

सात

[मंच तीन पर सेना एवं पांच पर श्री राम आदि।]

सूत्रधार : मैं सागर हूँ। कल अंगद ने रावण को बहुत समझाया लेकिन नही माना। उसकी माँ कैकसी के बाद नाना माल्यवान 'संधि' के लिए प्रयत्नशील रहे। लेकिन सुरासुरजयी रावण को श्री राम एक निर्वासित दीन शत्रु दिखाई दिए। रावण ज्ञानी है। उसने नाना से कहा कि "मैं अज्ञ नही हूँ नाना। सीता को सोच-समझ कर लाया हूँ। उपदेशो से राक्षस धर्मात्मा नही बन जाएँगे। सीता को लौटा भी दूँ तो क्या राक्षस धर्मघातक स्वभाव छोड़ देंगे। असंभव। राक्षसों का हित लौकिक और अलौकिक रूप से युद्ध ही है— युद्ध।

पार्श्व स्वर

गर्जहिं तर्जहिं भालु कपीसा। जय रघुबीर कौसलाधीशा।
चले निसाचर आयसु मागी। गहिकर भिंडिपाल बरसांगी।
तोमर मुदगर परसु प्रचंडा। सूल कृपान परिधि गिरि खण्डा।

नानायुद्ध सरचाप धरि जातुधान बलवीर।
कोट कंगूरन्हि चढ़ि गए कोटि-कोटि रन धीर॥

जयति राम जय लछिमन जय कपीस सुग्रीव।
गर्जहिं सिंघनाद कपि भालु महाबल सींव॥

निसिचर सिखर समूह ढहावहि। कूदि धरहिं कपि फेरि चलावहिं।
उत रावन इत राम दोहाई। जयति जयति जय परी लराई।

धरि कुधर खण्ड प्रचण्ड मर्कट भालु गढ़ पर डारही।
झपटहिं चरन गहि पटकि महिं भजि चलत बहुरि पचारही।

एकु एकु निसिचिर गहिं पुनि कपि चले पराइ।
ऊपर आपु हेठ भट गरहिं धरनि पर आइ॥

बहु आयुध धर सुभट सब भिरहिं पचारि पचारि।
व्याकुल किए भालु कपि परिध त्रिसूलन्हि मारि॥

कोउ कह कहँ अंगद हनुमंता। कहँ नल नील दुबिद बलवंता।

[मंच दो पर मेघनाद।]

मेघनाद : अंगद। देख ले—युद्ध का परिणाम। बहुत डींग मारता था।

अंगद : मेघनाद। तू आज मेरा पराक्रम देख।

[युद्ध—मेघनाद की पराजय।]

[मेघनाद का पुनः युद्ध।]

पार्श्व स्वर

छल से बल से या कौशल से लड़ता था वह योद्धा रण में।
छुप जाता कभी प्रकट होता, दिन करता कभी निशा रण में।
लड़ते-लड़ते जब चूर हुई तब डोल उठी वानर सेना।
'रघुकुल के नाथ दुहाई है'—यह बोल उठी वानर सेना।

देखा जब रणभूमि मे वानर हैं लाचार।
आज्ञा ले रघुनाथ की लषण हुए तैयार।।

खांडों पर खाड़े खड़क उठें, बाणो पर बाण बोल उट्ठे,
बीरों का बांका युद्ध देख—पृथ्वी पाताल डोल उट्ठे।
छोड़ा जब रिपु ने मेघबाण, तब इधर समीर बाण छोड़ा,
वह लगा छोड़ने अग्निबाण, लक्ष्मण ने नीर बाण छोड़ा।
सब भाँति युद्ध मे इन्द्रजीत जब हारा साहस हीन हुआ,
उर्मिलानाथ के बाणों से मूर्छित हो-होकर दीन हुआ।

रावन सुत निज मन अनुमाना। संकट भयउ हरिहि मम प्राना।
बीरघातिनी छाड़िसि सांगी। तेज पुंज लछिमन उर लागी।
मुरुछा भई सक्ति के लागें। तब चलि गयउ निकट भय त्यागें।

मेघनाद : इसे पिता को दिखाऊँगा। एक आज मारा गया।

राक्षस : राम का भाई मारा गया। मेघनाद की जय हो। लंकेश की जय हो। (मेघनाद लक्ष्मण को उठाने में असफल होकर लंका लौटता है।)

पार्श्व स्वर

तब लगि लै आयउ हनुमाना। अनुज देखि प्रभु अति दुख माना।

राम : लक्ष्मण। लक्ष्मण उठो। बोलो भैया।

विभीषण : लंका के सुषेण वैद्य हैं प्रभु। वह मेरे मित्र है—उन्हें बुलाना होगा।

हनुमान : मैं जाता हूँ। अभी आया।

राम : अब मुझे सीता मिल भी गई तो क्या करूँगा? भैया उठो।

सुग्रीव : धैर्य रखिए प्रभु। धैर्य त्यागने से कुछ नही होगा।

राम : इसे कुछ हो गया तो मैं प्राण त्याग दूंगा महाराज। संसार मे पत्नी तो दूसरी मिल सकती है लेकिन भाई नहीं मिल सकता।

जामवंत : हनुमान आ गए प्रभु। वैद्यराज साथ हैं।

राम : मेरे भाई को बचा लीजिए वैद्यराज।

सुषेण : शत्रु का संरक्षण नही कर सकता हूँ।

विभीषण : आप मेरा साथ नही देंगे वैद्यराज?

सुषेण : नही विभीषण। तुमने राष्ट्र के शत्रु की शरण ले ली है। अब तुम

धर्महीन हो।

विभीषण : अच्छा तो क्या तुम्हारा कोई धर्म नही है। चिकित्सक का धर्म रोग का निदान और मानवता की सेवा है। क्या तुम्हें अपना कर्त्तव्य ज्ञात नहीं। इस नाते भी तुम्हे औषधि-उपचार करना चाहिए।

सुषेण : मानवता। धन्यवाद विभीषण। आपने कर्त्तव्य का बोध कराया। (लक्ष्मण की नाड़ी देखकर)। संजीवनी बूटी लानी होगी। लेकिन सूर्योदय से पूर्व। अत्यंत दूर पर्वत से कौन ला सकता है ?

हनुमान : मैं। मै लाऊँगा प्रभु। वैद्यराज मुझे उसका परिचय दो। औषधि का रंग रूप क्या है। मैं सूर्योदय से पूर्व उपस्थित कर दूंगा।

सुषेण : द्रोणगिरि पर मिलेगी। ज्वाला-सी चमकती है। जाओ, शीघ्रता से ले आओ।

राम : वीर तुम्हारे हाथ मे सूर्यवश की लाज है। शीघ्रता करना पवन-पुत्र।

पार्श्व स्वर

को नहि जानत हैं जग मे कपि संकट मोचन नाम तिहारो।
कपिपति की तुमने रक्षा की, कपियो को तुमने तारा है।
वन में अशोक के तुमने ही सीता का प्राण उबारा है।
अब जान डालकर लक्ष्मण मे राघव को पूर्ण सुखी करना।
जो सदा तुम्हारा ऋणी रहा, उसको फिर आज ऋणी करना।

हनुमान : जय श्री राम। (प्रस्थान)

राम : आँखें खोलो सौमित्र। देखो, मैं आज फिर साहस खो रहा हूँ। तू ही तो साहस बँधाता था भैया। यदि तुम्हें कुछ हो गया तो मेरा जीना ही निरर्थक है। इससे तो अच्छा था कि मैं युद्ध करता, कम से कम लक्ष्मण की ये स्थिति नही होती। हनुमान को भी बहुत देर हो गई है···

पार्श्व स्वर

देर हुई अब तक नही आये हनुमत बीर,
हाय विधाता किस तरह हृदय धरे यह धीर।
उधर कालनेमि ने रच ऐसा किया उपाय,
महावीर को मार्ग मे देर अधिक लग जाय।
चतुर अजनीलाल जब गए चाल यह ताड़,
चट लपेट लागूल मे निश्चर दिया पछाड़।
इस प्रकार उस मार्ग से काल नेमि को मार,
चले पवनसुत इस तरह करते हुए विचार।

हनुमान : हे सूर्य ध्यान रखना इतना संकट अब सूर्यवंश पर है।
लंका के नीच राहु द्वारा आघात—दिनेश अंश पर है।
इसलिए छुपे रहना तब तक जब तक न जड़ी पहुँचा दूँ मैं।
उस समय प्रकट होना भगवन जब सकट-निशा मिटा दूँ मैं।
आशा है स्वल्प प्रार्थना यह—सच्चे जी से स्वीकारोगे।
आतुर की आर्त अवस्था को—करुणा के साथ निहारोगे।
अन्यथा क्षमा करना भगवन, अंजनी तनय से पाला है।
बचपन से तुम जान रहे हो हनुमत कितना मतवाला है।

पार्श्व स्वर

बाल समय रवि भक्ष लिए तब तीनहुं लोक भयो अँधियारो।
ताहि सो त्रास भई जग को यह सकट काहु सो जात न टारो।

हनुमान : मुख में तुमको धर रखने का फिर आज क्रूर साधन होगा।
बन्दी मोचन तब होंगे जब लक्ष्मण का दुख मोचन होगा।

पार्श्व स्वर

उधर राम लछिमनहिं निहारी।
बोले बचन मनुज अनुसारी।
अर्धराति गई कपि नहिं आयउ।
राम उठाइ अनुज उर लायउ।
मम हित लागि तजेहु पितु माता।
सहेहु बिपिन हिम आतप बाता।
जैहउँ अवध कौन मुहु लाई।
नारि हेतु प्रिय भाइ गँवाई।

प्रभु प्रलाप सुनि कान, बिकल भए बानर निकर।
आइ गयउ हनुमान जिमि करुना महँ बीर रस।

हरपि राम भेटेउ हनुमाना। अति कृतग्य प्रभु मनु जाना।
तुरत बैद तब कीन्ह उपाई। उठि बैठे लछिमन हरपाई।

को नहिं जानत है जग में कपि सकट मोचन नाम तिहारो।

सूत्रधार : हनुमान जी ने संकट से मुक्ति दिला दी। यह प्रसंग वाल्मीकि 'रामायण' में नही है। तुलसीदास जी ने इसे जोड़ा है जिसमें भरत जी से भेंट भी शामिल है। यह प्रसग आपके हृदयों में स्थान पा चुका है—सो हमने भी उसे जोड़ दिया। वैसे मेघनाद ने नागपाश मार कर श्री राम और लक्ष्मण को अचेत कर दिया था। गरुण ने उन्हें मुक्त कराया था। इस बीच रावण ने पुष्पक विमान द्वारा श्री राम-लक्ष्मण को घेरकर वानरों को विलाप करते हुए सीता जी को दिखा दिया था। उसे विश्वास है कि सीता समर्पण

कर देगी लेकिन त्रिजटा ने रहस्य खोल दिया। उधर रावण को पता चला कि लक्ष्मण जीवित हो गए है तो वह हतप्रभ हो गया और युद्ध छेड़ दिया।

पार्श्व : ये धूम्राक्ष। सेनापति धूम्राक्ष। आ पहुँचा युद्ध भूमि में। कौन रोके इस महाशक्ति को। केवल एक—एक है ऐसे हनुमत। जिन पर विफल हैं। अस्त्र-शस्त्र, तंत्र-मंत्र।

[युद्ध। धूम्राक्ष की मृत्यु। राक्षस शव ले जाते हैं।]

पार्श्व : सुग्रीव को मारने का संकल्प ले। फिर पहुँचा वज्रदंष्ट्र। करेगा आज निर्भय देश, सुग्रीव का अंत।
अंगद ने ललकारा। आ सठ, पहले युद्ध कर मुझ युवराज से।

[युद्ध। वज्रदंष्ट्र का अंत। शव ले जाना।]

पार्श्व : खर-दूषण मारे थे श्री राम ने। भाग आया था जो—यह वही अकम्पन। प्रेरित किया था—इसने ही हरण को। भयभीत अन्तस है इसका। राजाज्ञा और राक्षस धर्म पालक अकम्पन। आ डटा मैदान में। हनुमान के प्रहारों से कम्पित है अकम्पन।

पार्श्व : महाबाहो। एक-तिहाई सेना का नायक प्रहस्त। जिसके लिए पुरुषार्थ मे देवता थे त्रस्त। धनुष-बाण युक्त प्रहस्त। नील ने रोका मार्ग। दुष्ट मैं तट से तट का निर्माता-यंत्री मात्र नहीं। मैं इस तट से उस तट तक पहुँचाता हूँ प्रहस्त।

[युद्ध। मृत। शव गये।]

रावण : क्या? धूम्राक्ष, वज्रदंष्ट्र, अकम्पन, प्रहस्त। युद्ध भूमि मे हुए सभी अस्त। मैंने समझा था नगण्य। स्वयं करूँगा संहार। कर डालूँगा भस्म। वानर रक्त से धरती को करूँगा तृप्त।

राम : *सीता हरण के क्षण से संचित था कोप। आज देखूँगा इसे।*

रावण : राक्षसो। तुम दूर ही रहो। मेरा पराक्रम देखो।

[कई वानर रावण पर टूटे। बाणों से चीखते हुए दूर गिरे।]

[परास्त सेना को देखकर राम का आगे बढ़ना।]

लक्ष्मण : *इसके लिए मैं ही बहुत हूँ भैया।*

[युद्ध। लक्ष्मण परास्त होते दिखाई दिए। हनुमान दौड़े।]

हनुमान : रावण। पहिचाना मुझे।

रावण : हनुमान। उस दिन लंका से भाग आया था...तुझे अपनी शक्ति का बहुत भ्रम है—तूने मेरे पुत्र अक्षय और सेनापति धूम्राक्ष को मारा था।

हनुमान : युद्ध कर। युद्ध।

रावण : तुझसे द्वंद्व युद्ध करूँगा।

[रावण द्वारा प्रहार। हनुमान द्वारा प्रहार। थप्पड़ युद्ध।]

रावण : शाबाश बन्दर। मैं तेरी प्रशंसा करता हूँ।

हनुमान : लेकिन मैं लज्जित हूँ रावण। मेरे प्रहार से मरा नहीं, मुझे धिक्कार है। फिर प्रहार करो रावण।

[मुक्का से छाती पर प्रहार। हनुमान का विचलित होना। नील का बीच में युद्ध, रावण का घबराना। बाण प्रहार से नील के घुटने टिक गए।]

लक्ष्मण : निशाचर। वानरों से नहीं, मुझसे युद्ध कर।

रावण : अच्छा हुआ आ गया। अब यमलोक की यात्रा करेगा।

[युद्ध।]

[बाण युद्ध में समान रहे। रावण प्रहार से लक्ष्मण विचलित।]

राम : खड़ा रह, रावण। अपराधी। आज बच नहीं पाएगा। तुमने नील और लक्ष्मण को आहत किया है। मेरे प्रधान वीरों को मारने वाले बचा प्राण।

[प्रहार। पराजित रावण लंका की ओर जाता है।]

[मंच एक पर प्रकाश।]

प्रतिरावण : रावण। तेरा अभिमान चूर हो गया। कहो त्रिलोक विजयी रावण। सुरासुर जयी, महावीर महाराज रावण—हनुमान का थप्पड़ नहीं झेल पाए? क्यों? आज तक इस तरह कभी नहीं लौटे हो रावण''' एक तपस्वी से परास्त हो गये तुम! याद है तुम्हें। ब्रह्माजी ने कहा था कि तुम्हें मनुष्यों से भय होगा। याद है इन्हीं श्री राम के पूर्वज अनरण्य ने शाप दिया था कि—मेरे ही वंश का एक श्रेष्ठ पुरुष तुझे समरांगन में मार डालेगा।

रावण : कहीं ये मनुष्य वही राम तो नहीं है।

प्रतिरावण : वेदवती से बलात्कार किया था तुमने। याद है। उसने शाप दिया था। एक शीलवान स्त्री ही तेरी मृत्यु का कारण बनेगी।

रावण : वेदवती''''''सीता वही तो नहीं है!

प्रतिरावण : और कैलाशपर्वत उठाया था तो उमा ने भी यही शाप दिया था तुम्हें। रावण नदीश्वर का वानर रूप देखकर तू हँसा था। याद है, उसने कहा था—मेरे समान रूप वाले तेरे कुल का नाश करेंगे।

रावण : याद है।

प्रतिरावण : तूने रम्भा और पुंजिकस्थला का शीलभंग किया था, तब तुझे शाप मिला था ना। आज स्त्री कारण है, वानरों के हाथ तेरे प्रमुख सेनापति मारे गए। राक्षसों का संहार हुआ। और तू स्वयं

राम के हाथों परास्त हुआ है रावण। सारा जग हँसेगा तुझ पर। आज तेरे शत्रु अनेक है। ये इन्द्र, कुबेर, वरुण, राम का साथ दे रहे है। तेरा पराभव हो सकता है रावण।

रावण : पराभव। मेरा पराभव। असंभव। मैं राम को मार डालूंगा।

प्रतिरावण : तुम्हारी पराजय तो निश्चित है रावण। युद्ध की पराजय से आहत होकर तुम स्वय पहुँच गए, क्या राजा का इस तरह जाना उचित है। नही। रावण तुम्हारा आत्मविश्वास डिग चुका है। तुम्हें कोई नही बचा सकता है।

रावण : बचा सकता है? मेरा भाई कुंभकर्ण—हां कुंभकर्ण। सैनिक'''

राक्षस : आज्ञा महाराज।

रावण : जाओ। कुंभकर्ण को जगाओ। उसे कहो कि मैंने बुलाया है।

[कुंभकर्ण सो रहा है। शख-ध्वनि, वाद्य बजते हैं।]

कुंभकर्ण : मुझे क्यो जगाया? राक्षसराज रावण कुशल से है? उन्हे कोई भय तो नही है, कहो। कोई भय हो तो मैं उसे उखाड़ फेंकूंगा।

राक्षस : महाराज। हमे वानरों से भय हुआ है।

कुंभकर्ण : वानरों से? वान''''''। महाराज कहाँ हैं?

राक्षस : दरबार मे है महाराज।

राक्षस : सावधान। वैवस्वत, यम, इन्द्र को पराजित करनेवाले वीर विश्रवा पुत्र कुंभकर्ण पधार रहे है।

[रावण उठकर खड़ा हो गया। कुंभकर्ण प्रणाम करता है। परस्पर आलिंगन।]

कुंभकर्ण : कौन-सा कार्य आ पडा है? किससे भय प्राप्त हुआ है राजन्?

रावण : 'राम' से! दशरथ द्वारा निर्वासित राम, समुद्र पार कर यहाँ आ गया है? हमारे कुल का नाश करने पर तुला है। वानरो की सेना सागर की तरह दिखाई देती है। हमारे कई वीर मारे गए हैं। वानरों से पहले भी हम नही जीत सके थे कुंभकर्ण। हमारा खजाना रिक्त हो गया है, नौजवान सैनिक मारे जा चुके है—तुम अनुग्रह करो कुंभकर्ण। लंकापुरी की रक्षा करो। रुककर—मैंने पहले कभी भी किसी से अनुनय नही किया। क्या करूँ? हनुमान का प्रहार मुझे विचलित कर गया है, तब तक राम आ गया, उसने अपमानित किया, इससे तो प्राण ले लेता।

कुंभकर्ण : ये तुम्हारे कर्मों का फल है। राजसिंहासन पर बैठकर तुम बधु-बाधवों को भूल गए। तुम्हे जिनका कृतज्ञ होना था'' कृतघ्न निकले। पद पर बैठे व्यक्ति को याद रखना चाहिए कि कल वह पगडंडी पर आ सकता है। तुम धर्मात्मा होने का पाखण्ड करते रहे और पापकर्म में लिप्त रहे। अधीनस्थों को तनाव मे रखने

वाले अधिकारी का अंत यही होता है राजन। जो राजा देशकाल मे उचित परामर्श देने वाले साथियो की उपेक्षा करता है, नीति को अपनी बुद्धि से परिवर्तित करता है, उसे एक न एक दिन यह दिन देखना ही पड़ता है।

रावण . मैंने मंत्रियों का परामर्श सदैव माना है।

कुंभकर्ण : उन मंत्रियो का परामर्श माना जो धृष्टतावश अपने स्वार्थ के लिए तुम्हारे मन के अनुकूल बातें करते थे। अपना हित साधने वाले मत्री राजा को भ्रष्ट करने मे लगे रहते है और एक दिन राजा का अत भी करवा देते हैं। ये तो राजा पर निर्भर है कि वह मंत्रियों के व्यवहार को पहचान ले। चाटुकारिता, प्रशंसा प्रिय राजा घूसखोरों से घिरा होता है। उसका अंत भी यही होता है।

रावण : मैंने सबका कहना माना था ? लेकिन······

कुंभकर्ण : विभीषण को राष्ट्रद्रोही किसने घोषित किया ? उसके साथ चार मंत्री भी चले गए। भाभी मंदोदरी का परामर्श न मानकर उनका अपमान किसने किया ? छलपूर्वक दूसरे की पत्नी का हरण कर लाए, तब तुम्हे रोका गया लेकिन नही माने। तुमने बिना सोचे-समझे जो कर्म किए है उनका फल सामने है। अब भयभीत क्यो हो ? एक स्त्री के पीछे कुल, जाति और देश को मृत्यु के द्वार तक पहुँचा दिया।

रावण : अब युद्ध का आधार सीता नही है कुंभकर्ण। ये राम राक्षस-संस्कृति को ही समाप्त करना चाहता है।

कुंभकर्ण : अपने अपराध को छिपाने अथवा छोटे कर्म को महान बताने के लिए जाति और देश का नाम ही लिया जाता है ताकि स्वार्थ का स्वरूप राष्ट्रीय हो जाए।

रावण : तुम आचार्य की तरह उपदेश दे रहे हो कुंभकर्ण। मैंने बहिन के अपमान का बदला लिया था।

कुंभकर्ण : बहुत चतुर हो भाई। अपमान, जाति, देश की बातें कर रहे हो। सत्य को स्वीकार करो कि तुम जिद्दी, उच्छृंखल, घमण्डी हो। तुम्हें सीता प्रिय थी। आज भी सत्य को छिपा रहे हो।

महोदर : महाराज कुंभकर्ण ने राक्षसराज से जो कुछ कहा वह नीतिगत नही है। राम ने जनस्थान मे बलशाली राक्षस मार डाले थे। कई भागकर आए थे जो आज भी लंकापुरी में हैं।

रावण : मैंने जो कुछ किया, उसकी चर्चा का यह क्षण नही है। मैंने एक बात नही मानी, मान लिया। लेकिन तुम्हे यदि मुझसे प्रेम है, जाति, संस्कृति और इस देश से प्रेम है तो रक्षा करो कुंभकर्ण। बन्धु वही होता है जो संकट मे सहायक होता है। तुम सहायता

करो मेरे भाई।

कुंभकर्ण : शोक न करो राजन। संताप व्यर्थ है। मन को स्वस्थ कर विश्राम करो। मैंने जो कुछ कहा वह बन्धु-भाव से कहा था। अनीति होने पर भी भाई का साथ देने वाला ही भाई होता है। आज शत्रु को परास्त करना ही धर्म है। आज राम का सिर काटकर लौटूंगा। सबके आँसू पोंछ दूंगा—बस एक सीता के आँसू बहेंगे। आज सुग्रीव रक्त से लथपथ होकर भूमि पर गिरेगा। 'राम' तुम तक मेरा वध करके ही आ सकता है भाई। शत्रुओं से जूझने के लिए किसी ओर न देखो तुम। मुझे आज्ञा दो राजन। हनुमान जीवित नहीं बचेगा महाराज।

महोदर : व्यर्थ का आलाप कर रहे हो महाराज। राम से युद्ध सहज नहीं है। सेना में प्राणों का संकट छाया है। जनता में निराशा है। ऐसे समय सोये हुए सर्प को जगाना चाहते हो? (रावण से) एक कार्य करो राजन'''आप घोषणा कर दीजिए महाराज कुंभकर्ण के साथ, मैं महोदर सहित पांच महायोद्धा राम का वध करने गए हैं। हम युद्ध में जीतकर लौटें तो संकट समाप्त। यदि घायल होकर लौटे तो हम कह देंगे कि हमने राम-लक्ष्मण को खा लिया है। आप हाथी पर ड्योढ़ी फिरवा देना। वीर सेवकों को पुरस्कार दे देना। सेनापतियों को अनुलेपन कर भोग हेतु दासियाँ देना। राजकीय स्तर पर प्रचार करना कि मैं राम-लक्ष्मण को खा गया। इस बीच सीता से एकांत में चर्चा करना, उसे लोभ देना। यदि मद्यपान कर ले तो फिर तुम्हें शाप से भी भय नहीं रहेगा। वह आपकी सेवा में आ जाएगी। महाराज—यह कूटनीति है।

कुंभकर्ण : महोदर। तुम जैसे मंत्रियों के कारण ही देश विनाश के गर्त में डूबा जाता है। *क्या महाराज रावण उस स्त्री के बिना जीवित* नहीं रह पायेंगे? इतनी ही प्रिय है तो जाओ, करो बलात्कार और खंड-खंड होने दो ये मस्तक। यदि वह प्रिया नहीं भोग्या है तो नीच विचार त्याग दो। ये चिकनी-चुपड़ी बातें मूर्ख और प्रशंसा पाने के लिए दूसरे की मिथ्या प्रशंसा करने वाला दुरात्मा ही होता है महोदर। चाटुकार अपने को बुद्धिमान समझते हैं। इन चापलूसों ने ही इस देश को चौपट कर दिया है। अब युद्ध भूमि में निर्णय होगा—केवल युद्धभूमि में।

[रावण द्वारा मालाएँ पहनाना।]

रावण : जाओ महावीर। शत्रुओं का संहार करो।

[मंच तीन पर प्रकाश।]

[प्रस्थान की ध्वनियाँ। युद्धक्षेत्र से वानरों का भागना।

अंगद रोकने का प्रयत्न करते हुए।]

विभीषण : प्रभु, मेरे बड़े भाई महाराज कुंभकर्ण है ये। इन्होंने सदैव मेरा साथ दिया। धर्मात्मा और नीतिवान है। आप आज्ञा दें तो मैं प्रणाम कर आऊँ।

राम : अवश्य लंकेश। बड़ा भाई पिता के समान है। अपने अग्रज से कहना हम युद्ध नही शांति चाहते है। यदि संभव हो तो शांति स्थापित हो जाए।

पार्श्व स्वर

देखि विभीषनु आगे आयउ। परेउ चरन निज नाम सुनायउ।
अनुज उठाय हृदय तेहिं लायो। रघुपति भक्ति जानि मन भायो।

विभीषण : आपके चले जाने के पश्चात मुझे महाराज रावण ने देश से निकाल दिया था भैया। इसलिए मैंने श्री राम की शरण ले ली है।

कुंभकर्ण : उचित नही किया विभीषण। शत्रु की शरण जाना कभी उचित नही है। शरण दासत्व का प्रतीक है। तुम्हे ऐसा नहीं करना था।

विभीषण : मैं क्या करता, कहाँ जाता? बड़े भाई कुबेर श्री राम के पक्ष में है। सागर, इन्द्र, वरुण सहित सभी राजा श्री राम की ओर से। कही भी जाता तो आना यही पड़ता।

कुंभकर्ण : मेरे पास आना था तुम्हे। मैं इस अनर्थ को रोकता विभीषण, मैं रोकता।

विभीषण : आपको निद्रा से कैसे उठाता?

कुंभकर्ण : निद्रा! इस निद्रा ने ही यह दिन दिखाया है। मैं तब तक सोता ही रहा, जब तक सब कुछ चौपट हो गया।

विभीषण : फिर मेरा दोष क्या है भैया। मेरे प्रयत्न भी सफल नहीं हुए।

कुंभकर्ण : दोष है। तुमने जाति और देश के साथ द्रोह कर दिया। इस संकट का कारण चाहे जो हो, व्यक्ति के नाते तुम्हारा धर्म है कि संकट में भेदभाव भूलकर एक हो जाते। संकट से जूझते। तुमने देश-धर्म ही छोड़ दिया। अपना देश और धर्म कभी नही छोड़ना चाहिए।

विभीषण : निष्कासित होकर, देश की क्या सेवा कर सकता था? मुझे कही-न-कही शरण लेनी ही थी। यदि लंका मे रहता तो मेरा वध कर दिया जाता।

कुंभकर्ण : लंका से बाहर स्वतंत्र रहकर, जनता को अपने विचार से सहमत करते, सेनापतियो को अपने पक्ष मे करते, जन दबाव बढ़ता तो राक्षसराज को संधि करनी पड़ती। किन्तु तुम शत्रु से राजतिलक भी करवा चुके? यह तुम्हारी राजनैतिक महत्त्वाकांक्षा और

अवसरवादिता है विभीषण। कोई भी देश उस समय शक्तिहीन होने लगता है जब वहाँ के प्रमुख नायकों में राजसत्ता हथियाने के लिए होड़ लग जाती है। तुमने धर्म, नीति की आड ले रखी है, केवल आड।

विभीषण : नहीं भैया। मैं श्री राम की शरण हूँ। श्री राम सामान्य मानव नहीं हैं। भगवान है भगवान। एक पूर्ण अवतार।

कुंभकर्ण : बुद्धिजीवी बहुधा भीरु ही क्यों होते है विभीषण। नीति-न्याय, शोषण के विरुद्ध संघर्ष का आह्वान तो करते हो लेकिन उसका अंग क्यों नही बनते हैं? यदि राम भगवान भी है, तो उससे भय कैसा? तुमने जो किया है, उस कलंक से कोई भगवान भी तुम्हे नहीं बचा सकता। ये कैसे भूल गए कि देश से बड़ा कोई धर्म नहीं होता है। पहले देश होता है फिर धर्म। यदि देश ही नहीं बचेगा तो उस धर्म को पूछने वाला कौन होगा? तुम पूर्ण अवतार की बात करते हो। वैसे ज्ञानी हो लेकिन यह कैसे भूल गए कि रंध्रो और द्वारों के मध्य स्थित 'पुरुष' है, वही 'ब्रह्म' है—पूर्ण ब्रह्म। तब दोषों से मुक्त रहने वाला हर व्यक्ति अवतार ही है। तुम भी अवतार हो विभीषण—अवतार।

विभीषण : भैया आप नीतिवान है। श्री राम की शरण में आना अनुचित नही है। यदि आपको मुझसे स्नेह है तो आप भी सर्वशक्तिमान भगवान श्री राम की शरण मे आ जाइये।

कुंभकर्ण : विभीषण, यह प्रश्न देश से जुडा है। देश संकट मे है। यह संकट किसी भगवान से है तो मैं उस भगवान से युद्ध करूँगा। देश के लिए प्राण देने वाला किसी भगवान से कम नही होता है। तू जा, अपने भगवान से कह देना, अपनी सेना लेकर सागर के उस पार चला जाए अन्यथा आज मैं तब लौटूँगा जब लंका शत्रु-भय मुक्त हो जाएगी।

पार्श्व स्वर

नाथ भूदराकार सरीरा।
कुंभकरन आवत रनधीरा।
एतना कपिन्ह सुना जब नाना।
किलकिलाए धाए बलवाना।
श्री मारुत सुत मुठिका हन्यो।
परयो धरनि व्याकुल सिर धुन्यो।
पुनि उठि तेंहि मारेउ हनुमंता।
घुर्मित भूतल परेउ तुरन्ता।

पुनि मन नीलहिं अवनि पछारेसि।
जहँ तहँ पटकि पटकि भट डारेसि।
मुरुछा गई मारुतसुत जागा।
सुग्रीवहि तब खोजन लागा।
जहँ तहँ भागि चले कपि रीछा।
बिसरी सबहि जुद्ध कै ईछा।

[विभीषण का लौटना। कुंभकर्ण से भयभीत वानर। सुग्रीव ने कुंभकर्ण को रोका। उसने सुग्रीव को पकड़ लिया। अचेत हो गए। वानरों में भगदड़। अंगद घायल और हनुमान से युद्ध किया। घायल हुए। सुग्रीव फिर भिड़े। उसने उठाकर पटक दिया। लक्ष्मण ने युद्ध आरंभ किया।]

कुंभकर्ण : लक्ष्मण। मैं तेरी प्रशंसा करता हूं, तुम निर्भय होकर युद्ध कर रहे हो। मेरे सामने कोई टिकता नहीं है, लेकिन सुमित्रानन्दन तुमने मुझे प्रसन्न किया। मैं केवल राम को मारना चाहता हूं, इसलिए अनुमति दो ताकि मैं राम के पास चला जाऊं।

लक्ष्मण : कुंभकर्ण, मैं तुम्हारी देशभक्ति की प्रशंसा करता हूं। तुम्हारी अंतिम अभिलाषा श्री राम से युद्ध करने की है। वे रहे श्री राम।

राम : महाबली कुंभकर्ण। युद्ध की कामना है तो मैं तैयार हूं।

कुंभकर्ण : महाराज रावण की शपथ है मुझे। आज छोड़ूंगा नहीं राम।

राम : जब मृत्यु निकट होती है तो ऐसा ही प्रलाप होता है कुंभकर्ण।

कुंभकर्ण : मृत्यु तो तेरी निकट आ गई है राम। तभी तू यहां तक चला आया। हमारे कुछ सेनापतियों का वध कर तू समझता है युद्ध जीत लिया।

राम : युद्ध में धर्म की विजय होती है कुंभकर्ण। और आज तुम अधर्म के पक्षधर हो।

कुंभकर्ण : अधर्म। कैसा अधर्म? धर्म धारणा है राम। महाराज रावण से अधिक धर्मज्ञ कोई नहीं।

राम . स्त्रियों का छल पूर्वक हरण कौनसा धर्म है कंभकर्ण? ऋषियों, मुनियों का वध करना क्या धर्म है? क्या यही धर्म है कि भाई की सम्पत्ति को हथिया लो? स्त्रियों को पाप की दृष्टि से देखो? जो तुम्हारे भाई ने किया।

कुंभकर्ण : हां। धर्म है। महाराज रावण ने कोई अधर्म नहीं किया है। राक्षस संस्कृति में स्वतत्रता, स्वेच्छा से सुख भोग की आज्ञा है। इसलिए राक्षसों का आहार मांस मदिरा है, इसलिए स्त्रियों का हरण करते हैं। हमारी संस्कृति को नष्ट करने वालों को दण्ड देना

हमारा धर्म है।

राम : लेकिन हम मानव हैं कुंभकर्ण। हमारा विश्वास मर्यादाओं में है। जो मानव अन्य स्त्रियों को पाप दृष्टि से देखता है, उसे हम राक्षस मानते है। उच्छृंखलता, भोगवाद हमारी संस्कृति मे पाप-कर्म है। हमारी आस्थायें दया, करुणा, मैत्री और त्याग में है। जो इन नीतियों के विरुद्ध आचरण करता है। हम उसे ही असामाजिक कहते है, राक्षस समझते है।

कुंभकर्ण : राक्षस किसी की कृपा नही चाहते हैं। हमारी भुजाओं में बल है, हमारी सेनायें विश्व की श्रेष्ठ-शक्ति है। हमारे शस्त्रों के सामने ये वानर कहाँ टिकते हैं?

राम : आत्मविश्वास मानव की सबसे बड़ी शक्ति है कुंभकर्ण। हमारा आत्मविश्वास ही राक्षसों को आज तक परास्त करता आया है। हम लंका की ईंट मे ईंट बजा देंगे।

कुंभकर्ण : लंका की ईंट से ईंट। लंका मेरा राष्ट्र है राम। अपने देश के लिए राक्षस प्राण दे देंगे। इस धनुष की दम पर ऊँचे बोल बोलने वाले, लंका की चौखट को छू भी नहीं पाओगे।

पार्श्व स्वर

भा अति क्रुद्ध महाबल बीरा, कियो मृगनायक नांद गंभीरा।
भागे भालु बलीमुख जूथा, बृकु बिलोकि जिमि मेष बरूथा।
यह निसिचर दुकाल सम अहई, कपि कुल देस परन अब चहई।
कृपा बारिधर राम खरारी, पाहि-पाहि प्रनतारति हारी।
सकरुन बचन सुनत भगवाना, चले सुधारि सरासन बाना।
राम सेन निज पाछे घाली। चले सकोप महाबल साली।
खैंचि धनुप सर सत सधाने, छूटे तीर शरीर समाने।
लागत सर धावा रिस भरा, कुधर डगमगत डोलति धरा।
लीन्ह एक तेहिं सैल उपारी, रघुकुल तिलक भुजा सोई काटी।
धावा बाम बाहु गिरि धारी, प्रभु सोउ भुजा काटि महिं पारी।
काटें भुजा सोह खल कैसा। पच्छहीन मंदर गिरि जैसा।
उग्र बिलोकन प्रभुहिं बिलोका, ग्रसन चहत मानहुँ त्रिलोका।
तब प्रभु कोपि तीव्र सर लीन्हा, धर ते भिन्न तासु सिर कीन्हा।
धरनि धसइ धर धाव प्रचंडा, तब प्रभु काटि कीन्ह दुई खंडा।

राक्षस : महाबली कुंभकर्ण मारे गए। (भागते हुए।)

वानर : श्री राम की जय…श्री राम की जय…

आठ

सूत्रधार : श्री राम ने कल कुंभकर्ण का वध कर दिया। चाचा के वध का समाचार सुनकर देवान्तक, परान्तक, त्रिशिरा और अतिकाय फूट-फूट कर रोए। इतना ही नहीं, राक्षसराज रावण के विलाप ने राक्षसों के आत्मविश्वास को हिला दिया। उसकी दाहिनी भुजा कट गई। पिता को समझाकर रावण के पुत्र युद्ध के लिए गए। लेकिन अंगद ने नरान्तक हनुमान ने देवान्तक और त्रिशिरा, नील ने महोदर और ऋषभ ने महापार्श्व को मार डाला। 'अतिकाय' ने युद्ध का पाँसा पलटा। वानर सेना पराजित होने लगी लेकिन लक्ष्मण ने अतिकाय का वध कर रावण को चुनौती दे डाली। अब···रावण क्या करे? हाँ अभी उसका पुत्र इन्द्रजीत है जिसने लक्ष्मण को मृत्यु के निकट पहुँचा दिया था। वही इन्द्रजीत युद्धभूमि में पहुँचा। सुग्रीव ने कुंभ और हनुमान ने निकुंभ को तथा श्री राम द्वारा मकराक्ष का वध होने पर रावण शोक में डूब गया। लेकिन मेघनाद अभी मौजूद है। उसने युद्ध का पासा पलटने के लिए मायावी चाल का सहारा लिया और सीता जैसी स्त्री को लेकर युद्धभूमि में आ गया।

[मंच तीन पर प्रकाश।]

हनुमान : (आश्चर्य से।) माता सीता। (पत्थर उठाकर) ठहर तू।

[इन्द्रजीत सीता के बाल खींचता है।]

सीता : हा राम। हा राम। मुझे बचा लो राम। (विलाप।)

हनुमान : दुरात्मा। तेरा विनाश निश्चित है, तभी तो माता के केश स्पर्श कर रहा है। धिक्कार है पापी। दुराचारी। तेरा यह कृत्य नीचतापूर्ण है अनार्य। स्त्री पर अत्याचार करने वाले, तुझे नरक में भी स्थान नहीं मिलेगा। (पत्थर लेकर दौड़ना।)

मेघनाद : मूर्ख बन्दर। ये प्रहार किस पर कर रहा है? इसी सीता के लिए राम और तुम सब यहाँ आए हो—मैं इसे मार डालूँगा। फिर तुझे, तेरे राम, सुग्रीव का भी वध कर डालूँगा।

हनुमान : स्त्रियों को मारना पाप है मेघनाद।

मेघनाद : शत्रु को पीड़ित करने के लिए किया गया प्रत्येक कर्म उचित होता है। मैं राम की प्यारी सीता को आज मार डालूँगा। ये लि···

सीता : (विलाप।) हा राम······(चीख।) इन्द्रजीत का अट्टहास। हनुमान पत्थर रखते हुए रो उठते हैं। वानर भागते हैं।

हनुमान : युद्ध से पीठ मत दिखाओ। सीता के वध का बदला लो।

[राक्षसों के साथ युद्ध। वानरों की विजय।]

हनुमान : अब लौट चलो। हम जिन सीता के लिए युद्ध कर रहे थे, उन्हें मेघनाद ने मार डाला। इसकी सूचना श्री राम और महाराज सुग्रीव को देनी होगी।

मेघनाद : मैं निकुम्भला देवी के मंदिर जाता हूँ।

विभीषण : (मार्ग में।) क्या हुआ हनुमान। तुम आज पहली बार इतने दुखी···

हनुमान : मेघनाद ने सीता माता का वध कर दिया लंकेश। (फफक पड़ना।)

विभीषण : क्या ? तुम्हें धोखा तो नही हुआ है ?

हनुमान : नही।

जामवंत : मै युद्ध का स्वर सुनकर तुम्हारे पास आ रहा था पवनपुत्र···क्या बात है महावीर ? तुम और विलाप ! क्या हुआ ?

विभीषण : सीताजी को मार डाला।

जामवंत : मार डाला ! किसने ?

विभीषण : मेघनाद ने ऋक्षराज। चलो, प्रभु को सबसे पहले सूचना दो, फिर उनका जो आदेश हो, उसे पूरा करो।

हनुमान : (राम से।) प्रभु। अनर्थ हो गया प्रभु।

राम : क्या हुआ हनुमान ? (सबसे) क्या बात है, क्या हुआ ? अंगद कहाँ है ?
(अंगद पहुँच जाता है।) नल-नील···(दिखाई देते है) क्या हुआ, सब कुशल से है फिर हनुमान···

लक्ष्मण : क्या बात है ऋक्षराज।

विभीषण : मेघनाद ने सीताजी को मार डाला।

राम-लक्ष्मण : क्या ? (राम का अचेत होना।) लक्ष्मण उन्हे लेकर बैठते है।

लक्ष्मण : भैया। अब कैसे है ?

राम : लक्ष्मण। सीता को मार डाला। मैंने कौनसा अधर्म किया था। (विलाप।)

लक्ष्मण : धर्म अनर्थों मे नही बचा पाता है भैया, इसलिए मुझे निरर्थक लगने लगता है। धर्म सुख का साधन नही है। यदि धर्म-अधर्म होता तो रावण जैसे पापी को नरक मे होना चाहिए था। उस पर कोई संकट नही है। यहाँ तो उल्टा है, अधर्मी खुश है, पापी सुख मे है।

राम : लक्ष्मण, मेरे अधर्मों का ही फल मिल रहा है मुझे।

लक्ष्मण : नही भैया। आज जो अधर्मी हैं उनके पास ही धन बढ रहा है, वे ही समस्त सुखों का भोग कर रहे हैं। जो धर्म पर चलते हैं वे दुखी। जो धर्म की आड़ लेकर पापकर्म मे लीन हैं, वे ही धर्मात्मा

समझे जाते है।

राम : पता नही मुझसे क्या भूल हो गई है जिसका यह फल मिल रहा है ?

लक्ष्मण : आपसे भूल नही हो सकती भैया। आपने पूज्य पिता के कहने पर राज्य त्याग दिया। वन मे सत्य पर डटे रहे। सत्य का परिणाम अपमान ही मिला।

राम : मेरा भाग्य ही ऐसा है भैया। मुझे पिताजी ने त्याग दिया था और आज सीता ने भी त्याग दिया। मैंने कभी धर्म का त्याग नहीं किया था फिर...

लक्ष्मण : धर्म, चेतनाशून्य होता है। चेतनाशून्य प्रतिकार नही कर सकता है। तब धर्म द्वारा अधर्म का वध कैसे संभव है। आप केवल धर्म और भाग्य को मानते रहे है भैया। आप वीर है। आपको भाग्य को छोडकर पुरुषार्थ करना चाहिए।

राम : अब मै कुछ नही करूँगा। ये युद्ध व्यर्थ हो गया।

लक्ष्मण : ऐसा नही हो सकता है तात। आपने पिता के वचन पूर्ण कर राज्य भार ग्रहण करने का व्रत लिया था। उसका क्या होगा ?

राम : अब सीता के बिना कैसा राज्य, लक्ष्मण। मेरे जीने का भी कोई अर्थ नही है। भैया तुम लौट जाओ। अयोध्या जाकर भरत की सहायता करना। महाराज सुग्रीव ''सीता को मार डाला...

सुग्रीव : प्रभु। आप ऐसे विलाप करेंगे तो सेना का क्या होगा ?

राम : अब सेना लेकर लौट जाओ सुग्रीव। अब युद्ध किसके लिए। मैं विभीषण को महाराज बनाने का वचन पूरा नही कर पाया हूँ। विभीषण—तुम अपने रावण से क्षमा माँग लेना। वह बडा भाई है, तुम्हे अपना लेगा।

लक्ष्मण : कैसी बातें करते हो भैया ? हम सब चले जाएँ, तो आप क्या करना चाहते हैं ?

राम : सीता के बिना अब जीवन कैसा लक्ष्मण ? जब सीता ही नही हैं तो अब युद्ध कैसा ?

लक्ष्मण : भैया, आपने सत्य और धर्म के लिए सब कुछ त्याग दिया और उसी के लिए दुर्दिन देखने पड़े है। भाभी सीता, मेरी माँ थी भैया ? लेकिन मैं माँ की मृत्यु पर शोक नही करूँगा। शोक आपको भी नही करना चाहिए। आपने कह दिया कि हम सब लौट जाएँ ? क्यो ? किस मुँह से लौट जाएँ। सारा समाज क्या कहेगा। बडी-बड़ी डींग मारते थे...मैं वापस नही जा सकता भैया...न मैं घुटने टेक सकता हूँ...इस युद्ध का कारण मात्र भाभी नही है... इसलिए उनकी मृत्यु से युद्ध समाप्त नही हो सकता है। ये

सांस्कृतिक युद्ध है। इस युद्ध में मानव संस्कृति या राक्षस संस्कृति में से एक बचेगी। यदि युद्ध करते हुए मैं मारा गया तो भी मेरा जन्म सफल हो जाएगा।

सुग्रीव : प्रभु। यह सही है कि मैंने सीता जी के लिए संधि की थी और वह संधि पूर्ण नहीं कर सका। लेकिन प्रभु···यह युद्ध केवल सीता जी के लिए नहीं है। वानर जाति, न जाने कब से राक्षसों से संघर्ष करती रही है। आज हम निर्णायक मोड़ पर आ गए हैं। मैं वापस कैसे जा सकता हूँ ? लोग क्या कहेंगे ? महाराज सुग्रीव पीठ दिखाकर भाग आया। कल ये रावण हमारे ऊपर आक्रमण कर सकता है ? इस सेना का महाराज मैं हूँ। मैं या तो रावण का संहार करके लौटूंगा या युद्धभूमि में वीरगति पाऊंगा।

विभीषण : प्रभु, मैं आपकी शरण में किसी प्रतिशोध या राज्य की आकांक्षा से नहीं आया था। लंका में रहकर भी मैंने हिंसा, भोगवाद, उच्छृंखलता, आतंक का विरोध ही किया था। मेरा पक्ष अहिंसा, न्याय, मानवता और शांति का पक्ष था। जब मैं निराश हुआ तब आपकी शरण में आया था, क्योंकि कभी-कभी हिंसा के द्वारा अहिंसा की स्थापना होती है। यह युद्ध केवल सीता जी के लिए नहीं था, ये युद्ध 'परिवर्तन' के लिए है। ये परिवर्तन होगा। यदि नहीं होगा तो परिवर्तन की आकांक्षा के लिए बलिदान होगा—जो नई पीढ़ी को शक्ति देगी। वैसे प्रभु रावण सीता का वध नहीं होने देगा। मैं उसे जानता हूँ। अतः धैर्य के साथ उद्योग करिए। उत्साह का सहारा लीजिए।

लक्ष्मण : निराशा त्यागिए भैया। पुरुषार्थ का मार्ग चुनिए।

राम : कैसा पुरुषार्थ ? पुरुषार्थ भी भाग्य से होता है लक्ष्मण। मनुष्य के भाग्य में जो लिखा है उसे कोई नहीं बदल सकता—कोई नहीं बदल सकता।

लक्ष्मण : भाग्य···भाग्य···भाग्य। क्या होता है भाग्य ? यदि भाग्य पूर्व कर्म का फल है तो आपने पूर्वजन्म में कौन-सा पाप किया था ? किसका राज्य छीना था जो आपसे अवध का राज्य छीन लिया गया। आपने किसे वन भेजा था जो आपको वनवासी बनना पड़ा। किस स्त्री का हरण किया था जो भाभी का हरण हुआ ? भाग्यवाद अकर्मण्य जनों का नारा है। जब व्यक्ति पुरुषार्थ से भागता है तब भाग्य का सहारा लेता है। होता होगा भाग्य। लेकिन पुरुषार्थ भी होता है। रघुनंदन मैं सुमित्रा पुत्र लक्ष्मण भगवान श्री राम का अनुज आपको पुरुषार्थ दिखाता हूँ। मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि जिसने मेरी माँ का वध किया है, उसे आज

मारकर ही लौटूंगा अन्यथा मुंह नहीं दिखाऊँगा।

पार्श्व स्वर

जोतेहि आजु बधे बिनु आवौं। तो रघुपति सेवक न कहावौं।
जो सत संकर करहिं सहाई। तदपि हतउँ रघुबीर दुहाई।

भाग्यवाद का खण्डन करने
रामानुज सौमित्र चले,
पुरुषारथ स्थापित करने
लो शत्रु दमन सौमित्र चले।
देखूं कैसा इन्द्र-जीत है
जिससे पृथ्वी भय-भीत है,
जनकनन्दिनी हन्ता है जो
उस पापी का कौन मीत है।
मेघनाद का वध करने
शेषनाग-सौमित्र चले,
वैसे युद्ध राम रावण का
प्रण परन्तु घोषित लक्ष्मण का।
शौर्य-वीर्य पुरुषारथ से
साहस ऊपर श्री लक्ष्मण का,
मेघनाद वध, बस उसका वध
काल विरुद्ध सौमित्र चले।

राम : लक्ष्मण'''लक्ष्मण'''(लक्ष्मण रुकते हैं।) महाराज विभीषण। लक्ष्मण के साथ जाइये। महाराज सुग्रीव, आप सेना लेकर लक्ष्मण के साथ जाओ।

विभीषण : प्रभु, लक्ष्मण जी ने अभी आपसे जो बातें धर्म के विरुद्ध कही थीं, वे केवल इसलिए कि आप युद्ध के लिए तैयार हो जाएँ। सौमित्र आपके अनुज हैं प्रभु। उनका पुरुषार्थ हमने देखा है। अतः चिन्ता का प्रश्न नहीं है। मैं उनके साथ जाता हूँ।

राम : लक्ष्मण को जानता हूँ लंकेश। वह पुरुषार्थी है।

हनुमान : मैं भी जाऊँगा प्रभु। आज्ञा दीजिए।

अंगद : लंका को घेर लो। (आदेश स्वर) और (सेना प्रस्थान।)

विभीषण : सौमित्र—शत्रु निकुम्भिला मंदिर की ओर गया है। हमें वहीं जाना है। उसने ब्रह्मा जी से ब्रह्मशिर नामक अस्त्र और मनचाही गति वाले घोड़े प्राप्त किए हैं। यदि उसने हवन पूर्ण कर लिया तो हम सब की मृत्यु उसके हाथों होना निश्चित है।

लक्ष्मण : हवन कर्म के पश्चात् ये शक्ति उसे कौन देता है?

विभीषण : वट वृक्ष। उसके नीचे पहुँचा तो उसे जो अस्त्र मिलेंगे, वे हमारी

मृत्यु का कारण बनेंगे। इसलिए हवन करने और वृक्ष के नीचे जाने से पहले मारना पड़ेगा उसे।

राम : जाओ लक्ष्मण। अपना युद्ध कौशल दिखाओ। उसे ये बताओ कि आर्य जब शस्त्र उठाते हैं तब कोई रक्षा नहीं कर सकता।

[निकुम्भला मंदिर पर पहुंचना। हनुमान द्वारा राक्षसों से युद्ध। मेघनाद द्वारा हनुमान से युद्ध।]

विभीषण : सौमित्र। ये है वह वृक्ष। इसके नीचे अस्त्र है।

लक्ष्मण : राक्षस कुमार। तुम्हें युद्ध के लिए ललकारता हूँ मैं।

मेघनाद : (विभीषण को देखना) अच्छा। तो ये तुम्हें यहाँ लाया है। (रुककर, क्रोधपूर्वक) राक्षस, तेरा जन्म इसी भूमि में हुआ, यही बढ़कर बड़े हुए। मेरे पिता के भाई और मेरे चाचा होकर द्रोह करते हो। ये जाति और देश के प्रति जघन्य अपराध है।

विभीषण : कैसा द्रोह? कहना क्या चाहते हो?

मेघनाद : यही, कि तुम में कुटुम्ब के लिए प्रेम नहीं है। न जाति का अभिमान है। तुम कर्तव्य और धर्म भी नहीं जानते। राक्षस कुल को एकमात्र आपने ही कलंकित किया है। दुर्बुद्धे। तुमने स्वजनों को त्यागकर दूसरों की अधीनता स्वीकार कर ली।

विभीषण : मैंने श्री राम की शरण ली है।

मेघनाद : शरण। जिसकी बुद्धि शिथिल हो उसे क्या मालूम, कि स्वजनों के बीच स्वतंत्रता का आनन्द और दूसरों के बीच गुलामी करके जीने में क्या अंतर है?

विभीषण : स्वजन ऐसे ही होते हैं जैसे तेरे पिता हैं।

मेघनाद : स्वजन, गुणहीन होने पर भी श्रेष्ठ होता है। और दूसरा कितना भी श्रेष्ठ हो, वह दूसरा ही रहता है। तू नहीं जानता कि अपने पक्ष को नष्ट करने के लिए दूसरों से मिलने वाला, एक दिन, उन्हीं के हाथों मारा भी जाता है।

विभीषण : बहुत बोलने की आदत पड़ गई है मेघनाद। अपनी मृत्यु देखो तुम।

मेघनाद : मेरा वध करने के लिए इस स्थान पर कोई घर का भेदी ही ला सकता था। तुमने लंका को ढहाने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। इतिहास के पृष्ठों में तुम्हें इस अधर्म के लिए स्मरण किया जाएगा।

विभीषण : अधर्म। एक बात जान ले, मैं राक्षसकुल में जन्मा अवश्य हूँ लेकिन मेरी वृत्ति राक्षसी नहीं। मैं क्रूर कर्म और अधर्म का साथ नहीं दे सकता। आज तुम राक्षस-संस्कृति द्वारा अमान्य कर्म के साथ खड़े हुए हो। तुम्हारा साथ नहीं दे सकता।

मेघनाद : मान लिया कि साथ नही दे सकते थे। अपने विचारों से राक्षसों को सहमत तो कर सकते थे। मंत्रिपरिषद को पक्ष में कर सकते थे। यदि तुम्हारा विचार उत्तम होता तो लंका की जनता साथ देती। तब महाराज को नीतियाँ बदलनी पड़तीं। किन्तु कोई प्रयत्न नही किया।

विभीषण : जिस राजा को नीतिज्ञ होने का अभिमान हो, जो आलोचना का अर्थ व्यक्तिगत निन्दा मानता हो, वह किसी की नही सुनता। ऐसा राजा नीतियो में परिवर्तन कभी नही करता है और न जन-भावना का आदर करता है। लोकतंत्र के आवरण में चतुर तानाशाह छिपा होता है।

मेघनाद : मिथ्यावाद करते हो। अपने देश में किसी परिवर्तन के लिए तुमने पहल ही नही की। यदि पहल करते तो काका कुंभकर्ण और मेरा मत तुम्हें मिलता। तुमने स्वाभिमान के क्षण उपदेश दिए।

विभीषण : मत मिलता मुझे ! (आश्चर्य) मैंने संधि का प्रस्ताव किया था, तब तुमने मेरा अपमान किया।

मेघनाद : उस दिन तुम महाराज रावण का ही नही, पूरी राक्षस जाति और देश का सिर नीचा करवाना चाहते थे। चाहे कोई कितनी ही शक्ति रखता हो चाचा। चाहे कोई जितना समर्थ और सम्पन्न हो। चाहे वह भगवान ही क्यो न हो। यदि वह मेरे देश को अपमानित करना चाहेगा तो उसे मेघनाद का सामना करना पड़ेगा।

विभीषण . अधर्म तो रावण ने किया था। श्री राम ने नहीं।

मेघनाद : धन्य हो चाचा। अपने अग्रज का नाम लेते समय सम्मान नही है और लंकेश कहलाने के लोभ में शत्रु का सम्मान करते हो। यही धर्म है।

विभीषण : अधर्मी के लिए सम्मानजनक शब्दो का उपयोग नहीं होता है। रावण अधर्मी है।

मेघनाद : नही मूर्ख। अधर्म किया राम ने। उसने हमारे क्षेत्र मे प्रवेश क्यों किया? राक्षसो के विरुद्ध लोगो को भडकाया। उसने राक्षसों का वध किया और करवाया। एक के बाद एक अपराध करने वाले का पक्ष लेने वाले देशद्रोही, अवसर पाकर शत्रुओ में जा मिला। अरे तू राक्षस धर्म और नीतियो से असहमत था तो देश मे रहकर क्रांति करता। मतभेद था तो देश की जनता मे विचार क्रांति कर सत्ता पलटता। तू शत्रु से जा मिला राष्ट्रद्रोही।

विभीषण : तेरे पिता मे जो दोष है वे दिखाई नही देते। अपने शुभचिंतकों को संदेह-भरी दृष्टि से देखने वाले का अन्त यही होता है। आज तेरा भी अन्त है। युद्ध कर।

मेघनाद : उस दिन ये बच गया था, आज मारा जाएगा।

[युद्ध। लक्ष्मण घायल।]

मेघनाद : मूर्ख। अब तेरा सिर काट डालूंगा।

[लक्ष्मण प्रहार। मेघनाद घायल।]

लक्ष्मण : डींगें हांकने की तेरी पुरानी आदत है।

[मेघनाद दौड़कर यज्ञ पर बैठकर आहुतियां देने लगता है।]

विभीषण : सौमित्र यज्ञ पूर्ण न हो जाए। अन्यथा हमारी मृत्यु निश्चित है।

[यज्ञ रत मेघनाद और उसे रोकने के लिए युद्ध रत सौमित्र।]

विभीषण : इस समय इसका उत्साह भंग है। अतः इसे मारने का प्रयत्न कीजिए। यदि ये आज नही मरा तो हम सब मारे जाएँगे।

मेघनाद : शत्रु के सहायक, पहले तेरा वध करता हूँ।

[प्रहार का सामना लक्ष्मण ने किया और विभीषण को बचा लिया।]

विभीषण : वानरो। देखते क्या हो? रावण का यह एकमात्र सहारा है। इसे छीन लो। रावण के सभी सेनापति मारे जा चुके है, इसे भी मार डालो।

[युद्ध। इन्द्रजीत वृक्ष की ओर जाना चाहता है। लक्ष्मण बाणों से रोकते हैं।]

विभीषण : सौमित्र। ये वृक्ष के नीचे न जाने पाये।

पार्श्व स्वर

देखि अजय रिपु डरपे कीसा। परम क्रुद्ध तब भयउ अहीसा।
लछिमन मन असमत्र दृढ़ावा। एहि पापिहि मैं बहुत खिलावा।
सुमिरि कोसलाधीस प्रतावा। सर संधान कीन्ह करि दापा।
छाड़ा बान माझ उर लागा। मरती बार कपट सब त्यागा।

लयणलाल आए इधर वानर दल के संग।
अब जो कुछ गुजरा उधर सुनिए वही प्रसंग॥

राक्षस : (रावण के पास कुछ मंत्री हैं, मंदोदरी है। रावण विलाप के पश्चात् क्रोध में।)

रावण : मेरे बेटे मेघनाद को आज वीर गति प्राप्त हुई है। उसने वानरों, रीछों को भ्रमित करने के लिए एक सीता-सी स्त्री का वध किया था। लेकिन आज उस झूठ को मैं सत्य कर दिखाऊँगा। राम में अनुराग रखने वाली सीता का नाश कर डालूंगा। इस स्त्री के कारण…

[तलवार लेकर आगे बढ़ता है।]

राक्षस-1 : आज राम-लक्ष्मण जीवित नही बच सकते हैं। (प्रसन्नता से राक्षसगण गले मिलते हैं।)

राक्षस-2 : अब कोई नही बचा सकता।

[वाटिका में पहुँचता है, सीता भयभीत है।]

सीता : ये मुझे मार डालेगा। यहाँ मेरा कोई रक्षक भी नही है। (चिंतित (स्वगत) स्वर।)……कही इसने श्री राम-लक्ष्मण को मार तो नही डाला, कही ये मुझे भार्या बनाने तो नही चला आ रहा है? भूल कर बैठी। हनुमान की पीठ पर बैठकर चली जाती तो ये दिन न देखने पड़ते।

[रावण मार्ग में है। राक्षस परामर्श देता है।]

सुपार्श्व : महाराज।

रावण : (मुड़कर देखता है।) सुपार्श्व। जो कहना चाहते हो, कहो लेकिन सीता वध से न रोकना मुझे। उसका वध अवश्य करूँगा।

सुपार्श्व : महाराज। आज मेरा कर्तव्य है कि मैं आपको उचित परामर्श दूँ, जो भले ही अप्रिय क्यो न हो। चाहे आप क्रोध से मेरा सिर काट डालें महाराज। मैं आपकी नीतियों से सहमत नही रहा हूँ। ये आप जानते है। आप मुझे विभीषण का शुभचिंतक भी कह सकते है।

रावण : नही सुपार्श्व। विभीषण ने कुल, जाति, देश, सबसे द्रोह किया है। तुम मेरा विरोध करते हुए भी मेरे साथ हो। विपक्षी का यही धर्म होता है सुपार्श्व। जब देश का प्रश्न हो तो पूरा देश एक शक्ति के रूप मे खड़ा दिखाई दे। मतभेद दिखाई न दे और जब शांति हो तो राजनीति मे चलने वाली विचारधाराओ से प्रजा मे अपना पक्ष मजबूत करें। सत्ता की नीतियों में, जनशक्ति के दबाव से परिवर्तन करें। जो विपक्षी देश के संकट काल मे सिद्धातों की बात करते हैं, जनता में भ्रम फैलाकर अराजक स्थितियाँ पैदा करते है, वे देश के शत्रु हैं।

सुपार्श्व : महाराज। मुझे प्रसन्नता है कि विचार-विरोध के पश्चात भी आपको मेरी निष्ठा पर विश्वास है। मैं धन्य हुआ महाराज।

रावण : सुपार्श्व, मंत्री होने पर भी मैं तुम्हारा आदर करता हूँ। क्योंकि तुम नीति की बात करते है। तुमने कभी मुझ पर भ्रष्ट होने का लाछन नही लगाया, और न इसका प्रचार किया।

सुपार्श्व : राजन, किसी भी व्यक्ति के चरित्र की हत्या करना बहुत सरल होता है। किसी को भी भ्रष्ट कहना कठिन नही है। जब राज-नीति विचार शांति में असफल हो जाती है, और जब राजनीतिज्ञ

अपना जनाधार खो बैठते हैं। तब वे प्रचार तंत्र के माध्यम से राज्य-सत्ता पर चारित्रिक आक्रमण करते हैं। किसी के चरित्र पर अँगुली उठाना भी चरित्रहीनता है। विनम्रता, शिष्टता, सिद्धांतों का नाटक करने वाले बहुधा स्वयं बहुत चरित्रहीन और पतिक-पातकी होते हैं। आप नीतिवान और धर्मज्ञ हैं राजन।

रावण : पुत्र की मृत्यु ने मेरी बुद्धि को अस्थिर कर दिया है सुपार्श्व। तुम अपनी बात कहो। इस क्षण तुम परामर्श दो मुझे, कि क्या करूँ?

सुपार्श्व : महाराज। वेदवती, अप्सरा, नलकूबर की पत्नी के साथ आपने यौवन में उद्दण्डता की थी। यौवन में बुद्धिहीनता होती है। परिणाम, शाप है। वैसे आप धर्मज्ञ हैं। पूर्ण ब्रह्मचारी थे, आप तपस्वी हैं। इसलिए कर्तव्य था कि राक्षस-संस्कृति का विस्तार हो, आपने यही किया। लेकिन, आज आप एक स्त्री का वध करने कैसे चल दिये? वध करना है तो राम का करो, उनके भाई लक्ष्मण का करो। किसी भी स्त्री का वध एक पराक्रमी महाराज द्वारा किया जाना लोक निन्दनीय है। भले ही, इस सीता के कारण हमें क्षति हुई है। आज हम संधि की बात भी नहीं कर सकते। अब तो युद्ध की बात ही होगी। इस युद्ध में भले ही प्राण चले जाएँ। चलिए महाराज, उस राम-लक्ष्मण का युद्ध-भूमि में वध कर कीर्ति पाइये।

रावण : युद्ध! हाँ सुपार्श्व। युद्ध ही करूँगा।

राक्षस : महाराज। फाल्गुन शुक्ला पंचमी के दिन लंका पर आक्रमण हुआ था। तीन दिन के पश्चात सप्तमी के दिन अतिकाय का वध हो गया। कुम्भ, निकुम्भ, फाल्गुन शुक्ला अष्टमी से द्वादसी तक नेतृत्व करते रहे और वीर गति को प्राप्त हुए। मकराक्ष वध और लक्ष्मण की मूर्छा—फाल्गुन शुक्ला त्रयोदशी से फाल्गुन कृष्ण द्वितीय के मध्य हुई। इसके पश्चात तृतीया से सप्तमी तक युद्ध विराम रहा। फाल्गुन कृष्ण अष्टमी से लक्ष्मण-मेघनाद युद्ध आरंभ हुआ और त्रयोदशी के दिन इन्द्रजीत वीरगति को प्राप्त हुए। आज फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी है महाराज। आज आप सेना लेकर चलिये और राम पर अपना क्रोध उतारिये। राम का वध करो राजन, राम का वध। यही धर्म है और यही कर्म।

रावण : वीरो। तुम राम पर आक्रमण करो। उसे मार डालो अन्यथा कल मैं स्वयं साथ चलूँगा और उसे मार डालूँगा।

राक्षस : दिग्विजयी महाराज रावण की जय।

[पुनरावृत्ति।]

[राक्षसों वानरों का युद्ध।]

पार्श्व स्वर

इत रावण उत राम दुहाई—जयति जयति तहँ परी लराई।

[पुनरावृत्ति।]

[राक्षसों की पराजय। लंका घेरे हुए वानर।]

राक्षस : महाराज की जय हो। मन्त्री, विरूपाक्ष, महापार्श्व, युद्ध में मारे गये हैं। लंका वानरों ने चारों ओर से घेर ली है।

रावण : कोई बात नहीं। चलो, मैं चलता हूँ। लेकिन…शत्रु के सम्मुख जिनका मन डांवाडोल हो, वे यहाँ से भाग जायें। युद्ध मैदान से भागने पर जाति कलंकित होती है। ये वैर मैंने अपनी भुजाओं पर पाला है। राम मेरा शत्रु है। उसे उत्तर भी मैं ही दूंगा।

पार्श्व स्वर

चलेउ निशाचर कटुक अपारा, चतुरंगिनी अनी बहु धारा।
उठी रेनु रवि गयउ छपाई। मरुत थकित बसुधा अकुलाई।
पनव निसान घोर रव बाजहिं, प्रलय समय के घन जनु गाजहिं।
भेरि नफीरि बाज महनाई, मारू राग सुभर सुखदाई।
केहरि नाद बीर सब करहीं, निज निज बल पौरुष उच्चरहीं।

रावण : महावीरो। जाओ। इन बन्दरों को पटक-पटक कर मार डालो। मैं तो उन दो को ही मारूँगा। केवल उन दो को ही।

राक्षस-1 : लंका पर पाँव धरने वाले वानर। तेरे प्राण मैं लेता हूँ।

बन्दर-1 : सियावर रामचन्द्र की जय।

राक्षस-1 : राक्षस राज रावण की जय।

बन्दर-2 : श्री राम की जय।

राक्षस-2 : जय लंकेश।

बन्दर-3 : जय श्री राम।

राक्षस-3 : जय श्री रावण।

बन्दर-4 : राक्षस कुल में जन्मे पापी। तू रावण का साथ दे रहा है। मूर्ख अपने प्राण बचाने हैं, तो श्री राम से शरण माँग।

राक्षस-4 : तेरे राम को जीवित रहना हो तो उनको लेकर भाग जा अन्यथा…

विभीषण : रावण रथ पर आरूढ है प्रभु। इसमें युद्ध जीतना कठिन है, क्योंकि हमारे पास कोई रथ नहीं है।

राम : लंकेश। जो व्यक्ति धैर्य से शौर्य प्रकट करता है, जिसका मन भोग-वासनाओं से मुक्त रहकर सत्य का अनुसरण करता है, जिसका चरित्र उत्तम है, जो परोपकारी है, और जिसमें दया, क्षमा, समता का भाव है। जिसकी बुद्धि ठीक काम करती है। उस व्यक्ति का आत्मविश्वास ही सबसे बड़ा रथ होता है। हमारा

आत्मविश्वास निरंतर बढ़ाने वाली घटनाएँ हो रही है।

विभीषण : फिर भी प्रभु। युद्ध तो युद्ध है। उसमे रथ का सामना रथ ही करता है। शस्त्र का सामना शस्त्र ही करते हैं।

राम : आत्मबल से बडा कोई शस्त्र नही होता है महाराज।

विभीषण : प्रभु आपके पास रक्षा कवच भी नही है। अतः युद्ध मे जीतना कठिन है।

राम : युद्ध केवल शस्त्रों और शक्ति से नही जीता जाता। युद्ध वही जीतता है जिसने धर्म का त्याग नही किया है महाराज विभीषण। आज रावण आत्मविश्वास खो चुका है। वह पराजय के निकट है और हम विजय के निकट हैं। रावण के पास दो मार्ग है—युद्ध करते हुए वीर गति प्राप्त करे अथवा संधि करे। युद्ध जिस मोड़ पर खड़ा है महाराज विभीषण, वहाँ संधि के लिए स्थान ही नही बचा है। हम संधि प्रस्ताव अब कर नही सकते है और वह पुत्र खोकर संधि क्यों करने लगा। उसे रथ पर रहने दो मित्र।

पार्श्व स्वर

सुनहु सखा कह कृपा निधाना। जेहिं जय होई सोस्यदन आना।
सौरज धीरज तेहि रथ चाका। सत्य सील दृढ़ ध्वजा पताका।
बल विवेक दम परहित घोरे। छमा कृपा समता रजु जोरे।
ईसु भजन सारथी सुजाना। बिहित चर्म संतोष कृपाना।
पदान परसु बुधि शक्ति प्रचंडा। वर विग्यान कठिन को दंडा।
अमल अचल मन त्रोन समाना। सम जय नियम सिलीमुख नाना।
कवच अभेद विप्र गुरु पूजा। एहि सम विजय उपाय न दूजा।
सखा धर्म मय असरथ जाकें, जीतन कहँ न कतहुँ रिपु ताके।

[अंगद पर फरसे से प्रहार। अंगद बचा ले गये। हनुमान ने फरसा छीन लिया।]

हनुमान : रावण। तूने हठ नही छोड़ा। युद्ध की इस नदी मे तेरे पुत्र हिंसा के शिकार हो गये। मूर्ख, तुझे बुद्धि कब आयेगी।

रावण : मुझे ज्ञान सिखाता है। वन्दरों में इतनी बुद्धि कहाँ से आ गई? आज तेरा वध करूँगा मैं हनुमान।

हनुमान : अंतिम अभिलाषा पूर्ण कर लो कुल-हन्ते।

[गदायुद्ध।]

लक्ष्मण : रावण। मुझसे और श्री राम से युद्ध की बड़ी अभिलाषा रखते रहे हो। मैं तुम्हें ललकारता हूँ।

रावण : लक्ष्मण। देशद्रोही विभीषण से मिलकर मेरे पुत्र मेघनाद को मारने वाले दुष्ट, आज मैं अपने पुत्र-वध का दण्ड तुझे दूंगा।

लक्ष्मण : कहीं ऐसा न हो कि बाप भी बेटे के पास पहुँच जाय। युद्ध में तीर

तीर का उत्तर देते हैं। क्या लंका में रहने वाले सब बड़बोला हैं। शस्त्र उठाओ और युद्ध करो।

रावण : बडबोला नही है। पराक्रमी है पराक्रमी। तुम मेरे इन बाणो का पराक्रम भी नही देख पाओगे लक्ष्मण।

[बाण प्रहार। लक्ष्मण ने काटे।]

लक्ष्मण : मेरी मृत्यु तुम्हारे हाथ विधाता ने नही लिखी रावण।

रावण ` मै विधाता का लिखा बदल दूँगा।

लक्ष्मण : शक्तिशाली प्रलाप नही किया करते हैं।

राम : ये शक्तिशाली होते, धर्म को समझते, पराक्रमी और वीर होते तो ये अधर्म कर सीता को छलपूर्वक नही लाते। बड़े बहादुर बनते है, लेकिन तुम बहुत भीरु हो रावण।

रावण : राम। दुरात्मा। क्षात्र धर्म त्यागने वाले। राष्ट्र से निर्वासित राम। मै तुझे मारकर सीता को भार्या बनाऊँगा।

राम : मैं इस जिह्वा को ही काट लूंगा रावण। सीता आर्य कन्या है। राक्षस स्त्री नही। आर्य स्त्रियाँ शील और लज्जा का त्याग कभी नही करती और न प्रत्येक व्यक्ति को पति के रूप में देखती है।

रावण : बडा अभिमान है तुम्हे आर्य-संस्कृति पर। जिस संस्कृति की महानता का बखान कर रहे हो, उसमे है क्या ?

राम : धरती की श्रेष्ठतम संस्कृति, आर्य संस्कृति है रावण। जिसमे जीवन का स्पष्ट दर्शन है। सामाजिक-पारिवारिक संस्कार है, मर्यादाएँ हैं। राक्षसो की तरह वैयक्तिक भोगवाद नही है। न जीवन मे उच्छृंखलता है। हमारी संस्कृति का आतंकी भी नही है। हम रक्त-पात और हिंसक क्रान्तियो मे विश्वास नही रखते। हम अपने जीवन को समाज के लिए अर्पित कर देते है। हम देश को मातृभूमि समझते है न कि भोगभूमि। हमारा संस्कार त्याग, तपस्या, दया, क्षमा का है। मानव जीवन चार आश्रमों के माध्यम से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के लिए प्रयत्नशील है।

रावण : जब राज्य नहीं मिला तो त्याग की बातें करने लगे। जब सुख-सुविधाएँ अनुपलब्ध होती है तो तपस्वी बनने मे लगता ही क्या है ? जहाँ सम्पन्नता होगी वहाँ उसके भोग का भी विचार होगा। जीवन के उन्मुक्त-आनन्द का नाम राक्षस-संस्कृति है। जहाँ कोई बंधन नही है। सारा विश्व चाहता है कि उसका वैयक्तिक जीवन अभाव मे न कटे। हरेक चाहता है कि ससार के समस्त सुखो का भोग किया जाए। राक्षस धर्म के नाम पर भयभीत नही होता है जबकि आर्य धर्म के नाम पर डरे हुए रहते है।

राम : आर्य संस्कृति मे 'डर' उन्हें होता है जो जीवन और मृत्यु के अर्थ

को नही समझते । जो भौतिक सौन्दर्य और सुखो में आस्था रखता है। उसे उसके नष्ट होने का भय सदैव रहता है। इसलिए तुम्हें भी ऋषियो और मुनियो से भय सदैव बना रहता है।

रावण : ऋषि और मुनि । ये आर्य संस्कृति के प्रचारक है। कोई भी देश अपनी सस्कृति को नष्ट होते हुए कैसे देख सकता है ?

राम . जो सस्कृति श्रेष्ठ होती है रावण, वह विश्व को आकर्षित करती है। भरत-संस्कृति एक सनातन सस्कृति है। आज सारा विश्व उस ओर देख रहा है। राक्षस सस्कृति के भौतिक सुखभोग से जातियाँ त्रस्त होकर कुण्ठा और हीनता की ओर अग्रसर है।

रावण : तो क्या तुम हमारी संस्कृति पर अपनी सस्कृति थोपना चाहते हो राम ।

राम : नही रावण । हम अपनी संस्कृति को कभी नही थोपते हैं। राज्य-शक्ति का बल हो या धनशक्ति का बल, जो संस्कृति इनका सहारा लेकर अपनी स्थापना करना चाहती है, वह अन्तत धरती से उठ जाती है । इतिहास साक्षी है रावण । हमने कभी संस्कृति या धर्म परिवर्तन का प्रयत्न नही किया । हमने अन्य संस्कृतियों की अच्छाइयाँ ग्रहण की और उनका आदर किया है। लेकिन जब कोई हमारी संस्कृति को नष्ट करने का प्रयत्न करता है तो हम उसकी रक्षा के लिए शस्त्र उठाते है। तुमने हमारी मान-मर्यादा का छलपूर्वक हरण किया है, उसका दण्ड तुम्हें अवश्य दूँगा।

रावण : दण्ड ! तुम्हारे और लक्ष्मण के अवशेष सभवतः अवध वालो को नही मिलेंगे राम । मेरे बाणो का सामना करो । (बाण प्रहार)

[युद्ध ।]

पार्श्व स्वर

सुर ब्रह्मादि सिद्धि मुनि नाना । देखत रन नभ चढ़े बिमाना ।
हमहू उमा रहे तेहि संगा । देखत राम चरित रन रंगा ।
सुभट समर रस दुहु दिसि माते । कपि जयसील राम बल ताते ।
एक एक सन भिरहिं पचारहिं । एकन्ह एक मर्दि महि पारहिं ।
मारहिं काटहिं धरहिं पछारहिं । सीस तोरि सीसन्ह सन मारहिं ।
उर बिदारहिं भुजा उपारहिं । गहि पद अवनि पटकि भट डारहिं ।

रावण : घर के भेदी । देशद्रोही विभीषण । मैंने तुझे मृत्युदण्ड न देकर भूल की । तू ने अपने कुटुम्ब का अन्त करवाने में कोई कसर नहीं छोड़ी ।

विभीषण : कसर ! मैंने नही, तुमने नहीं छोड़ी । इसीलिए इतना रक्त-पात हो चुका । अब भी कुछ नही बिगड़ा है दशानन । श्री राम के चरणों मे शरण ले लो । अभी भी अवसर है । सीता को सादर

लौटाकर शरण ले लो।

रावण : शरण ! कैसी शरण ? मैं तेरे जैसा कायर और घाती नहीं हूँ जो अवसर पाकर एक शत्रु से जा मिलूँ। मैंने तुझे दूध इसलिए नहीं पिलाया था कि तू आस्तीन का साँप बन जाए। मैंने मंत्री भी इसलिए नहीं बनाया था कि तू शत्रु का समर्थन करे और हमारे सारे भेद उसे दे दे। अपने देश का भेद दूसरे देश को देने वाले देशद्रोही, तू ने राक्षस जाति का सिर नीचा कर दिया।

विभीषण : सिर नीचा तुमने किया दशकंधर। जिस दिन एक सती स्त्री का छलपूर्वक, बलात अपहरण कर लाए थे, उसी दिन लंका का सिर शर्म से झुक गया था।

रावण : मनचाही स्त्री का भोग करना राक्षस संस्कृति का अंग है दुष्ट। तू उसे अपराध कहता है। तू राम के हाथों बिक गया है, इसलिए ऐसी बातें करता है कुलघाती। लंका का महाराज बनने का तेरा स्वप्न है। मैं राम-लक्ष्मण को मारकर लंका के चौराहे पर गिद्धों के खाने के लिए लटकवा दूँगा तुझे। ताकि तीनों लोक देखें कि राष्ट्रद्रोही का अन्त क्या होता है?

विभीषण : राक्षस जाति के महावीरों का वध करवाने वाले, तुझे धर्म-अधर्म की क्या समझ? अभी भी पहिचान ले—ये श्री राम हैं श्री राम। राक्षस संस्कृति को त्यागकर भगवान की शरण ले लो।

रावण : त्रैलोक्य विजयी रावण घुटने नहीं टेक सकता। प्राणों के भय से संस्कृति नहीं त्याग सकता? अधम। तू न आर्य है और न राक्षस। तू वर्ण शंकर संस्कृति का अनचाहा वृक्ष है जो एक दिन समाप्त हो जाएगा। किन्तु याद रख, धरती से राक्षस संस्कृति का नाश नहीं हो सकता है। हमारी संस्कृति सदैव रहेगी।

विभीषण : भौतिक सुखों के भोग की स्वतंत्रता देने वाली संस्कृति अन्ततः मानसिक असंतोष देती है। इसलिए आज कोई आकर्षित होकर उसका अनुसरण कर भी ले तो अन्ततः मानव संस्कृति की शरण में आएगा। मानव संस्कृति से श्रेष्ठ संस्कृति कोई है ही नहीं दशानन।

रावण : दूसरों का नमक खाकर ऊँचे स्वर में भाटगीरी करते हुए तुझे लज्जा नहीं आती। अपनी संस्कृति के शौर्य और पराक्रम पर गर्व नहीं है और शत्रु की संस्कृति पर गर्व करता है। तू इस राम को देख जिसे राज्य से निकाल दिया तो मुँह लटका कर वन में जीवन काटने लगा। एक मैं, जिसने अपनी शक्ति से तीनों लोक जीते हैं।

विभीषण : यही अंतर है मानव संस्कृति और राक्षस संस्कृति में दशकंधर। तुमने राज्य के लिए महाराज कुबेर पर ही आक्रमण कर उन्हें

निकाल दिया और श्री राम ने शक्ति सम्पन्न होने पर भी अपने भाई के लिए राज्य का त्याग कर दिया। तुम भोगवाद का प्रतीक हो और श्री राम त्याग के प्रतीक है। तुमने ऋषियों-मुनियों को आतंकित किया, उनका सामूहिक वध करवाया और श्री राम ने उनकी रक्षा के लिए ही राक्षसों का वध किया दशानन। तुमने कन्या, विवाहिताओं के अपहरण किये, बलात्कार किए। कितनी ही स्वाभिमानी स्त्रियो ने प्राण भी त्याग दिए। किन्तु श्री राम ने समाज में उपेक्षित अहिल्या को सामाजिक प्रतिष्ठा दिलाई। अछूत भीलनी को सम्पन्न वर्ग के समान स्थान दिया। राज परिवार में उत्पन्न होने पर एक पत्नी व्रत का धारण किया। रावण, तेरे नाम से स्त्रियाँ असुरक्षित महसूस करती है और श्री राम के नाम से सम्मानित।

रावण : बन्दीजन की तरह चीखने वाले। तेरे रक्त में जाति का स्वाभिमान भी नही रहा। तू मेरे क्रोध से जलकर राख हो जाएगा।

विभीषण : तुम क्रोधी, कामी, चोर, लंपट और धूर्त ही तो बने रहे हो। धर्मात्मा बनने का पाखण्ड करते और अधर्म के कर्म करते रहे। प्रकांड विद्वान बनकर प्रवचन सतों जैसा आडम्बर करने वाले बगुला भगत, तुम श्री राम का सामना क्या करोगे जिनके पास दया है, धर्म है, शील है। तुम उनके हाथो मारे ही जाओगे।

रावण : विभीषण (चीखकर, शक्ति का प्रहार। लक्ष्मण द्वारा विभीषण को धकेलकर अपने वक्ष पर झेलना और अचेत होना। राम लक्ष्मण को सँभालते हैं।)

विभीषण : देखा दुष्ट। यही अतर है—आर्य अपने प्राण देकर भी शरणागत की रक्षा करते है।

राम : वानर वीरो। सौमित्र को घेर लो।

विभीषण : ये क्या हो गया ? सौमित्र (विलाप) सौमित्र उठो।

राम : ये विलाप का क्षण नही है महाराज विभीषण। मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि अब कुछ क्षणों मे रावण दिखाई देगा या राम। (रावण की ओर) तुमने मुझे बहुत कष्ट दिए हैं धूर्त। आज उनसे मुक्ति पाऊँगा। तुम्हारे कारण ही मुझे ये सेना लानी पड़ी, बालि-वध करना पड़ा, ये सेतु बाँधना पडा और तुम मेरे सामने जीवित खड़े हो। आज तुम सकुशल नही लौट सकते। (ओजपूर्ण स्वर) आज तीनों लोक के प्राणी इस राम का 'रामत्व' देखें। हे देवताओ, ऋषियो-मुनियो आज तुम राम का पराक्रम देखो।

पार्श्व स्वर

राम सरासन तें चले तीर रहे न सरीर, हड़ावरि फूटी।
रावण धीर न पीर गनी, लखि ले कर खप्पर जोगिनि फूटी।
श्रोनित छीट-छटनि जटे तुलसी प्रभु सोहे महाछवि छूटी।
मानो मरक्कत-सैल बिसाल मे फैलि चलीं वर बीर बहूटी।

[हतप्रभ रावण—युद्ध से भागता है।]

सूत्रधार : मैं सेतुबंधु हूँ। जब राम ने रावण को रथ और शस्त्रहीन कर दिया तो वह लंका के लिए भाग आया। उधर सुषेण वैद्य ने लक्ष्मण का उपचार किया। आज रावण की दूसरी पराजय हुई। पहली बार रावण को अपमानित कर श्री राम ने भेजा था। आज शस्त्रहीन ही कर दिया। श्री राम और रावण के युद्ध का यह क्षण महत्व-पूर्ण है।

राक्षस : राक्षस शिरोमणि दशकधर की जय।

वानर : श्री रामचन्द्र की जय।

[सेनाएँ सम्मुख हैं।]

राम : बहुत वीर बनते थे रावण, लेकिन तुम युद्ध से ही भाग गए।

रावण : कल मैं रथहीन हो गया था तपस्वी। आज तेरा वध कर लौटूँगा।

[इन्द्र का प्रवेश।]

इन्द्र : प्रभु। मेरे रथ का उपयोग कीजिए अन्यथा युद्ध में विजय का संदेह रहेगा।

रावण : इन्द्र। ये अवसर है, तुम भी इसकी सहायता कर लो। इसे मार-कर मैं तुझे देखूँगा।

राम : वानर वीरो। तुम थक गए हो। इसलिए मेरा और रावण का द्वंद्व युद्ध देखो।

पार्श्व स्वर

अस कहि रथ रघुनाथ चलावा। विप्र चरन पंकज सिरु नावा।
तब लंकेश क्रोध उर छावा। गर्जत तर्जत सम्मुख धावा।

[द्वन्द्व युद्ध में रावण अचेत। सारथी उसे लेकर लंका लौटता है। लंका द्वार पर चेतना आती है।]

रावण : कहाँ है राम···मेरे सामने आ···(क्रोध से) सारथी। तू मुझे यहाँ क्यों लाया? मैं युद्धभूमि मे दो बार आ चुका हूँ और आज तीसरी बार तू ने वही किया। मुझे वापस युद्धभूमि में ले चल।

[युद्धभूमि में प्रवेश।]

राम : वापस लौट आए दशानन।

रावण : मैं उन योद्धाओं में से नहीं हूँ तपस्वी, जिन्हें तुमने जीत लिया था। मेरा यश सारा संसार जानता है। मेरा नाम रावण है रावण।

जिसकी कैद में लोकपाल तक पड़े हैं। तुमने खर, दूषण और विराध को मारा। बालि का वध व्याध की तरह किया। मैं उन सबका बदला आज लूँगा। बड़ी कठिनाई से तुम मेरे पाले पड़े हो।

राम : क्षमा करना रावण ! तुम बकवाद कर यश का नाश मत करो। संसार में तीन तरह के पुरुष होते हैं। एक गुलाब जैसे जो फूल देते है। दूसरे आम जैसे जो फूल और फल देते हैं। तीसरे कटहल जैसे जो केवल फल देते हैं। तुम ··

रावण : (हँसकर) ज्ञान सिखाते हो राम। जब मुझसे बैर किया तब नही डरे, अब प्राण प्यारे लग रहे हैं तुम्हें।

पार्श्व स्वर

कहि दुर्वचन कछु दसकंधर। कुलिस समान लाग छाडे सर।
नानाकार सिलीमुख धाए। दिसि अरु विदिस गगन महि छाए।
पावक सर छाडेउ रघुवीरा। छन महुँ जरे निसाचर तीरा।
निफल होहि बानर दल ऐसे। खल के सकल मनोरथ जैसे।
धायउ परम क्रुद्ध दसकंधर। भय मुख चले हूह दै बन्दर।
चले पराइ भालु कपि नाना। त्राहि-त्राहि भगवन श्री माना।
पाहि पाहि रघुवीर गोसाईं। यह खल खाइ काल की नाईं।

[वानर सेना भागती है। रावण श्री राम पर तीर छोड़ना चाहता है, तभी शंख ध्वनि होती है। वह तीर नहीं छोड़ता है।]

रावण : आज प्राण बच गए राम। देखो, तुम्हारी सेना का क्या हाल है ?

[अट्टहास करता हुआ लौटता है।]

सूत्रधार : श्री राम रावण युद्ध का ये सोलहवाँ दिन है। आज वैशाख कृष्णपक्ष की द्वादसी है। सोलह दिन मे श्री राम की सेना ने रावण को तीन दिन परास्त किया और उसके कई योद्धा मार डाले। रावण ने नवमी के दिन लक्ष्मण को घायल कर बदला लिया था। आज के युद्ध मे रावण की विजय होती दिखाई दे रही थी। इससे श्री राम की सेना मे निराशा छा गई है। स्वयं श्री राम चिंतित है।

राम : रावण के हाथों कही पराजय तो नही हो जाएगी। राम। यदि पराजय हुई तो क्या होगा ? मैंने प्रतिज्ञा की थी, उसका क्या होगा राम ? सीता को विछुड़े हुए कितने दिन हो गए। हाँ एक साल पूर्ण होने में एक दिन ही तो शेष है।······दो दिन······दो दिन बाद रावण जानकी का वध कर देगा···फिर क्या होगा ? सीते क्षमा करना मैं तुम्हारी रक्षा नही कर सका।

मैं अयोध्या किस मुँह से लौटकर जाऊँगा। दो दिन में उसे जीतना सभव नहीं लगता।

अगस्त्य श्री राम।

राम ऋषि अगस्त्य जी आप······महाराज दशरथ पुत्र राम का प्रणाम स्वीकार करें ऋषिवर।

अगस्त्य : मानव जीवन मे कभी-कभी निराशा के क्षण भी आते हैं श्री राम। आप तो सबके हृदयो में वास करने वाले है। इस युद्ध मे विजय पाने के लिए 'आदित्य हृदय' स्त्रोत का पाठ करो। अभी से आरंभ करो ताकि विजय प्राप्त हो।

[प्रस्थान।]

[श्री राम आसन लगाकर पाठ करते हैं।]

पार्श्व स्वर

आदित्य हृदयं पुण्यं, सर्व शत्रु विनाशनम्
जयावहं जपं नित्यभक्षयं परमं शिवम्
सर्व मगलम मांगल्यं सर्वपाप प्रणाशनम्
चिन्ता शोक प्रशमनभायुर्वर्धन मुत्तमम्

रश्मिमन्तं समुधन्तं देवासुर नमस्कृतम्
पूजयस्व विस्वन्तं भास्कर मे भुवनेश्वरम्
नम. पूर्वाय गिरये पाश्चमायाद्रये नमः
ज्योतिर्गणानां पतये दिनाधिपतये नमः
जयाय जयभद्राय हर्यश्रवाय नमो नम.
नमो नमः सहस्त्रांशो आदित्याय नमो नमः
नम उग्राय वीराय सारङ्गाय नमो नमः
नमः पद्म प्रवोधाय प्रचण्डाय नमो स्तुते।

ॐ आदिदेवाय नम.
ॐ हिरण्यगर्भाय नमः
ॐ भास्कराय नमः
ॐ दिवाकराय नमः

[युद्ध ध्वनि।]

रावण : प्राणों के भय से अब पूजा-पाठ करते है राम। सुना है कि तुम मानव नही, भगवान हो। वाह रे भगवान···वानरो देखो—इस भगवान को···मैंने कल इसे हताश किया था।

राक्षस स्वर : दिग्विजयी महाराज रावण की···जय।

[वानर सेना द्वारा राम को घेरकर खड़ा होना।]

राम : प्राणों का भय अज्ञानियों को होता है रावण।

रावण : युद्धभूमि में सवादों का नहीं, शक्ति का प्रदर्शन करो राम। शक्ति का प्रदर्शन।

सुग्रीव : (आक्रमण) श्री रामचन्द्र जी की जय……

[युद्ध।]

[कभी रावण और कभी राम विजयी होने लगते हैं। अंत में रावण का वध।]

सूत्रधार : कल आपने देखा कि भगवान श्री राम ने राक्षस-राज रावण का वध कर युद्ध जीत लिया। कल वैशाख मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी थी। अठारह दिनों तक चलने वाले युद्ध मे कल का दिन निर्णायक था। क्योंकि सीता जी ने रावण से एक वर्ष की अवधि मांगी थी। यदि कल श्री राम युद्ध न जीत पाते तो रावण सीता जी का वध कर डालता।

भगवान श्री राम ने अगहन मास के कृष्ण पक्ष की अष्टमी के दिन रावण-वध की प्रतिज्ञा लेकर उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र-विजय योग मे यात्रा आरम्भ की थी। किष्किधा से समुद्र-तट तक सेना सात दिनो मे पहुँच गई। पौष मास की शुक्ला चतुर्थी को विभीषण ने शरण ली तथा पचमी के दिन सेतु बांधने का परामर्श हुआ था। भगवान ने षष्ठी से नवमी के मध्य भूमि पूजन तथा शिवजी का पूजन किया एवं चार दिनो के पश्चात् पौष शुक्ल त्रयोदशी को बांध बन गया था। युद्ध का पहला दौर माघ शुक्ला द्वितीय से अष्टमी तक चला। नवमी के दिन मेघनाद ने नागपाश से राम-लक्ष्मण को बांध दिया था। दशमी को गरुण मत्रद्वारा हनुमान जी ने बंधनमुक्त किया। माघ शुक्ला एकादशी को धूम्राक्ष ने युद्ध किया तथा द्वादशी को मारा गया। त्रयोदशी के दिन अकम्पन, तथा माघ कृष्ण प्रतिपदा को प्रहस्त मारा गया। श्री राम और रावण का पहला युद्ध माघ कृष्ण द्वितीया से चतुर्थी तक चला था। जिसमे रावण शस्त्रहीन होकर लंका लौटा था। कुभकर्ण माघ कृष्ण पचमी को जगाया गया तथा नवमी से चतुर्दशी तक युद्ध करते हुए मारा गया। इसके बाद अमावस्या को युद्ध विराम हो गया था। फागुन शुक्ला प्रतिपदा को मेघनाद युद्धभूमि मे आया, पंचमी को अतिकाय, अष्टमी से द्वादशी के बीच कुम्भ-निकुम्भ मारे गए। त्रयोदशी को मकराक्ष मरा तथा फागुन कृष्ण द्वितीया को लक्ष्मण मूर्छित हो गए फिर तृतीया से युद्ध विराम हो गया। चतुर्दशी को रावण ने यज्ञ किया और अमावस्या के दिन युद्ध के लिए आया। पाँच दिन वाद महापार्श्व ने युद्ध किया तथा अष्टमी के दिन मारा गया था। चैत्र शुक्ला नवमी को

लक्ष्मण स्वस्थ हुए तथा दशमी को युद्ध बन्द रहा। त्रयोदशी के दिन मेघनाद मारा गया। चतुर्दशी से वैशाख कृष्ण चतुर्दशी तक राम-रावण का युद्ध हुआ।

भगवान श्री राम ने प्रतिज्ञा पूर्ण की। एक बार फिर मानव संस्कृति की विजय हुई। मानवता, अहिंसा, शांति, धर्म विरोधी राक्षस संस्कृति का प्रतीक, नायक रावण मारा गया। विभीषण लंका के राजा बनाये गये।

[मंच तीन पर प्रकाश।]

सुमन्त : महाराज की जय हो।

भरत : काका सुमन्त। मैं तुम्हारा भरत हूँ—महाराज नहीं।

सुमन्त : महाराज, मैं अपनी मर्यादा कैसे तोड सकता हूँ। जब तक श्री राम नहीं आ जाते है, आप ही अवध के महाराज है।

भरत : भैया ने मुझे क्षमा नहीं किया। आज चौदह वर्ष की अवधि समाप्त हो गई। मैं कहकर आया था कि यदि तुम न आए तो भरत का मुँह नहीं देख पाओगे।

[दुखी स्वर।]

सुमन्त मैं जानता हूँ कि श्री राम तुम्हे कितना चाहते है। यहाँ न पधारने का कोई अन्य कारण होगा। वे आपको बहुत प्रेम करते है।

भरत : तो फिर आए क्यो नहीं? जरूर कोई खोट है मुझ मे। एक मेरे कारण रघुवंश मे कलह पैदा हुई। परिवार मे बिखराव आ गया। एक मेरे लिए ही कैकई ने हठ किया और पिता जी का स्वर्गवास हो गया। वह भी मैं ही हूँ जिसके कारण आज भैया वापस नहीं लौटे काका। केवल मैं कारण हूँ मैं?

सुमन्त : नहीं महाराज। जब कोई व्यक्ति इतिहास के पृष्ठ उलटकर खोजेगा तो उसे धरती पर दूसरा भरत नहीं मिलेगा।

भरत : नहीं काका। धरती पर दूसरे श्री राम नहीं मिलेंगे।

सुमन्त : मैं सहमत नहीं हूँ महाराज। श्री राम तो भगवान विष्णु के अवतार हैं। उनका अवतार तो हर बार होगा ही। हाँ, उनके रूप बदल सकते है, कहानी बदल सकती है। हर युग मे भगवान को अवतरित होना ही पडता है, लेकिन हर युग मे भरत का जन्म नहीं होता। भरत तो त्याग और भक्ति का एकमात्र नाम है। न भूतो, न भविष्यति।

भरत : न मैं त्यागी हूँ और न भक्त? त्यागी होता तो कैकई का पूर्ण त्याग कर देता। इस राज्य के दायित्व का त्याग कर वन चला जाता। यदि मैं भक्त होता तो हनुमान की तरह अपने प्रभु के काम आता। उनका सानिध्य मिलता। यदि मैं भक्त होता तो

भगवान कैसे भूल जाते मुझे।

सुमन्त : निराश न हो महाराज। कभी-कभी परिस्थितियाँ भी आड़े जाती हैं।

भरत : कोई परिस्थिति नहीं है काका।

सुमन्त : हो सकता है अभी युद्ध चल रहा हो।

भरत : मान भी लूं कि युद्ध चल रहा है तो भैया किसी दूत से संदेश भेजते कि भरत मेरी प्रतीक्षा करे या सेना लेकर आ जाए। जब संबंधों में अन्तराल आ जाता है और दो हृदयों में रागात्मकता समाप्त हो जाती है, तभी उदासीनता और तटस्थता घर कर लेती है काका। इसलिए मैं भैया का प्रिय नहीं रहा। सेवक······

सेवक : आज्ञा महाराज।

भरत : जाओ सरयू तट पर चिता की व्यवस्था करो।

सुमन्त : वत्स, भरत।······क्षमा करना महाराज। मैंने तुम्हें इन हाथों में खिलाया है, इसलिए मेरे मुख से आपका नाम निकल गया। वत्स, मैं महाराज दशरथ के स्वर्गवासी होने के बाद भी अवध में इसलिए रुका हूँ, कि मैंने इस देश का नमक खाया है। सरयू का जल पिया है। मैं इस देश से उऋण नहीं हो सकता। आज तुम आत्महत्या की बातें इस बूढ़े के सामने करते हो। एक ओर काका कहते हो और दूसरी ओर काका को आत्महत्या का समाचार सुनाते हो भरत। आत्महत्या कायरों का काम है। आज यदि श्री राम नहीं लौटे हैं तो अवधवासी उनसे प्रश्न करेंगे लेकिन तुम्हें आत्महत्या नहीं करने देंगे।

भरत : मैं अपने निश्चय से नहीं हट सकता हूँ। मैं नहीं हट सकता······ (आकाश की ओर देखकर) प्रभु। यदि भरत, मन, वचन, कर्म से भक्त है तो दर्शन दो प्रभु।

पार्श्व स्वर : बोल बजरंग बली की······जय।

[पुनरावृत्ति।]

सुमन्त : बजरंग बली। कौन आया है? चलो देखें···

हनुमान : बोल सियावर रामचन्द्र की······

जनसमुदाय : जय।

भरत : हनुमान जी।

हनुमान : प्रणाम महाराज।

सुमन्त : युद्ध का क्या हुआ?

हनुमान : आपके आशीर्वाद से महाराज सुग्रीव को विजय मिल गई। श्री राम ने रावण को मार डाला।

जनसमुदाय : भगवान श्री रामचन्द्र की······जय।

[महाराज भरत की......जय ।

भरत : लेकिन भैया अब तक क्यों नहीं आए ?

हनुमान : वे आते ही होंगे। मुझे उन्होंने ही आदेश दिया है कि मैं आपको उनके आगमन की सूचना दे दूं। वे किसी भी क्षण आ सकते हैं।

सुमन्त : विमान से आ रहे हैं क्या ?

हनुमान : हाँ। महाराज कुबेर ने अपना पुष्पक विमान उपलब्ध कराया है।

[सब आकाश की ओर देखते हैं। शांति।]

भरत : भैया नहीं आएंगे हनुमान जी। कहीं इतना समय लगता है। तुम इसलिए आए हो कि मैं चिता में प्रवेश न कर लूं। लेकिन अब मैं प्रतीक्षा नहीं करूंगा। मैं चिता में प्रवेश करूंगा ही......

राम : ठहरो भरत।

भरत : भैया.........।

जनसमुदाय : महाराज श्री राम की......जय।

[भरत, शत्रुघ्न द्वारा चरण स्पर्श।]

नागरिक : बोलिये। भगवान श्री रामचन्द्र की......जय।

[वशिष्ठ का प्रवेश।]

सूत्रधार

चौ० : धाइ धरे गुरु चरन सरोरुह,
अनुज सहित अति पुलक तनोरुह।
गहे भरत पुनि प्रभु पद पंकज,
नमत जिन्हहि सुर मुनि संकर अज।
परे भूमि नहिं उठत उठाए,
बर करि कृपासिंधु उर लाए।

दोहा : पुनि प्रभु हरषि सत्रुहन भेंटे हृदय लगाइ।
लछिमन भरत मिले तब परम प्रेम दोउ भाई॥

चौ० : भरतानुज लछिमन पुनि भेंटे,
दुसह बिरह संभव दुख मेटे।
सीता चरन भरत सिरु नावा,
अनुज समेत परम सुख पावा।
कौशल्यादि मातु सब धाईं,
निरखि बच्छ जनु धेनु लवाईं।

[राम ने कैकई के चरण छुए।]

कैकई : बेटा। मेरे कारण तुम्हें वन जाना पड़ा।

राम : नहीं माँ। यह तो विधाता ने निश्चित कर दिया था, आप तो माध्यम बनी थीं।

कैकई : बेटा। सब कहते हैं कि तू भगवान का अवतार है। तूने मेरी सब

बातें मानी है, तो एक बात मान लो वत्स।

राम : आज्ञा दो माँ।

कैकई : मेरे मन का कलुष धुल जाए राम।

राम : माँ। मैं तुम्हारा पुत्र हूँ—पुत्र। क्या कोई पुत्र माँ से बड़ा हो सकता है ?

[राम सुमित्रा के चरण स्पर्श कर कौशल्या के पाँव छूते हैं। सीता अनुसरण करती है। लक्ष्मण चरण वंदना कर सुमित्रा के पास जाते हैं।]

सुमित्रा : लक्ष्मण। सुना है तूने बलवान इन्द्रजीत को मार डाला है ?

लक्ष्मण : सब तेरी आशीष है माँ।

सुमित्रा : तुझे कभी इस माँ की याद आती थी ?

पार्श्व स्वर

लक्ष्मण ने जिस दम सुने, माता के यह बैन।
भरे प्रेम अश्रुओं से उस प्रेमी के नैन॥

[सबका नगर की ओर प्रस्थान।]

शत्रुघ्न : भैया। गुरुदेव की आज्ञा है कि आप राजसी वेष मे दरबार में उपस्थित हों।

[प्रस्थान।]

सूत्रधार : मैं सरयू हूँ। मैने भगवान के जन्म के क्षण देखे थे। मैंने ही
(सरयू) उन्हे वन जाते देखा था। आज भगवान युद्ध जीत कर घर आए है।

पार्श्व स्वर

रन नीति राम राउ आए।
सानुज सदल ससीय कुसल आजु, अवध आनंद-बधाए।
अरिपुर जारि, उजारि, मारि रिपु, विबुध सुवास बसाए।
धरनि-धेनु, महीदेव-साधु, सब के सब सोच नसाए।
दई लंक, थिर थपे विभीषण, वचन पियूष पिआए।
सुधा सींचि कपि, कृपा नगर-नर-नारि निहारि जिआए।
मिलि गुर, बंधु, मातु, जन, परिजन, भए सकल मन भाए।
दरस हरस दसचारि बरस के दुख पल में बिसराए।
बोले सचिव सुचि, सोछि सुदिन, मुनि मंगल साज सजाए।

[मंच एक पर प्रकाश।]

[दरबार दृश्य।]

वशिष्ठ : (तिलक कर मुकुट पहनाते हैं। पुष्पवर्षा होती है।)

बन्दीजन : महाराज श्री रामचन्द्र की जय।

[श्री राम उपहार देते हैं। विभीषण अपनी माता औ राम:

को पहना देते हैं। श्री राम उसे सीता को पहना देते हैं।]

राम : महाराज विभीषण। मैं और अवध के नागरिक आपके सहयोग के लिए सदैव आभारी रहेंगे। महाराज सुग्रीव ने हमारी सहायता कर हमें अपना ऋणी बना लिया है।

विभीषण : प्रभु। आपने सभी को कुछ न कुछ दिया है। इस सेवक को कुछ नहीं देंगे।

राम : महाराज। यद्यपि मैं इस योग्य नहीं हूँ लेकिन आप सखा हैं। आप जो भी चाहें माँग लीजिए।

विभीषण : बार-बार बर मागउँ हरषि देहु श्रीरंग।
पद सरोज अनपायनी भगति सदा सतसंग।

राम : तथास्तु।

अंगद : प्रभु। मुझे इन चरणों मे स्थान दीजिए। मेरे पिता ने आपके चरणों में मुझे सौंपा था।

राम : अंगद, किष्किन्धा के युवराज। मेरी बात सुनो। तुम्हें अपने राज्य की जनता की सेवा करनी है। इसलिए अपनी प्रजा से दूर न रहो, उसके पास रहो। जो राजा जनसाधारण के समीप होता है, वह जनप्रिय राजा बनता है। युवराज, प्रजा की सेवा अंगीकार करो और कुशल प्रशासक बनो।

सीता : पवन पुत्र।

हनुमान . माता।

[सीता माला पहनाती हैं।]

राम : हनुमान तुम भी कुछ माँगो।

हनुमान : माँगूं प्रभु।

राम : हाँ माँगो।

पार्श्व स्वर

मुझे प्रभु एकहि वर दीजे।
इन चरणो मे भक्ति भावना मेरी निश्चल कीजे।
राघव इन चरणों मे अविचल,
कभी न भटके यह मन चंचल।
जब तक रामकथा धरती पर,
तब तक जीवन दीजे।
'कथा राम की' निज मुख गाऊँ।
'कथा राम की' सबहिं सुनाऊँ।
राम राम बिन और दूसरी
लगन न मन मे भीजे।

'कथा राम' की नव संभाषण।
सार समाहित सब रामायण।
सप्त स्वरों में 'कथा राम की'।
स्वाद दास को दीजे।

[पुल पर लेखक, निर्देशक।]

पार्श्व स्वर

मो सम दीन न दीन हित, तुम्ह समान रघुवीर।
अस विचारि रघुवंश मणि, हरहु विषम भव भीर।
कामिहिं नारि पिआरि जिमि लोभहिं प्रिय जिमि दाम।
तिमि रघुनाथ निरंतर प्रिय लागहु मोहिं राम।

पार्श्व स्वर

राम बोलो राम बोलो, राम बोलो राम।
राम बोलो, राम बोलो, राम बोलो राम।
सबके सहारे राजा राम।
कष्ट निवारें सीता राम।
सबके सहारे राजा राम।
राम बोलो······
सब दुख भंजन राजा राम।
पतित पावन सीता राम।
सब दुख भंजन राजा राम॥
राम बोलो··············

[समाप्त]